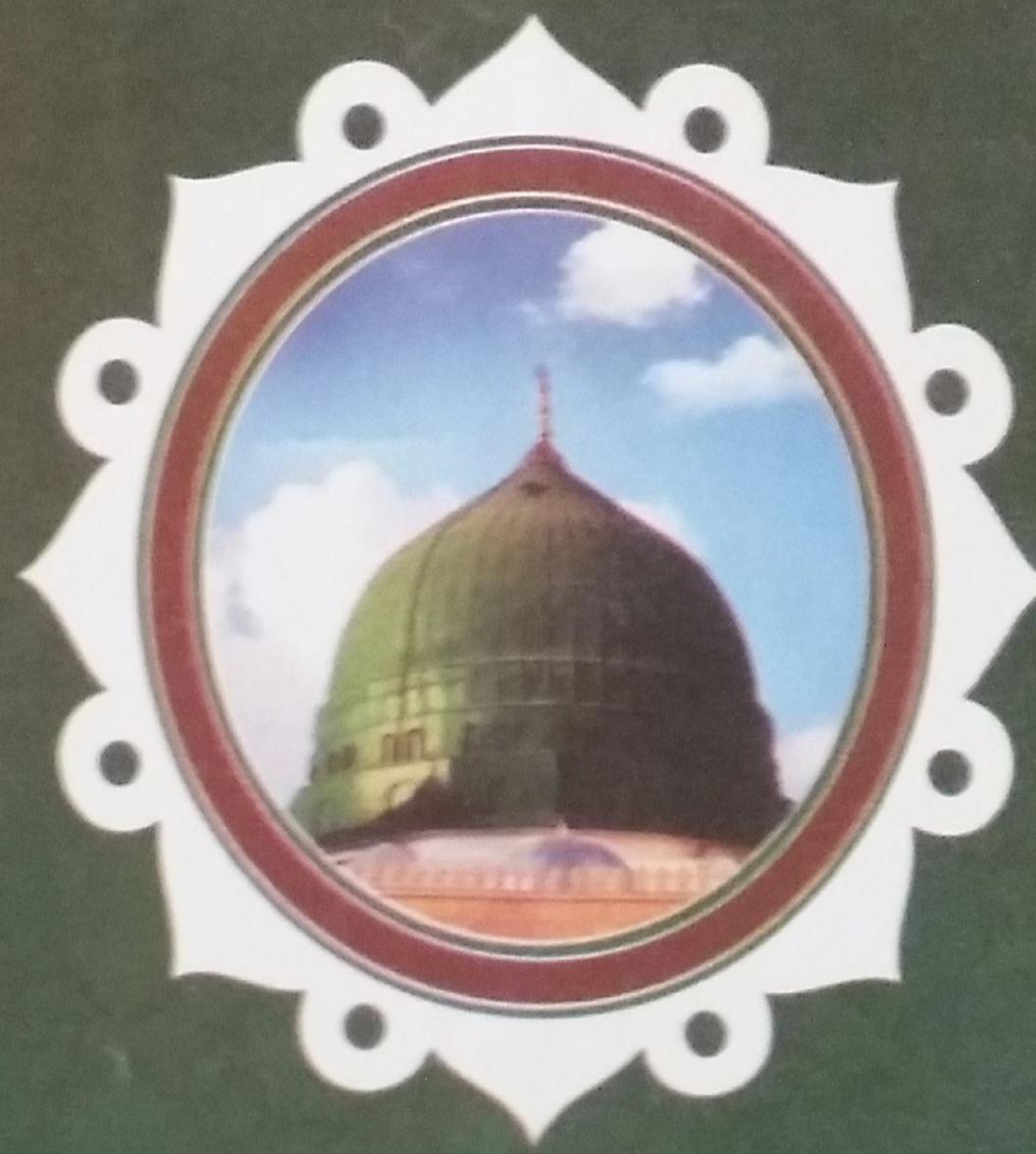


# स्वीरंत

रसूली अंकरम



तालिफ़

हजरत मौलाना सेयद अबुल हसन अली नदवा रह  
हिन्दी अनुवाद  
मौलाना जौलानी कास्मी

# सीरित रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम्)

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली  
हसनी नद्दी रह०

नसीर बुक डिपो

1-अबीनिया बिलिंग, हज़रत निबामुरीन, न्यू देहली-13, इन्डिया

फ़ोन: (रोॅप) 65652620, फ़ैक्स: 26827731

E-mail: nasirbookdepot@yahoo.com

# जुम्ला हुकूक बहवूके नाशिर महफूज़ हैं

नाम किताब	: सीरत रसूले अकरम सल्ल0
मुसन्निफ़	: हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0
हिंदी कम्पोजिंग	: मुहम्मद रैहान
सन्ने तबाज़त	: 2013
बएहतिमाम	: मुहम्मद हारिस
तादाद	: 1100
कीमत	:
नाशिर	: नसीर बुक डिपो, हज़रत नियामुद्दीन नई दिल्ली-13
सपुत्रात	: 392
साइज़	: 23X36X16

## नसीर बुक डिपो

1-अबीबिया बिल्डिंग, हवरत नियामुद्दीन, न्यू देहली-13, इन्डिया  
फ़ोन: (रांप) 65652620, फ़ैक्स: 26827731  
E-mail: [nasirbookdepot@yahoo.com](mailto:nasirbookdepot@yahoo.com)

**फ़हरिस्त**

ब्र०

मुझार

उन्वानात

सफ़्रा

1. मुकद्दमा.....मौलाना सव्यद राबेझ़ हसनी नदवी.....	9
2. अर्ज़े हाल.....	15
3. मुकद्दमा तब्‌दी दोम.....	20
4. वलादत बासआदत.....	22
5. अव्यामे रज़ाअ़त.....	23
6. वालिदा और दादा की वफ़ात और चचा अबू तालिब की किफ़ालत..	24
7. हर्बुल फुज्जार और हलफुल फुजूल में शिर्कत.....	26
8. हज़रत ख़दीजा रज़िया से रिश्तए इज़िदवाज.....	28
9. कअबा की तअ़मीरे नौ और एक बड़े फ़िल्मे का सद्दे बाब... 10. आसमानी तरबियत.....	29 31
11. इंसानियत की सुळ्ह सादिक और बेअसत मुबारक.....	32
12. इस्लाम की तबलीग़ व दावत.....	35
13. तौहीद की बाज़ गश्त और मुशिरकीन की ईज़ा रसानी.....	39
14. उत्ता का आंहज़रत सल्ल० से मुकालमा.....	44
15. सरदाराने कुरैश की आंहज़रत सल्ल० से बातचीत.....	47
16. कुरैश के हाथों मुसलमानों पर मज़ालिम.....	53
17. हज़रत अबू बक्र रज़िया के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला.....	59
18. मुसलमानों की हब्शा की तरफ़ हिज़रत और नजाशी के सामने हज़रत जअ़फ़र रज़िया की तकरीर.....	60

## सीरित रसूले अवयम सल्ल०

19. हज़रत हम्जा रज़ि० का कबूले इस्लाम.....	63
20. हज़रत उमर रज़ि० का कबूले इस्लाम.....	64
21. हज़रत उस्मान रज़ि० इब्ने मज़ुकन की हव्वा से वापसी और मुशिरकीने मक्का की ईज़ा रसानी.....	69
22. कुरैश की जानिब से बनी हाशिम का मुहासरा और मुकातआ....	71
23. अहद नामा की तंसीख और मुकातआ का खातमा.....	73
24. हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ्फारे कुरैश का मुआमला.....	74
25. अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफात.....	76
26. ताइफ का सफर और सख्त अज़ीयतों का सामना.....	77
27. कबाइले अरब को दावते इस्लाम.....	82
28. बैअृते उक्बा और मदीना में इशाअते इस्लाम.....	90
29. बैअृते उक्बा सानिया.....	95
30. हिज्रत करने की इजाज़त.....	100
31. रसूलुल्लाह सल्ल० के खिलाफ कुरैश की साज़िश और नाकामी और आप सल्ल० की हिज्रते मदीना.....	103
32. नुराका का तअ़ाकुब.....	110
33. मुबारक शख्स.....	111
34. नबीये अकरम सल्ल० का मदीना में इस्तिक्बाल.....	113
35. मस्जिदे कुबा की तअ़मीर.....	114
36. मदीना का पहला जुमुआ.....	116
37. मदीना में हज़रत अव्यूब अंसारी रज़ि० के घर में क़्याम..	119
38. मस्जिदे नबवी सल्ल० और मकानात की तअ़मीर.....	121
39. अज़ान की मशरूइयत.....	124

## सीरित रसूले अवरम सल्ल०

40. मुहाजिरीन और अंसार में भाईचारा का मुआहदा.....	125
41. सुफ़क़ए नबवी सल्ल०.....	130
42. ग़ज़वए बद्र.....	132
43. बद्र की तरफ कूच और लशकरे इस्लाम व लशकरे कुफ़्फ़ार में ज़बरदस्त तफ़ावुत.....	135
44. जंग की तैयारी.....	137
45. आग़ाज़े जंग.....	142
46. नामवर सरदाराने कुफ़्फ़ार का कत्ल.....	145
47. फ़त्हे मुबीन.....	148
48. असीराने जंग के साथ सुलूक.....	149
49. हज़रत अबुल आस रज़ियो का ईमान लाना.....	152
50. उमैर बिन वहब रज़ियो का कबूले इस्लाम.....	153
51. हज़रत फ़तिमा रज़ियो का अक्द.....	155
52. जाहिली हमीयत और ज़ज्बए इंतिकामे बद्र.....	157
53. उहुद के दामन में.....	160
54. लड़ाई का आग़ाज़.....	163
55. मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग का पांसा कैसे पलटा.....	165
56. मुहब्बत व जाँनिसारी के नमूने और मुसलमानों का दोबारा जमाव.	168
57. चंद शुहदा का हाल.....	175
58. ख़ातूनाने इस्लाम की ख़िदमत गुज़ारी व जाँ निसारी.....	180
59. सरीयए हम्राउल असद.....	182
60. अ़ज्जे वक़ारा और बीरे मऊना के वाकिआत और खुबैब रज़ियो की जवामर्दी.....	184

## सीरिय रसूलो अद्यम सल्ला०

61. बनू नज़ीर की जिला वतनी.....	189
62. ग़ज़वए ख़ंदक.....	192
63. मुहासरा की शिद्दत और सहाबए किराम रज़ि० की अज़ीमत....	197
64. हज़रत सफीया रज़ि० का दिलेराना कदम.....	202
65. नुस्ते गैबी और मुहासरा का खातमा.....	203
66. मां अपने जिगर के टुकड़े को जिहाद और शहादत पर <sup>आमादा करती है.....</sup>	205
67. ग़ज़वए ज़ातुर्िकाअ.....	206
68. ग़ज़वए बनू कुरैज़ा.....	207
69. सरीयए नज्द और हज़रत समामा रज़ि० का कबूले इस्लाम..	211
70. सुलह हुदैबिया.....	214
71. बैअते रिज़वान.....	220
72. मुआहदा व सुलह नामा.....	221
73. मुसलमानों की आज़माइश.....	223
74. बसूरत नाकामी बहकीकत कामियाबी.....	226
75. سलातीन व उमराअ० को दावते इस्लाम.....	232
76. नामए मुबारक बनाम नजाशी शाहे हब्शा.....	233
77. बनाम शाहे बहरैन.....	235
78. बनाम शाहे उम्मान.....	236
79. बनाम हाकिमे दमिश्क व हाकिमे यमामा.....	241
80. बनाम शाहे इस्कंदरिया.....	242
81. बनाम हिरक्ल शाहे कुस्तुन्तुनिया.....	244
82. बनाम किस्रा शाह ईरान.....	248

## **सीरिय रसूले अवधा सल्लू०**

83. ग़ज़वए खैबर.....	251
84. ग़ज़वए मौता.....	262
85. फले मक्का.....	265
86. मुआफी की सदाए आम.....	270
87. नियाज़मंदाना न कि फ़ातिहाना दाखिला.....	272
88. मुआफी और रहम का दिन है, ख़ूरेज़ी का नहीं.....	273
89. मज़मूली झड़पें.....	275
90. हरम से बुतों की सफाई.....	275
91. ग़ज़वए हुनैन.....	282
92. ग़ज़वए तबूक.....	295
93. वफ़दे दौस.....	314
94. वफ़दे सकीफ.....	316
95. वफ़द अब्दुल कैस.....	323
96. वफ़द बनू हनीफा.....	326
97. कबीलए तैय का वफ़د.....	326
98. वफ़दे अज़्द.....	327
99. वफ़दे हम्दान.....	330
100. वफ़दे नजीब.....	332
101. वफ़दे बनी सअ़द हज़ीम.....	335
102. वफ़दे बनी असद.....	336
103. वफ़दे बहराज़.....	337
104. वफ़दे हौलान.....	338
105. वफ़दे मखारिब.....	340

## ਸੀਰਿਜ਼ ਰਾਮਲੇ ਜਾਵਦਾ ਸਲਲਾ

106. ਵਫ਼ਦੇ ਬਨੀ ਅਬਸ.....	341
107. ਵਫ਼ਦੇ ਗਾਮਿਦ.....	342
108. ਵਫ਼ਦੇ ਬਨੀ ਫੁਜ਼ਾਰਾ.....	342
109. ਵਫ਼ਦੇ ਸੁਲਾਮਾਨ.....	344
110. ਵਫ਼ਦੇ ਨਜਰਾਨ.....	344
111. ਵਫ਼ਦੇ ਨਖ਼਼ਾਬ.....	354
112. ਹਜ਼ਤੁਲ ਵਦਾਅ.....	357
113. ਵਫ਼ਾਤ.....	379
114. ਤਜ਼ੀਜ਼ ਵ ਤਕਫ਼ੀਨ.....	391

## मुकद्दमा

अजः- हज़रत मौलाना सव्यद मुहम्मद राबेझ़ हसनी नदवी मदजिल्लुहुल आली,  
नाज़िम दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ ।

### बिट्सिमल्लाहिर्हमनिर्हीम

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى رَسُولِهِ  
مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ،

रसूले करीम ख़ातिमुल मुर्सलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा  
सल्ल० की खुसूसियात को कहीं कुर्वान मजीद में **هُوَ** “**الَّذِي بَعَثَ فِي الْأَمَمِينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتَلَوُّا عَلَيْهِمْ أَيَّاتٍ**  
**وَيُزَكِّيُهُمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلٍ**  
**فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ**”<sup>(1)</sup> फ़रमाया गया “कि वह अल्लाह  
तआला की किताब यज़नी उसकी फ़रमाई हुई बातों की  
तअ़लीम द्रेते हैं, और दानाई की बातें बताते हैं, और!  
अख्लाक की दुरुस्तगी सिखाते हैं” और कहीं फ़रमाया गया,  
“**وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ**”<sup>(2)</sup> “कि आप सल्ल० अज़ीम  
अख्लाक व किर्दार के हामिल हैं।” और कहीं फ़रमाया गया  
“**لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ**”  
“**يَرْجُو اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيرًا**”<sup>(3)</sup> “कि तुम्हारे  
लिये अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है यह उसके लिये है  
जो अल्लाह से उम्मीद करता हो, और आखिरत के दिन

(1) सूरए जुमुआ, आयत-2

(2) सूरए कलम, आयत-4

(3) सूरए अहज़ाब, आयत-21

से उम्मीद रखता हो, और जिसने अल्लाह को बहुत याद किया हो।” अलग़र्ज़ यह कि मोमिन के लिये अल्लाह के आखिरी और बरगुज़ीदा रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० रौशनी का मीनार हैं, अपनी ज़िंदगी के लिये उनसे रौशनी हासिल करना, उनके नक्शे क़दम पर चलना, और ज़िंदगी के किर्दार व अख्लाक व सिफात में उनको अपने लिये नमूना बनाना हर मुसलमान का फर्ज़ है, इसी में सलाह व फ़लाह है, और यही मर्दे मोमिन का वतीरा व तरीक़ा है, और जब और जिसने इस वतीरा और तरीक़ा से इंहिराफ़ किया या तग़ाफ़ुल बरता, वह सही रास्ता से दूर हुआ और उसकी ज़िंदगी जादए मुस्तकीम से हट गई।

हुजूर सल्ल० के उस्वा को समझने और उनकी पैरवी करने के लिये दो अहम शर्तें हैं, एक तो यह कि आप सल्ल० से वफ़ादाराना और मुहिब्बाना तअल्लुक हो, और वह ऐसा हो कि उस ज़ाते अज़ीम पर सब कुछ कुर्बानि किया जा सकता हो, सिर्फ़ ज़बान से मुहब्बत का इज़हार न हो, बल्कि वह हकीकत हो, और उसमें इख्लास हो, जैसा कि सहाबए किराम को था, कि इस्लाम की वफ़ादारी की सज़ा में क़त्ल किये जा रहे हैं, और उनसे पूछने वाला पूछता है कि बताओ कि क्या तुम इसको कबूल करोगे कि तुम्हारी जगह इस वक़्त तुम्हारे नबी मुहम्मद सल्ल० होते और तुम बच जाते? वह जवाब देते हैं कि मैं तो इसके लिये भी तैयार नहीं कि आप सल्ल० के क़दम मुबारक में कांटा चुभे और मैं उसके

इवज़ में मौत से बच जाऊं। हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रजि० अपने एक मदहिया शोअर में कहते हैं-

**فَإِنْ أُبْرِئْتُ وَرَأْلَهُ وَعِزْرِيْضُ لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وَقَاءُ**

(कि मेरे बाप और दादा और खुद मेरी इज़्ज़त व आबरू सब हज़रत मुहम्मद सल्ल० की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिये निशाना और ढाल है)

बल्कि एक और जंग से वापस होने वालों से एक ख़ातून पूछती हैं कि हमारे हुजूर सल्ल० खैरियत से हैं? जवाब देने वाला कहता है, मगर तुम्हारे वालिद शहीद हो गए, वह पूछती हैं कि हमारे हुजूर सल्ल० खैरियत से हैं? वह जवाब देते हैं कि तुम्हारे शौहर भी काम आ गए, वह पूछती हैं कि यह बताओ कि हुजूर सल्ल० खैरियत से हैं? वह कहते हैं कि हाँ आप सल्ल० खैरियत से हैं, वह कहती हैं “हुजूर सल्ल० रहें तो हर मुसीबत कमतर है।” अगर मोमिन में ऐसी या इसी से क़रीब तर मुहब्बत न हो तो हुजूर सल्ल० की सच्ची और मुख्लिसाना पैरवी, ताबेदारी और वफ़ादारी नहीं हो सकती।

दूसरी शर्त यह है कि हुजूर सल्ल० की सीरते तथ्यिबायअ़नी अख़लाक व सिफ़ात, बंदगाने खुदा से आप सल्ल० की हमदर्दी, आप सल्ल० का हुस्ने मुआमला, अपने से बुरा चाहने वालों के साथ आप सल्ल० का हुस्ने सुलूक, रज़ाए इलाही की आप सल्ल० की तलब, आखिरत की फ़िक्र, हर एक के लिये हमदर्दी और खैर तलबी, दुन्या व दीन में

उसकी कामियाबी की फ़िक्र, उसके سलाह व फ़लाह का ख्याल, यह सब जानने की कोशिश की जाए, और मज़लूम किया जाए कि आप सल्ल० इंसानों के साथ अख़्लाक़ व मुहब्बत का क्या बरताव करते थे, अपने अहल व अयात के साथ कैसी शफ़कत करते थे, गैरों और दूसरों के साथ कैसी मुलातफ़त व हमदर्दी करते थे, लोगों की दीनी इस्लाह और उनमें खुदा तलबी का ज़ज़्बा किस तरह पैदा करने की कोशिश करते थे, आप सल्ल० परवरदिगार की रज़ा के हुसूल और उसकी नाराज़गी के कामों से बचने के लिये कैसी तरबियत व तलकीन करते थे।

यह दो शर्तें हैं जिनके ज़रीआ एक मोमिन को अपनी ज़िंदगी संवारना, और अपने ईमान को सच्चा बनाना होता है, यह शर्तें पूरी हों तो यह मक्सद हासिल होता है, और यह शर्तें पूरी न हों तो मक्सद हासिल नहीं होता, हुजूर सल्ल० की सीरते तथिबा मज़लूम करके उसकी पैरवी न करना और यह दावा करना कि हम हुजूर सल्ल० के ताबेदार हैं जोड़ नहीं खाता।

बअूज़ वक़्त आदमी यह दावा करता है कि उसको हुजूर सल्ल० से बड़ी मुहब्बत है, लेकिन आप सल्ल० की सीरते तथिबा को जानने की कोई फ़िक्र नहीं करता, और इस सीरते तथिबा के मुतालआ से हासिल होने वाले अख़्�ाक़ व सिफ़ात को अपनाने की कोशिश नहीं करता, ऐसे आदमी का दावा कैसे सच्चा माना जाएगा।

लेकिन हुजूर सल्ल० की सीरते तथियबा की बातें हर शख्स को किताबों में तलाश करना मुश्किल होता है, इसके लिये उलमा की तक़रीरें और हुजूर सल्ल० की सीरत पर लिखी गई किताबें सबसे बड़ा ज़रीआ हैं, हर मोमिन को इनकी तरफ़ रुजूअ़ करना चाहिये, लेकिन बअूज़ किताबें बड़ी आलिमाना हैं, बअूज़ बहुत सी ऐसी तफ़सीलात पर मुशतमल हैं जिनको जानने के लिये वक्त चाहिये, इसलिये हर कस व ना कस के लिये आसानी नहीं पैदा होती है।

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन हसनी नदवी रह० ने तबलीग़ी मराकिज़ के हफ़्तावारी इजितमाअ़ में पढ़ने के लिये सीरते तथियबा के वाक़िआत, अख्लाक़ व सिफ़ात, दावती व इस्लाही तर्ज़ पर मुशतमल हिस्सों को आप सल्ल० की सीरते तथियबा की बड़ी किताबों से निकाल कर एक मुस्तकिल किताब तरतीब दी थी जो तबलीग़ी मराकिज़ में क़लमी मसौवदा से पढ़ी जाती थी, इससे हाज़िरीन को बहुत फ़ाएदा होता था, सीरते तथियबा के यह वाक़िआत ज़िंदगियों को सुधारने, उनमें ईमानी ज़ज्बा पैदा करने का बड़ा काम देते थे, यह सिलसिला चलता रहा, हत्ता कि अज़ीज़ी सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी सल्लमहू ने जो हज़रत मौलाना के मुसव्वदात से वाक़िफ़ थे, वह मुसव्वदा निकाला, और उसको क़ाबिले तबाअ़त व इशाअ़त बनाने का ज़खरी काम अंजाम दिया, अब यह किताब प्रेस से जल्द बाहर आने वाली है, किताब की ज़खामत न ज़्यादा है न कम है,

वह न महज़ फ़ज़ाइल व मोजिज़ात की हामिल है, और न ही तारीखी वाक़िआत का दफ़तर है, वह ईमानी तरबियत, अख्लाकी दुरुस्तगी, खुदा तलबी, इंसानी हमदर्दी, खुदा की बंदगी और मख्लूके खुदा की खिदमत के वाक़िआत पर मुश्तमल है, और इस तरह वह एक मोमिन के किर्दार को संवारने और बानाने वाली है, ज़रूरत है कि इसको बहुत आम किया जाए, ताकि वसीअ़ फ़ाएदा हो। अज़ीज़ी मौलवी बिलाल हसनी सल्लमहू, ने मुझको भी इस सआदत में शरीक करने के लिये दीबाचा की फरमाइश की, जो मैं अपने कम कीमत अलफ़ाज़ और कमतर हैसियत की इबारत में इस शर्फ़ में शिर्कत की ग़र्ज़ से लिख रहा हूं, अल्लाह तआला क़बूल फरमाए। (आमीन)

**मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी**

नदवतुल उलमा लखनऊ।

11/ मुहर्रमुल हराम 1418 हि०

## अँजै हाल

**बिट्टमल्ला हिरहमानिरहीम**

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ  
الْمُرْسَلِينَ، مُحَمَّدٌ وَآلِهٗ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ، أَمَّا بَعْدُ:

राकिम आसिम खुदा के सामने सर बसुजूद है और उसकी ज़बान हम्द व सना बयान करने से कासिर है कि आज सीरते नबवी سल्ल० पर ऐसी किताब पेश करने की सआदत हासिल हो रही है जो तक़रीबन पचास साल कब्ल अल्लाह के एक मुख्लिस व महबूब बंदे के हाथों मुरत्तब हुई थी और एक अर्सा तक दावती इजितमाआत में पढ़ के सुनाई जाती रही, लेकिन ज़ेवरे तब्ज़ से आरास्ता नहीं हो सकी।

दस साल कब्ल हमारे शैख़ व मुशिद हज़रत मौलाना سख्यद अबुल हसन अली नदवी रह० महफूज़ खानदानी मख्तूतात व नवादिरात मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे कि अचानक यह किताब सामने आई जो मुसल्वदा की शक्ल में थी, इस सिलसिला में हज़रते वाला रह० ने फ़रमाया कि जब हमारा क्याम मस्जिद मर्कज़े तबलीग़ व दावत लखनऊ में था उस वक्त यह एहसास पैदा हुआ कि सीरते नबवी سल्ल० पर कोई मज्मूआ मुरत्तब होना चाहिये जो तबलीग़ी व दावती इजितमाआत में भी पढ़कर सुनाया जा सके, इसके लिये अल्लामा शिल्ली रह० की “सीरतुन्नबी سल्ल०<sup>(1)</sup>”, और

(1) यह मलूज़ रहे कि बेशतर हिस्सा “सीरतुन्नबी سल्ल०” से माखूज़ है।

क़ाज़ी सुलैमान साहब मंसूर पूरी रहो की “रहमतुल लिल आलमीन” को सामने रखकर मुअस्सिर वाकिफ़ आत का इतिख़ाब किया गया जो दावत का काम करने वालों के लिये रहनुमा हों, और साथ साथ दिल को हरारते ईमानी और जोशे इस्लामी से मअमूर करने वाले हों।

उस वक्त नाकारा के दिल में यह दाइया पैदा हुआ कि इसकी तबाअ़त का इंतिज़ाम होना चाहिये, लेकिन इसके इज़्हार की हिम्मत न हुई, “وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدْرًا مُقْدُورًا”

रमज़ानुल मुबारक में अर्सा से हज़रत का क़्याम दाइरए शाह इल्मुल्लाह तकिया कलां में रहता है, हज़रत से तअ़ल्लुक रखने वालों की एक तअ़दाद रमज़ानुल मुबारक यक़सूई से गुज़ारने के लिये मौजूद रहती है, जिनकी तअ़लीम व तरबियत की ख़ातिर दुर्लभ का एहतिमाम होता है, और मुख्तलिफ़ दीनी व दावती किताबें भी पढ़कर सुनाई जाती हैं, <sup>(1)</sup> दो साल क़ब्ल अम्मे मख्दूम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेझ़ साहब नदवी मदज़िल्लहुल आली ने फ़रमाया कि सीरत पर भी कोई मुख्तसर किताब होनी चाहिये, इस आजिज़ का ज़ेहन इसी किताब की तरफ़ गया जो अभी तक मख्तूता थी, बिरादरे अकबर, मुशफ़िक व मुकर्रम मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहब नदवी मदज़िल्लहुल आली ने भी किताब मुलाहज़ा फ़रमा कर इसकी ताईद फ़रमाई और

(1) हज़रते वाला नौवरल्लाहु मरकदहू की वफ़ात के बाद भी हज़रत के जानशीन हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेझ़ साहब हसनी नदवी मदज़िल्लहुल आली की सरपरस्ती में अलहम्दु लिल्लाह यह सिलसिला जारी है।

किताब पढ़ी जाने लगी। इसका मज्मा पर ऐसा असर हुआ कि हर तरफ से इसकी तबाहत का तकाज़ा शुरू हो गया, हज़रते वाला रहो से अर्ज किया गया तो हज़रत ने इजाज़त मरहमत फरमा दी, और इस नाकारा को इसकी मुराज़अत का हुक्म फरमाया, दूसरी एक मुश्किल यह भी दरपेश थी कि दर्मियानी कई सफ़्हात ग़ाइब थे, ख़ास तौर पर वफ़ात का पूरा वाकिआ उसमें मज़कूर न था। मगर महज़ अल्लाह का फ़ूल था कि उसने मुराज़अत की भी तौफ़ीक़ अता फरमाई, और यह एहतिमाम भी किया गया कि सिहाह की किताबों में अगर हवाला मिल सके तो दर्ज किया जाए, जो नक़स रह गया था वह अल्लामा शिब्ली रहो की “सीरतुन्नबी” और हज़रत रहो की “नबीये रहमत सल्ल०” को सामने रखकर पूरा कर दिया गया, उन्वानात नबीये रहमत को सामने रखकर क़ाइम कर दिये गये, अब अलहम्दुलिल्लाह! यह मुकम्मल किताब नाज़िरीन के सामने है, अल्लाह तबारक व तआला इसको क़बूल फरमाए, इसके नफ़ा को आम करे, इसको नजात व मग़फिरत का वसीला बनाए।

यहाँ पर यह बात अर्ज कर देना भी ज़रूरी है कि यह सीरत की एक मुख्तसर और मुअस्सिर किताब है और आम लोगों के लिये मुफ़्रीद तर है, और इस क़ाबिल है कि मसाजिद व मजामेझ में पढ़कर सुनाई जाए, लेकिन मुह़किरीन व बाहिसीन और सीरत का तफ़सील से मुतालआ करने वालों के लिये खुद मुसन्निफ़े किताब ने “अस्सीरतुन्नबीया”

के नाम से ज़ख़ीम किताब तसनीफ़ फ़रमाई, जिसमें हज़रत  
रह0 ने सीरत के बअूज़ ऐसे पहलू बयान किये हैं जिनकी  
तरफ़ आम सीरत निगारों की निगाह नहीं जाती, आलमी  
जाहिलीयत पर तफसील से मग़रिबी मआखिज़ को सामने  
रखकर रौशनी डाली गई है, इसका उर्दू में तर्जुमा राकिम के  
वालिद माजिद मौलाना سय्यद मुहम्मद अल हसनी साहब  
मक़बूले आम है और उसके कई एडीशन मुख्तलिफ़ ज़बानों  
में शाए हो चुके हैं।

अखीर में उन तमाम हज़रात का शुक्रिया आदा किया  
जाता है जिन्होंने किसी भी शक्ल में इस सिलसिला में  
तआवुन फ़रमाया, अम्मे मख्दूम व मुअज्ज़म मौलाना सय्यद  
मुहम्मद राबेझ़ साहब हसनी नदवी मदज़िल्लुहु ने किताब पर  
मुकद्दमा तहरीर फ़रमा कर इस नाचीज़ की हिम्मत अफ़ज़ाई  
फ़रमाई।

अज़्जीज़िलक़द्र मौलवी मुख्तार अहमद नदवी ने तहरीर व  
किताबत और मुकाबला में बड़ा तआवुन किया और  
मोहतरम व मुअज्ज़म मौलाना मुहम्मद रिज़वान साहब नदवी  
रह0 ने तबाअूत के मरहला पर बड़ी मदद फ़रमाई, अल्लाह  
तबारक व तआला इन हज़रात को जज़ाए खैर मरहमत  
फ़रमाए और इस अमल को क़बूल फ़रमा कर ज़खीरए  
हसनात बनाए।<sup>(1)</sup>

(1) मोहतरमी मौलवी सय्यद मुहम्मद सलमान नदवी साहब और मोहतरमी मास्टर  
खुरशीद अख्तार साहब मुदर्रिसे मदरसा ज़ियाउल उलूम भी शुक्रिया के मुस्तहिक हैं कि  
किताबत जैसे दुश्वार गुज़ार मरहला में इन दोनों ने तआवुन किया।

وَمَا تُؤْفِيقُ إِلَّا بِاللَّهِ، عَلَيْهِ تَوَكُّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ، وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَالْمِنَةُ، وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ  
وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ.

بیلائل عبدالحیٰ ہسنی ندవی

دارے ارجمند، دائرہ شاہ ایلمولہ راہ باریلی।

## मुकद्दमा तब्बे दोम

الحمد لله وحده، والصلوة والسلام على من لا نبي

بعد، أما بعد:

उस करीम रब का शुक्र अदा नहीं हो सकता जिसकी तौफ़ीक से तीन चार साल क़ब्ल यह किताब ज़ेवरे तब्बे से आरास्ता हुई थी, यह उसी रब्बे करीम का इन्ज़ाम है कि किताब को क़बूलियत मिली और बहुत से अल्लाह के बंदों को इससे नफ़ा पहुंचा, यह भी महज़ उसका फ़ूल था कि हज़रत मुसन्निफ़ नौवरल्लाहु मरक़दहू की हयाते मुबारका में यह किताब शाए हुई और हज़रत रहो इसको देखकर मस्तुर हुए।

किताब का दूसरा एडीशन नई उर्दू कम्पोज़िंग और तस्हीहात के साथा शाए किया गया था, अब इसको हिंदी कम्पोज़िंग कराकर नए तरीके से शाए किया जा रहा है, अल्लाह तआला इसकी क़बूलियत और इफ़ादियत को और ज़्यादा करे, और इस नाकारा की मग़फिरत व नजात का ज़रीआ फ़रमाए।

इस एडीशन के लिये खास तौर पर अज़ीज़ान अज़ीजुल

क़दर मौलवी मुख्तार अहमद नदवी سल्लमहुल्लाहु तआला (मुदर्रिस मदरसा ज़ियाउल उलूम), मौलवी मतिक अनवर कमाल नदवी और मौलवी रहमतुल्लाह नदवी (मुदर्रिस मदरसा फ़लाहुल मुस्लिमीन) का शुक्रिया अदा किया जाता है, जिन्होंने पुरुफ़ की तस्हीह की और किताब की इशाअत के लिये मेहनत की थी (उर्दू एडीशन के लिये), और साथ ही साथ जनाब मुहम्मद रैहान का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इस किताब की हिंदी कम्पोज़िंग को अपनी नज़रे सानी से नवाज़ा और पुरुफ़ की तस्हीह की, अल्लाह तआला इन सबको अज्ञ अता फ़रमाए ।

**बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी**  
दारे अरफ़ात, दाइरए शाह इल्मुल्लाह राए बरैली ।

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

# वलादत बा सआदत

हमारे नबी सल्ला० मौसमे बहार में दो शंबा के दिन  
9/ रबीउल अव्वल<sup>(1)</sup>, सन्ने आमुल फील<sup>(2)</sup>, अप्रैल 571 ई०  
बअ़द अज़ सु़क्त व क़ब्ल अज़ तुलूए आफ़ताब पैदा हुए,  
हुजूर सल्ला० अपने वालिदैन के अकलौते फ़रज़द थे<sup>(3)</sup>,  
वालिद बुजुर्गवार का आंहज़रत सल्ला० की पैदाइश से पहले  
इतिकाल हो गया था।<sup>(4)</sup>

अब्दुल मुल्लिब आंहज़रत सल्ला० के दादा ने खुद भी  
यतीमी का ज़माना देखा था, अपने 24/ साला नौजवान प्यारे

(1) इने इस्लाक ने 12 रबीउल अव्वल की तारीख नक्ल की है, इने हिशाम जि०१, स०१७१, सहीह रिवायत में दो शंबा के दिन की सराहत मौजूद है सहीह मुस्लिम किताबुस सियाम, बाब इस्तिहबाब सियामि सलासति अव्यामिन कुल्लि शहर।

(2) सीरत इने हिशाम जि०१, स०१७१, आमुल फील की रिवायत तिर्मिज़ी ने सुनन की किताबुल मनाकिब में नक्ल की है और इसकी तहसीन भी फरमाई है।

(3) ‘रहमतुल लिलआलभीन’ काज़ी सुलैमान साहब मंसूरपूरी रहा।

(4) मुसन्नफ अब्दरज्जाक जि०५, स०३१७, मुस्तदरक हाकिम २,५,६ हाकिम ने इस रिवायत को मुस्लिम की शर्त पर करार दिया है और इमाम ज़हबी ने तौसीक फरमाई है।

फरज़ंद अब्दुल्लाह की इस यादगार के पैदा होने की खबर सुनते ही घर में आए और बच्चा को खानए कअूबा में ले गए और दुआ मांग कर यापस लाए,<sup>(1)</sup> सातवें दिन कुर्बानी की और तमाम कुरैश की दायत की, दायत खाकर लोगों ने पूछा कि आपने बच्चे का नाम क्या रखा, अब्दुल मुत्तलिब ने कहा “**مُحَمَّدٌ**” लोगों ने तअ़ज्जुब से पूछा कि आपने अपने खानदान के सब मुरब्बजा नामों को छोड़ कर यह नाम क्यों रखा? कहा मैं चाहता हूं कि मेरा बच्चा दुन्या भर की सताइश और तअरीफ का शायान करार पाए।<sup>(2)</sup>

### आयामे रजाअत

सबसे पहले आंहज़रत सल्ल० को आपकी वालिदा ने और दो तीन रोज़ के बाद सुवैबा ने दूध पिलाया, जो अबू लहब की लौंडी थी<sup>(3)</sup> उस ज़माना में दस्तूर था कि शहर के रुअसा और शुरफ़ा शीर खार बच्चों को अतराफ़ के कस्बात और देहात में भेज देते थे, यह रिवाज इस ग़र्ज़ से था कि बच्चे बहुओं में पल कर फसाहत का जौहर पैदा करते थे, और अरब की ख़ालिस खुसूसीयात महफूज़ रहती थीं आंहज़रत सल्ल० की वलादत के चंद रोज़ बाद कबीलए हवाज़िन की चंद औरतें बच्चों की तलाश में आई, उनमें हज़रत हलीमा सअ़दिया भी थीं, इत्तिफ़ाक से उनको कोई

(1) सीरिया इब्ने हिशाम 1-160, तबकाते इब्ने सअूद 1-103, तहजीब तारीखे दमिश्क 1-284

(2) तहजीब तारीखे दमिश्क 1-282, अलविदाया बन्निहाया 2-264

(3) सहीइ बुखारी किताबुन निकाठ, बाब ला यतज़ब्बज अक्सर मिन अरबज़ के बाब वाला बाब

बच्चा हाथ न आया, आंहज़रत सल्ल० की वालिदा ने उनको मुकर्रर करना चाहा, तो उनको ख्याल आया कि यतीम बच्चा को लेकर क्या करूँगी, लेकिन खाली हाथ भी न जा सकती थीं, इसलिये हज़रत आमिना की दरख्यास्त कबूल की और आंहज़रत सल्ल० को लेकर गई, दो बरस के बाद हलीमा आप सल्ल० को मक्का में लाई और आपकी वालिदा माजिदा के सिपुर्द किया, लेकिन चूंकि उस ज़माना में बबा फैली हुई थी, आपकी वालिदा ने फ़रमाया कि वापस ले जाओ, दोबारा घर में लाई<sup>(1)</sup> हज़रत हलीमा के साथ आंहज़रत सल्ल० को बेइंतिहा मुहब्बत थी, हज़रत हलीमा के शौहर यअ़नी आंहज़रत सल्ल० के रज़ाई बाप का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा है वह आंहज़रत सल्ल० की बेअ़सत के बाद मक्का आए, आंहज़रत सल्ल० से मुलाक़ात की और कहा यह तुम क्या कहते हो? आपने फ़रमाया हाँ वह दिन आएगा कि मैं आपको दिखाऊँगा कि मैं सच कहता था, हारिस मुसलमान हो गए।<sup>(2)</sup>

## वालिदा और दादा की वफ़ात और चचा अबू तालिब की किफ़ायत

आंहज़रत सल्ल० की उम्र जब छः बरस की हुई तो

(1) सीरियर सूलो जि�01, स0172-173, हज़रत हलीमा सअ़दिया की रज़ाज़त का ज़िक्र मशहूर आम है। अस्हाबे सियर ने इसका तज़किरा किया है, इसके अलावा हाकिम ने मुस्तदरक 2-216 में, इमाम अहमद ने मुस्नद 4-184 में, दारभी ने सुनन 1-8 में, तबरानी ने मोअ़ज़म में और इब्ने हब्बान ने मवारिदुज़ज़ाज़ान में हज़रत हलीमा की रज़ाज़त बयान फ़रमाई है। और शक़क़े सद्र का मशहूर वाकिआ जो तुफूलत में पेश आया, बनू सअ़द में क्याम के दौरान पेश आया था। इस वाकिआ को इमाम मुस्तिम रह० ने अपनी सहीह में बयान फ़रमाया है। किताबुल ईमान बाबुल इस्ता बेरसूलिल्लाह सल्ल०। (2) अल इसाबा इब्ने हजर असक़लानी जि�01, स0 283

आपकी वालिदा आपको लेकर मदीना गई, चूंकि आंहज़रत सल्ल० के दादा का ननिहाल खानदाने नज्जार में था, वहीं ठहरीं, इस सफ़र में उम्मे ऐमन भी साथ थीं, जो आंहज़रत सल्ल० की दाया थीं, एक महीना तक मदीना में मुक़ीम रहीं, वापस आते वक़्त जब मक़ामे अबवा पहुंचीं तो उनका इंतिकाल हो गया और यहीं मदफून हुई, उम्मे ऐमन आंहज़रत सल्ल० को लेकर मक्का आई।<sup>(1)</sup>

वालिदा माजिदा के इंतिकाल के बाद अब्दुल मुत्तलिब ने आंहज़रत सल्ल० को अपने दामने तरबियत में लिया हमेशा आपको साथ रखते थे।<sup>(2)</sup> अब्दुल मुत्तलिब ने 82/बरस की उम्र में वफ़ात पाई, उस वक़्त आंहज़रत सल्ल० की उम्र आठ बरस की थी।<sup>(3)</sup> अब्दुल मुत्तलिब का जनाज़ा उठा तो आंहज़रत सल्ल० भी साथ थे, और फ़र्ते मुहब्बत से रोते थे, अब्दुल मुत्तलिब ने मरने के वक़्त अपने बेटे अबू तालिब को आंहज़रत सल्ल० की तरबियत सिपुर्द की, अबू तालिब आंहज़रत सल्ल० से इस क़दर मुहब्बत रखते थे कि आप के मुकाबला में अपने बच्चों की परवाह नहीं करते थे, सोते तो आंहज़रत सल्ल० को साथ लेकर सोते और बाहर जाते तो साथ लेकर जाते।<sup>(4)</sup>

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-155, तबक़ाते इब्ने सअद 1-116, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहकी 1-188

(2) मुसन्नफ अब्दुरज़ज़ाक 5-318

(3) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहकी जि02, स022-अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स025

(4) सीरतुन्नबी जि01, स0177

ग़ालिबन जब आपकी उम्र दस बारह बरस की हुई तो आप सल्ल० ने बकरियां चराई<sup>(1)</sup>। यह आलम की गल्ला बानी का दीबाचा था, ज़मानए रिसालत में आप सल्ल० इस सादा और पुर लुत्फ मशग़्ला का ज़िक्र फ़रमाया करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल० सहाबा रज़ि० के साथ जंगल में तशरीफ़ ले गए, सहाबा बेरियां तोड़कर खाने लगे, आपने फ़रमाया जो ज्यादा सियाह हो जाती हैं ज्यादा मज़े की होती हैं। यह मेरा उस ज़माना का तजर्बा है जब मैं बचपन में यहां बकरियां चराया करता था।<sup>(2)</sup>

अबू तालिब तिजारत का कारोगार करते थे, कुरैश का दस्तूर था, साल में एक दफ़ा तिजारत की ग़र्ज़ से शाम जाया करते थे, आंहज़रत सल्ल० की उम्र तक़रीबन बारह बरस की होगी कि अबू तालिब ने हसबे दस्तूर शाम का इरादा किया, सफ़र की तकलीफ़ या किसी और वजह से वह आंहज़रत सल्ल० को साथ नहीं ले जाना चाहते थे, लेकिन आंहज़रत सल्ल० को अबू तालिब से इस क़दर मुहब्बत थी कि जब अबू तालिब चले तो आप सल्ल० उनसे लिपट गए और अबू तालिब ने आप सल्ल० की दिल शिकनी गवारा न की और साथ ले लिया।<sup>(3)</sup>

## हरबुल फुज्जगर और हलाफुल फुजूल में शिक्षा

अरब में इस्लाम के आग़ाज़ तक लड़ाइयों का जो

(1) सहीहुल बुखारी किताबुल इजारा, बाब रज्युल ग़नम अला करारीत।

(2) तबकाते इन्स अज़्द जि�०१, स०८०

(3) सुनन तिर्मिज़ी बाबुल मनाकिब, बाब मा जाझू फ़ी बदइन्नुबूव्वा सल्ल०।

मुतवातिर सिलसिला चला आता है, उनमें जंगे फुज्जार सबसे ज्यादार मशहूर और ख़तरनाक थी, यह लड़ाई कुरैश और कैस के क़बीला में हुई थी। चूंकि कुरैश इस जंग में बरसरे जंग थे इसलिये रसूलुल्लाह सल्ल० ने भी शिर्कत फ़रमाई लेकिन आप सल्ल० ने किसी पर हाथ नहीं उठाया।<sup>(1)</sup>

लड़ाइयों के मुतवातिर सिलसिला ने सैकड़ों घराने बर्दाद कर दिये थे और क़त्ल व सफ़्फ़ाकी मौरुसी अख़लाक बन गए थे, यह देखकर बअूज़ तबीअ़तों में इस्लाह की तहरीक पैदा हुई, जंगे फुज्जार से लोग वापस फिरे तो जुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जो रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा और ख़ानदान के सरकर्दा थे, यह तज्वीज़ पेश की, चुनांचे ख़ानदाने हाशिम, ज़हरा और तीम, अब्दुल्लाह बिन जदअ़ान के घर में जमा हुए और मुआहदा हुआ कि हम में से हर शख़ मज़लूम की हिमायत करेगा और कोई ज़ालिम मक्का में न रहने पाएगा।<sup>(2)</sup> आँहज़रत सल्ल० इस मुआहदा में शरीक थे, और अहदे नुबूव्वत में फ़रमाया करते थे कि मुआहदा के मुक़ाबला में अगर मुझको सुख़र रंग के ऊंट भी दिये जाते तो मैं न बदलता और आज भी ऐसे मुआहदा के लिये कोई बुलाए तो मैं हाज़िर हूं।<sup>(3)</sup>

अबू तालिब के साथ आप सल्ल० बचपन में भी बअूज़

(1) सीरत इब्न हि�शाम 1-195 - अर्रौजुल अन्फ सुहैली 1,120

(2) तबकाते इब्ने सअूद जि01, स082

(3) मुस्तदरक हाकिम 2,219-220 - इमाम ज़हबी ने इस रिवायत की तस्हीह की है।

इमाम बुखारी ने अल अदबुल मुफिरद और बैहकी ने सुनन में इसकी तख्तीज की है।

तिजारती सफर कर चुके थे हर किस्म का तजब्बा हासिल हो चुका था और आप के हुस्ने मुआमला की शोहरत हर तरफ़ फैल चुकी थी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिल हम्साऊ एक सहाबी रज़ि० बयान करते हैं कि बेअःसत से पहले मैंने आंहज़रत सल्ल० से ख़रीद फ़रोख़्त का कोई मुआमला किया था कुछ मुआमला हो चुका था कुछ बाक़ी था, मैंने वादा किया कि फिर आऊंगा, इत्तिफ़ाक़ से तीन दिन तक मुझको अपना वादा याद न आया, तीसरे दिन जब वादा गाह पर पहुंचा तो आंहज़रत सल्ल० को उसी जगह मुंतज़िर पाया, लेकिन इस वादा ख़िलाफ़ी से आपकी पेशानी पर बल तक न आया, सिफ़ इस कदर फ़रमाया कि तुमने मुझे ज़हमत दी, मैं इसी मकाम पर तीन दिन से मौजूद हूं।<sup>(1)</sup>

### हज़रत ख़दीजा रज़ि० से रिश्तए हज़िदवाज

मक्का में निहायत शरीफ़ ख़ानदान की एक बेवा औरत ख़दीजा थीं, वह बहुत मालदार थीं, अपना रूपया तिजारत में लगाए रखती थीं, उन्होंने आंहज़रत सल्ल० की खूबियां और औसाफ़ सुनकर और आप सल्ल० की सच्चाई, दियानतदारी, सलीक़ा शिआरी का हाल मअ़लूम करके खुद दरख़्तास्त कर दी कि उनके रूपया से तिजारत करें, आंहज़रत सल्ल० उनका माल लेकर तिजारत को गए, इस तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ, इस सफर में हज़रत ख़दीजा रज़ि० का गुलाम मैसरा भी था, उसने आंहज़रत सल्ल० की उन तमाम खूबियों

(1) सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल बजूद,

और बुजुर्गियों का ज़िक्र ख़दीजा रज़ि० को सुनाया जो सफ़र में खुद देखी थीं, इन औसाफ को सुन कर ख़दीजा रज़ि० ने दरख्वास्त करके आंहज़रत सल्ल० से निकाह कर लिया, हालांकि हज़रत ख़दीजा रज़ि० इससे पहले बड़े बड़े सरदारों की दरख्वास्ते निकाह रद्द कर चुकी थीं।<sup>(1)</sup>

### कअबा की तअमीरे नौ और एक बड़े फ़िल्मे का सद्दृढ़े बाब

उन दिनों लोगों के दिलों पर आंहज़रत सल्ल० की नेकी और बुजुर्गी का इतना असर था कि वह आंहज़रत सल्ल० को नाम लेकर नहीं बुलाते थे बल्कि सादिक या अमीन कहकर पुकारते थे, आंहज़रत सल्ल० की उम्र मुबारक 35/ साल की थी जब कुरैश ने कअबा की इमारत को (जिसकी दीवारें सैलाब के सदमे से फट गई थीं) अज़सरे नौ तअमीर कराया<sup>(2)</sup> इमारत के बनाने में तो सब ही शामिल थे मगर जब हजरे अस्वद के क़ाइम करने का मौक़ा आया तो सख्त इख्लिताफ़ हुआ, क्योंकि हर एक यही चाहता था कि यह काम उसी के हाथ सर अंजाम पाए, नौबत यहां तक पहुंची कि तलवारें खिंच गई, अरब में दस्तूर था कि जब कोई शख्स जान दने की क़स्म खाता था तो प्याला में खून

(1) हज़रत ख़दीजा रज़ि० के तिजारती माल को लेकर सफ़रे शाम का तज़किरा हाकिम ने मुस्तदरक में किया है 3,182, और इमाम ज़हबी ने इसकी तस्हीह की है। निकाह का भी इमाम हाकिम ने ज़िक्र किया है। और ज़रकानी ने इसके हालात तफसील से बयान फरमाए हैं। सहीह बुखारी में ज़बाने नुबूव्वत से इनके फज़ाइल का तज़किरा मौजूद है,

(2) मुसन्नफ अब्दुरज़ाक 5-102, इमाम ज़हबी ने इसकी सनद को सही करार दिया है।

भरे कर उसमें उंगलियां डुबो लेता था, इस मौका पर भी बअूज़ दअवेदारों ने यह रस्म अदा की, चार दिन तक यह झगड़ा बरपा रहा, पांचवें दिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा ने जो कुरैश में सबसे ज्यादा मुअम्मर था राए दी कि कल सुल्ह को जो शख्स सबसे पहले हरम में आए वही सालिस करार दें दिया जाए, सबने यह राए तस्लीम की, खुदा की कुदरत इत्तिफ़ाक़न आंहज़रत सल्ल० तशरीफ ले आए, आंहज़रत सल्ल० को देखना था कि “هَذَا الْأَمِينُ رَضِيَّنَا”<sup>(1)</sup> के नज़रे लग गए (अमीन आ गया हम सब उसके फैसले पर रज़ामंद हैं) आंहज़रत सल्ल० ने अपनी ज़ीरकी और मुआमला फहमी से ऐसी तदबीर की कि सब खुश हो गए, आंहज़रत सल्ल० ने एक चादर बिछाई उस पर पत्थर अपने हाथ से रख दिया फिर हर एक क़बीला के सरदार को कहा कि चादर को पकड़ कर उठाएं, इसी तरह उस पत्थर को वहां तक लाए जहां क़ाइम करना था, आंहज़रत सल्ल० ने फिर उसे उठाकर कोने पर और तवाफ़ के सिरे पर लगा दिया<sup>(1)</sup> आंहज़रत सल्ल० ने इस मुख्तसर तदबीर से एक ख़ूँख्वार जंग का इंसिदाद कर दिया, वर्ना उस वक्त के अहले अरब में रेवड़ के पानी पिलाने, घोड़ों के दौड़ाने, अशआर में एक कौम से दूसरी कौम को अच्छा बताने, जैसी ज़रा ज़रा सी बातों पर ऐसी जंग होती कि बीसियों बरस तक ख़त्म होने में न आती थी।

(1) मुस्लदे अहमद 3,425, मुस्तदरक, हाकिम 3-458 व कुतुबे सियर

## आसमानी तरवियत

आप सल्ल० बचपन और शबाब में भी जबकि मंसबे नुबूव्वत से मुम्ताज़ नहीं हुए थे, मरासिमे शिर्क से हमेशा मुजतनिब रहे, एक दफ़ा कुरैश ने आप सल्ल० के सामने खाना लाकर रखा, यह खाना बुतों के चढ़ावे का था, जानवर जो ज़िब्ब किया गया था किसी बुत के नाम पर ज़िब्ब किया गया था, आप सल्ल० ने खाने से इंकार कर दिया<sup>(1)</sup>। आप सल्ल० ने नुबूव्वत से पहले बुत परस्ती की बुराई शुरू कर दी थी और जिन लोगों पर आप सल्ल० को एतिमाद था उनको इस बात से मना फ़रमाते थे।<sup>(2)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल० जिस ज़माने में पैदा हुए, मक्का बुत परस्ती का मर्कज़े अअूज़म था, खुद खानए कअूबा में तीन सौ साठ बुत थे, रसूलुल्लाह सल्ल० के खानदान का तमग़ए इम्तियाज़ सिफ़ इस क़दर था कि इस बुत कदा के मुतवल्ली और कलीद बरदार थे, बई हमा आंहज़रत सल्ल० ने कभी बुतों के आगे सर नहीं झुकाया, दीगर रुसूमे जाहिलीयत में भी कभी शिर्कत नहीं की, कुरैश ने इस बिना पर कि इनको आम लोगों से हर बात में मुम्ताज़ रहना चाहिये, यह काएदा क़रार दिया था कि अथ्यामे हज में कुरैश के लिये अरफ़ात जाना ज़रूरी नहीं और वह लोग जो बाहर से आएं वह कुरैश का लिबास इखिलायार करें, वर्ना उनको बरहना होकर

(1) सहीह बुखारी में इस तरह के वाकिआत मज़कूर हैं, किताबुल भनाकिब, भनाकिबे ज़िक्र ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ل

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-216, मोअूज़मे कबीर तबरानी 5-88

कअबा का तवाफ़ करना होगा, चुनांचे इसी बिना पर तवाफ़े बरहना का आम रिवाज हो गया था। लेकिन आंहज़रत सल्ल० ने इन बातों में कभी अपने खानदान का साथ न दिया।<sup>(1)</sup>

अरब में अफ़साना गोई का आम रिवाज था, रातों को लोग तमाम अशग़ाल से फारिग़ होकर किसी मकाम में जमा होते थे, एक शख्स जिसको इस फ़न में कमाल होता था दासतान शुरू करता, लोग बड़े ज़ौक़ व शौक़ से रात रात भर सुनते थे। बचपन में एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल० ने भी इस जलसा में शरीक होना चाहा था लेकिन इत्तिफ़ाक़ से राह में एक शादी का कोई जलसा था देखने के लिये खड़े हो गए वहीं नींद आ गई, उठे तो सुब्ल हो चुकी थी, एक दफ़ा और ऐसा ही इत्तिफ़ाक़ हुआ उस दिन भी यही वाकिआ पेश आया, चालीस बरस की मुद्दत में सिर्फ़ दो दफ़ा इस किस्म का इरादा किया लेकिन दोनों दफ़ा तौफ़ीके इलाही ने बचा लिया<sup>(2)</sup> कि ‘‘तेरी शान इन मशागिल से बालातर है।’’

### इंसानियत की सुब्ले सादिक़ और बेअसते मुबारक

बेअसत का ज़माना जिस क़दर क़रीब होता गया, आंहज़रत सल्ल० के मिज़ाज में ख़ल्वत गुज़ीनी की आदत बढ़ती जाती थी, आंहज़रत सल्ल० अक्सर पानी और सत्तू लेकर शहर से कई कोस पर सुनसान जगह कोहे हिरा के

(1) इसका ज़िक्र भी बुखारी में मौजूद है।

(2) अर्रोज़ुल अनफ़ सहेली, 1,112

एक ग़ार में जा बैठते, इबादत किया करते, इस इबादत में अल्लाह का ज़िक्र भी शामिल था, और कुदरते इताहीया पर ग़ौर व फ़िक्र भी, जब तक पानी और सत्तू ख़त्म न हो जाए शहर न आया करते, अब आंहज़रत सल्ल0 को ख़्वाब नज़र आने लगे, ख़्वाब ऐसे सच्चे होते थे कि जो कुछ रात को ख़्वाब में देख लिया करते, दिन में वैसा ही जुहूर में आ जाता, एक दिन जब कि आप सल्ल0 ने हसबे मअ़मूल ग़ारे हिरा में थे कि फ़रिशता नज़र आया, उसने कहा पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने आप सल्ल0 को इस ज़ोर से दबोचा कि आपकी सारी ताक़त सफ़ हो गई, फिर उसने आप सल्ल0 को छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं फिर उसने आप सल्ल0 को पूरी ताक़त से दबोचा फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं उसने फिर पूरी कूव्वत से दबोचा और छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फिर वही जवाब दिया, उसने यह आयतें पढ़ीं:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ، خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلْقٍ، إِقْرَأْ  
وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ، الَّذِي عَلِمَ بِالْقَلْمَنِ، عَلِمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ  
يَعْلَمْ ۝

“शुरू है अल्लाह के नाम से जो कमाले रहमत और निहायत रहम वाला है। पढ़िये अपने

परवरदिगार के नाम से जिसने (सब कुछ) पैदा किया, जिसने इंसान को पानी के कीड़े से बनाया, (हाँ) पढ़ते चले जाइये आपका परवरदिगार तो बहुत करम वाला है, जिसने कलम के ज़रीआ से तअलीम दी (जिसने) इंसान को सब कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था।”

इस वाकिआ के बाद नबी करीम सल्लू फौरन घर आए और लेट गए, बीवी से कहा कि मुझ पर कपड़ा डाल दो, जब तबीअत में ज़रा सुकून हुआ तो बीवी से फरमाया कि मैं ऐसे वाकिआत देखता हूं कि मुझे अपनी जान का डर हो गया है, हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० ने कहा, नहीं आप को डर काहे का, मैं देखती हूं कि आप अकरबा पर शफ़क़त फरमाते हैं, सच बोलते हैं, रांडों, यतीमों, बेकसों की दस्तगीरी करते हैं, मेहमान नवाज़ी फरमाते हैं, अस्ल मुसीबत ज़दों से हमदर्दी करते हैं, खुदा आप सल्लू को कभी ग़मगीन न फरमाएंगा, अब ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० को खुद भी अपने इत्मीनाने क़ल्ब की ज़रूरत हुई, इसलिये वह नबी करीम सल्लू को साथ लेकर अपने रिशता के चरेरे भाई वरका बिन नौफ़ल के पास गई, जो इब्रानी ज़बान जानते थे और तौरेत व इंजील के माहिर थे, हज़रत ख़दीजा रज़ि० की दरख़्वास्त पर नबी करीम सल्लू ने वरका बिन नौफ़ल के सामने जिब्रील अलै० के आने, बात करने का वाकिआ बयान फरमाया, वरका झट बोल उठे यही वह नामूस है जो

हज़रत मूसा अलौ० पर उतरा था, काश मैं जवान होता, काश मैं उस वक्त तक ज़िंदा रहता, जब कौम आपको निकाल देगी, रसूलुल्लाह सल्ल० ने पूछा, क्या कौम मुझको निकाल देगी? वरक़ा बोले हाँ! इस दुन्या में जिस किसी ने ऐसी तअ़्लीम पेश की उससे शुरू में अदावत ही होती रही, काश मैं हिज्रत तक ज़िंदा रहूँ और हुजूर की नुमायां खिदमत करूँ।<sup>(1)</sup>

एक दिन रुहुल अमीन नबी करीम सल्ल० को दामने कोह में लाए, नबी करीम सल्ल० के सामने खुद वुजू किया और आंहज़रत सल्ल० ने भी वुजू किया फिर दोनों ने मिल कर नमाज़ पढ़ी, रुहुल अमीन ने नमाज़ पढ़ाई।<sup>(2)</sup>

### इस्लाम की तबलीग़ व दावत

नबी करीम सल्ल० ने तबलीग़ शुरू कर दी, ख़दीजा रज़ि० (बीवी) अली रज़ि० (भाई उम्र आठ साल) अबू बक्र रज़ि० (दोस्त) जैद बिन हारसा रज़ि० (मौला) पहले ही दिन मुसलमान हो गए, उन अशख़ास का ईमान लाना जो आंहज़रत सल्ल० की चालीस साला ज़रा ज़रा सी हरकात व सकनात से वाकिफ़ थे, नबी करीम सल्ल० की अअूला सदाक़त और रास्तबाज़ी की रौशन दलील है, बिलाल, अम्र बिन अब्सा, ख़ालिद बिन सअ़द बिन झ़ास भी चंद रोज़ के

(1) पूरा वाकिआ सहीह बुखारी के बाप बदूल वह्य और सहीह मुस्लिम के किताबुल ईमान बाब बदूल वह्य में मुफ्सिल मज़कूर है, इसकी भी सराहत है कि उस वक्त आप सल्ल० की उम्र शरीफ़ चालीस साल थी।

(2) अल अंसाब लिलबलाज़री 1-111

बाद ही मुसलमान हो गए अबू बक्र रजि० बड़े मालदार थे, तिजारत करते थे, मक्का में उनकी दुकान बज़्ज़ाज़ी की थी, लोगों से उनका बहुत मेल मिलाय था, उनकी तबलीग से उस्मान ग़नी रजि०, जुबैर रजि०, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रजि०, सलहा रजि०, सअद बिन अबी वक़्कास रजि० मुसलमान हुए, फिर अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह इब्नुल जराह रजि०, (जिनका लक्ख बाद में अमीनुल उम्मा हुआ) अब्दुल असद बिन बिलाल, उस्मान बिन मज़ून, आमिर बिन हैरा अज़दी, अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, साइब बिन उस्मान बिन मज़ून और अरकम मुसलमान हुए, औरतों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रजि० के बाद नबी सल्ल० के चचा अब्बास की बीवी उम्मुल फ़ज़्ल रजि०, अस्मा बिंते उमैस रजि०, अस्मा बिंते अबू बक्र रजि० और फ़ातिमा ख़बाहर उमर फारूक रजि० ने इस्लाम कबूल किया।<sup>(1)</sup>

उन दिनों मुसलमान पहाड़ की घाटी में जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल० हज़रत अली रजि० के साथ किसी दर्दा में नमाज़ पढ़ रहे थे, इत्तिफ़ाक से आप सल्ल० के चचा अबू तालिब आ निकले, उनको इस जदीद तरीके इबादत पर तअ्ज्जुब हुआ, खड़े हो गए और बग़ौर देखते रहे, नमाज़ के बाद पूछा यह कौनसा दीन है? आप सल्ल०

(1) सहीह बुखारी, सुनन लिर्झी, मुसन्नफ अब्दुरज्जाक, मुस्तदरक हाकिम और मुसन्नफ इन अबी शैबा की सहीह रियायत में इन हज़रत के इस्लाम में शर्ह तक़्मुम का ज़िक्र मौजूद है।

ने फ़रमाया कि हमारे दादा इब्राहीम का यही दीन था, अबू तालिब ने कहा मैं इसको इखिलयार तो नहीं कर सकता लेकिन तुमको इजाज़त है और कोई शख्स तुम्हारा मुज़ाहिम न हो सकेगा।<sup>(1)</sup>

तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल० ने निहायत राज़दारी के साथ फ़र्ज़े तबलीग़ अदा किया, लेकिन अब आफ़ताबे रिसालत बुलंद हो चुका था साफ़ हुक्म आया “فَاصْدِعْ مَمْأُوتُ مُرْبُّ” और तुझको जो हुक्म दिया गया है, साफ़ साफ़ कह दे” और नीज़ यह हुक्म आया “وَأَنْذِلْ عَثِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ” (और अपने नज़दीक के ख़ानदान वालों को खुदा से डरा)<sup>(2)</sup>

एक रोज़ आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि दावत का सामान करो, यह दरहकीकत तबलीग़ इस्लाम का पहला मौक़ा था, तमाम ख़ानदाने अब्दुल मुल्तलिब मदऊ किया गया। हम्ज़ा, अबू तालिब, अब्बास सब शरीक थे, आंहज़रत सल्ल० ने खाने के बाद खड़े होकर फ़रमाया कि मैं वह चीज़ लेकर आया हूं जो दीन व दुन्या दोनों की कफील है, इस बारे गिरां के उठाने में कौन मेरा साथ देगा, तमाम मजलिस में सन्नाटा था, दफ़अ़तन हज़रत अली रज़ि० ने उठकर कहा “गो मुझको आशोबे चश्म है, गो भेरी टांगें पतली हैं और गो मैं सबसे नौ उम्र हूं ताहम मैं आप का साथ दूंगा” कुरैश के लिये यह एक हैरत अंगेज़

(1) सीरतुन्बी 1-206

(2) सीरतुन्बी 1-210

मंज़र था कि दो शख्स (जिनमें एक तेरह साल का नौजवान है) दुन्या की किस्मत का फैसला कर रहे हैं, हाज़िरीन को बेसाख्ता हंसी आ गई, लेकिन आगे चल कर ज़माना ने बता दिया कि यह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सच था।<sup>(1)</sup>

एक रोज़ नबी करीम सल्ल0 ने कोहे सफ़ा पर चढ़ के लोगों को पुकारना शुरू किया, जब सब जमा हो गए तो नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया “तुम मुझे बताओ कि तुम मुझे सच्चा समझते हो या झूटा जानते हो?” सबने एक आवाज़ से कहा कि “हमने कोई बात ग़लत या बेहूदा आपके मुंह से नहीं सुनी, हम यकीन करते हैं कि आप सादिक और अभीन हैं।” नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: देखो मैं पहाड़ की छोटी पर खड़ा हूं और तुम उसके नीचे हो, मैं पहाड़ के इधर भी देख रहा हूं और उधर भी नज़र कर रहा हूं अगर मैं कहूं कि रहज़नों का एक मुसल्लह गिरोह दूर से नज़र आ रहा है जो मक्का पर हमला आवर होगा क्या तुम इसका यकीन कर लोगे? लोगों ने कहा बेशक! क्योंकि हमारे पास आप जैसे रास्त बाज़ आदमी के झुटलाने की कोई वजह नहीं, खुसूसन जबकि वह ऐसे बुलंद मकाम पर खड़ा है कि दोनों तरफ़ देख रहा है। नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: यह सब कुछ समझाने के लिये एक मिसाल थी,

(1) सीरतुन्नबी 1-210, तारीखे तबरी व तफसीरे तबरी और अल्लामा शिल्पी रह0 ने यह वज़ाहत भी कर दी है कि यह रिवायत ज़ोअफ़ से खाली नहीं, इमाम अहमद ने मुस्लिम में, इब्ने कसीर ने तफसीर में, इब्ने सज़्बद ने तबक़त में और दूसरे अस्हावे सियर ने भी इस रिवायत को ज़िक्र किया है, लेकिन इसकी कोई सनद ज़ोअफ़ से खाली नहीं है।

अब यकीन कर लो कि मौत तुम्हारे सर पर आ रही है और तुम्हें खुदा के सामने हाज़िर होना है और मैं आलमे आखिरत को भी ऐसा ही देख रहा हूं जैसा कि दुन्या पर तुम्हारी नज़र है, इस दिल नशीं वअ़ज़ से मतलब नबी करीम सल्ल० का यह था कि नुबूव्वत के लिये एक मिसाल पेश करें कि किस तरह एक शख्स आलमे आखिरत को देख सकता है, जबकि हज़ारों अशख़ास नहीं देख सकते।<sup>(1)</sup>

### तौहीद की बाज़ ग़श्त और मुश्किलीन की ईज़ा रसानी

अब मुसलमानों की मुअ़तद बेहजमाअत तैयार हो गई थी जिनकी तअ़दाद चालीस से ज़्यादा थी, आपने हरमे कअूबा में जाकर तौहीद का एलान किया, कुफ़्फ़ार के नज़्दीक यह हरम की सबसे बड़ी तौहीन थी, इसलिये दफ़अ़तन एक हंगामा बरपा हो गया और हर तरफ़ से लोग आप सल्ल० पर टूट पड़े, हारिस इब्ने अबी हाला (जो पहले शौहर से हज़रत ख़दीजा रज़ि० के साहबज़ादे थे) घर में थे, उनको ख़बर हुई दौड़े आए और आंहज़रत सल्ल० को बचाना चाहा लेकिन हर तरफ़ से उन पर तलवारें पड़ीं और वह शहीद हो गए, इस्लाम की राह में यह पहला खून था जिससे ज़मीन रंगीन हुई।<sup>(2)</sup>

अब नबी करीम सल्ल० ने सबको आम तौर पर समझाना शुरू किया, हर एक मेले में, हर एक गली कूचे में जा जा कर लोगों को तौहीद की खुबी बताते, बुतों, पत्थरों,

(1) यह रिवायत इज्माल के साथ सहीहैन में मौजूद है।

(2) अल इसाबा लिइब्ने हजर, ज़िक्रे हारिस बिन अबी हाला।

दरख्तों की पूजा से रोकते, आप लोगों को तत्त्वकीन फरमाते कि खुदा की ज़ात को नक्स से, ऐब से, आलूदगी से पाक समझें, इस बात का पुख्ता एतिकाद रखें कि ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, छोटे, बड़े सबके सब खुदा के पैदा किये हुए हैं, सब उसी के मुहताज हैं, दुआ कबूल करना, बीमार को सिहत व तंदुरुस्ती देना, मुरादें पूरी करना अल्लाह के इख्लायर में है, अल्लाह की मर्जी और हुक्म के बगैर कोई भी कुछ नहीं कर सकता, फरिशते और नबी भी उसके हुक्म के खिलाफ कुछ नहीं करते, अरब में उकाज़, उयैना और ज़िल मजाज़ के मेले बहुत मशहूर थे, दूर दूर से लोग वहां आया करते थे, नबी करीम सल्ल० इन मकामात पर जाते और मेले में आए हुए लोगों को इस्लाम की और तौहीद की दावत फरमाया करते थे।<sup>(1)</sup>

जब आंहज़रत सल्ल० ने एलाने दावत किया और बुत परस्ती की एलानिया मज़म्मत शुरू की तो कुरैश के चंद मुअ़ज़ज़ों ने अबू तालिब से आकर शिकायत की, अबू तालिब ने नर्मी से समझाकर रुख़स्त कर दिया, लेकिन चूंकि बिनाए निज़ाअ काइम थी, यअ़नी आंहज़रत सल्ल० अदाए फर्ज़ से बाज़ न आ सकते थे, इसलिये यह सिफ़ारत दोबारा अबू तालिब के पास आई, इसमें तमाम रुअसाए कुरैश यअ़नी उत्था बिन रबीअ़ा, शैबा, अबू सुफ़्यान, आस बिन

(1) इमाम तिर्मिज़ी ने सुनन में, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में, इमाम अहमद ने मुस्तद में और अस्लाबे सियर ने अपनी किताबों में इसका तज़किरा किया है, इमाम तिर्मिज़ी और इमाम ज़हबी ने हदीस की तस्लीह की है।

हिशाम, अबू जहल, वलीद बिन मुग़ीरा, आस बिन वाइल वगैरा शरीक थे, इन लोगों ने अबू तालिब से कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे मअबूदें की तौहीन करता है, हमारे आबा व अज्जदाद को गुमराह कहता और हमको अहमक ठहराता है, इसलिये या तो तुम बीच से हट जाओ या तुम भी मैदान में आओ कि हम दोनों में से एक का फैसला हो जाए, अबू तालिब ने देखा कि अब हालत नाजुक हो गई है, कुरैश अब तहम्मुल नहीं कर सकते और तन्हा कुरैश का मुकाबला नहीं कर सकता, आंहज़रत सल्लूल० से मुख्तसर लफ़ज़ों में कहा कि “जाने अम्म मेरे ऊपर इतना बार न डाल कि मैं उठा न सकूं।”

रसूलुल्लाह सल्लूल० के ज़ाहिरी पुश्त पनाह जो कुछ थे अबू तालिब थे, आंहज़रत सल्लूल० ने देखा कि अब उनके पाए सिवात में भी लग़ज़िश है, आपने आबदीदा होकर फ़रमाया कि खुदा की क़सम! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद लाकर रख दें तब भी मैं अपने फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा, खुदा या तू इस काम को पूरा करेगा या मैं खुद इस पर निसार हो जाऊंगा, आपकी पुर असर आवाज़ ने अबू तालिब को सख्त मुतअस्सिर किया, रसूलुल्लाह सल्लूल० से कहा “जा कोई शख्स तेरा बाल बीका नहीं कर सकता।”,<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्लूल० बदस्तूर दावते इस्लाम में मसरूफ़ रहे, कुरैश अगर्चे आंहज़रत सल्लूल० के कृत्ति का इरादा न कर सके

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी 86,87, मुस्तदरक हाकिम 3-577

लेकिन तरह तरह की अज़्यीयतें देते थे, राह में काटे बिछाते थे, नमाज़ पढ़ने में जिस्म मुबारक पर नजासत डाल देते थे, बद ज़बानियां करते थे।<sup>(1)</sup>

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० का चश्म दीद बयान है कि एक रोज़ नबी करीम सल्ल० ख़ानए कअब्बा में नमाज़ पढ़ रहे थे, उक़बा बिन अबी मुईत आया, उसने अपनी चादर को लपेट देकर रस्सी जैसा बनाया और जब नबी करीम सल्ल० सज्दा में गए तो चादर को हुजूर सल्ल० की गर्दन में डाल दिया और पेच पर पेच देने शुरू किये, गर्दने मुबारक बहुत भिंच गई थी ताहम हुजूर उसी इत्मीनाने क़ल्ब से सज्दा में पड़े हुए थे, इतने में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने धक्के देकर उक़बा को हटाया और ज़बान से यह आयत पढ़ कर सुनाईः “رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يُقُولَ ”<sup>رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ</sup> क्या तुम एक बुजुर्ग आदर्मी को मारते हो और सिफ़ इस जुर्म में कि वह अल्लाह को अपना परवरदिगार कहता है और तुम्हारे पास रौशन दलाइल लेकर आया है।” चंद शरीर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० से लिपट गए और उनको बहुत ज़द व कूब किया।<sup>(2)</sup>

एक दूसरी दफ़ा का ज़िक्र है कि नबी करीम सल्ल० ख़ानए कअब्बा में नमाज़ पढ़ने लगे, कुरैश भी सिहने कअब्बा में जा बैठे, अबू जहल बोला कि आज शहर में फ़लां जगह

(1) सीरहुन्नबी 1-221

(2) सहीहुल बुखारी बाब बुन्यानुल कअब्बा, बाब ज़िक्रे मा लकियन्नबीव्यु सल्ल० व अस्साबुहु, मिन कुरैश बिमकका

ऊंट ज़िब्ब हुआ है, ओझड़ी पड़ी हुई है, कोई जाए उठा लाए और इस (नबी करीम सल्ल0) के ऊपर धर दे, शकी उक़बा उठा, नजासत भरी ओझड़ी उठा लाया, जब नबी करीम सल्ल0 सज्दा में गए तो पुश्ते मुबारक पर रख दी, आंहज़रत सल्ल0 तो रब्बुल इज़्ज़त की जानिब मुतवज्जे हथे, कुछ खबर भी न हुई, कुफ़्फ़ार हँसी के मारे लोटे जाते थे और एक दूसरे पर गिरे जाते थे, इन्हे मसउद सहाबी रज़ि0 भी मौजूद थे, काफ़िरों का हुजूम देखकर उनका हौसला न पड़ा, मगर मअ़सूम सथियदा फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 आ गई, उन्होंने बाप की पुश्त से ओझड़ी को परे फेंक दिया और उन संग दिलों को सख्त सुस्त भी कहा।<sup>(1)</sup>

एक मर्तबा यह तै करने के लिये मज्जिस मुंअकिद हुई कि मुहम्मद सल्ल0 के मुतअल्लिक क्या बात कही जाए कि मक्का में बाहर से आने वाले उनसे बचें और दूर ही दूर रहें, एक ने कहा हम बतलाया करेंगे कि वह काहिन है, वलीद बिन मुग़ीरा (जो एक खुर्राट बुड़ा था) बोला मैंने बहुतेरे काहिन देखे हैं लेकिन कहां तो काहिनों की तुक बंदियां और कुजा मुहम्मद (सल्ल0) का कलाम, हमको ऐसी बात न कहनी चाहिये जिससे कबाइले अरब यह समझ लें कि हम झूट बोलते हैं, एक ने कहा हम इसे दीवाना बताया करेंगे, वलीद बोला, मुहम्मद (सल्ल0) को दीवानगी से क्या निस्बत है, एक बोला हम कहेंगे वह शाइर है, वलीद ने कहा हम

(1) सहीह बुखारी बाब बुनयानुल कअबा, बाब ज़िक्र मा लकियन्नबीयु सल्ल0 व अस्हाबुहू मिन कुरैश बिमक्का

जानते हैं कि शेअर क्या होता है, अस्नाफ़े सुख्खन हमको बखूबी मअ़्लूम हैं, मुहम्मद (सल्ल०) के कलाम को शेअर से ज़रा मुशाबहत नहीं, एक बोला हम बताया करेंगे कि वह जादूगर है, वलीद ने कहा जिस तहारत व लताफ़त व नफासत से मुहम्मद (सल्ल०) रहता है वह जादूगरों में कहां होती है, जादूगरों की मनहूस सूरतें और नजिस आदतें अलग ही होती हैं, अब सबने आजिज़ होकर कहा चचा तुम ही बताओ कि फिर क्या किया जाए? वलीद ने कहा सच तो यह है कि मुहम्मद (सल्ल०) के कलाम में अजीब शीरीनी है, उसकी गुफ्तगू नौरस हलावत है, कहने को तो बस यही कह सकते हैं कि उसका कलाम ऐसा है जिससे बाप बेटे, भाई भाई, शौहर व ज़न में जुदाई हो जाती है, इसलिये उससे परहेज़ करना चाहिये, तमाम लोगों ने वलीद की इस तज्जीज़ को पसंद किया, अब उनका मअ़मूल था कि मक्का के रास्तों पर बैठ जाते और आने जाने वालों को रसूलुल्लाह सल्ल० के पास जाने से डराते।<sup>(1)</sup>

### उत्बा का आंहजरत सल्ल० से मुकालमा

जब मक्का के काफिरों ने देखा कि मुहम्मद सल्ल० किसी तरह दावत व तबलीग़ तर्क नहीं फ़रमाते, तो उन्होंने कहा कि आओ पहले मुहम्मद सल्ल० को लालच दें, फिर धमकी दें, किसी तरह तो मान ही जाएंगे, मक्का के एक मशहूर सरदार उत्बा ने कहा देखो मैं जाता हूं और तस्फिया

(1) अस्तीरतुन्लबवीया लिज़्ज़हबी स० 89, 90

करके आता हूं वह रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास आया और यूं तकरीर की:

“मेरे भतीजे मुहम्मद (सल्ल0)! अगर तुम इस कार्रवाई से माल व दौलत जमा करना चाहते हो तो हम खुद ही तेरे पास इतनी दौलत जमा कर देते हैं कि तू मालामाल हो जाए, अगर तुम इज़्ज़त के भूके हो तो अच्छा हम सब तुम को अपना रईस मान लेते हैं, अगर हुकूमत की ख़ाहिश है तो हम तुमको बादशाहे अरब बना देते हैं, जो चाहे सो करने को हाजिर हैं, मगर तुम अपना यह तरीक़ छोड़ दो, और अगर तुम्हारे दिमाग़ में कुछ ख़लल आ गया है तो बता दो कि हम तुम्हारा इलाज करा दें।”

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: “तुमने जो कुछ मेरी बाबत कहा वह ज़रा भी सही नहीं, मुझे माल, इज़्ज़त, दौलत, हुकूमत कुछ दरकार नहीं और मेरे दिमाग़ में ख़लल भी नहीं, मेरी हकीक़त तुमको कुर्�आन के इस कलाम से मअ़लूम होगी, फिर आप सल्ल0 ने यह आयात तिलावत फ़रमाई:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

خَمْ، تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ

قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ، بَشِّيرًا وَنَذِيرًا فَأَغْرَضَ أَكْثَرَهُمْ  
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ، وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكْتَافِنَا مِمَّا تَدْعُونَا

الْيَهُ.....الْخَ

‘‘यह कुर्बान खुदा के हुजूर से आया है, वह बड़ी रहमत वाला और निहायत रहम वाला है। यह बराबर पढ़ी जाने वाली किताब है अरबी ज़बान में समझदारों के लिये, इसमें सब बातें खुली खुली दर्ज हैं, जो लोग खुदा का हुक्म मानते हैं, उनके वास्ते इस फ़रमान में बशारत है, और जो इंकार करते हैं उनको खुदा के अज़ाब से डराता है, ताहम बहुत से लोगों ने इस फ़रमान से मुंह मोड़ लिया है, वह इसे सुनते ही नहीं और कहते हैं कि इसका हमारे दिल पर कोई असर नहीं और हमारे कान इससे शुनवा नहीं और हम में और तुम में एक तरह का पर्दा पड़ा है, तुम अपनी (तदीबर) करो हम अपनी (तदबीर) कर रहे हैं। ऐ नबी इन लोगों से कह दीजिये कि मैं भी तुम जैसा बशर हूं, मगर मुझ पर वह्य आती है, और खुदा के फ़रिशते ने यह बता दिया है कि सब लोगों का मअ़्बूद सिफ़ एक है, उसी की तरफ़ मुतवज्जे होना है और उसी से गुनाहों की मुआफ़ी मांगना लाज़िम है, उन लोगों पर अफ़सोस है जो शिर्क करते हैं और सदक़ा नहीं देते और आखिरत का इंकार करते हैं, लेकिन जो खुदा पर ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये, उनके लिये आखिरत में बड़ा दर्जा है।’’

(हामीم سज्दा, آیات 1-5)

कलामे पाक के सुनने से उत्ता पर एक महवियत का आलम तारी हो गया, वह हाथों से सहारा दिये, गर्दन पुश्त पर डाले सुनता रहा और बिलआखिर चुपचाप उठकर चला गया। उत्ता वापस गया तो वह उत्ता न था, कुरैश के सरदारों ने देखा तो कहा कि देखो उत्ता का वह चेहरा नहीं है, जो यहां से जाते वक़्त था, उन्होंने पूछा क्या देखा, क्या कहा, क्या सुना? उत्ता बोला, कुरैश! मैं ऐसा कलाम सुन कर आया जो न कहानत है, ने शेअर है न जादू है, न मंतर है। तुम मेरा कहा मानो तो मेरी राए पर चलो, मुहम्मद (सल्ल०) को अपने हाल पर छोड़ दो, लोगों ने यह राए सुन कर कहा, लो उत्ता पर भी मुहम्मद (सल्ल०) की ज़बान का जादू चल गया।<sup>(1)</sup>

### सरदाराने कुरैश की आंहज़रत सल्ल० से बातचीत

इस नाकामी के बाद कुरैश ने मशवरा किया कि मुहम्मद सल्ल० को कौम के सामने बुला कर समझाना चाहिये, इस मशवरा के बाद उन्होंने नबी करीम सल्ल० के पास कहला भेजा कि सरदाराने कौम आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं और कअबा के अंदर जमा हैं, नबी करीम सल्ल० खुशी खुशी वहां गए, क्योंकि हुजूर सल्ल० को उनके ईमान ले आने की बड़ी आरजू थी, जब आंहज़रत सल्ल० वहां जा बैठे तो उन्होंने गुफ़तगू का आग़ाज़ इस तरह किया:

(1) अस्सीरतुन्नबवीया 1-486,487, मुसन्फ़ इब्ने अबी शैबा 14-295, अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स० 91-92

“ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! हमने तुझे यहां बात करने के लिये बुलाया है, बखुदा हम नहीं जानते कि कोई शख्स अपनी कौम पर इतनी मुश्किलात लाया हो, जिस कदर तूने अपनी कौम पर डाल रखी है, कोई ख़राबी ऐसी नहीं जो तेरी वजह से हम पर न आ चुकी हो, अब तुम यह बताओ कि अगर तुम अपने इस नए दीन से माल जमा करना चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये माल जमा कर दें, इतना कि हम में से किसी के पास इतना रूपया न निकले और अगर शर्फ व इज़्ज़त के ख़्वास्तगार हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें और अगर तुम सलतनत के तालिब हो तो तुम्हें अपना बादशाह मुकर्रर कर लें और अगर तुम समझते हो कि जो चीज़ तुम्हें दिखाई देती है वह कोई जिन्न है जो ग़ालिब आ गया है तो हम टोने टोटकों के लिये माल सर्फ कर दें ताकि तुम तंदुरुस्त हो जाओ, या कौम के नज़दीक मअ़जूर समझे जाओ।”

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया:

“तुमने जो कुछ भी कहा, मेरी हालत के ज़रा भी मुताबिक नहीं, जो तअ़लीम लेकर मैं आया हूं वह न तलबे अम्बाल के लिये है, न जल्बे शर्फ या हुसूले सलतनत के वास्ते है, बात यह है कि खुदावंद ने मुझे तुम्हारी तरफ रसूल बना कर भेजा है, मुझ पर किताब उतारी है, मुझे अपना बशीर व

नज़ीर बनाया है, मैंने अपने रब के पैग़ामात् तुमको पहुंचा दिये हैं और तुम्हें बखूबी समझा दिया है, अगर तुम मेरी तअ़्लीमात् को कबूल करोगे तो वह तुम्हारे लिये दुन्या वा आखिरत का सरमाया है, और अगर रद्द करोगे तब मैं अल्लाह के हुक्म का इंतिज़ार करूँगा, वह मेरे लिये और तुम्हारे लिये क्या हुक्म भेजता है।”

कुरैश ने कहा:

“अच्छा मुहम्मद (सल्ल०)! अगर तुम हमारी बातों को नहीं मानते तो एक बात सुनो, तुमको मअ़्लूम है कि हम किस कदर सख्ती व तंगी से दिन काट रहे हैं, पानी हमारे पास सबसे कम है और गुज़रान हमारी सबसे ज़्यादा तंग है, अब तुम खुदा से यह सवाल करो कि इन पहाड़ों को हमारे सामने से हटा दे ताकि हमारे शहर का मैदान खुल जाए, नीज़ हमारे लिये ऐसी नहरें जारी कर दे जैसी शाम व इराक में जारी हैं, नीज़ हमारे बाप, दादों को ज़िंदा कर दे, उन ज़िंदा होने वालों में कुसैयू बिन किलाब ज़रूर हो, क्योंकि वह हमारा सरदार था और सच बोला करता था हम उससे तेरी बाबत भी पूछ लेंगे, अगर उसने तेरी बातों को सच मान लिया और तूने हमारे सवालों को भी पूरा कर दिया, तब हम भी तुझे सच्चा जान लेंगे और मान लेंगे कि हां खुदा के यहां तेरा भी कोई दर्जा है

और उसने फ़िल हकीकत तुझे रसूल बना कर भेजा है जैसा कि तू कह रहा है।”

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया:

“मैं इन कामों के लिये रसूल बना कर नहीं भेजा गया, मैं तो तअलीम के लिये रसूल बना कर भेजा गया हूं और मैंने खुदा के पैग़ामात तुम्हें सुना दिये हैं, अगर तुम इसको कबूल कर लोगे तो यह तुम्हारी दुन्या व आखिरत के लिये सरमाया है और अगर रद्द करोगे तो मैं खुदा के हुक्म का इंतिज़ार करूँगा, जो कुछ उसे मेरा और तुम्हारा फ़ैसला करना होगा फ़रमाएगा।”

कुरैश ने कहा:

“अच्छा अगर तुम हमारे लिये कुछ नहीं करते तो खुद अपने ही लिये खुदा से सवाल करो, यह कि वह एक फ़रिशते को तुम्हारे साथ मुकर्द्ध कर दे, जो यह कहता रहे कि यह शख्स सच्चा है और हम को तुम्हारी मुखालफ़त से मना भी कर दे। हां तुम अपने लिये यह भी सवाल करो कि बाग़ लग जाएं, बड़े बड़े महल बन जाएं, ख़ज़ाना सोना चांदी जमा हो जाए, जिसकी तुम्हें ज़रूरत भी है, अब तक तुम खुद ही बाज़ार में जाते और अपनी मआश तलाश किया करते हो, ऐसा हो जाने के बाद ही हम तुम्हारी फ़ज़ीलत और शर्फ़ की पहचान हासिल कर सकेंगे।”

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया:

“मैं ऐसा न करूँगा और न खुदा से कभी ऐसा सवाल करूँगा और इन बातों के लिये मैं मबऊस भी नहीं हुआ, मुझे तो अल्लाह ने बशीर व नज़ीर बनाया है, तुम मान लो तो तुम्हारे लिये ज़ख़ीरए दारैन है वर्ना मैं सब्र करूँगा और खुदा के फैसला का मुंतज़िर रहूँगा।”

कुरैश ने कहा:

“अच्छा तुम आसमान का टुकड़ा तोड़कर हम पर गिरा दो, क्योंकि तुम्हारा ज़ोअूम यह है कि अगर खुदा चाहे तो ऐसा कर सकता है, पस जब तक तुम ऐसा न करोगे हम ईमान नहीं लाने के।”

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया:

“यह खुदा के इखियार में है वह अगर चाहे तो ऐसा करे।”

कुरैश ने कहा:

“मुहम्मद (सल्ल0)! यह तो बताओ कि तेरे खुदा ने तुझे पहले से यह न बताया कि हम तुझे बुलाएंगे, ऐसे ऐसे सवाल करेंगे, यह चीज़ें तलब करेंगे, हमारी बातों का यह जवाब है और खुदा का मंशा ऐसा ऐसा करने का है? चूंकि तेरे खुदा ने ऐसा नहीं किया, इसलिये हम समझते हैं कि जो कुछ हमने सुना है वह सही है कि यमामा में एक शख्स रहता है, उसका नाम रहमान है, वही तुझको

ऐसी बातें सिखाता है, हम लो रहमान पर कभी नहीं ईमान लाने के, देखो आज हम ने अपने सारे उँग्र सुना दिये हैं, अब हम तुझ से कसमीया कह भी कहे देते हैं कि हम तुझे इस तअलीम की इशाअत कभी न करने देंगे, हल्ता कि हम मर जाएं या तू मर जाए ।”

यहां तक बातचीत हुई कि एक उनमें से बोला: “हम मलाइका की इबादत करते हैं जो खुदा की बेटियां हैं ।” दूसरा बोला: “हम तेरी बात का यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि खुदा और फरिशते हमारे सामने न आ जाएं ।”

नबी करीम सल्लू आखिरी बात सुनकर उठ खड़े हुए, नबी करीम सल्लू के साथ अब्दुल्लाह बिन अबू उम्या बिन मुग़ीरा भी उठ खड़ा हुआ, यह आप सल्लू का फूफी ज़ाद भाई (आतिका बिंते अब्दुल मुत्तलिब का बेटा) था, उसने कहा:

“मुहम्मद (सल्लू)! देखो तुम्हारी कौम ने अपने लिये कुछ चीज़ों का सवाल किया वह भी तुमने न माना, फिर उन्होंने यह चाहा कि तुम अपने ही लिये ऐसी अलामात का इज़हार करो जिससे तुम्हारी क़दर व मंज़िलत का सुबूत हो सकता हो, उसे भी तुमने कबूल न किया, फिर उन्होंने अपने लिये थोड़ा सा अज़ाब भी चाहा जिसका तुम खौफ दिलाया करते थे, तुमने उसका भी इक़रार न किया, बस अब मैं तुम पर कभी ईमान नहीं लाने

का, अगर्चे तुम मेरे सामने आसमान को ज़ीना  
लगाकर ऊपर को चढ़ जाओ और मेरे सामने उस  
ज़ीना से उतरो और तुम्हारे साथ चार फ़रिशते भी  
आएं और वह तुम्हारी शहादत भी दें, मैं तो तब  
भी तुम पर ईमान नहीं लाऊंगा।<sup>(1)</sup>

नबी सत्त्वा<sup>0</sup> इस रद्द व इंकार पर भी बराबर कुरैश को  
इस्लाम की हिदायत किया करते और फ़रमाया<sup>0</sup> करते कि  
मेरी तअलीम ही में सब कुछ तुम्हारे लिये मौजूद है, जिन  
दानिशमंदों ने ईमान क़बूल किया और तअलीमे नबी  
सत्त्वा<sup>0</sup> पर कारबंद हुए, उन्हें इससे भी ज्यादा मआरिफ़ व  
फ़वाइद हासिल हो गए जिसका कुफ़्फ़ार ने सवाल किया  
था।

### कुरैश के हाथों मुसलमानों पर मज़ालिम

कुरैश ने जब देखा कि रसूलुल्लाह सत्त्वा<sup>0</sup> से बस नहीं  
चलता तो उन्होंने ग़रीबों पर अपना गुस्सा उतारना शुरू  
किया, जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया था, जब ठीक दोपहर  
हो जाती तो वह ग़रीब मुसलमानों को पकड़ती, अरब की  
तेज़ धूप रेतीली ज़मीन को दोपहर के वक़्त जलता तवा  
बना देती है, वह उन ग़रीबों को उसी तवे पर लिटाते, छाती  
पर भारी पत्थर रख देते कि करवट न बदलने पाएं, बदन  
पर गर्म बालू बिछाते, लोहे को आग पर गर्म करके उससे  
दाग़ते, पानी में डुबकियां देते।

(1) अस्सीतुल हस्तबीया 1-496

यह मुसीबतें अगर्चे तमाम बेकसों पर आम थीं लेकिन उनमें जिन लोगों पर कुरैश ज्यादा मेहरबान थे, उनके नाम यह हैं।<sup>(1)</sup>

हज़रत ख़ब्बाब बिन अलअरित रज़ि०: तमीम के क़बीला से थे, जाहिलीयत में गुलाम बनाकर फ़रोख़्जा कर दिये गए और उसे अन्मार ने ख़रीद लिया था, उस ज़माना में इस्लाम लाए जब आंहज़रत सल्ल० हज़रत अरकम रज़ि० के घर में मुकीम थे और सिर्फ़ छः सात शख्स इस्लाम लाए थे, कुरैश ने उनको तरह तरह की तकलीफ़ें दीं, एक दिन कोयले जलाकर ज़मीन पर बिछाए, उस पर चित लिटाया, एक शख्स छाती पर पांव रखे रहा कि करवट न बदलने पाएं, यहां तक कि कोयले पीठ के नीचे पड़े पड़े ठंडे हो गए।<sup>(2)</sup> हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने मुद्दतों के बाद जब यह वाकिफ़ आ हज़रत उमर रज़ि० के सामने बयान किया तो पीठ खोल कर दिखाई कि बर्स के दाग़ की तरह बिल्कुल सपेद थी।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० जाहिलीयत में लोहारी का काम करते थे, इस्लाम लाए तो बअूज़ लोगों के ज़िम्मा उनकी बकाया थी, मांगते तो जवाब मिलता, जब तक मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार न करोगे, एक कौड़ी न मिलेगी, यह कहते कि नहीं! तुम मर मर कर ज़िंदा हो जाओ, तब भी यह मुम्किन नहीं।<sup>(3)</sup>

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्पी नोअमानी 1-228,231 (2) अलकामिल लिइने असीर जि०२-स०६७ (3) सहीहुल बुखारी, किताबुल इजारा, बाब हल युवाजर्रजुलू नफ्रसहू मिन मुश्ऱिकिन फी अरज़िल हब

**हज़रत बिलाल रज़ि०:** यह वही हज़रत बिलाल रज़ि० हैं जो मुअज्जिन के लकड़ब से मशहूर हैं, हब्शीयुन्नस्ल और उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे, जब ठीक दोपहर हो जाती तो उमय्या इनको जलती बालू पर लिटाता और पत्थर की चट्टान उनके सीने पर रख देता कि जुंबिश न करने पाएं, उनसे कहता कि इस्लाम से बाज़ आ, वर्ना यूँ ही घुट घुट कर मर जाएगा, लेकिन उस वक्त भी उनकी ज़बान से “حَدْ” का लफ़्ज़ निकलता। जब यह किसी तरह मुतज़लज़ल न हुए तो गले में रस्सी बांधी और लौंडों के हवाला किया, वह उनको शहर के इस सिरे से उस सिरे तक घसीटते फिरते थे, लेकिन अब भी वही रुट थी “حَدْ”<sup>(1)</sup>

**हज़रत अम्मार रज़ि०:** यमन के रहने वाले थे, उनके वालिद “यासिर रज़ि०” मक्का में आए, अबू हुज़ैफ़ा मख्जूमी ने अपनी कनीज़ से जिसका नाम सुमय्या था शादी कर दी, अम्मार रज़ि० उसी के पेट से पैदा हुए, यह जब इस्लाम लाए तो इनसे पहले सिर्फ़ तीन शख़स इस्लाम ला चुके थे, कुरैश उनको जलती हुई ज़मीन पर लिटाते और इस कदर मारते कि बेहोश हो जाते, उनके वालिद और वालिदा के साथ यही सुलूक किया जाता था।<sup>(2)</sup>

**हज़रत सुमय्या रज़ि०:** हज़रत अम्मार रज़ि० की वालिदा थीं, इनको अबू जह्ल ने इस्लाम लाने के जुर्म में बर्छी मारी और वह शहीद हो गई।

(1) मुस्तदरक हाकिम ३-२८४, मुस्लद अहमद-४०४

(2) सीरत इब्ने हिशाम १-३१९

**हज़रत यासिर रज़ि०:** हज़रत अम्मार के वालिद थे, यह भी काफिरों के हाथ से अज़ीयत उठाते उठाते शहीद हो गए।<sup>(1)</sup>

**हज़रत सुहैब रुमी रज़ि०:** आंहज़रत सल्ल० ने जब दावते इस्लाम शुरू की तो यह और अम्मार रज़ि० बिन यासिर रज़ि० एक साथ आंहज़रत सल्ल० के पास आए, आप सल्ल० ने इस्लाम की तरगीब दी और यह मुसलमान हो गए, कुरैश इनको इस कदर अज़ीयत देते कि इनके हवास मुख्तल हो जाते थे। जब इन्होंने मदीना को हिजरत करनी चाही तो कुरैश ने कहा कि अपना सारा माल व मताअ़ छोड़ जाओ तो जा सकते हो, इन्होंने निहायत खुशी से मंजूर किया, हज़रत उमर रज़ि० जब नमाज़ पढ़ाने में ज़ख्मी हुए तो अपने बजाए इन्हीं को इमामत दी थी।<sup>(2)</sup>

**अबू फुकैहा रज़ि०:** सफ़्वान बिन उमय्या के गुलाम थे, हज़रत बिलाल रज़ि० के साथ इस्लाम लाए, उमय्या को जब मअ़लूम हुआ तो उनके पांव में रस्सी बांधी और आदमियों से कहा कि घसीटते हुए ले जाएं और तपती हुई ज़मीन पर लिटाएं, एक “गबरीला” राह में जा रहा था उमय्या ने उनसे कहा: “तेरा खुदा यही तो नहीं है?” उन्होंने कहा: “मेरा और तेरा दोनों का खुदा अल्लाह तआला है।” एक दफ़ा उनके सीने पर इतना भारी बोझ रख दिया कि उनकी ज़बान निकल पड़ी।<sup>(3)</sup>

(1) अल कामिल 2-67 (2) मुस्तदरक हाकिम, मनाकिबे सुहैब 3-449

(3) अल कामिल 2-69

**हज़रत लुबैना रज़ि०:** यह बेचारी एक कनीज़ थीं, हज़रत उमर इस बेकस को मारते मारते धक जाते तो कहते “मैं तुझ पर रहम की बिना पर नहीं, बल्कि इस वजह से छोड़ दिया है कि धक गया हूं।” वह निहायत इस्तिक़लाल से जवाब देतीं कि “अगर तुम इस्लाम न लाओगे तो खुदा इसका इंतिकाम लेगा।”<sup>(1)</sup>

**हज़रत ज़िन्नीरा रज़ि०:** हज़रत उमर रज़ि० के घराने की कनीज़ थीं और इस वजह से हज़रत उमर रज़ि० (इस्लाम से पहले) इनको जी खोल कर सताते, अबू जहल ने इनको इस क़दर मारा कि इनकी आंखें जाती रहीं।<sup>(2)</sup>

**हज़रत नहदीया रज़ि० और उम्मे उबैस रज़ि०:** यह दोनों भी कनीज़े थीं, और इस्लाम लाने के जुर्म में सख्त सख्त मुसीबतें झेलती थीं।<sup>(3)</sup>

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के फ़ज़ाइल का यह पहला बाब है कि उन्होंने इन मज़लूमों में से अक्सर की जान बचाई, हज़रत बिलाल रज़ि०, आमिर बिन फुहैरा रज़ि०, लुबैना रज़ि०, ज़िन्नीरा रज़ि०, नहदीया रज़ि०, उम्मे उबैस रज़ि०, सबको भारी भारी दामों पर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

यह वह लोग हैं जिनको कुरैश ने निहायत सख्त जिस्मानी अज़ीयतें पहुंचाई, इनसे कम दर्जा पर वह लोग थे,

(1) अलकामिल 2-69

(2) अलकामिल 2-69, 70

(3) मुस्तदरक हाकिम 3-284, मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा 12-10, हज़रत बिलाल रज़ि० के आज़ाद करने का ज़िक्र सहीहुल बुखारी में भी मौजूद है।

जिनको और तरह तरह से सताते थे।

हज़रत उस्मान रज़िया: जो कबीरुस्सिन्न और साहिबे जाह व एज़ाज़ थे, जब इस्लाम लाए, तो दूसरों ने नहीं बल्कि खुद उनके चचा ने रस्सी बांध कर मारा।<sup>(1)</sup>

हज़रत अबू ज़र रज़िया: जो सातवें मुसलमान हैं, जब मुसलमान हुए और कअबा में अपने इस्लाम का एलान किया, तो कुरैश ने मारते मारते उनको लिटा दिया।<sup>(2)</sup>

हज़रत जुबैर बिन अलअव्वाम रज़िया: इनका मुसलमान होने में पांचवां नम्बर था, जब इस्लाम लाए तो इनके चचा इनको चटाई में लपेट कर इनकी नाक में धूनी देते थे।<sup>(3)</sup>

हज़रत उमर रज़िया के चचाज़ाद भाई सईद बिन ज़ैद रज़िया जब इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रज़िया ने उनको रसियों से बांध दिया।<sup>(4)</sup>

हज़रत सअूद बिन अबी वक़्कास रज़िया फ़ातिहे ईरान: अगर्चे निहायत मुअज्ज़ज़ और अपने क़बीला में निहायत मुक्तदर थे, ताहम कुफ़्फ़ार के सितम से महफूज़ न थे, बनू असद इस्लाम के जुर्म पर इनको सख्त सज़ाएं देते, उस वक्त तक हरमे कअबा में कोई शख्स बुलंद आवाज़ से कुर्�आन नहीं पढ़ सकता था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िया जब इस्लाम लाए तो उन्होंने कहा मैं इस फ़र्ज़ को

(1) रहमतुल लिल आलमीन, काज़ी सुलैमान मसूरपूरी 1-55 (2) सहीहुल बुखारी, बाब इस्लामु अबी ज़र रज़िया (3) सीरियुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिब्ली नोअमानी रह०, बहवाला रियाजुन्नज़रह (4) सहीहुल बुखारी किताबुल इकराह, बाब मन इख्कारज़र्ब वल कल्ल वल हवान अलल कुफ़्

ज़रूर अदा करुंगा, लोगों ने मना किया, लेकिन वह बाज़ न आए, हरम में गए और मकामे इब्राहीम अलै० के पास खड़े होकर सूरए रहमान पढ़नी शुरू की, कुफ़्फ़ार हर तरफ़ से टूट पड़े और उनके मुंह पर तमांचे मारने शुरू किये, अगर्चे उनको जहां तक पढ़ना था, पढ़ कर दम लिया, लेकिन वापस गए तो चेहरा पर ज़ख्म के निशान लेकर गए।<sup>(1)</sup>

### हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुप्रफ़ारे कुरैश का मुआमला

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० अगर्चे मक्का के ज़ीवजाहत और आबरू दार लोगों में थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद कुरैश की ईज़ाओं और इहानतों से बच न सके, एक दिन लोगों ने उनको गिराकर पांव से रौंदा और बहुत ज़द व कूब किया, उत्था बिन रबीआ ने उनको दो ऐसे जूतों से मारा जिसमें जाबजा पैवंद लगे हुए थे, उनके चेहरा पर इतनी ज़र्ब आई कि सारे चेहरे पर वरम हो गया, अअूज़ा का पता नहीं चलता था, उनके क़बीला के लोग उनको एक कपड़े में लपेट कर उठा ले गए और घर पहुंचा दिया, सबको यक़ीन था कि अबू बक्र रज़ि० बचने वाले नहीं हैं, शाम को जब बोलने की सकत हुई तो कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ैरियत से हैं? उनके ख़ानदान वालों ने उनको बड़ी मलामत की कि अब भी इनको रसूलुल्लाह सल्ल० की फ़िक्र है, जब मज्मा हटा तो फिर उन्होंने अपनी वालिदा से पूछा रसूलुल्लाह सल्ल० का क्या हाल है? उन्होंने कहा कि मुझे

(1) सीरित इब्ने हिशाम 1-314, असदुल ग़ाबा 3-282

बिल्कुल ख़बर नहीं है, आपने कहा कि उम्मे जमील से पूछ कर आओ, उम्मे जमील आपको देखने आई, उन्होंने यह हाल देखकर कहा कि जिन लोगों ने आपके साथ यह सुलूक किया है वह बड़े फ़ासिक व काफ़िर हैं, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनसे इंतिक़ाम लेगा, आपने कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की खैरियत कहो, उन्होंने कहा कि आप सल्ल0 बखैरियत हैं, फरमाया कहां हैं, उन्होंने कहा कि इन्हें अरक़म के घर में, आपने कहा कि उस वक़्त तक मुझे खाना पीना हराम है जब तक कि मैं आप सल्ल0 को देखने लूं, रात को जब आमद व रफ़्त मौकूफ़ हुई और सन्नाटा हो गया तो आप की वालिदा और उम्मे जमील आपको पकड़ा कर हुजूर सल्ल0 की खिदमत में लाई और आप ज़ियारत व मुलाक़ात से मुशरफ़ हुए।<sup>(1)</sup>

### मुसलमानों की हब्शा की तरफ़ हिज्रत और नजाशी के सामने हज़रत जअफ़र की तक़रीर

जब कुफ़कार ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू किया तो नबी सल्ल0 ने सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम को इजाज़त दे दी कि जो चाहे वह अपनी जान व ईमान के बचाव के लिये हब्श को चला जाए।

इस इजाज़त के बाद एक छोटा सा काफ़िला ग्यारह मर्द, चार औरतों का रात की तारीकी में निकला और बंदरगाह शुऐबा से जहाज़ में सवार होकर हब्श को रवाना हो गया।<sup>(2)</sup>

(1) अल इसाबा 1-42 (2) फुर्हुल बारी लिइने हजर 7-188,189

इस मुख्यसर काफिला के सरदार हज़रत उस्मान रज़ि० बिन अफ़्फान थे, सच्चदा रुक्या रज़ि० (बिन्तुन्नबी सल्ल०) उनके साथ थीं, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: “इब्राहीम अलै० के बाद यह पहला जोड़ा है जिसने राहे खुदा में हिजरत की है।”<sup>(1)</sup>

उनके पीछे और भी मुसलमान (83/मर्द, 18 औरतें) मक्का से निकले और हबश को रवाना हुए, उनमें नबी सल्ल० के चरेरे भाई जअफ़र तय्यार रज़ि० भी थे, कुरैश ने समंदर तक उनका तआकुब किया मगर यह कश्तियों में बैठ कर रवाना हो चुके थे।<sup>(2)</sup>

हबश का बादशाह ईसाई था, मक्का के काफ़िर भी उसके पास तोहफे तहाइफ़ लेकर गए और जाकर कहा कि इन लोगों को जो हमारे मुल्क से भाग आए हैं हमारे सिपुर्द किया जाए, मुसलमान दरबार में बुलाए गए, तब नबी सल्ल० के चरेरे भाई जअफ़र रज़ि० ने दरबार में यह तक़रीर की:

“ऐ बादशाह! हम जिहालत में मुब्तला थे, बुतों को पूजते थे, नजासत में आलूदा थे, मुर्दार खाते थे, बेहूदा बका करते थे, हम में इंसानियत और सच्ची मेहमानदारी का निशान न था, हमसाया की रिआयत न थी, कोई काएदा व कानून न था, ऐसी हालत में खुदा ने हम में से एक बुजुर्ग को मबऊस

(1) तबकात इब्ने सज़्द 1-203

(2) फुलुल बारी 7-189

किया जिसके हसब व नसब, सच्चाई, दियानतदारी तक़वा, पाकीज़गी से हम खूब वाक़िफ़ थे, उसने हमको तौहीद की दावत दी और समझाया कि उस अकेले खुदा के साथ किसी को शरीक न जानें, उसने हमको पत्थरों की पूजा से रोका, उसने फ़रमाया कि हम सच बोला करें, वादा पूरा किया करें, गुनाहों से दूर रहें, बुराइयों से बचें, उसने हुक्म दिया कि हम नमाज़ पढ़ा करें, सदक़ा दिया करें और रोज़े रखा करें, हमारी कौम हमसे इन बातों पर झगड़ बैठी है, कौम ने जहां तक हो सका हमको सताया ताकि हम वहदहू ला शरीक की इबादत करना छोड़ दें और लकड़ी और पत्थर की मूर्तों की पूजा करने लग जाएं, हमने उनके हाथों बहुत जुल्म और तकलीफ़ें उठाई हैं और जब मजबूर हो गए, तब तेरे मुल्क में पनाह लेने आए हैं।”

बादशाह ने यह तक़रीर सुन कर कहा मुझे कुर्�आन सुनाओ! जअूफ़र तव्यार रज़ि० ने उसे सूरए मरयम सुनाई, बादशाह पर ऐसी तअसीर हुई कि वह रोने लगा और उसने कहा “मुहम्मद तो वही रसूल हैं जिनकी ख़बर यसूअ़ मसीह अलै० ने दी थी।” अल्लाह का शुक्र है कि मुझे उस रसूल का ज़माना मिला, फिर बादशाह ने मक्का के काफ़िरों को दरबार से निकलवा दिया।

दूसरे दिन अप्र बिन अलअ़ास रज़ि० ने फिर दरबार में

रसाई हासिल की और नजाशी से कहा हुजूर! आपको यह भी मअ़्लूम है कि यह लोग हज़रत ईसा अलै० की निस्बत क्या एतिकाद रखते हैं? नजाशी ने मुसलमानों को बुला भेजा कि इस सवाल का जवाब दें, उन लोगों को तरहुद हुआ कि अगर हज़रत ईसा अलै० के इब्नुल्लाह होने का इंकार करते हैं, नजाशी ईसाई है नाराज़ हो जाएगा, हज़रत जअ़फ़र रज़ि० ने कहा कुछ भी हो हमको सच बोलना चाहिये।

ग़र्ज़ यह लोग दरबार में हाजिर हुए, नजाशी ने कहा तुम लोग ईसा बिन मरयम अलै० के मुतअ़्लिक क्या एतिकाद रखते हो? हज़रत जअ़फ़र रज़ि० ने कहा ‘‘हमारे पैग़म्बर सल्ल० ने बताया कि ईसा अलै० खुदा का बंदा और पैग़म्बर कलिमतुल्लाह है’’ नजाशी ने ज़मीन से एक तिंका उठा लिया और कहा, वल्लाह जो तुमने कहा ईसा अलै० इस तिंके के बराबर भी या इससे ज़्यादा नहीं हैं, बितरीक जो दरबार में मौजूद थे निहायत बरहम हुए, नथनों से ख़रख़राहट की आवाज़ आने लगी, नजाशी ने उनके गुस्सा की कुछ परवाह न की और कुरैश के सफ़ीर बिल्कुल नाकामियाब आए।<sup>(1)</sup>

### हज़रत हम्ज़ा रज़ि० का क़बूले इस्लाम

हज़रत हम्ज़ा रज़ि० आंहज़रत सल्ल० के चचा थे, उनको आप सल्ल० से मुहब्बत थी, और आप सल्ल० से दो, तीन बरस बड़े थे और साथ खेलते थे, दोनों ने सुवैबा का दूध पिया था और इस रिश्ते से भाई भाई थे, वह अभी तक

(1) सीरत इन्हे हिशाम 1-335,336, मुस्नद अहमद 1-202, 5-290

इस्लाम नहीं लाए थे, लेकिन आप सल्ल० की हर अदा को मुहब्बत की नज़र से देखते थे, उनका मज़ाके तबीअ़त सिपहगरी और शिकार अफ़गनी था, मअ़मूल था कि मुंह अंधेरे तीर कमान लेकर निकल जाते, तमाम दिन शिकार में मसरूफ़ रहते, शाम को वापस आते तो पहले हरम में जाते तवाफ़ करते, कुरैश के रुअसा सिहने हरम में अलग अलग दरबार जमा कर बैठा करते थे, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० उन लोगों से साहब सलामत करते, कभी कभी किसी के पास बैठ जाते, इस तरीक़ा से सबसे याराना था और सब लोग उनकी कदर व मज़िलत करते थे।

आंहज़रत सल्ल० के साथ मुख़ालिफ़ीन जिस बेरहमी से पेश आते थे बेगानों से भी न देखा जा सकता था, एक दिन अबू जहल ने रु दर रु आप सल्ल० के साथ निहायत गुस्ताखियाँ कीं, एक कनीज़ देख रही थी, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० शिकार से आए तो उसने तमाम माजिरा कहा, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० गुस्ता से बेताब हो गए, तीर व कमान हाथ में लिये हरम में आए और अबू जहल से कहा “मैं मुसलमान हो गया हूं”,<sup>(1)</sup>

### हज़रत उमर रज़ि० का क़बूले इस्लाम

हज़रत उमर रज़ि० का सत्ताईसवां साल था कि आंहज़रत सल्ल० मबऊस हुए, हज़रत उमर रज़ि० के घराने में जैद की वजह से तौहीद की आवाज़ नामानूस नहीं रही

(1) अस्लीलुन्नबीया लिंग्गर्ली 101, मुस्लिम लाकिम 3-213 ज़िक्रे इस्लाम हम्ज़ा

रज़ि०

थी, चुनांचे सबसे पहले ज़ैद के बेटे सईद इस्लाम लाए, सईद का निकाह हज़रत उमर रज़ि० की बहन फ़ातिमा से हुआ था, इस तअल्लुक से फ़ातिमा भी मुसलमान हो गई थी, इसी ख़ानदान में एक और मुअ़ज़ज़ शख्स नुऐम बिन अब्दुल्लाह ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० अभी तक इस्लाम से बेगाना थे, उनके कानों में जब यह सदा पहुंची तो सख्त बरहम हुए, यहां तक कि कबीला में जो लोग इस्लाम ला चुके थे उनके दुशमन बन गए, लुबैना उनके ख़ानदान की कनीज़ थी जिसने इस्लाम क़बूल कर लिया था, उसको बेतहाशा मारते और मारते मारते थक जाते तो कहते कि दम ले लूं तो फिर मारूंगा, लुबैना के सिवा और जिस पर काबू चलता था ज़द व कूब से दरेग नहीं करते थे, लेकिन इस्लाम का नशा ऐसा था कि जिस पर चढ़ जाता था उतरता न था, इन तमाम सख्तियों पर एक शख्स को भी वह बद दिल न कर सके, आखिर मजबूर होकर (नऊजु बिल्लाह) खुद बानिये इस्लाम के कत्ल का इरादा किया, तलवार कमर से लगा कर सीधे रसूलुल्लाह सल्ल० की तरफ़ चले, कारकुनाने क़ज़ा ने कहा

आमद आं यारे कि मा मीख्यास्तम

राह में इत्तिफ़ाक़न नुऐम बिन अब्दुल्लाह मिल गए, उनके तेवर देख कर पूछा खैर है? बोले कि मुहम्मद (सल्ल०) का फैसला करने जाता हूं उन्होंने कहा पहले अपने घर की ख़बर लो, खुद तुम्हारे बहन बहनोई इस्लाम ला चुके

हैं, फौरन पलटे और बहन के यहां पहुंचे, वह कुर्झान पढ़ रही थीं, उनकी आहट पाकर चुप हो गई, और अज्जा छिपा लिये, लेकिन आवाज़ उनके कानों में पड़ चुकी थी, बहन से पूछा कि यह क्या आवाज़ थी? बोलीं कुछ नहीं, उन्होंने कहा मैं सुन चुका हूं तुम दोनों मुर्तद हो गए, यह कहकर बहनोई से दस्त व गिरेबां हो गए और जब उनकी बहन बचाने को आई तो उनकी भी खबर ली, यहां तक कि उनका जिस्म लहू लुहान हो, गया लेकिन इस्लाम की मुहब्बत इससे बालातर थी, बोलीं कि “उमर जो बन आए करो, लेकिन इस्लाम अब दिल से नहीं निकल सकता” इन अलफाज़ ने हज़रत उमर रज़ि0 के दिल पर भी ख़ास असर किया, बहन की तरफ मुहब्बत की निगाह से देखा, उनके जिस्म से खून जारी था, यह देखकर और भी रिक्कत हुई, बहन से कहा कि जो किताब पढ़ी जा रही थी ज़रा मुझे देना, देखूं कि मुहम्मद (सल्ल0) क्या लाए हैं, बहन ने कहा, मुझे ख़तरा है कि कहीं तुम इस किताब की बेअदबी न करो, उन्होंने जवाब दिया कि डरो नहीं और अपने मज़बूदों की क़सम खाई कि पढ़कर ज़खर वापस कर देंगे, उनकी यह बात सुनकर उनकी बहन को कुछ उम्मीद हुई कि शायद उनकी हिदायत का वक्त आ गया है, उन्होंने कहा तुम मुशिरक और नापाक हो और इसको सिर्फ पाक आदमी ही छू सकता है, उमर रज़ि0 गए और गुस्ल कर के आए, बहन ने उनको कुर्झान मजीद के औराक दिये, उमर रज़ि0 ने औराक लिये

तो सूरए ताहा सामने थी, उसका इब्तिदाई हिस्ता पढ़ा और कहा कि यह कलाम किस कदर उम्दा और इज़्ज़त वाला है, हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० जो छिपे हुए थे, यह सुनकर बाहर निकल आए और उनसे कहा ऐ उमर! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० की दुआ क़बूल की, मैंने कल ही आप सल्ल० को यह दुआ करते हुए सुना है कि ‘ऐ अल्लाह हकम बिन हिशाम (अबू जहूल) या उमर बिन अलख़त्ताब के ज़रीआ इस दीन की मदद फ़रमा ‘उमर! इस नेअमत की कदर करो, उमर रज़ि० ने कहा, ख़ब्बाब मुज़े मुहम्मद (सल्ल०) की जगह का पता दो कि मैं हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल करूँ, ख़ब्बाब रज़ि० ने पता बतलाया, यह वह ज़माना था कि रसूलुल्लाह सल्ल० हज़रत अरक़म रज़ि० के मकान में जो कोहे सफ़ा की तली में वाकेअ़ था पनाह गुज़ी थे, हज़रत उमर रज़ि० ने आसतानए मुबारक पर पहुंच कर दस्तक दी, चूंकि शमशीर बकफ़ थे, सहाबा रज़ि० अल्लाहु अन्हुम को तरहुद हुआ, लेकिन हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि० ने कहा ‘‘आने दो, वह मुख्लिसाना आया है तो बेहतर, वर्ना उसी की तलवार से उसका सर कलम कर दूँगा’’ हज़रत उमर रज़ि० ने अंदर क़दम रखा तो रसूलुल्लाह सल्ल० खुद आगे बढ़े और उनका दामन पकड़ के फ़रमाया, क्यों उमर! किस इरादा से आया है? नुबूव्त की पुर जलाल आवाज़ ने उनको कपकपा दिया, निहायत खुजूअ़ के साथ अर्ज़ किया कि ‘‘ईमान लाने के लिये’’ आंहज़रत सल्ल० बेसाख्ता

अल्लाहु अकबर! पुकार उठे और साथ ही तमाम सहाबा रज़ि० ने मिल कर इस ज़ोर से अल्लाहु अकबर का नअ़रा मारा कि मक्का की तमाम पहाड़ियां गूंज उठीं।<sup>(1)</sup>

हज़रत उमर रज़ि० के ईमान लाने से इस्लाम की तारीख में नया दौर पैदा हो गया, उस वक्त तक अगर्वे चालीस पचास आदमी इस्लाम ला चुके थे, अरब के मशहूर बहादुर हज़रत हम्ज़ा सय्यदुश शोहदा रज़ि० ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, ताहम मुसलमान अपने फ़राइज़े मज़हबी एलानिया नहीं अदा कर सकते थे और कअबा में नमाज़ पढ़ना तो बिल्कुल नामुम्किन था, हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम के साथ दफ़अतन यह हालत बदल गई, उन्होंने एलानिया इस्लाम ज़ाहिर किया, काफिरों ने अब्बल अब्बल बड़ी शिद्दत की, लेकिन वह सावित क़दमी से मुक़ाबला करते रहे, यहां तक कि मुसलमानों की जमाअत के साथ कअबा में जाकर नमाज़ अदा की।<sup>(2)</sup>

हबश में कम व बेश 83/मुसलमान हिज्रत करके गए थे, चंद रोज़ आराम से गुज़रने पाए थे कि यह ख़बर मशहूर हुई कि कुफ़्फ़ार ने इस्लाम क़बूल कर लिया है, यह सुनकर अकसर सहाबा रज़ि० ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा का रुख़ किया लेकिन शहर के करीब पहुंचे तो मअ़्लूम हुआ कि ग़लत ख़बर है, इसलिये बअूज़ लोग वापस चले गए और अकसर

(1) अस्सीरुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स० 102-103, सहीदुल बुखारी किताब दुनयानुल कअबा बाब इस्लामु उमर

(2) तबकाते इन्दे सज़द 3-370

छिप छिप कर मक्का में आ गए।<sup>(1)</sup>

## हज़रत उस्मान रजि० बिन मज़ून की हब्बा से वापसी और मुश्किलों में इज़ारा सानी

इस ग़्लत इतिलाइ पर आने वालों में हज़रत उस्मान रजि० बिन मज़ून भी थे, वह अरब के काएदे के मुताबिक वलीद बिन मुग़ीरा के ज्वार और पनाह में दाखिल हुए, उन्होंने जब देखा कि दूसरे मुसलमान जिनको किसी कुरैशी सरदार की पनाह हासिल नहीं थी, कुरैश की ज्यादतियों का निशाना बने हुए थे और वह वलीद की पनाह की वजह से आज़ादी और अम्न व अमान के साथ चलते फिरते थे, तो उनकी ग़ैरत ने यह गवारा नहीं किया, उन्होंने कहा कि मेरे साथी कुरैश की हर तरह की ज्यादतियों का हदफ बने हुए हैं और मैं एक मुश्किल की पनाह की वजह से आज़ाद फिर रहा हूं और अपने साथियों का उनकी मुसीबत में शरीक नहीं हूं, यह मेरी एक बड़ी दीनी कमज़ोरी और बेग़ैरती है, वह वलीद के पास गए और कहा कि आपने अपनी ज़िम्मादारी पूरी कर दी, मैं आपका ज्वार आपको वापस करता हूं, अब आप पर मेरी कोई ज़िम्मादारी नहीं है, वलीद ने कहा कि मेरे अज़ीज़! क्या मेरी कौम में से किसी ने तुमको कुछ तकलीफ़ पहुंचाई? हज़रत उस्मान ने कहा कि नहीं, लेकिन अब मुझे अल्लाह के ज्वार के सिवा किसी का ज्वार गवारा नहीं, वलीद ने कहा कि अच्छा बैतुल्लाह के

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़ज़हबी स० 113

पास जाकर एलान कर दो कि तुम अब मेरे ज्वार में नहीं हो, और अब मैं बरियुज़िम्मा हूं ताकि मुझ पर तुम्हारी हिफाज़त की कोई ज़िम्मादारी बाकी न रहे, चुनांचे दोनों बैतुल्लाह की तरफ गए, वलीद ने कहा कि साहिबो! उस्मान मेरा ज्वार मुझे वापस करते हैं, हज़रत उस्मान ने कहा कि यह सही है, मैंने वलीद को पूरा वफादार और शरीफ पाया और मुझे उनके ज्वार की कोई शिकायत नहीं, लेकिन मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह के सिवा और किसी की हिमायत में न रहूं, हज़रत उस्मान रज़िया बिन मज़्जून वहां से चले तो कुरैश की एक मजलिस गर्म थी, अरब का एक मशहूर शाइर लबीद अपना एक कसीदा सुना रहा था, उसके एक शेऊर का पहला मिस्रअू था *لَا كُلُّ شَئٍ مَا خَلَقَ اللَّهُ* *بِاطِلٌ* यज़नी “अल्लाह के सिवा हर चीज़ बे हकीकत है” हज़रत उस्मान रज़िया ने कहा सच है, लबीद ने दूसरा मिस्रअू पढ़ा: “*وَكُلُّ نَعْيْمٍ لَا مُحَالَةَ زَائِلٌ*” “और हर ऐश एक न एक दिन फ़ना हाने वाला है।” हज़रत उस्मान रज़िया ने कहा कि यह ग़लत है, जन्मत का ऐश फ़ना होने वाला नहीं, अरब के सिवा और मुअ़ज़ज़ज़ मेहमान उसकी तर्दीद के आदी न थे, लबीद ने कहा कि ऐ सरदाराने कुरैश! इससे पहले तो हमारी मजलिस में ऐसी बातें नहीं होती थीं, इस तरह के लोग कब से पैदा हो गए हैं, (जो बर्मता तर्दीद करते हैं) एक शख्स ने कहा कि कुछ दिनों से हमारे यहां कम समझ लोगों की एक जमाअत पैदा हो गई है, जिन्होंने

हमारे दीन को तर्क कर दिया है, आप कुछ ख्याल न कीजिये, हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस पर कुछ कहा और बात बढ़ी, एक शख्स ने उनके मुंह पर एक तमांचा मारा जिससे उनकी एक आंख जाती रही, वलीद यह सब बैठा देख रहा था, उसने कहा मेरे अज़ीज़! तुमने ख्वाहमख्वाह अपनी आंख खोई, अगर तुम मेरी हिमायत में रहते तो क्यों इसकी नौबत आती, हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा कि मेरी दूसरी आंख को भी इस आंख पर रश्क आ रहा है और इसको भी इसकी तमन्ना है, वलीद ने कहा कि अब भी मौक़ा है अगर चाहो तो मेरे ज्वार में आ जाओ, हज़रत उस्मान ने साफ़ इंकार कर दिया।<sup>(1)</sup>

### **कुरैश की जानिब से बनी हाशिम का मुहासरा व मुक़्तातः**

कुरैश देखते थे कि इस रोक टोक पर भी इस्लाम का दाइरा फैलता जाता है, उमर रज़ि० और हम्ज़ा रज़ि० जैसे लोग ईमान ला चुके हैं, नजाशी ने मुसलमानों को पनाह दी, सुफ़रा बे नैले व मराम वापस आए, मुसलमानों की तज़दाद में इज़ाफ़ा होता जाता है, इसलिये अब यह तदबीर सोची कि आंहज़रत सल्ल० और आपके खानदान को महसूर करके तबाह कर दिया जाए, चुनांचे तमाम क़बाइल ने एक मुआहदा मुरत्तब किया कि कोई शख्स खानदाने बनी हाशिम से न कराबत करेगा, न उनके हाथ खरीद व फ़रोख़ा करेगा, न उनसे मिलेगा, न उनके पास खाने पीने का सामान जाने

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-370

देगा, जब तक कि वह आंहज़रत सल्ला० को कल्प के लिये हवाला न कर दें, यह मुआहदा दरे कअबा पर आवेज़ा० किया गया।<sup>(1)</sup>

अबू तालिब मजबूर होकर तमाम खानदाने बनी हाशिम के साथ शिअबे अबी तालिब में पनाह गुज़ी हुए, तीन साल तक छनू हाशिम ने इस हिसार में ज़िंदगी बसर की, यह ज़माना ऐसा सख्त गुज़रा कि तलह के पत्ते खा खाकर रहते थे, हदीसों में जो सहाबए किराम रज़ि० की ज़बान से मज़कूर है कि हम तलह की पत्तियाँ खा खाकर बसर करते थे, यह उसी ज़माना का वाकिआ है, हज़रत सअ०द बिन अबी वक्कास रज़ि० का बयान है कि एक रात को सूखा हुआ चमड़ा हाथ आ गया, मैंने उसको पानी से धोया फिर आग पर भूना और पानी मिलाकर खाया, इब्ने सअ०द ने रिवायत की है कि बच्चे जब भूक से रोते थे तो बाहर आवाज़ आती थी, कुरैश सुन सुनकर खुश होते थे, लेकिन बअ०ज़ रहम दिलों को तरस भी आता था।<sup>(2)</sup> एक दिन हकीम बिन हिज़ाम ने जो हज़रत ख़दीजा रज़ि० के भतीजे थे, थोड़े से गेहूं अपने गुलाम के हाथ हज़रत ख़दीजा रज़ि० के पास भेजे, राह में अबू जहल ने देख लिया और छीन लेना चाहा, इतिफ़ाक से अबुल बोहतरी कहीं से आ गया, वह अगर्चे काफिर था, उसको रहम आया और कहा कि एक शख्स अपनी फूफी को कुछ खाने के लिये भेजता है, तु क्यों रोकता है।<sup>(3)</sup>

(1) यादुत मज़ाद ३-२९ (2) अर्रेजुत अन्फ १-२२० (3) सीरत इब्ने हिशाम १-३५४,  
सीरत ज़हबी, स०-१४२

## अहं नामा की तन्सीरव और मुकातआ का रवातमा

मुत्तसिल तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल० और तमाम आले हाशिम ने यह मुसीबतें झेलीं, बिल आखिर दुश्मनों को ही रहम आया और खुद उन्हीं की तरफ से इस मुआहदा के तोड़ने की तहरीक नश्व हुई, हिशाम मख्जूमी<sup>1</sup> खानदाने बनी हाशिम का करीबी रिशतादार और अपने कबीले में मुम्ताज़ था, वह चोरी छिपे बनू हाशिम को ग़ुल्ला वगैरा भेजता रहता था, एक दिन वह जुबैर के पास जो अब्दुल मुत्तलिब के नवासे थे गया और कहा, क्यों जुबैर तुमको यह पसंद है कि तुम खाओ पियो, हर किस्म का लुत्फ उठाओ और तुम्हारे नानिहाल वालों को एक दाना तक नसीब न हो, जुबैर ने कहा क्या कर्त्तव्य है एक शख्स भी मेरा साथ दे तो मैं ज़ालिमाना मुआहदा को फाड़ कर फेंक दूँ, हिशाम ने कहा मैं मौजूद हूँ, दोनों मिलकर मुद्दम बिन अदी के पास गए, बोहतरी इब्ने हिशाम, ज़म्मा बिन अल अस्वद ने भी साथ दिया, दूसरे दिन सब मिलकर हरम गए, जुबैर ने सब लोगों को मुखातब करके कहा: ऐ अहले मक्का यह क्या इंसाफ है, हम लोग आराम से बसर करें और बनू हाशिम को आब दाना नसीब न हो, खुदा की क़सम जब तक यह ज़ालिमाना मुआहदा चाक न कर दिया जाएगा मैं बाज़ न आऊंगा, अबू जह्ल बराबर से बोला, हरगिज़ मुआहदा को कोई हाथ नहीं लगा सकता, ज़म्मा ने कहा तू झूट कहता है जब यह लिखा गया था उस वक्त भी हम राज़ी न थे।<sup>(1)</sup>

(1) सीरियस इब्ने हिशाम 1-374, 375, 376

उधर आंहज़रत सल्ल० ने अबू तालिब को इत्तिला दी थी कि मुआहदा को दीमक खा गई है, जब लोगों ने उसको देखा तो ऐसा ही था, सिर्फ “بِاسْمِكَ اللّٰهُمْ” बाकी रह गया था।<sup>(1)</sup>

### हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला

कुफ़्फ़ार की ईज़ा रसानी अब कमज़ोरों और बेकसों पर ही महदूद न थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का क़बीला मुअज्ज़ज़ और ताक़तवर क़बीला था, उनके यार और अंसार भी कम थे, ताहम वह कुफ़्फ़ार के जुल्म से तंग आ गए और बिलआखिर हबश की तरफ़ हिज्रत का इरादा किया, बरकुल ग़िमाद जो मक्का मुअज्ज़मा से यमन की सिस्त पांच दिन की राह पर है, वहाँ तक पहुंचे थे कि इब्नुहुगुन्ना से मुलाकात हो गई जो क़बीला कारा का रईस था, उसने पूछा कहाँ? हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा “मेरी कौम मुझको रहने नहीं देती, चाहता हूं कि कहीं अलग जाकर खुदा की इबादत करूंगा।” इब्नुहुगुन्ना ने कहा “यह नहीं हो सकता कि तुम जैसा शख्स मक्का से निकल जाए, मैं तुम को अपनी पनाह में लेता हूं।” तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० उसके साथ वापस आए, इब्नुहुगुन्ना मक्का पहुंच कर तमाम सरदाराने कुरैश से मिला और कहा: ऐसे शख्स को निकालते हो जो मेहमान नवाज़ है, मुफ़िलसों का मददगार है, रिशता-

(1) ज़ादुल मआद 3-30, सहीह बुखारी में इस मुहासरा का ज़िक्र मौजूद है, मुलाहज़ा हो किंताबुल मनासिक बाब दुख्लुन्नी सल्ल० मक्का, व बाब बुन्यानुल कज़्बा, बाब तकासुमुल मुश्ऱिकीन अलन्नी सल्ल०

-दारों को पालता है, मुसीबतों में काम आता है, कुरैश ने कहा लेकिन शर्त यह है कि अबू बक्र (रज़ि0) नमाज़ों में चुपके जो चाहें पढ़ें, आवाज़ से कुर्�आन पढ़ते हैं तो हमारी औरतों और बच्चों पर असर पड़ता है, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने चंद रोज़ यह पाबंदी इख़ितयार की, लेकिन आखिर उन्होंने घर के पास एक मस्जिद बना ली और उसमें खुशूअूव खुजूअू के साथ बआवाज़ कुर्�आन पढ़ते थे, वह निहायत रकीकुल कल्ब थे, कुर्�आन पढ़ते तो बेइख़ितयार रोते, औरतें और बच्चे उनको देखते और मुतअस्सिर होते, कुरैश ने इन्जुद्गुन्ना से शिकायत की, उसने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 से कहा कि अब मैं तुम्हारी हिफाज़त का ज़िम्मादार नहीं हो सकता, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा “मुझको खुदा की हिफाज़त बस है, मैं तुम्हारे ज्वार से इस्तीअ़फ़ा देता हूं।<sup>(1)</sup>

एक रोज़ नबी सल्ल0 मस्जिदे हराम में दाखिल हुए, वहां मुश्विरक सरदार बैठे हुए थे, अबू जहल ने नबी सल्ल0 को देखा और तमस्खुर से कहा “अब्दे मनाफ़ वालो! देखो तुम्हारा नबी आ गया।”

उक्खा बिन रबीआ बोला: हमें क्या इंकार है, हम में से कोई नबी बन बैठे, कोई फ़रिशता कहलाए, नबी सल्ल0 यह बातें सुन कर लौटे और उनके पास आए।

पहले उक्खा से फ़रमाया “उक्खा तूने खुदा और रसूल (सल्ल0) की हिमायत कभी न की, तू अपनी ही बात की पिच पर अड़ा रहा।”

(1) सही बुखारी किताबुल फ़ज़ाइल बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0 व अस्लामुहू इल्ल  
मदीना 1-552

फिर कुरैश से फ़रमाया: ‘‘तुम्हारे लिये वह साअंत नज़्दीक आ रही है कि जिस दीन का तुम इंकार करते हो, आखिरश उसी में दाखिल हो जाओगे।’’

नाजिरीन इसी किताब में देखेंगे कि यह पेशगोई क्योंकर पूरी हुई।<sup>(1)</sup>

### अबू तालिब और हज़रत ख़दीज़ा रज़ि० की वफ़ात

10 हि० नुबूव्वत में नबी सल्ल० के चचा अबू तालिब का जो हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के वालिद थे, इंतिकाल हो गया।<sup>(2)</sup>

अबू तालिब ने लड़कपन से नबी सल्ल० की तरबियत की थी और जब से आंहज़रत सल्ल० ने नुबूव्वत की दावत और मुनादी शुरू कर दी थी वह बराबर मददगार रहे थे, इसलिये नबी सल्ल० को उनके मरने का सदमा हुआ।<sup>(3)</sup>

इनसे तीन दिन पीछे नबी सल्ल० की प्यारी बीवी हज़रत ताहिरा ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० ने इंतिकाल फ़रमाया।<sup>(4)</sup> इस बीवी ने अपना सारा माल व ज़र नबी सल्ल० की खुशी पर कुर्बान और राहे खुदा में सफ़ कर दिया था, यह सबसे पहले इस्लाम लाई थीं, जिब्रील अलै० ने इन बीवी को खुदा का सलाम पहुंचाया था, इनकी बीवी के गुज़र जाने का रंज नबी सल्ल० को बहुत हुआ।<sup>(5)</sup>

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-65 बहवाला तारीखे तबरी (2) फुहुल बारी 7-194

(3) सहीहीन में अबू तालिब की नुस्तत व इआनत का ज़िक्र मौजूद है। (4) फुहुल

बारी 7-224 (5) सहीहुल बुखारी किताब मनाकिबुल अंसार, बाब तज़्जौवुजुन्नबी सल्ल०

ख़दीजा व फ़ज़्लुहा, मुस्नद अहमद 6-118

अब कुरैश ने नबी सल्ल० को ज़्यादातर सताना शुरू कर दिया, एक दफा एक शरीर ने नबी सल्ल० के सर पर कीचड़ फेंक दिया, आंहज़रत सल्ल० उसी तरह घर में दाखिल हुए, नबी सल्ल० की बेटी उठीं, वह सर धुलाती जाती थीं और रोती जाती थीं, नबी सल्ल० ने फ़रमाया “प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो, तुम्हारे बाप की हिफ़ाज़त खुदा खुद फ़रमाएगा।<sup>(1)</sup>

अगर्चे अबू तालिब का सहारा जाता रहा, अगर्चे ख़दीजा जैसी बीवी जो मुसीबतों में और तकलीफ़ों में निहायत ग़मगुसार थीं जुदा हो गई, नबी सल्ल० ने अब ज़्यादा जोश से वअूज़ का काम शुरू किया।

### **ताइफ़ का सफ़र और सऱज़ अज़ीयतों का सामना**

चुनांचे थोड़े ही दिनों बाद नबी सल्ल० मक्का से निकले और वअूज़ के लिये ताइफ़ तशरीफ़ ले गए, नबी सल्ल० के साथ इस सफ़र में जैद बिन हारसा रज़ि० थे, मक्का और ताइफ़ के दर्भियान जितने क्बीले थे सबको वअूज़ सुनाते, तौहीद की मुनादी करते हुए नबी सल्ल० प्यादा पा ताइफ़ पहुंचे, ताइफ़ में बनू सकीफ़ आबाद थे, सर सब्ज़ मुल्क और सर्द पहाड़ पर रहने की वजह से उनके गुरुर की कोई हद न थी, अब्द या लैल, मसऊद, हबीब, तीनों भाई वहां के सरदार थे, नबी सल्ल० पहले उन्हीं से मिले और उन्हें इस्लाम की दावत फ़रमाई, उनमें से एक बोला: “मैं कअूबा के सामने दाढ़ी मुंडवा दूंगा अगर तुझे अल्लाह ने रसूल बनाया हो।”

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-416

दूसरा बोला: “क्या खुदा को तेरे सिवां और कोई भी रसूल बनाने को न मिला, जिसे चढ़ने की सवारी भी मुयस्सर नहीं……उसे रसूल बनाना था तो किसी हाकिम या सरदार को बनाया होता।” तीसरा बोला: “मैं तुझसे बात ही नहीं करने का, क्योंकि अगर तू खुदा का रसूल है जैसा कि तू कहता है, तब तो यह बहुत ख़तरनाक बात है कि मैं तेरे कलाम को रद्द करूँ और अगर तू खुदा पर झूट बोलता है तो मुझे शायां नहीं कि तुझसे बात करूँ।”

नबी सल्ल० ने फरमाया: “अब मैं तुम से सिफ़्र यह चाहता हूँ कि अपने ख्यालात अपने ही पास रखो, ऐसा न हो कि यह ख्यालात दूसरे लोगों के ठोकर खाने का सबब बन जाए।”

नबी सल्ल० ने वअूज़ कहना शुरू फरमाया, उन सरदारों ने अपने गुलामों और शहर के लड़कों को सिखा दिया, वह वअूज़ के वक्त नबी सल्ल० पर इतने पत्थर फेंकते कि हुजूर सल्ल० लहू में तर बतर हो जाते, खून बह बह कर जूतों में जम जाता और दुजू के लिये पांव से जूता निकालना मुश्किल हो जाता।

एक दफ़ा बदमआशों और औबाशों ने नबी सल्ल० को इस कदर गालियां दीं, तालियां बजाई, चीखें लगाई कि खुदा के नबी सल्ल० एक मकान के इहाते में जाने पर मजबूर हो गये, यह जगह उत्था व शैबा फरज़दाने रबीआ की थी, उन्होंने दूर से इस हालत को देखा और नबी सल्ल० पर

तरस खाकर अपने गुलाम अद्वास को कहा कि एक प्लेट में अंगूर रखकर उस शख्स को दे आओ, गुलाम ने अंगूर नबी सल्ल० के सामने लाकर रख दिये, नबी सल्ल० ने अंगूरों की तरफ हाथ बढ़ाया और ज़बान से फ़रमाया “بِسْمِ اللَّهِ” और फिर अंगूर खाने शुरू किये।

अद्वास ने हैरत से नबी सल्ल० की तरफ देखा और फिर कहा “यह ऐसा कलाम है कि यहाँ के बाशिंदे नहीं बोला करते।”

नबी सल्ल० ने फ़रमाया: “तुम कहाँ के हो और तुम्हारा मज़हब क्या है?” अद्वास ने जवाब दिया “मैं ईसाई हूं और नैनवा का बाशिंदा हूं।”

नबी सल्ल० ने फ़रमाया: “क्या मर्दे सालेह यूनुस अलै० बिन मत्ता के शहर के बाशिंदे हो? अद्वास ने कहा: “आपको क्या खबर है कि यूनुस बिन मत्ता कौन था और कैसा था? नबी सल्ल० ने फ़रमाया “वह मेरा भाई है वह भी नबी था और मैं भी नबी हूं, अद्वास यह सुनते ही झुक पड़ा और उसने नबी सल्ल० का सर, हाथ, कदम चूम लिये। उत्ता और शैबा ने दूर से गुलाम को ऐसा करते देखा और आपस में कहने लगे, लो गुलाम तो हाथ से गया, जब अद्वास अपने आका के पास लौट कर गया तो उन्होंने कहा “कम्बख्त तुझे क्या हो गया था कि उस शख्स के हाथ, पांव, सर चूमने लग गया था।”

अद्वास ने कहा “हुजूरे आली! आज उस शख्स से

ਬੇਹਤਰ ਰਹੇ ਜ਼ਮੀਨ ਪਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ, ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਮੁझੇ ਏਸੀ ਬਾਤ ਬਤਾਈ ਜੋ ਸਿਫ਼ ਨਕੀ ਹੀ ਬਤਾ ਸਕਤਾ ਹੈ।” ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਅਦਾਸ ਕੋ ਡਾਂਟ ਦਿਯਾ ਕਿ ਖਬਰਦਾਰ! ਕਹੀਂ ਅਪਨਾ ਦੀਨ ਨ ਛੋਡ ਬੈਠਨਾ ਤੇਰਾ ਦੀਨ ਤੋ ਉਸਕੇ ਦੀਨ ਸੇ ਬੇਹਤਰ ਹੈ।

ਉਸੀ ਮਕਾਮ ਪਰ ਏਕ ਦਫਾ ਵਅੜ ਕਰਤੇ ਹੁए ਖੁਦਾ ਕੇ ਰਹੂਲ ਸਲਲਾ ਕੇ ਇਤਨੀ ਚੋਟੋਂ ਲਗੀਂ ਕਿ ਹੁਜੂਰ ਸਲਲਾ ਬੇਹੋਸ਼ ਹੋਕਰ ਗਿਰ ਪਡੇ, ਜੈਦ ਨੇ ਆਪ ਸਲਲਾ ਕੋ ਅਪਨੀ ਪੀਠ ਪਰ ਉਠਾਯਾ, ਆਬਾਦੀ ਸੇ ਬਾਹਰ ਲੇ ਗਏ, ਪਾਨੀ ਕੇ ਛੀਟੇ ਦੇਨੇ ਸੇ ਹੋਸ਼ ਆਯਾ।

ਇਸ ਸਫਰ ਮੌਂ ਇਤਨੀ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਔਰ ਈਜ਼ਾਓਂ ਕੇ ਬਾਦ ਔਰ ਏਕ ਸ਼ਖ਼ਸ ਤਕ ਕੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਨ ਹੋਨੇ ਕੇ ਰੰਜ ਔਰ ਸਦਮਾ ਕੇ ਵਕਤ ਭੀ ਨਕੀ ਸਲਲਾ ਕਾ ਦਿਲ ਖੁਦਾ ਕੀ ਅਜ਼ਮਤ ਔਰ ਸੁਹਿਬਤ ਸੇ ਭਰਪੂਰ ਥਾ ਔਰ ਉਸ ਵਕਤ ਜੋ ਦੁਆ ਹੁਜੂਰ ਸਲਲਾ ਨੇ ਮਾਂਗੀ ਉਸਕੇ ਅਲਫਾਜ਼ ਯਹ ਹੈਂ:

”اللَّهُمَّ إِلَيْكَ أشْكُرُ ضَعْفَ قُوَّتِي، وَقُلْةَ حِيلَتِي، وَهَوَانِي  
عَلَى النَّاسِ، يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ، أَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِينَ،  
وَأَنْتَ رَبِّي، إِلَيْكَ مَنْ تَكِلُّنِي، إِلَيْكَ بَعِيدٌ يَتَجَهَّمُنِي، أُوْ إِلَيْكَ  
عَذَّرٌ مَلَكَتَهُ أُمْرِنِي، إِنْ لَمْ يَكُنْ عَلَيَّ غَضَبٌ فَلَا أَبَالُنِي،  
وَلِكُنْ عَافِيَتُكَ هِيَ أُوْسَعُ لِي، أَعُوذُ بِنُورِ وَجْهِكَ الَّذِي  
أَشْرَقْتَ لَهُ الظُّلُمَاتِ، وَصَلَحَ عَلَيْهِ أُمْرُ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ،  
مِنْ أَنْ يُنْزِلَ بِي غَضَبُكَ أَوْ يَحْلُّ عَلَيَّ سَخْطُكَ، لَكَ  
الْعُلْقَبَى حُنْقَبَى تُرْضِى، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ.“

“इलाही अपनी कमज़ोरी, बे सर व सामानी” और लोगों की तहकीर की बाबत तेरे सामने फ़रयाद करता हूं तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है, दरमांदा आजिज़ों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किस के सिपुर्द किया जाता है, क्या बेगाना, तुर्शरू के या उस दुश्मन के जो काम पर काबू रखा है, लेकिन जब मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, क्योंकि तेरी आफ़ियत मेरे लिये ज़्यादा वसीअ़ है, मैं तेरी ज़ात के नूर से पनाह चाहता हूं जिससे सब तारीकियां रौशन हो जाती हैं और दीन व दुन्या के काम उससे ठीक हो जाते हैं, कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नाराज़गी वारिद हो, मुझे तेरी रज़ामंदी और खुशनूदी दरकार है और नेकी करने और बदी से बचने की ताक़त मुझे तेरी ही तरफ़ से मिलती है।”

नबी सल्ल० ने ताइफ़ से वापस होते हुए यह भी फ़रमाया मैं इन लोगों की तबाही के लिये क्यों दुआ करूँ अगर यह लोग खुदा पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ? उम्मीद है कि आइंदा नस्लें ज़रूर एक खुदा पर ईमान लाने वाली होंगी।<sup>(1)</sup>

(1) इस वाकिआ को इमाम बुखारी रह० ने अपनी सहीह में इख्लासार के साथ ज़िक्र फ़रमाया है। इमाम ज़हबी रह० ने अस्सीरतुन्नबवीया 185 ता 188 में, और इब्ने हि�शाम ने अस्सीरतुन्नबवीया 1-419 ता 421 में तफ़सील से इसको बयान किया है, इमाम हैसभी ने भी मज्�मउज्ज़वाइद 6-35 में इसका तज़किरा किया है, इमाम तबरानी ने भी सहीह सनद के साथ इसको बयान फ़रमाया है।

## क़बाइले अरब को दावते इस्लाम

मक्का में वापस आकर नबी सल्लो ने अब ऐसा करना शुरू किया कि मुख्तलिफ़ क़बीलों की सुकूनत गाहों में तशरीफ़ ले जाते या मक्का से बाहर चले जाते और जो कोई मुसाफिर आता या मिल जाता उसे ईमान और खुदातर्सी का वज्र फ़रमाते।<sup>(1)</sup>

उन्ही अव्याम में क़बीलए बनू किंदा में तशरीफ़ ले गए सरदारे क़बीला मुलीह था और क़बीला बनू अब्दुल्लाह के यहां भी पहुंचे उनसे फ़रमाया कि तुम्हारे बाप का नाम अब्दुल्लाह था तुम भी इस्म बा मुसम्मा हो जाओ, क़बीला बनू हनीफ़ा के घरों में तशरीफ़ ले गए उन्होंने सारे अरब में सबसे बदतर तरीक पर नबी सल्लो का इंकार किया, क़बीला बनू आमिर बिन सअ़सज़ा के पास गए, सरदारे क़बीला का नाम बुहैरा बिन फ़िरास था और उसने दावते इस्लाम सुन कर नबी सल्लो से पूछा भला अगर हम तेरी बात मान लें और तू मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब आ जाए तो क्या वादा करता है कि तेरे बाद यह अप्र मुझसे मुतअ़्लिक होगा? नबी सल्लो ने फ़रमाया “यह तो खुदा के इख़ितायार में है, वह जिसे चाहेगा मेरे बाद उसे मुकर्रर करेगा” बुहैरा बोला: खूब इस वक़्त तो अरब के सामने सीना सिपर हम बनें और जब तेरा काम बन जाए तो मज़े कोई और उड़ाए, जा! हमको तेरे साथ कोई सरोकार नहीं, क़बाइल के सफर

(1) अम्ताउल अस्माज़ लिल मकरीज़ी 1-30

में हुजूर सल्ल० के रफीके तरीक अबू बक्र सिद्दीक रजि०  
धे।<sup>(1)</sup>

उन्ही अय्याम में नबी सल्ल० को सुवैद बिन सामित  
मिला, उसका लकड़ब अपनी कौम में कामिल था, नबी  
सल्ल० ने उसे दावते इस्लाम फ़रमाई, वह बोला शायद  
आपके पास वही कुछ है जो मेरे पास है, नबी सल्ल० ने  
पूछा, तुम्हारे पास क्या है? वह बोला: “हिक्मते लुक्मान”  
नबी सल्ल० ने फ़रमाया: बयान करो, उसने कुछ उम्दा  
अशआर सुनाए, नबी सल्ल० ने फ़रमाया: यह अच्छा कलाम  
है, लेकिन मेरे पास कुर्झनि है जो इससे अफ़ज़ल तर है और  
हिदायत व नूर है” इसके बाद नबी सल्ल० ने उसे कुर्झनि  
सुनाया और वह बे तअम्मुल इस्लाम ले आया, जब यसरिब  
लौट कर गया तो कौमे ख़ज़रज ने उसे क़त्ल कर डाला।<sup>(2)</sup>

उन्ही अय्याम में अबुल हैसर अनस बिन राफ़े़ भी मक्का  
आया और उसके साथ बनी अब्दुल अशहल के भी चंद  
नौंजवान थे जिनमें अयास बिन मुआज़ भी था, यह लोग  
कुरैश के साथ अपनी कौम ख़ज़रज की तरफ से मुआहदा  
करने आए थे, नबी सल्ल० उनके पास गए और जाकर  
फ़रमाया:

“मेरे पास ऐसी चीज़ है जिसमें तुम सबकी बहबूद है  
क्या तुम्हें कुछ रग्बत है” वह बोले ऐसी क्या चीज़ है?  
आपने फ़रमाया “अल्लाह का रसूल हूं मख़्जूक की तरफ

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-424, 425

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-426, 427

मबऊस हूं बंदगाने खुदा को दावत देता हूं कि वह खुदा ही की इबादत करें और शिर्क न करें, मुझ पर खुदा ने किताब न्यज़िल की है” फिर उनके सामने इस्लाम के उसूल बयान फस्ताएँ और कुर्�आन भी पढ़ कर सुनाया, अयास बिन मुज़ाइ अभी ज़बान था सुनते ही बोला: “ऐ मेरी कौम! बुखुदा यह तुम्हरे लिये इस मक्सद से बेहतर है जिसके लिये तुम यहां आए हो।”

अनस बिन राफ़ेअ ने कङ्करियों की मुट्ठी भर कर उठाई और अयास के मुंह पर फेंक मारी और कहा बस चुप रह, हम इस काम के लिये तो नहीं आए, रसूलुल्लाह सल्लूला उठकर चले गए, यह वाकिआ ज़ंगे बुआस से जो औस व खज़रज में हुई, पहले का है, अयास वापस जाकर चंद रोज़ के बाद मर गया, मरते वक्त उसकी ज़बान पर तस्बीह व तहमीद व तहलील व तक्बीर जारी थे, मरहूम के दिल में नबी सल्लूला के इसी वअूज़ से इस्लाम का बीज बो गया था जो मरते वक्त फल फूल लै आया था।<sup>(1)</sup>

उन्हीं जव्याय में ज़िम्मद अज़दी मक्का में आया यह यमन का बाशिंदा था और अरब का मशहूर जादूगर था, जब उसने सुना कि मुहम्मद (सल्लूला) पर जिन्नात का असर है तो उसने कुरैश से कहा कि मैं मुहम्मद (सल्लूला) का इलाज अपने मंत्र से कर सकता हूं यह नबी सल्लूला की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहा “मुहम्मद (सल्लूला) आओ

(1) सीरियस इस्लाम 1-427, 428, मुक्कद अहमद 5-427, इब्ने हजर ने इसकी सनद की तीसीक फरमाई है, अल इस्लाम 1-146

तुम्हें मंतर सुनाऊं, नबी सल्ल० के फरमाया कि पहले मुझसे सुन लौ, फिर आंहज़रत सल्ल० ने उसे सुनाया:

”الْكَلْمَدُ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلٌّ لَهُ،

وَمَنْ يُخْلِلَهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا

شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ أَمَّا بَعْدُ：“

“सब तअरीफ अल्लाह के वास्ते है, हम उसकी नेअमतों का शुक्र करते हैं, और हर काम में उसकी इआनत चाहते हैं, जिसे खुदा राह दिखाता है उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे खुदा ही रास्ता न दिखाए उसकी कोई रहबरी नहीं कर सकता, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मैं यह भी ज़ाहिर करता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) खुदा का बंदा और रसूल है, उसके बाद मुद्दआ यह है।”

ज़िमाद ने इस कदर सुना था कि बोल उठा कि इन्हीं कलिमात को फिर सुना दीजिये, वही तीन दफ्तर उसने इन्हीं कलिमात को सुना फिर बेझिक्तियार बोल उठा, मैं बहुतेरे काहिन देखे और साहिर देखे, शाइर सुने, लेकिन ऐसा कलाम तो मैंने किसी से भी न सुना, यह कलिमात त्से एक अत्थाह समंदर जैसे हैं, मुहम्मद (सल्ल०)! खुदारा हाथ बढ़ाइये कि मैं इस्लाम की बैज़त कर लूं।<sup>(1)</sup>

उन्हीं दिनों तुफैल बिन अम्र मक्का में आया यह

(1) सही मुस्लिम, किताबुल जुम्जा, बाब तछीफुस्सलात घलखुत्ता

कबीलए दौस का सरदार था और नवाहिये यमन में उनके खानदान में रईसाना हुक्मत थी, तुफैल बज़ाते खुद शाइर, दानिशमंद शख्स था, अहले मक्का ने आबादी से बाहर जाकर उसका इस्तिकबाल किया और अशूला पैमाना पर उसकी खिदमत और तवाज़ोअू की, तुफैल का बयान है:

“मुझे अहले मक्का ने यह भी बताया कि यह शख्स जो हम में से निकला है इससे ज़रा बचना, इसे जादू आता है, जादू से बाप बेटे, ज़न व शौहर, भाई भाई में जुदाई डाल देता है, हमारी जमईयत को परेशान और हमारे काम अबतर कर दिये हैं, हम नहीं चाहते हैं, कि तुम्हारी कौम पर भी ऐसी ही कोई मुसीबत पड़े, इसलिये हमारी ज़ोर से यह नसीहत है कि न उसके पास जाना, न उसकी बात सुनना और न खुद बातचीत करना।”

“यह बातें उन्होंने ऐसी उम्दगी से मेरे ज़ेहन नशीन कर दीं कि जब मैं कअबा में जाना चाहता तो कानों को रुई से बंद कर लेता कि मुहम्मद (सल्ल०) की आवाज़ की भनक मेरे कान में न पड़ जाए, एक रोज़ मैं सुब्ल ही खानए कअबा में गया, नबी सल्ल० नमाज़ पढ़ रहे थे, चूंकि खुदा की मशीय्यत यह थी कि उनकी आवाज़ मेरी समाझूत तक ज़रूर पहुंचे, इसलिये मैंने सुना कि एक अजीब कलाम वह पढ़ रहे हैं उस वक्त मैं अपने आपको मलामत करने लगा कि मैं खुद शाइर हूं बा इल्म

हूं अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हूं फिर क्या वजह है? और कौनसी रोक है कि मैं उनकी बात न सुनूं? अच्छी बात होगी तो मानूंगा, वर्ना नहीं मानूंगा, मैं यह इरादा करके ठहर गया, जब नबी सल्ल० वापस घर को चले तो मैं भी पीछे पीछे हो लिया और जब मकान पर हाज़िर हुआ तो नबी सल्ल० को अपना वाक़िआ मक्का में आने, लोगों के बहकाने और कानों में रुई लंगाने और आज हुजूर सल्ल० की ज़बान से कुछ सुन पाने का सुनाया और अर्ज किया कि मुझे अपनी बात सुनाइये, नबी सल्ल० ने कुर्अन पढ़ा, बुखुदा मैंने ऐसा पाकीज़ा कलाम कभी सुना ही न था जो इस क़दर नेकी और इंसाफ़ की हिदायत करता हो।”

अलगर्ज़ तुफ़ैल उसी वक़्त मुसलमान हो गए, जिसे कुरैश बात बात में मख्दूम व मुताअ्र कहते थे वह बात की बात में मुहम्मद सल्ल० का दिल व जान से खादिम और मुतीअ्र बन गया, कुरैश को ऐसे शख्स का मुसलमान होना निहायत ही शाक़ व नागवार गुज़रा।<sup>(1)</sup>

अबू ज़र रज़ि० अपने शहर यसरिब ही में थे कि उन्होंने नबी सल्ल० के मुतअल्लिक कुछ उड़ती सी खबर सुनी उन्होंने अपने भाई से कहा तुम जाओ मक्का में उस शख्स से मिल कर आओ।

अनीस बिरादरे अबू ज़र एक मशहूर फ़सीह शाइर,

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किस्सा दौस वल्लुफ़ैल बिन अम्र में बहुत इत्खासार से यह वाक़िआ मरवी है, तफ़सील इब्ने सअ़द 1-353, और शर्हुल मवाहिद 4-37 में मुलाहज़ा हो।

ज़बान आवर था वह मक्का में आया, नबी सल्ल० से मिला, फिर भाई को जा बताया कि मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को एक ऐसा शख्स पाया जो नेकियों के करने का और शर से बचने का हुक्म देता है।

अबू ज़र रज़ि० बोले इतनी सी बात से कुछ तसल्ली नहीं होती, आखिर खुद पैदल चलकर मक्का पहुंचे, हज़रत अबू ज़र रज़ि० को नबी सल्ल० की शनाख्त न थी और किसी से दरयापूत करना भी वह पसंद न करते थे, ज़मज़म का पानी पी कर कअबा ही में लेट रहे, अली मुर्तज़ा रज़ि० आए, उन्होंने पास खड़े होकर कहा कि यह तो कोई मुसाफिर मज़लूम होता है, बोले हाँ! अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कहा अच्छा मेरे यहाँ चलो, यह रात वहीं रहे, न अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कुछ पूछा, न अबू ज़र रज़ि० ने कुछ कहा, सुन्ह दुई, अबू ज़र रज़ि० फिर कअबा में आ गए, दिल में आंहज़रत सल्ल० की तलाश थी, मगर किसी से दरयापूत न करते थे, अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर आ पहुंचे उन्होंने फरमाया कि शायद तुम्हें अपना ठिकाना न मिला, अबू ज़र रज़ि० बोले हाँ! अली मुर्तज़ा रज़ि० फिर साथ ले गए, अब उन्होंने पूछा, तुम कौन हो और क्यों यहाँ आए हो? अबू ज़र रज़ि० ने कहा राज़ रखो तो मैं बता देता हूँ अली रज़ि० ने वादा किया।

अबू ज़र रज़ि० ने कहा मैंने सुना है कि इस शहर में एक शख्स है जो अपने को नबीयल्लाह बताता है.....मैंने

अपने भाई को भेजा था, वह यहां से कुछ तसल्ली बख्खा बात लेकर न गया, इसलिये खुद आया हूं।

अली मुर्तज़ा रज़ि० ने कहा तुम खूब आए और खूब हुआ कि मुझसे मिले, देखो मैं उन्हीं की खिदमत में जा रहा हूं मेरे साथ चलो, मैं अंदर जाकर देख लूंगा, अगर उस वक्त मिलना मुनासिब न होगा तो मैं दीवार से लग कर खड़ा हो जाऊंगा, गोया जूता दुरुस्त कर रहा हूं।

अलगर्ज़ अबू ज़र रज़ि०, अली मुर्तज़ा रज़ि० के साथ खिदमते नबवी सल्ल० में पहुंचे और अर्ज़ किया मुझे बताया जाए कि इस्लाम क्या है?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया “अबू ज़र! तुम अभी इस बात को छिपाए रखो और अपने वतन को चले जाओ, जब तुम्हें हमारे जुहूर की खबर मिल जाए तब आ जाना, हज़रत अबू ज़र रज़ि० बोले बखुदा मैं तो इन दुश्मनों में एलान करके जाऊंगा, अब अबू ज़र रज़ि० कअब्बा की तरफ़ आए, कुरैश जमा थे, उन्होंने सबको सुनाकर बआवाज़े बुलंद कलिमए शहादत पढ़ा, कुरैश ने कहा इस बेदीन को मारो, लोगों ने मार डालने के लिये मुझे मारना शुरू किया, अब्बास रज़ि० आ गए, उन्होंने मुझे झुक कर देखा कहा कम्बख्तो! यह तो कबीलए गिफ़ार का आदमी है, जहां तुम तिजारत को जाते और खजूरें लाते हो, लोग हट गए, अगले दिन उन्होंने फिर सबको सुनाकर कलिमा पढ़ा, फिर लोगों ने मारा और अब्बास रज़ि० ने उनको छुड़ाया और यह अपने वतन को

चले आए।<sup>(1)</sup>

### बैठते उक्बा और छाअते इस्लाम

11 हि० नुबूव्वत के मौसमे हज का ज़िक्र है कि नबी सल्ल० ने रात की तारीकी में शहरे मक्का से चंद मील परे मकामे उक्बा पर लोगों को बातें करते सुना, उस आवाज़ पर खुदा का नबी सल्ल० उन लोगों के पास पहुंचा, यह छः आदमी यसरिब से आए थे, उनके सामने नबी सल्ल० ने खुदा की अज़्यमत व जलाल का बयान शुरू किया, उनकी मुहब्बत को खुदा के साथ गर्माया, बुतों से उनको नफ़रत दिलाई, नेकी व पाकीज़गी की तज़्लीम देकर गुनाहों और बुराइयों से मना फ़रमाया, कुर्�आन की तिलावत फ़रमाकर उनके दिलों को रौशन फ़रमाया, यह लोग अगर्चे बुत परस्त थे लेकिन उन्होंने अपने शहर के यहूदियों को बारहा ज़िक्र करते सुना था कि एक नबी अंकरीब ज़ाहिर होने वाला है.....इस तज़्लीम से वह उसी वक्त ईमान ले आए और जब अपने वतन लौट कर गए तो दीने हक के सच्चे दाईं बन गए।<sup>(2)</sup>

वह हर एक को खुशखबरी सुनाते थे कि वह नबी सल्ल० जिसका तमाम आलम को इंतिज़ार था आगया.....हमारे कानों ने उसका कलाम सुना, हमारी आँखों ने उसका दीदार किया और उसने हमको उस ज़िंदा रहने वाले

(1) सहीहुल बुखारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब इस्लाम अबी ज़र रज़ि०, सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि०, बाब मिन फ़ज़ाइले अबी ज़र रज़ि०

(2) सीरित इन्हे हिशाम 1-428, 429

खुदा से मिला दिया है कि दुन्या की ज़िंदगी और मौत उसके सामने हेच है।<sup>(1)</sup>

उन लोगों के बशारत ले जाने का नतीजा यह हुआ कि यसरिब के घर घर में आंहज़रत सल्ल० का ज़िक्र होने लगा, और अगले साल 12 हि० नुबूव्वत में यसरिब के बाशिदेमकका में हाज़िर हुए और नबी सल्ल० के फैज़ान से दौलते ईमान हासिल की।

उन लोगों ने जिन बातों पर नबी सल्ल० से बैअृत की थी वह यह हैं:

- (1) हम खुदाए वाहिद की इबादत किया करेंगे और किसी को उसका शरीक नहीं बनाएंगे।
- (2) हम चोरी और ज़िना नहीं करेंगे।
- (3) हम अपनी औलाद (लड़कियों) को क़त्ल नहीं करेंगे।
- (4) हम किसी पर झूटी तोहमत नहीं लगाएंगे और न किसी की चुग़ली किया करेंगे।
- (5) हम नबी सल्ल० की इताअत हर एक अच्छी बात में किया करेंगे।<sup>(2)</sup>

जब यह लोग वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल० ने उनकी तज़्हीम के लिये मुसअ्ब बिन उमैर रज़ि० को साथ कर दिया, मुसअ्ब बिन उमैर रज़ि० अमीर घराने के लाडिले बेटे थे, जब घोड़े पर सवार होकर निकलते थे तो आगे पीछे गुलाम चला करते थे, बदन पर दो सौ रुपये से कम की

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-428, 429

(2) सहीहुल बुखारी किताबुल ईमान, बाब हद्दसना अबुल यमान, इब्ने हिशाम ने सीरत में सहीह सनद से पूरा याकिजा तफसील से व्याख्या किया है। 1-431 ता 434

कभी पोशाक नहीं पहनते थे, मगर जब उनको इस्लाम के तुफ़ैल रूहानी ऐश हासिल हुआ तो इन जिस्मानी आराइशों को उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिया था, जिन दिनों यह मदीना में दीन की मुनादी करते और इस्लाम की तबलीग किया करते थे उन दिनों उनके कंधे पर सिर्फ़ कम्बल का एक छोटा सा दुकड़ा होता था जिसे अगली तरफ़ से कांटों से अटका लिया करते थे।<sup>(1)</sup>

हज़रत मुसल्लिम रज़िया० मदीना में अस्अद बिन जुरारा के घर जाकर उतरे थे और उनको मदीना वाले अल मुक़री (पढ़ाने वाला, उस्ताद) कहा करते थे, एक दिन मुसल्लिम रज़िया० व अस्अद रज़िया० और चंद मुसलमान बीरे मर्क पर जमा हुए, यह गौर करने के लिये कि बनी अब्दुल अशहल और बनी ज़फ़र में क्योंकर इस्लाम की मुनादी की जाए।

सअ़द बिन मज़ाज़ और उसैद बिन हुज़ैर इन कबाइल के सरदार थे और अभी मुसलमान न हुए थे, उन्हें भी ख़बर हुई सअ़द बिन मज़ाज़ ने उसैद बिन हुज़ैर से कहा:

तुम किस ग़फ़लत में पड़े हो, देखो! यह दोनों हमारे घरों में आकर हमारे बेवकूफ़ों को बहकाने लगे, तुम जाओ उन्हें झिड़क दो और यह कह दो कि हमारे मुहल्लों में फिर कभी न आएं, मैं खुद ऐसा करता, मैं इसलिये खामोश हूँ कि अस्अद मेरी खाला का बेटा है।

उसैद बिन हुज़ैर अपना हथियार लेकर रवाना हुआ,

(1) असदुल ग़ावा ४-४०६ ज़िक्रे मुसल्लिम बिन उमैर रज़िया०

अस्सद रज़ि० ने मुसअब रज़ि० को कहा देखो यह कबीले का सरदार आ रहा है खुदा करे वह तेरी बात मान जाए, मुसअब रज़ि० ने कहा वह अगर आकर बैठ गया तो मैं उससे ज़खर कलाम करूँगा, इतने में आ पहुँचा और खड़ा खड़ा गालियाँ देता रहा और यह भी कहा कि तुम हमारे अहमक, नादान लोगों को फुस्लाने आए हो ।

मुसअब रज़ि० ने कहा काश आप बैठ कर कुछ सुन लें अगर पसंद आए तो कबूल फ़रमाएं, नापसंद हो तो उसे छोड़ जाएं, उसैद ने कहा खैर क्या मुज़ाइक़ा है, मुसअब रज़ि० ने समझाया कि इस्लाम क्या है और फिर उसे कुर्�आन मजीद भी पढ़कर सुनाया, उसैद ने सब कुछ चुपचाप सुना बिलआखिर कहा, हाँ! यह तो बताओ कि जब कोई तुम्हारे दीन में दाखिल होना चाहता है तो क्या करते हो?

उन्होंने कहा नहला कर पाक कपड़े पहनाकर कलिमए शहादत पढ़ा देते हैं और दो रकअत नफ़्ल पढ़वा देते हैं, उसैद उठा कपड़े धोए, कलिमए शहादत पढ़ा और नफ़्ल अदा की, फिर कहा मेरे पीछे एक और शख्स है अगर वह तुम्हारा पैरु हो गया तो फिर कोई तुम्हारा मुखालिफ़ न रहेगा और मैं अभी जाकर उसे तुम्हारे पास भेजता हूँ, उसैद यह कहकर चला गया, उधर सज़्द बिन मआज़ उसके इंतिज़ार में था, दूर से चेहरा देखते ही बोला, देखो उसैद का चेहरा वह नहीं जो जाते वक़्त था, जब उसैद आ बैठा तो सज़्द ने पूछा कि क्या हुआ? उसैद बोला मैंने उन्हें समझा

दिया है और वह कहते हैं कि हम तुम्हारी मंशा के खिलाफ़ न करेंगे, मगर वहां तो एक और हादसा पेश आया, बनू हारसा वहां आ गए थे और वह अस्जद बिन जुरारा को इसलिये कल्प करने पर आमादा हैं कि वह तेरा भाई है, यह सुनकर सज़्द बिन मज़ाज़ गुस्सा में भर गया और अपना हव्वा संभाल कर छड़ा हो गया, उसे डर था कि बनू हारसा उसके भाई को मार न डालें, उसने चलते बृक्ष यह भी कहा कि उसैद! तुम कुछ भी काम न बना कर आए, सज़्द वहां पहुंचा, देखा कि मुसज़ब रज़ि० व अस्जद रज़ि० दोनों बइत्मीनान बैठे हुए हैं, सज़्द ने समझा कि उसैद ने मुझे उनकी बातें सुनने के लिये भेजा है, यह ख्याल आते ही उन्हें गालियां देने लगा और अस्जद को यह भी कहा कि अगर मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़राबत न होती तो तुम्हारी क्या मजाल थी कि हमारे मुहल्ला में चले आते, अस्जद रज़ि० ने मुसज़ब रज़ि० से कहा देखो यह बड़े सरदार हैं और अगर इनको समझा दो तो फिर कोई दो आदमी भी तुम्हारे मुख़ालिफ़ न रह जाएंगे, मुसज़ब ने सज़्द से कहा जाइये बैठ जाइये कोई बात करें, हमारी बात पसंद आए तो क़बूल फ़रमाइये वर्ना इंकार कर दीजिये, सज़्द हव्वा रखकर बैठ गए, हज़रत मुसज़ब ने उनके सामने इस्लाम की हकीकत बयान की और कुर्�आन भी पढ़ कर सुनाया, आखिर सज़्द ने वही सवाल किया जो उसैद ने किया था, अलग़र्ज़ सज़्द उठे और नहाये, कपड़े धोए, कलिमा पढ़ा, नफ़्ल अदा की और हथियार लेकर अपनी मजलिस में वापस आए, आते ही

अपने कबीले के लोगों को पुकार कर कहा:

ऐ बनी अब्दुल अशहल! तुम लोगों की मेरे बारे में क्या राए है? सबने कहा, तुम हमारे सरदार हो, तुम्हारी राए, तुम्हारी तलाश, बेहतर और अअूला होती है, हज़रत सअद बोले सुनो! ख्वाह कोई मर्द हो या औरत मैं उससे बात करना हराम समझता हूं जब तक कि वह खुदा और रसूल पर ईमान न लाए।

इस कहने का असर यह हुआ कि बनी अब्दुल अशहल में शाम तक कोई मर्द इस्लाम से ख़ाली न रहा और तमाम कबीला एक दिन में मुसलमान हो गया।<sup>(1)</sup>

### बैअते उम्बा सानिधा

हज़रत मुसअब रज़ि० की तअलीम से इस्लाम का चर्चा इसी तरह तमाम अंसार के कबीलों में फैल गया और इसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल 13 हि० नुबूव्वत में 73 मर्द और 2 औरतें यसरिब के काफिला में मिलकर मकाम आए, उनको यसरिब के अहले ईमान ने इसलिये भेजा था कि रसूलुल्लाह सल्ल० को अपने शहर में आने की दावत दें और नबी सल्ल० से मंजूरी हासिल करें।

यह रास्त बाज़ों का गिरोह उसी मुतबर्रक मकाम पर जहां दो साल से इस शहरे यसरिब के मुशताक हाज़िर हुआ करते थे रात की तारीकी में पहुंच गया, और खुदा के बरगुज़ीदा रसूल भी अपने चचा अब्बास को साथ लिये हुए वहां जा पहुंचे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-435 ता 437

हज़रत अब्बास ने (जो अभी मुसलमान न हुए थे) उस वक्त एक काम की बात कही, उन्होंने कहा लोगो! तुम्हें मज़ालूम है कि कुरैशे मक्का मुहम्मद के जानी दुश्मन हैं। अगर तुम उनसे कोई अहद व इक़रार करने लगो तो पहले समझ लेना कि यह नाजुक और मुशिकल काम है, मुहम्मद से अहद व पैमान करना सुख़ व सियाह लड़ाइयों को दावत देना है, जो कुछ करो सोच समझकर करो, वर्ना बेहतर है कि कुछ भी न करो।

उन रास्तबाज़ों ने अब्बास को कुछ जवाब न दिया, हाँ रसूलुल्लाह सल्ल0 से अर्ज़ किया कि हुजूर कुछ इशाद फरमाएं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उनको कलामे इलाही पढ़ कर सुनाया जिसके सुनते ही वह ईमान व ईकान के नूर से भरपूर हो गए।

उन सब ने अर्ज़ की कि खुदा के नबी सल्ल0 हमारे शहर चल बसें ताकि हमें पूरा पूरा फैज़ हासिल हो सके।

नबी सल्ल0 ने फरमाया:

1- क्या तुम दीने हक़ की इशाअत में मेरी पूरी पूरी मदद करोगे?

2- और जब मैं तुम्हारे शहर में जा बसूं क्या तुम मेरी और मेरे साथियों की हिमायत अपने अहल व अयाल के मानिंद करोगे?

ईमान वालों ने पूछा ऐसा करने का हमको मुआवजा

क्या मिलेगा?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया बहिश्त (जो नजात और खुशनूदी का महल है) ईमान वालों ने अर्ज किया ऐ खुदा के रसूल सल्ल० यह तो हमारी तसल्ली फ़रमा दीजिये कि हुजूर सल्ल० हमको कभी न छोड़ेंगे?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया नहीं! मेरा जीना, मेरा मरना तुम्हारे साथ होगा, इस आखिरी फ़िक्रे को सुनना था कि आशिक़ ने सदाक़त अजब सुरूर व नशात के साथ जानिसारी की बैअंते इस्लाम करने लगे, बराऊ बिन मअरूर रज़ि० पहले बुजुर्ग हैं जिन्होंने इस शब सबसे पहले बैअंत की थी।

एक शैतान ने पहाड़ की चोटी से यह नज़ारा देखा और चीख़ कर अहले मक्का को पुकार कर कहा लोगो! आओ देखो कि मुहम्मद और उसके फ़िर्के के लोग तुमसे लड़ाई के मशावरे कर रहे हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया तुम इस आवाज़ की परवाह न करो, अब्बास बिन उबादा ने कहा अगर हुजूर की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखा दें, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया नहीं! मुझे जंग की इजाज़त नहीं, इसके बाद नबी सल्ल० ने उनमें से बारह शख्सों का इंतिख़ाब किया और उनका नाम नकीब रखा और यह फ़रमाया कि जिस तरह ईसा बिन मरयम अलै० ने अपने लिये बारह शख्सों को चुन लिया था उसी

तरह मैं तुम्हें इंतिखाब करता हूं ताकि तुम अहले यसरिब में जाकर दीन की इशाअृत करो, मक्का वालों में मैं खुद यह काम करूँगा ।

### उनके नाम यह हैं:-

कबीला खज्जरज के 9-अस्यद बिन जुरारा, राफेअ बिन मालिक, उबादा बिन सामित (यह तीनों उक्ता ऊला में भी थे) सअद बिन रबीअ, मुजिर बिन अप्र, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, बराअू बिन मज़्रूर, अब्दुल्लाह बिन अप्र बिन हराम, सअद बिन उबादा ।

कबीलए औस के तीन - उसैद बिन हुज़ेर, सअद बिन खैसमा, अबुल हैसम बिन तीहान ।<sup>(1)</sup>

कुरैश को दिन निकलने के बाद कुछ भनक सी मज़्लूम हुई, वह अहले यसरिब की तलाश में निकले, लेकिन उनका काफिला सुळ ही रवाना हो चुका था, कुरैश ने सअद बिन उबादा और मुजिर बिन अप्र को वहां पाया, हज़रत मुजिर रज़ि० तो निकल गए और उनके हाथ न आए, मगर सअद बिन उबादा रज़ि० को उन्होंने पकड़ लिया, उनकी सवारी के ऊंट का तंग खोल कर उसकी मशकें बांध दीं, मक्का में लाकर उन्हें मारते और उनके सर के लम्बे लम्बे बालों को खींचते थे, यह सअद बिन उबादा वही हैं जिनको नबी सत्त्वा० ने उन 12/अशखास में से एक नकीब ठहराया था, उनका अपना बयान है कि जब कुरैश उन्हें ज़द व कूब कर

(1) मुस्लिम अहमद 3-322-339 मुस्तदरक हाकिम 2-624, 625, इमाम ज़ह्बी ने हाकिम की रिवायत को सही करार दिया है, तफसील के लिये मुलाहज़ा हो, सीरत इब्ने हिशाम 1-438 ता 448, नीज़ फतुह बारी 7-219 ता 223

रहे थे तो एक सुख्ख व सफेद शीरीं शमाइल शख्स उन्हें अपनी तरफ आता हुआ नज़र आया, मैंने अपने दिल में कहा कि अगर इस कौम में किसी से मुझे भलाई हासिल हो सकती है तो वह यही होगा, जब वह मेरे पास आ गया तो उसने निहायत ज़ोर से मुँह पर तमांचा लगाया, उस वक्त मुझे यकीन आ गया कि इनमें कोई भी ऐसा शख्स नहीं जिससे खैर की उम्मीद की जा सके, इतने में एक और शख्स आया, उसने मेरे हाल पर तरस खाया और कहा क्या कुरैश के किसी भी शख्स के साथ तुझे हक्के हमसाइगी हासिल नहीं और किसी से भी तेरा अहद व पैमान नहीं? मैंने कहा हां! जुबैर बिन मुतइम और हारिस बिन हर्ब जो अब्दे मनाफ के पोते हैं वह तिजारत के लिये हमारे यहां जाया करते हैं, और मैंने बारहा उनकी हिफाज़त की है, उसने कहा कि फिर उन्हीं दोनों के नाम की दुहाई तुझे देनी और अपने तअल्लुकात का इज़हार करना चाहिये, मैंने ऐसा ही किया फिर वही शख्स उन दोनों के पास पहुंचा और उन्हें बताया कि ख़ज़रज का एक आदमी पिट रहा है और वह तुम्हरा नाम लेकर तुम्हें पुकार रहा है, उन दोनों ने पूछा वह कौन है उसने बताया कि सअ़द बिन उबादा, वह बोले हां, उसका हम पर एहसान भी है, उन्होंने आकर सअ़द बिन उबादा को छुड़ाया और यह साबित कदम बुजुर्ग यसरिब को तशरीफ ले गए।<sup>(1)</sup>

(1) सीरियस इब्ने हिशाम 1-449, 450 रहमतुल लिलआलमीन 1-81

## हिज्रत करने की इजाज़त

उक्खा सानिया की बैअूत के बाद नबी सल्ल० ने उन मुसलमानों को जो अभी मक्का से बाहर नहीं गए थे लेकिन जिन पर इतने जुल्म व सितम होने लगे थे कि प्यारा वतन उनके लिये आग का पहाड़ बन गया, यसरिब चले जाने की इजाज़त फ़रमा दी, उन ईमान वालों को घर बार, ख़ेश व अकारिब, बाप, भाई, ज़न व फ़रज़ंद के छोड़ने का ज़रा ग़म न था, बल्कि खुशी यह थी कि यसरिब जाकर खुदाए वहदहूला शरीक की इबादत पूरी आज़ादी से कर सकेंगे।<sup>(1)</sup>

हिज्रत करने वालों और घर छोड़ने वालों को कुरैशे मक्का की सख्त मुज़ाहिमत का मुक़ाबला करना पड़ा।

हज़रत सुहैब रज़ि० जब हिज्रत करके जाने लगे तो कुफ़्फ़ार ने उन्हें आ धेरा, कहा सुहैब! जब तू मक्का में आया था तो मुफ़िलस व कल्लाश था, यहाँ ठहर कर तूने हज़ारों कमाए, आज यहाँ से जाता है और चाहता है सब माल व ज़र लेकर चला जाए, यह तो कभी नहीं होने का, हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, अच्छा अगर मैं अपना सारा माल व मताज़ तुम्हें दे दूँ तब तुम मुझे जाने दोगे? कुरैश बोले हाँ! हज़रत सुहैब रज़ि० ने सारा माल उन्हें दे दिया और यसरिब को रखाना हो गए। नबी सल्ल० ने यह किसा सुनकर फ़रमाया कि उस सौदे में सुहैब रज़ि० ने नफ़ा कमाया।<sup>(2)</sup>

(1) अदुल मज़ाद 3-49 रहमतुल लिल आलमीन 1-82

(2) सीरियस इब्ने हिशाम 1-477 दलाइलुन्नुबूवा लिलबैहकी 2-522

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० कहती हैं मेरे शौहर अबू  
सलमा रज़ि० ने हिज्रत का इरादा किया, मुझे ऊंट पर  
चढ़ाया, मेरी गोद में मेरा बच्चा सलमा था, जब हम चल  
पड़े तो बनू मुग़ीरा ने आकर अबू सलमा रज़ि० को घेर  
लिया, कहा, कि तू जा सकता है मगर हमारी लड़की नहीं ले  
जा सकता, अब बनू अब्दुल असद भी आ गए, उन्होंने अबू  
सलमा से कहा, तू जा सकता है मगर बच्चा को जै हमारे  
कबीला का बच्चा है तू नहीं ले जा सकता, ग़र्ज़ उन्होंने अबू  
सलमा रज़ि० से ऊंट की महार लेकर ऊंट बिठा दिया, बनू  
अब्दुल असद तो माँ की गोद से बच्चा को छीन कर ले गए  
और बनू मुग़ीरा उम्मे सलमा को ले आए, अबू सलमा जो  
दीन के लिये हिज्रत करना फ़र्ज़ समझते थे ज़न व बच्चा के  
बगैर रवाना हो गए, उम्मे सलमा रज़ि० शाम को उसी जगह  
जहाँ बच्चा और शौहर से जुदा की गई थीं पहुंच जातीं और  
घंटों रो धोकर वापस आ जातीं, एक साल इसी तरह रोते  
चिल्लाते गुज़र गया, आखिर उनके चर्चेरे भाई को रहम  
आया और हर दो कबाइल से कह सुन कर उम्मे सलमा को  
इजाज़त दिला दी कि अपने शौहर के पास चली जाएं, बच्चा  
भी उनको वापस दे दिया गया, उम्मे सलमा रज़ि० एक ऊंट  
पर सवार होकर मदीना को तने तन्हा चल दीं, ऐसी  
मुश्किलात का सामना तक़रीबन हर एक सहाबी को करना  
पड़ा था।<sup>(1)</sup>

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-467, 468

हज़रत उमर फ़ारुक रज़ियो का बयान है कि हज़रत अ़याश रज़ियो बिन रबीआ और हज़रत हिशाम सहाबी भी उनके साथ मदीना चलने को तैयार हुए थे, हज़रत अ़याश रज़ियो तो रवानगी के वक्त जाए मुकर्रा पर पहुंच गए, मगर हिशाम रज़ियो बिन आस की बाबत कुफ़्फ़ार को ख़बर लग गई तो उनको कुरैश ने कैद कर दिया, हज़रत अ़याश रज़ियो मदीना जा पहुंचे कि अबू जह्ल मअू अपने बिरादर हारिस के मदीना पहुंचा, अ़याश रज़ियो उनके चचेरे भाई थे और तीनों की माँ एक थी, अबू जह्ल व हारिस ने कहा कि तुम्हारे बाद वालिदा की बुरी हालत हो रही है, उसने कसम खा ली है कि अ़याश रज़ियो का मुँह देखने तक न सर में कंधी कस्तगी, न साया में बैठूंगी, इसलिये भाई तुम चलो और माँ को तस्कीन दे कर आ जाना।

उमर फ़ारुक रज़ियो ने कहा अ़याश! मुझे तो फ़रेब मअ़लूम होता है, तुम्हारी माँ के सर में कोई जूँ गई तो वह खुद ही कंधी कर लेगी और मक्का की धूप ने ज़रा ख़बर ली तो वह खुद ही साया में जा बैठेगी, मेरी राए तो यह है कि तुम को जाना नहीं चाहिये, अ़याश रज़ियो बोले नहीं मैं वालिदा की कसम पूरी करके वापस आ जाऊंगा।

हज़रत उमर फ़ारुक रज़ियो ने फ़रमाया: अच्छा अगर यही राए है तो सवारी के लिये मेरा नाका ले जाओ, 'यह बहुत तेज़ रफ़्तार है, अगर रास्ता में ज़रा भी उनसे शुब्द गुज़रे तो तुम इस नाका पर बआसानी उनकी गिरफ़्त से बच

कर आ सकोगे।

हज़रत अःयाश रज़ि० ने नाका ले लिया, यह तीनों चल पड़े, एक रोज़ राह में (मक्का) के करीब अबू जहल ने कहा, भाई हमारा ऊंट तो नाका के साथ चलता चलता रह गया, बेहतर है कि तुम मुझे अपने साथ सवार कर लो, अःयाश रज़ि० बोले बेहतर है, जब अःयाश रज़ि० ने नाका बिठाया तो दोनों ने उन्हें पकड़ लिया, मशक्कें कस लीं और मक्का में इसी तरह ले कर दाखिल हुए, यह दोनों बड़े फख्र से कहते थे कि देखो कि बेवकूफों और अहमकों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं, अब अःयाश रज़ि० को भी हिशाम बिन आस रज़ि० के साथ कैद कर दिया गया, जब नबी सल्ल० मदीना मुनाब्वरा पहुंच गए तब हुजूर सल्ल० की तमन्ना पूरी करने के लिये वलीद बिन मुग़ीरा मक्का आए और कैदखाने से दोनों को रातों रात निकाल कर ले गए।<sup>(1)</sup>

## रस्मियुल्लाह सल्ल० के रिप्लाफ़ कुरैश की साजिश और नाकामी और आप सल्ल० की हिजरते मदीना

कुरैश ने देखा कि अब मुसलमान मदीना में जाकर ताक़त पकड़ते जाते हैं और वहाँ इस्लाम फैलता जाता है, इस बिना पर उन्होंने दारुन्नदवा जो दारुश्शूरा था, में इजलासे आम किया, हर कबीला के रुअसा शरीक थे, लोगों ने मुख्तलिफ़ राएं पेश कीं, एक ने कहा “मुहम्मद सल्ल० के हाथ पांव में ज़ंजीरें डालकर मकान में बंद कर दिया जाए,

(1) मुस्तदरक हाकिम 2-235, इमाम ज़ुह्री ने रिवायत की तस्लीह फरमाई है।

## सीरित रसूले अवधि सल्ल0

दूसरे ने कहा “जिला वतन कर देना काफी है” अबू जहल ने कहा कि हर क़बीले से एक एक शख्स का इंतिख़ाब हो और पूरा मज्मा एक साथ मिलकर तलवारों से उनका खातमा कर दे, इस सूरत में उनका खून तमाम कबाइल में बट जाएगा, और आले हाशिम अकेले तमाम कबाइल का मुकाबला न कर सकेंगे, इस अखीर राए पर इत्तिफ़ाके आम हो गया और झट पटे से आकर रसूल सल्ल0 के आरतानए मुबारक का मुहासरा कर लिया गया, अहले अरब ज़नाना मकान के अंदर धुसना मअ्रूब समझते थे, इसलिये बाहर ठहरे रहे कि आंहज़रत सल्ल0 निकलें तो यह फर्ज़ अदा किया जाए।<sup>(1)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल0 से कुरैश को इस दर्जा अदावत थी, ताहम आप सल्ल0 की दियानत पर यह एतिमाद था कि जिस शख्स को कुछ माल या अस्बाब अमानत रखना होता था आप सल्ल0 ही के पास लाकर रखता था, उस वक्त भी बहुत सी अमानतें जमा थीं, आप सल्ल0 को कुरैश के इरादे की पहले से खबर हो चुकी थी, इस बिना पर हज़रत अली रज़ि0 को बुलाकर फरमाया कि “मुझको हिजरत का हुक्म हो चुका है, मैं आज मदीना रवाना हाँ जाऊंगा”<sup>(2)</sup> तुम मेरे पलंग पर मेरी चादर ओढ़ कर सो रहो, सुब्ह सब की अमानतें वापस दे आना, हज़रत अली रज़ि0 तो उन तलवारों

(1) सीरित इन्हे हिशाम 1-480

(2) हिजरत का हुक्म आप सल्ल0 को अल्लाह तबारक व तआला की तरफ से हुआ था, जैसा कि बुखारी शरीफ की रिवायत में सराहत है। किंताबुल मनाकिब, बाबु हिजरतिन्नबी सल्ल0 व अस्लाबिही इलल मदीना।

के साए में निहायत बेफ़िक्री से मज़े की नींद सो रहे और खुदा का रसूल (सल्ल०) खुदा की हिफाज़त में बाहर निकला और उन दिल के अंधों की आंखों में ख़ाक डालता हुआ और सूरए “यासीन” पढ़ता हुआ साफ़ निकल गया, किसी ने नबी सल्ल० को जाते न देखा,<sup>(1)</sup> यह वाक़िआ 27/सफ़र 13 हि० नुबूव्वत सल्ल० रोज़ पंजशंबा (12/सितम्बर 621 ई०) का है।<sup>(4)</sup>

हिज्रत से दो तीन दिन पहले रसूलुल्लाह सल्ल० दोपहर के वक्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के घर पर गए दस्तूर के मुताबिक दरवाज़ा पर दस्तक दी, इजाज़त के बाद घर में तशरीफ़ ले गए, हज़रत अबू बक्र रज़ि० से फ़रमाया कि “कुछ मशवरा करना है सब को हटा दो” बोले कि “यहाँ आप की हरम के सिवा और कोई नहीं है (उस वक्त हज़रत आइशा रज़ि० से शादी हो चुकी थी) आप सल्ल० ने फ़रमाया “मुझको हिज्रत की इजाज़त हो गई है” हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने निहायत बेताबी से कहा “मेरा बाप आप पर फ़िदा हो, क्या मुझको भी हमराही का शर्फ़ होगा?” इशाद हुआ “हाँ” हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हिज्रत के लिये चार महीने से दो ऊंटनियां बबूल की पत्तियां खिला खिलाकर तैयार की थीं, अर्ज़ की कि इनमें से एक आप पसंद फ़रमाएं, मोहसिने आलम को किसी का एहसान गवारा नहीं हो सकता था, इशाद हुआ “अच्छा, मगर बक़ीमत”

(1) मुस्नद अहमद 1-348, मुसन्नफ़ अब्दुरज़ाक 5-389

(2) सीरतुन्बी सल्ल० 1, 270, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने मजबूरन कबूल किया, हज़रत आइशा रज़ि० उस वक्त कम्सिन थीं, उनकी बड़ी बहन हज़रत अस्मा ने जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की मां थीं, सफर का सामान किया, दो तीन दिन का खाना नाश्ता दान में रखा, निताक (जिसको औरतें कमर से लपेटती हैं) फ़ाड़ कर उससे नाश्ता दान का मुंह बांधा, यह वह शर्फ था जिसकी बिना पर आज तक उनको “ज़ातुन्निताकैन” के लक़्ब से याद किया जाता है।<sup>(1)</sup>

आपने कअबा पर वदाई निगाह डाली और फ़रमाया “मक्का! तू मुझको तमाम दुन्या से ज्यादा अज़ीज़ है लेकिन तेरे फरज़द मुझको रहने नहीं देते।<sup>(2)</sup> शब की तारीकी में दोनों बुजुर्गवार चल पड़े, मक्का से चार पाँच मील के फ़ासिले पर कोहे सौर है उसकी चढ़ाई सर तोड़ है, रास्ता संगलाख था, नुकीले पत्थर नबी सल्ल० के पाए नाजुक को ज़ख्मी कर रहे थे और ठोकर लगने से भी तकलीफ़ होती थी, अबू बक्र रज़ि० ने नबी सल्ल० को अपने कंधे पर उठा लिया, आखिर एक ग़ार तक पहुंचे, अबू बक्र रज़ि० ने नबी सल्ल० को बाहर ठहराया, खुद अंदर जाकर ग़ार को साफ़ किया, तन के कपड़े फ़ाड़ कर ग़ार के रोज़न बंद किये और

(1) सहीहुल बुखारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाद हिज्रतुन्नबी सल्ल० व अस्लामिही इलल मदीना

(2) इमाम तिर्मिजी, इमाम दारमी और इब्ने माजा ने ”وَاللَّهِ إِنَّكَ لَعَلَيْرَ أَرْضِ اللَّهِ“ के ”وَأَحَبُّ أَرْضَ اللَّهِ الَّتِي وَلَوْلَا إِنِّي أَخْرَجْتُ مِنْكَ مَا نَعْرَجْتُ“ के अलफ़ाज़ कहे हैं, और इमाम तिर्मिजी ने हस्तन ग़रीब सहीह कहा है।

फिर अर्ज किया कि हुजूर (सल्ल०) भी तशरीफ ले आएं।<sup>(1)</sup>

सुन्ह हुई, हज़रत अली रज़ि० हसबे मअमूल ख़बाब से बेदार हुए, कुरैश ने क़रीब जाकर उन्हें पहचाना, पूछा मुहम्मद (सल्ल०) कहां हैं? हज़रत अली रज़ि० ने जवाब दिया मुझे क्या ख़बर, क्या मेरा पहरा था? तुम लोगों ने उन्हें निकल जाने दिया और वह निकल गए, कुरैश गुस्सा और नदामत से अली रज़ि० पर पिल पड़े, उनको मारा और खानए कअबा तक पकड़ लाए और थोड़ी देर हब्स में रखा आखिर छोड़ दिया।<sup>(2)</sup>

अस्मा बिंते अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० कहती हैं कि मेरे वालिद जाते हुए घर से नकद रूपया सब उठा ले गए, यह पांच छः हज़ार रूपये थे, वालिद के चले जाने के बाद मेरे दादा अबू कुहाफ़ा ने कहा कि बेटी मैं समझता हूं कि अबू बक्र (रज़ि०) ने तुमको दोहरी तकलीफ़ में डाल दिया, वह खुद भी चले गए और नकद व माल भी साथ ले गए, हज़रत अस्मा रज़ि० बोलीं, दादा जान! वह हमारे लिये काफ़ी रूपया छोड़ गए हैं, अस्मा रज़ि० ने एक पत्थर लिया और उस पर एक कपड़ा लपेटा और जिस घड़े में रूपया हुआ करता था वहां रख दिया और फिर दादा का हाथ पकड़ कर ले गई, अबू कुहाफ़ा की आँखें जाती रही थीं, कहा दादाजान! हाथ लगा कर देखो कि माल मौजूद है, बूढ़े ने उसे टटोला और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-6, दलाइलुन्नुबूवा 2-477, अस्सीरतुन्नबवीया लिज्जहबी स० 221, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

(2) तारीखे तबरी 1-586

फिर कहा खैर जब तुम्हारे पास सरमाया काफ़ी है तो अबू बक्र (रज़ि०) के जाने का चंदाँ ग़म नहीं, यह अबू बक्र रज़ि० ने अच्छा किया और मैं समझता हूं कि तुम्हारे लिये काफ़ी इंतिज़ाम कर गए हैं, हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं कि यह तदबीर मैंने बूढ़े दादा साहब के इत्मीनाने क़ल्ब के लिये की थी, वर्ना वालिद बुजुर्गवार तो सब कुछ (नबी सल्ल० की खिदमत के लिये) साथ ले गए थे।<sup>(1)</sup>

यह चांद और सूरज दोनों तीन रोज़ तक उसी ग़ार में रहे, हज़रत अबू बक्र रज़ि० के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि० नौ खेज़ जवान थे, शब को ग़ार में साथ सोते, सुब्ल मुंह अंधेरे शहर चले जाते और पता लगाते कि कुरैश क्या मशावरे कर रहे हैं? जो कुछ ख़बर मिलती, शाम को आकर आंहज़रत सल्ल० से अ़र्ज़ करते, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का गुलाम कुछ रात गए बकरियां चरा कर लाता, आप सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० उनका दूध पी लेते, तीन दिन तक सिर्फ़ यही गिज़ा थी।<sup>(2)</sup>

कुरैश आंहज़रत सल्ल० की तलाश में निकले, ढूँढ़ते ढूँढ़ते ग़ार के दहाना तक आ गए, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० ग़मज़दा हुए और आंहज़रत सल्ल० से अ़र्ज़ की अब दुशमन इस क़दर करीब आ गए कि अगर अपने क़दम पर उनकी नज़र पड़ जाए तो हमको देख लेंगे, आप सल्ल०

(1) सीरित इन्ने हिशाम 1-488

(2) सहीहुल बुखारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल०

ने फ़रमाया “لَا تَحْرِزْنِي اللَّهُ مَعَنِّا” घबराओ नहीं खुदा हमारे साथ है।<sup>(1)</sup>

चौथे दिन आप ग़ार से निकले अब्दुल्लाह बिन उरैकित एक काफिर, जिस पर एतिबार था रहनुमाई के लिये उज्रत पर मुकर्रर कर लिया गया था, वह आगे आगे रस्ता बताता जाता था, एक रात दिन बराबर चलते गए, दूसरे दिन दोपहर के वक्त धूप सख्त हो गई तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने चाहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० सांया में आराम फ़रमालें, चारों तरफ़ नज़र डाली, एक चट्टान के नीचे साया नज़र आया, सवारी से उतर कर ज़मीन झाड़ी, फिर अपनी चादर बिछा दी, आंहज़रत सल्ल० ने आराम फ़रमाया तो तलाश में निकले कि कहीं खाने को कुछ मिल जाए तो लाएं, पास ही एक चरवाहा बकरियां चरा रहा था उससे कहा एक बकरी का थन गर्द व गुबार से साफ़ कर दे, फिर उसके हाथ साफ़ कराए और दूध दुहाया, बर्तन के मुंह पर कपड़ा लपेट दिया कि गर्द न पड़ने पाए, दूध लेकर आंहज़रत सल्ल० के पास आए और थोड़ा सा पानी मिला कर पेश किया, आप सल्ल० ने पीकर फ़रमाया कि “क्या चलने का वक्त नहीं आया? आफ़ताब ढल चुका था, इसलिये आप वहां से रवाना हुए।<sup>(2)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्ल०, बाब मनाकिबुल मुहाजिरीन व फ़ज़लिहुम, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस सहाबा, फ़ज़ाइल अबू बक्र अस्सिद्दीक रज़ि०

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब फ़ी हदीसिल हिज़र, सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद वर्काइक, बाब फ़ी हदीसिल हिज़र

## सुराक़ा का तआ०कुब

कुरैश ने इश्तिहार दे दिया था कि जो शख्स मुहम्मद (सत्त्वा०) या अबू बक्र को गिरफ्तार कर लाएगा उसको एक खून बहा के बराबर (यज्ञनी सौ ऊंट) इन्आम दिया जाएगा, सुराक़ा ने सुना तो इन्आम की उम्मीद में निकला, ऐन उस हालत में कि आप सत्त्वा० रवाना हो रहे थे, उसने आपको देख लिया और घोड़ा दौड़ा कर करीब आ गया, लेकिन घोड़े ने ठोकर खाई वह गिर पड़ा, तर्कश से फ़ाल के तीर निकाले कि हमला करना चाहिये या नहीं? जवाब में “नहीं” निकला, लेकिन सौ ऊंटों का गिरां बहा मुआवज़ा ऐसा न था कि तीर की बात मान ली जाती, दोबारा घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा, नबी सत्त्वा० कुर्झान मजीद की तिलावत करते हुए और मालिक से लौ लगाए हुए बढ़े चले जाते थे, अब की घोड़े के पांव घुटनों तक ज़मीन में धंस गए, घोड़े से उतर पड़ा और फिर फ़ाल देखी, अब भी वही जवाब था, लेकिन मुकर्रर तज़्बा ने उसकी हिम्मत पस्त कर दी और यकीन हो गया कि यह कुछ और आसार हैं, आंहज़रत सत्त्वा० के पास आकर कुरैश के इश्तिहार का वाक़िआ सुनाया और अपना सामान आप सत्त्वा० की खिदमत में पेश किया यह कबूल हो, आप सत्त्वा० ने मंअज़िरत की और सिर्फ़ यह ख्वाहिश ज़ाहिर की कि आप सत्त्वा० का पता निशान छिपाया जाए, सुराक़ा ने दरख़ास्त की कि मुझको अम्न की तहरीर लिख दीजिये, हज़रत अबू

बक्र रजि० के गुलाम आमिर बिन फुहैरा ने चमड़े के एक टुकड़े पर फरमाने अम्न लिख दिया।<sup>(1)</sup>

### मुबारक शरव्स

ग़ार से निकल कर पहले ही दिन इस मुबारक काफिला का गुज़र उम्मे मअूबद के खेमा पर हुआ, यह औरत कौमे खुज़ाआ से थीं, मुसाफिरों की खबरगीरी और उनकी तवाज़ोअूर के लिये मशहूर थीं, सरे राह पानी पिलाया करती थीं और मुसाफिर वहां ठहर कर सुस्ताया करते थे, यहां पहुंच कर बुढ़िया से पूछा कि उसके पास खाने की कोई चीज़ है, वह बोलीं नहीं, अगर कोई शैय मौजूद होती तो दरयाप्त करने से पहले मैं खुद हाज़िर कर देती, नबी सल्ल० ने खेमा के गोशा में एक बकरी देखी, पूछा यह बकरी क्यों खड़ी है? उम्मे मअूबद ने कहा कि कमज़ोर है, रेवड़ के साथ नहीं चल सकती, नबी सल्ल० ने फरमाया ‘‘इजाज़त है कि हम उसे दूह लें?’’ उम्मे मअूबद ने कहा कि अगर हुजूर (सल्ल०) को दूध मअ़्लूम होता है तो दूह लीजिये, नबी सल्ल० ने बिस्मिल्लाह कह कर बकरी के थनों को हाथ लगाया, बर्तन मांगा वह ऐसा भर गया कि दूधर उछल कर ज़मीन पर भी गिर गया, यह दूध आंहज़रत सल्ल० और हमराहियों ने पी लिया। दूसरी दफ़ा फिर बकरी को दूहा गया, बर्तन फिर भर गया, यह भी हमराहियों ने पिया, तीसरी दफ़ा बर्तन फिर भर गया और वह उम्मे मअूबद के लिये छोड़ दिया गया और आगे को रवाना हो गए।

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल०, सीरियस हिशाम

कुछ देर बाद उम्मे मअब्द के शौहर आए, ख़ेमा में दूध का बर्तन भरा देखकर हैरान हो गए कि यह कहाँ से आया, उम्मे मअब्द ने कहा कि एक बाबरकत शख्स यहाँ आए थे और यह दूध उनके कुदूम का नतीजा है, वह बोले कि यह तो वही साहिबे कुरैश मअलूम होते हैं जिनकी मुझे तलाश थी, अच्छा ज़रा उनकी तौसीफ़ तो करो, उम्मे मअब्द बोलीं:

“मैंने एक शख्स को देखा जिसकी नज़ाफ़त नुमायाँ, जिसका चेहरा ताबाँ, और जिसकी साख़त में तनासुब था, पाकीज़ा रू और पसंदीदा खूँ न फ़रबही का ऐब, न लाग़री का नक्स, न पेट निकला हुआ, न सर के बाल गिरे हुए, चेहरा वजीह, जिस्म तनोमंद और क़द मौजूँ था, आँखें सुर्मगीं, फ़राख़ और सियाह थीं, पुतलियाँ काली थीं, ढेले बहुत सफेद थे, पलकें घनी और लम्बी थीं, पुरवकार ख़ामोश दिलबस्तगी लिये हुए, कलाम शीरीं और वाज़ेह, न कम सुख़न, न बिस्यार गो, गुफ़तगूँ इस अंदाज़ की जैसे पिरोए हुए मोती, दो नर्म व नाजुक शाख़ों के दर्भियान एक शाख़े ताज़ा जो देखने में खुश मंज़र, रफ़ीक उनके गिर्द व पेश रहते हैं, जो कुछ वह फ़रमाते हैं वह सुनते हैं, जब हुक्म देते हैं तो तज़्अमील के लिये झपटते हैं, मख्दूम व मुताअ्र न कोताह सुख़न न फुजूल गो ।”

यह सिफ़त सुनकर वह बोला कि यह तो ज़रूर साहिबे कुरैश हैं और मैं इन्हसे ज़रूर जा मिलूँगा ।<sup>(1)</sup>

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-9,10, तबकाते इब्ने सज़ाद 1-230, ज़ादुल मज़ाद 3-56

नबी सल्ल० यसरिब जा रहे थे कि अस्नाए राह में बुरैदा असलमी मिला, यह अपनी कौम का सरदार था, कुरैश ने आंहज़रत सल्ल० की गिरफ़्तारी पर एक सौ ऊंट इन्ज़ाम मुशतहर किया था और बुरैदा इसी लालच में आंहज़रत की तलाश में निकला, जब नबी सल्ल० के सामने हुआ और हुजूर सल्ल० से हम कलाम होने का मौक़ा मिला तो बुरैदा सत्तर आदमियों समेत मुसलमान हो गया, अपनी पगड़ी उतार कर नेज़ा पर बांध ली जिस का सफ़ेद फेरेरा हवा में लहराता और बशरत सुनाता कि अम्न का बादशाह, सुल्ह का हामी, दुन्या को अदालत और इंसाफ़ से भरपूर करने वाला तशरीफ़ ला रहा है,<sup>(1)</sup> रास्ता में नबी सल्ल० को जुबैर बिन अल अव्वाम मिले, यह शाम से आ रहे थे और मुसलमानों का तिजारत पेशा गिरोह भी उनके साथ था, उन्होंने नबी सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० के लिये सफ़ेद पार्चा जात पेश किये।<sup>(2)</sup>

### नबीये अवरम सल्ल० का मदीना में इस्तिक़बाल

तशरीफ़ आवरी की ख़बर मदीना में पहले पहुंच चुकी थी, तमाम शहर हमा चश्म इंतिज़ार था, मअ़सूम बच्चे फख़ और जोश में कहते फिरते थे कि पैग़म्बर सल्ल० आ रहे हैं, लोग हर रोज़ तड़के से निकल निकल कर शहर के बाहर जमा होते और दोपहर तक इंतिज़ार करके हसरत के साथ वापस चले आते, एक दिन इंतिज़ार करके वापस जा चुके थे

(1) असीरितुन्नबीया लिज़ज़हबी स० 228

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब हिज्जतुन्नबी सल्ल०

कि एक यहूदी ने किला से देखा और कराइन से पहचान कर पुकारा कहा “अहले अरब लो! तुम जिसका इंतिज़ार करते थे वह आ गया” तमाम शहर तकबीर की आवाज़ से शूंज उठा, अंसार हथियार सज धज कर बेताबाना घरों से निकल आए, अक्सर मुसलमान ऐसे थे जिन्होंने हुनूज़ दीदारे पुर अनवार से चश्मे ज़ाहिर बीं को रौशन किया था, उन्हें नबी सल्ल० और उनके रफीक़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की शनाख्त में इश्तिबाह हो जाता था, हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस ज़रूरत को ताड़ गए और सरे मुबारक पर साया करके खड़े हो गए, मदीना मुनब्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर जो बालाई आबादी है उसको आलिया और कुबा कहते हैं, यहां अंसार के बहुत से ख़ानदान आबाद थे, इनमें सबसे ज़्यादा मुम्ताज़ अम्र बिन औफ़ का ख़ानदान था और कुल्सूम बिन अल हद्दम ख़ानदान के अफ़सर थे, आंहज़रत सल्ल० यहां पहुंचे तो तमाम ख़ानदान ने जोशे मुसर्रत में “अल्लाहु अक्बर” का नज़रा मारा, यह फ़ख़र उनकी किस्मत में था कि मेज़बाने दो आलम ने उनकी मेहमानी कबूल की, अंसार हर तरफ़ से जूक़ दर जूक़ आते और जोशे अकीदत के साथ सलाम अर्ज़ करते।<sup>(1)</sup>

### मस्जिदे कुबा की तअ़मीर

यहां आप सल्ल० का पहला काम मस्जिद तअ़मीर करना था, कुल्सूम की एक उफ़तादा ज़मीन थी जहां खजूरें

(1) सहीहुल बुखारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल०, सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुह्द वर्काइक़, बाब फी हदीसिल हिज्रह, तबक्कात इब्ने सऊद 1-233

सुखाई जाती थीं, यहीं दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुन्याद डाली, यही मस्जिद है जिसकी शान में कुर्�आन मजीद में है:

**لَمْسُجِدٌ أَتَسْسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ  
فِيهِ، فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ.**

“वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले ही दिन परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस बात की ज्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उसमें खड़े हो, उसमें ऐसे लोग हैं जिनको सफाई बहुत पसंद है और खुदा साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है।

(सूरए तौबा-108)

मस्जिद की तज़्अमीर में मज़दूरों के साथ आप सल्ल० खुद भी काम करते थे, भारी भारी पत्थरों के उठाते वक्त जिसम मुबारक ख़म हो जाता था, अकीदतमंद आते और अर्ज़ करते कि “हमारे मां बाप आप सल्ल० पर फ़िदा हों, आप छोड़ दें हम उठा लेंगे, आप सल्ल० उनकी दरख़बास्त कबूल फ़रमाते, लेकिन फिर उसी वज़न का दूसरा पत्थर उठला लेते,<sup>(1)</sup> हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बिन खाहा शाइर थे वह भी मज़दूरों के साथ शरीक थे और जिस तरह मजूदर काम करते वक्त धकन मिटाने को गाते जाते हैं, वह यह अशआर पढ़ते जाते थे-

**أَفْلَحَ مَنْ يُعَالِجُ الْمَسَاجِدَ وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَائِمًا وَقَاعِدًا  
وَلَا يَبْيُثُ اللَّيلَ عَنْهُ رَاقِدًا**

(1) वफाऊल वफा बहवाला तबरानी कबीर 1-180

‘‘वह कामियाब है जो मस्जिद दुरुस्त करता है और उठते बैठते कुर्झान पढ़ता है और रात को जागता रहता है।’’

आंहज़रत सल्ल० भी हर हर क़ाफ़िया के साथ आवाज़ मिलाते जाते थे।<sup>(1)</sup>

### मदीना का पहला जुमुआ

12/ रबीउल अव्वल 1 हि० को जुमुआ का दिन था, नबी सल्ल० कुबा से सवार होकर बनी सालिम के घरों तक पहुंचे कि जुमुआ का वक्त हो गया, यहाँ सौ आदमियों के साथ जुमुआ पढ़ा, यह इस्लाम में पहला जुमुआ था,<sup>(2)</sup> आप सल्ल० ने खुत्बा में फ़रमाया:

‘‘हम्द व सत्ताइश खुदा के लिये है, मैं उसकी की हम्द करता हूं, मदद व बखिश्श और हिदायत उसी से चाहता हूं, मेरा ईमान उसी पर है, मैं उसकी नाफ़रमानी नहीं करता और नाफ़रमानी करने वालों से अदावत रखता हूं, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मुहम्मद (सल्ल०) उसका बंदा और रसूल है, उसी ने मुहम्मद को हिदायत, नूर और नसीहत के साथ ऐसे ज़माने में भेजा जबकि मुद्दतों से कोई रसूल दुन्या पर न आया, इल्म घट गया और गुमराही बढ़ गई थी, उसे आखिरी ज़माना में क़्यामत के करीब और मौत की नज़दीकी के वक्त भेजा गया

(1) वफाउल वफा 1-181 बहवाला इब्न अबी शैबा

(2) दलाइलुन्नुबूब्बा लिलबैहकी 2-500, ज़ादुल मज़ाद 3-59

है, और जिसने उनका हुक्म माना वह भटक गया, दर्जा से गिर गया और सख्त गुमराही में फँस गया है, मुसलमानो! मैं तुम्हें अल्लाह से तक्वा की वसीयत करता हूं, बेहतरीन वसीयत जो मुसलमान, मुसलमान को कर सकता है यह है कि उसे आखिरत के लिये आमादा करे और अल्लाह से तक्वा के लिये कहे, लोगो! जिन बातों से खुदा ने तुम्हें परहेज़ करने को कहा है उनसे बचते रहो, इससे बढ़ कर न कोई नसीहत है और न इससे बढ़कर कोई ज़िक्र है, याद रखो! कि उम्रे आखिरत के बारे में उस शख्स के लिये जो खुदा से डर कर काम कर रहा है, तक्वा बेहतरीन मददगार साबित होगा और जब कोई शख्स अपने और खुदा के दर्मियान का मुआमला बातिन व ज़ाहिर में दुरुस्त कर लेगा और ऐसा करने में उसकी नीयत ख़ालिस हुई तो ऐसा करना उसके लिये दुन्या में ज़िक्र और मौत के बाद (जब इंसान को अअूमाल की ज़रूरत व क़दर मअ़लूम होगी) ज़ख़ीरा बन जाएगा, लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता (तो उसका ज़िक्र इस आयत में है) कि इंसान पसंद करेगा कि उसके अअूमाल उससे दूर ही रखे जाएं, खुदा तुम को अपनी ज़ात से डराता है और खुदा तो अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है, और जिस शख्स ने खुदा के हुक्म को सच जाना और उसके वादों को पूरा किया तो इसकी बाबत इशदि इलाही मौजूद है, ‘‘हमारे यहां

बात नहीं बदलती और हम अपने नाचीज़ बंदों पर जुल्म नहीं करते,” मुसलमानो! अपने मौजूदा और आइंदा, ज़ाहिर और खुफिया कामों में अल्लाह से तक़्वा को पेश नज़र रखो क्योंकि तक़्वा वालों की बद्रियां छोड़ दी जाती हैं और अज्ज बढ़ा दिया जाता है, तक़्वा वाले वह हैं जो बहुत बड़ी मुराद को पहुंच जाएंगे, यह तक़्वा ही है जो अल्लाह की बेज़ारी, अज़ाब और गुस्सा को दूर कर देता है, यह तक़्वा ही है जो चेहरा को दरख्शां, परवदरिगार को खुशनूद और दर्जा को बुलंद करता है, मुसलमानो! हज़्ज़ उठाओ, मगर हुकूके इलाही में फ़रो गुज़ाश्त न करो, खुदा ने इसी लिये तुमको अपनी किताब सिखाई और अपना रस्ता दिखाया है कि रास्त बाज़ों और काज़िबों को अलग अलग कर दिया जाए, लोगो! खुदा ने तुम्हारे साथ उम्दा बरताव किया है, तुम भी लोगों के साथ ऐसा ही करो, और जो खुदा के दुशमन हैं उन्हें दुशमन समझो, और अल्लाह के रस्ता में पूरी हिम्मत और तवज्जोह से कोशिश करो, उसी ने तुमको बरगुज़ीदा बनाया और तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, ताकि हलाक होने वाला भी रौशन दलाइल पर हलाक हो और ज़िंदगी पाने वाला भी रौशन दलाइल पर ज़िंदगी पाए, और सब नेकियां अल्लाह की मदद से हैं, लोगो! अल्लाह का ज़िक्र करो और आइंदा ज़िंदगी के लिये अमल करो, क्योंकि जो शख्स अपने और

खुदा के दर्मियान मुआमला को दुरुस्त कर लेता है,  
अल्लाह तआला उसके और लोगों के दर्मियान  
मुआमला को दुरुस्त कर देता है, हाँ! खुदा बंदों पर  
हुक्म चलाता है और उस पर किसी का हुक्म नहीं  
चलता, खुदा बंदों का मालिक है और बंदों को उस  
पर कुछ इख़ितायार नहीं, खुदा सब से बड़ा है और  
हमको नेकी करने की ताक़त उसी अज़मत वाले से  
मिलती है।<sup>(1)</sup>

## मदीना में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के घर में क्याम

मदीना तथियबा में जब तशरीफ़ आवरी की ख़बर  
मअ़्लूम हुई तो हर तरफ़ से लोग जोशे मुसर्त से पेशक़दमी  
के लिये दौड़े, कुबा से मदीना तक दो रुया जां निसारों की  
सफ़े थीं, राह में अंसार के ख़ानदान आते थे, हर क़बीला  
सामने आकर अ़र्ज़ करता “हुजूर (सल्ल०) यह घर है, यह  
माल है, यह जान है” आप सल्ल० मिन्नत का इज़हार  
फ़रमाते और दुआए खैर देते और फ़रमाते कि मेरी ऊंटनी  
का रास्ता छोड़ दो, उसको खुदा की तरफ़ से हुक्म है, इसी  
तरह मदीना के पांच बड़े बड़े क़बीलों के सरदार मिलते रहे  
और यही अ़र्ज़ करते रहे “हुजूर (सल्ल०) यह घर है, यह  
माल है, यह जान है” आप सल्ल० यही फ़रमाते “इसका  
रास्ता छोड़ दो जहाँ अल्लाह का हुक्म होगा वहीं जाएगी।”<sup>(2)</sup>

(1) तारीखे तबरी 2-807 (2) दलाइलुन्बुव्वा 2-503, 504

शहर कीरीब आ गया तो जोश का यह आलम था कि बच्चियां छतों पर निकल आई और गाने लगीं-

مِنْ ثَيْئَاتِ الْوَدَاعِ  
مَا دَعَى إِلَّهُ دَاعٌ

طَلَعَ الْبَلْرُ عَلَيْنَا  
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا

“चांद निकल आया है, कोहे वदाअः की घाटियों से, हम पर खुदा का शुक्र वाजिब है, जब तक दुआ मांगने वाले दुआ मांगें”,<sup>(1)</sup>

बनू नज्जार की लड़कियां दफ़ बजा बजा कर गाती थीं-

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِي النَّجَارِ يَا حَبَّذا مُحَمَّداً مِنْ جَارِ

“हम खानदाने नज्जार की लड़कियां हैं, मुहम्मद सल्ल0 क्या अच्छे हमसाया हैं”

आप सल्ल0 ने लड़कियों की तरफ खिताब करके फ़रमाया “क्या तुम मुझको चाहती हो? बोलीं हाँ! “फ़रमाया मैं भी तुम को चाहता हूं।”,<sup>(2)</sup>

जहां अब मस्जिदे नबवी (सल्ल0) है उससे मुत्तसिल हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 का घर था, ऊटनी वहां पहुंच कर ठहर गई, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि0 का मकान दो मज़िला था, उन्होंने बालाई मज़िल पेश की, लेकिन आप सल्ल0 ने ज़ाइरीन की आसानी के लिये नीचे का हिस्सा पसंद फ़रमाया।<sup>(3)</sup>

(1) दलाइलुन्नुबूवा 2-506, 507

(2) दलाइलुन्नुबूवा 2-508, फ़खुल बारी 7-261

(3) मुस्तदरक हाकिम 3-460, इमाम ज़हबी ने हदीस को सही करार दिया है, सीरत इब्ने हिशाम, 1-498

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि0 दोनों वक़्त आप सल्ल0 की खिदमत में खाना भेजते और आप सल्ल0 जो छोड़ देते अबू अय्यूब रज़ि0 और उनकी ज़ौजा के हिस्सा में आता, खाने में जहां हुजूर सल्ल0 की उंगलियों का निशान पड़ा होता अबू अय्यूब रज़ि0 तबर्कन वहीं उंगलियां डालते।<sup>(1)</sup>

एक दिन इत्तिफ़ाक से बालाई मंज़िल में पानी का बर्तन टूट गया, अंदेशा हुआ कि पानी बहकर नीचे जाए और आंहज़रत सल्ल0 को तकलीफ़ हो, घर में ओढ़ने का सिर्फ़ एक लिहाफ़ था, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि0 ने उसको डाल दिया कि पानी ज़ब होकर रह जाए।<sup>(2)</sup>

### **मस्जिदे नबवी सल्ल0 और मकानात की तअमीर**

मदीना में क़्याम के बाद सबसे पहला काम एक ख़ानए खुदा की तअमीर थी, अब तक यह मअमूल था कि मवेशी ख़ाना में आप सल्ल0 नमाज़ पढ़ा करते थे, दौलत कदा के करीब ख़ानदाने नज्जार की ज़मीन थी, जिसमें कुछ कब्रें थीं, कुछ खजूर के दरख़त थे, आप सल्ल0 ने उन लोगों को बुलाकर फ़रमाया “कि मैं यह ज़मीन बक़ीमत लेना चाहता हूं” वह बोले कि “हम कीमत लेंगे लेकिन आप से नहीं बल्कि खुदा से” चूंकि अस्त में वह ज़मीन दो यतीम बच्चों की थी, आप सल्ल0 ने खुद उन यतीमों को बुला भेजा, उन यतीमों ने भी अपनी काइनात नज़र करना चाही लेकिन आप सल्ल0 ने गवारा न किया, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि0 ने

(1) सीरित इब्ने हिशाम 1-499

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-360

कीमत अदा की, कब्रें उखड़वा कर ज़मीन हमवार कर दी गई और मस्जिद की तआमीर शुरू कर दी गई, शंहशाहे दो आलम (सल्ल०) फिर मज़दूरों के लिबास में था, सहाबए किराम रज़ि० पत्थर उठा उठा कर लाते थे और रिज़ पढ़ते जाते थे, आंहज़रत सल्ल० भी उनके साथ आवाज़ मिलाते और यह पढ़ते:

اللَّهُمَّ لَا خَيْرٌ إِلَّا خَيْرٌ الْآخِرَةِ فَارْحِمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ

“ऐ खुदा! कामियाबी सिफ़ आखिरत की कामियाबी है, ऐ खुदा! मुहाजिरीन और अंसार पर रहम फ़रमा!”,<sup>(1)</sup>

यह मस्जिद हर किस्म की तकल्लुफ़ात से बड़ी और इस्लाम की सादगी की तस्वीर थी, यज़नी कच्ची ईटों की दीवारें, बर्गे खुर्मा का छप्पर, खजूर के सुतून थे, किष्णा बैतुल मक्किदस की तरफ़ रखा गया,<sup>(2)</sup> लेकिन जब किष्णा बदल कर कअबा की तरफ़ हो गया तो शुभाली जानिब एक नया दरवाज़ा काइम कर दिया गया, फर्श चूंकि बिल्कुल खाम था बारिश में कीचड़ हो जाता था, एक दफ़ा सहाबए किराम रज़ि० नमाज़ के लिये आए तो कंकरियां लेते आए और अपनी अपनी नशिस्त गाह पर बिछा लीं, आंहज़रत सल्ल० ने पसंद फ़रमाया और संगरेज़ों का फर्श बनवा दिया, मस्जिद के एक सिरे पर एक मुसक्कफ़ चबूतरा था जो सुफ़का कहलाता था, यह उन लोगों के लिये था जो इस्लाम

(1) सीरियन्सी 1-280, 281, बहवाला सहीहुल बुखारी व सुनन अबी दाऊद

(2) ज़ादुल मज़ाद 3-63

लाते थे और धर बार नहीं रखते थे, मस्जिदे नबवी सल्ल० जब तअ़मीर हो चुकी तो मस्जिद से मुत्तसिल ही आप सल्ल० ने अज्याजे मुतहर्रात के लिये मकान बनवाए, उस वक्त तक हज़रत सौदा रज़ि० और हज़रत आइशा रज़ि० अक्दे निकाह में आ चुकी थीं, इसलिये दो ही हुजे बने, जब और अज्याज आती गई तो और मकानात बनते गए, यह मकानात कच्ची ईटों के थे, इनमें से पांच खजूर की टटियों से बने थे, जो हुजे ईटों के थे उनके अंदुरूनी हुजे भी टटियों के थे, तरतीब यह थी कि उम्मे सलमा रज़ि०, उम्मे हबीबा रज़ि०, जैनब रज़ि०, जुवैरिया रज़ि०, मैमूना रज़ि०, जैनब बिंते जहश के मकानात शामी जानिब थे और हज़रत आइशा रज़ि०, सफीया रज़ि०, सौदा रज़ि० मुकाबिल जानिब थीं, यह मकानात मस्जिद से इस कदर मुत्तसिल थे कि जब आप सल्ल० मस्जिद में एतिकाफ में होते तो मस्जिद से सर निकाल देते और अज्दवाजे मुतहर्रात घर में बैठे बैठे आप सल्ल० के बाल धो देती थीं, यह मकानात ४: ४ सात सात हाथ चौड़े और दस हाथ लम्बे थे, छत इतनी ऊँची थी कि आदमी खड़ा होकर छत को छू लेता था और दरवाजों पर कम्बल का पर्दा पड़ा रहता था।<sup>(1)</sup>

रातों को चराग़ नहीं जलते थे।<sup>(2)</sup> आहंज़रत सल्ल० के हमसाया में जो अंसार रहते थे उनमें सज़्द बिन उबादा

(1) सीरतुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिल्पी नोअमानी 1-281, 282 बहवाला तबक्काते इब्ने सज़्द नीज़ वफाउल वफा

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुस्सलात, बाबुस्सलात् अल्ल फिराश

रज़ि०, सअ़द बिन मआज़ रज़ि०, उमारा बिन हरम रज़ि०, और अबू अय्यूब रज़ि० रईस और दौलतमंद थे, यह लोग आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में दूध भेज दिया करते थे और इसी पर आप सल्ल० बसर किया करते थे, सअ़द बिन उबादा रज़ि० ने इल्लिज़ाम कर लिया था कि रात के खाने पर हमेशा अपने यहां से एक बड़ा बादिया भेजा करते थे जिसमें कभी सालन, कभी दूध, कभी घी होता था,<sup>(1)</sup> हज़रत अनस रज़ि० की माँ उम्मे अनस ने अपनी जाइदाद आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में पेश की, आंहज़रत सल्ल० ने कबूल फ़रमाकर अपनी दाया उम्मे ऐमन को दे दिया और खुद फ़क्र व फ़ाक़ा इख्तियार फ़रमाया।<sup>(2)</sup>

### अज़्जान की मशरुह्यत

इस्लाम की तमाम इबादात का अस्ली मर्कज़ वहूदत व इज्जिमाज़ है उस वक्त तक किसी खास अलामत के न होने की वजह से नमाज़े जमाऊत का कोई इंतिज़ाम न था, लोग आगे पीछे आते और जो जिस वक्त आता नमाज़ पढ़ लेता, आंहज़रत सल्ल० को यह पसंद न था, आपने इरादा फ़रमाया कि लोग मुकर्रर कर दिये जाएं जो वक्त पर लोगों को घरों से बुला लाएं, लेकिन इसमें ज़हमत थी, सहाबा को बुलाकर मशवरा किया, लोगों ने मुख्तलिफ़ राएं दीं, किसी ने कहा कि नमाज़ के वक्त मस्जिद पर एक अलम खड़ा कर दिया जाए लोग देख कर आते जाएंगे, आप सल्ल० ने यह तरीका

(1) तबकात इब्ने सज़द, किताबुन्निसा, स0116

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल हिबा, बाब फ़ज़्लुल मन्हीया

नापसंद फ़रमाया, ईसाइयों और यहूदियों के यहां एलाने नमाज़ के जो तरीके हैं वह भी आप सल्ल० की खिदमत में अर्ज किये गए, लेकिन आप सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० की राए पसंद की, और हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि अज़ान दें<sup>(1)</sup> इससे एक तरफ़ तो नमाज़ की इतिला आम हो जाती थी दूसरी तरफ़ दिन में पांच दफ़ा दावते इस्लाम का एलान हो जाता था।

### **मुहाजिरीन व अंसार में भाई चारा का मुआद्दा**

मुहाजिरीन मक्का मुअज्ज़मा से बिल्कुल बेसर व सामान आए थे, गो उनमें दौलतमंद और खुशहाल भी थे लेकिन काफ़िरों से छिप कर निकले थे, इसलिये कुछ साथ न लासके थे, अगर्चे मुहाजिरीन के लिये अंसार का घर मेहमानखानए आम था ताहम एक मुस्तकिल इंतिज़ाम की ज़रूरत थी, मुहाजिरीन नज़ और खैरात पर सब्र करना पसंद नहीं करते थे, वह दस्त व बाजू से काम लेने के खूगर थे, ताहम चूंकि बिल्कुल ख़ाली हाथ थे और एक हब्बा भी पास न था इसलिये आंहज़रत सल्ल० ने ख्याल फ़रमाया कि अंसार और उनमें रिश्तेए उख़ूव्वत क़ाइम कर दिया जाए, जब मस्जिदे नबवी सल्ल० की तअ़मीर करीबे ख़त्म हुई तो आप सल्ल० ने अंसार को तलब फ़रमाया, हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक जो उस वक्त दस साला थे, उनके मकान में लोग

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल अज़ान, बाब बदूउल अज़ान, सहीह मुस्लिम और दूसरी सिहाह की किताबों में भी यह वाकिअा मज़कूर है।

जमा हुए<sup>(1)</sup> मुहाजिरीन की तअ़दाद 45/थी, आंहज़रत सल्ल० ने अंसार की तरफ खिताब करके फ़रमाया “यह तुम्हारे भाई हैं” फिर मुहाजिरीन और अंसार में दो दो शख्स को बुला कर फ़रमाते गए कि ये ह और तुम भाई भाई हो, और अब वह दरहकीक़त भाई भाई थे, अंसार ने मुहाजिरीन को साथ ले जाकर घर की एक एक चीज़ का जाइज़ा दे दिया कि आधा आप का और आधा हमारा है।<sup>(2)</sup> सअ़द रज़ि० बिन अर्बीअ० जो अब्दुर्रहमान रज़ि० बिन औफ़ के भाई क़रार पाए थे उनकी दो बीवियां थीं, अब्दुर्रहमान से कहा कि एक को में तलाक दे देता हूं आप उससे निकाह कर लीजिये लेकिन उन्होंने एहसान मंदी के साथ इंकार किया।<sup>(3)</sup>

अंसार का माल व दौलत जो कुछ था नख़िलस्तान थे, लूपये पैसे तो उस ज़माने में थे नहीं, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० से दरख्वास्त की कि यह बाग़ हमारे भाईयों में बराबर तक़सीम कर दिये जाएं, मुहाजिरीन तिजारत पेशा थे और इसी वजह से खेती के फ़न से बिल्कुल नाआशना थे, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल० ने उनकी तरफ़ से इंकार किया, अंसार ने कहा सब कारोबार हम खुद अंजाम दे लेंगे जो कुछ पैदावार होगी उसमें निसफ़ हिस्सा मुहाजिरीन का होगा, मुहाजिरीन ने उसको मंजूर किया,<sup>(4)</sup> यह रिशता बिल्कुल हक़ीकी रिशता बन गया, कोई अंसारी मरता तो

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-63

(2) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्पी 1-245, इब्ने हिशाम 1-504 ता 507

(3) व (4) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब इखाउन्नबी सल्ल०

उसकी जाइदा और माल मुहाजिरीन को मिलता था और भाई बंद महसूम रहते, यह इस फ़रमाने इलाही की तज़्अमील थी:

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَا جَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آتُوا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمُ أُولَيَاءُ بَعْضٍ

‘जो लोग ईमान लाए और हिज्रत की और खुदा की राह में माल व जान से जिहाद किया और वह लोग जिन्होंने इन लोगों को पनाह दी और उनकी मदद की, यह लोग बाहम भाई भाई हैं।’<sup>(1)</sup>

जंगे बदर के बाद जब मुहाजिरीन को इआनत की ज़खरत न रही तो यह आयत उतरी:

وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمُ أُولَئِي بِبَعْضٍ

‘अरबाबे क़राबत एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।’<sup>(2)</sup> (अन्फ़ाल आयत 75)

दुन्या अंसार के इस ईसार पर हमेशा नाज़ करेगी लेकिन यह भी देखो कि मुहाजिरीन ने क्या किया? सअद रज़ि० बिन अर्बीअ० ने जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को एक एक चीज़ का जाइज़ा देकर निस्फ़ ले लेने की दरख़्वास्त की तो उन्होंने कहा “खुदा यह सब आपको मुबारक करे मुझको सिफ़ बाज़ार का रास्ता बता दीजिये” उन्होंने कैनकाअ० का जो मशहूर बाज़ार था जाकर रास्ता बता दिया, उन्होंन कुछ घी और कुछ पनीर ख़रीदा और शाम तक

(1) अन्फ़ाल, आयत 72

(2) سहीहुल بुखारी, किताबुलफसीर, बाब “وَلَكُلٌّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِنْا تَرَكَ الْوَالَّدَانَ۔ الْخَ”

ख़रीद व फ़रोख़ा की, चंद रोज़ में इतना सरमाया हो गया कि शादी कर ली,<sup>(1)</sup> रफ़्ता रफ़्ता उनकी तिजारत को यह तरक़की हुई कि खुद उनका कौल है कि ख़ाक पर हाथ डालता हूं तो सोना बन जाती है, उनका अस्बाबे तिजारत सात सौ ऊंटों पर लदा करता था और जिस दिन मदीना में पहुंचता तमाम शहर में धूम मच जाती थी,<sup>(2)</sup> बअूज़ सहाबा रज़ि० ने दुकानें खोल लीं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का कारखाना मकामे सुख़ में था, जहां वह कपड़े की तिजारत करते थे<sup>(3)</sup> हज़रत उस्मान रज़ि० बनू कैन्काओं के बाज़ार में खजूर की ख़रीद व फ़रोख़ा करते थे, हज़रत उमर रज़ि० भी तिजारत में मशगूल हो गए थे और शायद उनकी इस तिजारत की वुस्तत ईरान तक पहुंच गई थी,<sup>(4)</sup> और सहाबए किराम रज़ि० ने भी उसी किस्म की छोटी बड़ी तिजारत शुरू कर दी थी, सहीह बुखारी में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० पर लोगों ने जब कसरते रिवायत की बिना पर एतिराज़ किया कि और सहाबा रज़ि० अल्लाहु अन्हुम तो इस कदर रिवायत नहीं करते तो उन्होंने कहा “इसमें मेरा क्या कुसूर है, और लोग बाज़ार में तिजारत करते थे और मैं रात दिन बारगाहे नुबूव्वत में हाज़िर रहता था।<sup>(5)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब इखाउन्नबी सल्ल०

(2) असदुल ग़ाब्बा 3-314, 315

(3) तबकाते इब्ने सअूद, 2-120

(4) मुस्नद अहमद में इन वाकिआत का ज़िक्र मौजूद है।

(5) सहीहुल बुखारी, किताबुल इल्म, बाब हफ़ज़तुल इल्म।

फिर जब खेबर फ़त्ह हुआ तो तमाम मुहाजिरीन ने यह नख्लस्तान अंसार को वापस कर दिये, सहीह मुस्लिम बाबुल जिहाद में है “आंहज़रत सल्ल० जब जंगे खेबर से फ़ारिग़ हुए और मदीना वापस हुए तो मुहाजिरीन ने अंसार के अतीये जो नख्लस्तान की सूरत में थे वापस कर दिये” मुहाजिरीन के लिये मकानात का यह इंतिज़ाम हुआ कि अंसार ने अपने घरों के आसपास जो उफ़्तादा ज़मीनें थीं उनको दे दीं और जिनके पास ज़मीन न थी उन्होंने अपने मस्कूना मकानात दे दिये,<sup>(1)</sup> अंसार ने मुहाजिरीन की मेहमानी और हमदर्दी का जो हक् अदा किया, दुन्या की तारीख में उसकी नज़ीर नहीं मिल सकती, बहरैन जब फ़त्ह हुआ तो आंहज़रत सल्ल० ने अंसार को बुला कर फ़रमाया कि “मैं इसको अंसार में तक़सीम कर देना चाहता हूं” उन्होंने अर्ज़ की कि “पहले हमारे भाई मुहाजिरों को इतनी ही ज़मीनें इनायत फ़रमा दीजिये तब हम लेना मंजूर करेंगे।”,<sup>(2)</sup>

एक दफ़ा एक फ़ाक़ा ज़दा शख्स आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में आया कि सख्त भूका हूं आप सल्ल० ने घर में दरयापृत फ़रमाया कि कुछ खाने को है? जवाब आया कि “सिफ़ पानी” आप सल्ल० ने हाज़िरीन की तरफ मुख़ातब होकर फ़रमाया “कोई है? जो इनको आज मेहमान बनाए।”

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्तियर, बाब रुहुल मुहाजिरीन इल्ल अंसार मुनाकिहुम

(2) सहीहुल बुखारी, किताबु मनाकिबिल अंसार, बाब कौलुन्नबी सल्ल० “इस्तिरूनी इल्ला तलकूनी अलल हौदज़”

ਅबू ਤਲਹਾ ਰਜ਼ਿਓ ਨੇ ਅੜਾ ਕੀ “ਮੈਂ ਹਾਜ਼ਿਰ ਹੁੰ” ਗੁਜ਼ ਵਹ ਅਪਨੇ ਘਰ ਲੇ ਗਏ ਲੇਕਿਨ ਵਹਾਂ ਭੀ ਬਰਕਤ ਥੀ, ਬੀਵੀ ਨੇ ਕਹਾ ਸਿਰਫ਼ ਬਚਿਆਂ ਦਾ ਖਾਨਾ ਮੌਜੂਦ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਬੀਵੀ ਦੇ ਕਹਾ ਚਰਾਗ ਬੁਜ਼ਾ ਦੋ, ਔਰ ਵਹੀ ਖਾਨਾ ਮੇਹਮਾਨ ਦੇ ਸਾਮਨੇ ਲਾਕਰ ਰਖ ਦੋ, ਤੀਨਾਂ ਸਾਥ ਖਾਨੇ ਪਰ ਬੈਠੇ, ਮਿਧਾਂ ਬੀਵੀ ਭੂਕੇ ਬੈਠੇ ਰਹੇ ਔਰ ਇਸ ਤਰਹ ਹਾਥ ਚਲਾਤੇ ਰਹੇ ਕਿ ਗੋਯਾ ਖਾ ਰਹੇ ਹਨ ਇਸੀ ਵਾਕਿਆ ਦੇ ਬਾਰੇ ਮੇਂ ਯਹ ਆਧਤ ਉਤਰੀ ਹੈ:

وَيُؤْتُرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةً

“ਔਰ ਗੋ ਉਨਕੇ ਤੰਗੀ ਹੋ, ਤਾਹਮ ਅਪਨੇ ਊਪਰ ਦੂਸਰੋਂ ਕੋ ਤਜ਼ਿਹ ਦੇਤੇ ਹਨ।”<sup>(1)</sup>

## ਸੁਫ਼ਫਰ ਨਕਵੀ ਸਲਲਾ

ਏਕ ਸਾਇਬਾਨ ਥਾ ਜੋ ਮਸ਼ਿਦੇ ਨਕਵੀ ਸਲਲਾ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ ਪਰ ਮਸ਼ਿਦ ਦੇ ਮਿਲਾ ਹੁਆ ਤੈਤਾਰ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਥਾ,<sup>(2)</sup> ਸਹਾਬਏ ਕਿਰਾਮ ਰਜ਼ਿਓ ਮੈਂ ਸੇ ਅਕਸਰ ਤੋ ਮਸ਼ਾਗਿਲੇ ਦੀਨੀ ਦੇ ਸਾਥ ਹਰ ਕਿਸਮ ਦੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਯਾਨੀ ਤਿਜਾਰਤ ਯਾ ਜ਼ਰਾਅਤ ਭੀ ਕਰਤੇ ਥੇ ਲੇਕਿਨ ਚੰਦ ਲੋਗਾਂ ਨੇ ਅਪਨੀ ਜਿੰਦਗੀ ਸਿਰਫ਼ ਇਬਾਦਤ ਔਰ ਆਂਹਜ਼ਰਤ ਸਲਲਾ ਦੀ ਤਰਕਿਤ ਪੱਧੀਰੀ ਪਰ ਨਜ਼਼ਦ ਕਰ ਦੀ ਥੀ, ਇਨ ਲੋਗਾਂ ਦੇ ਬਾਲ ਬਚਿਆਂ ਨ ਥੇ, ਔਰ ਜਬ ਸ਼ਾਦੀ ਕਰ ਲੇਤੇ ਥੇ ਤਾਂ ਇਸ ਹਲਕਾ ਦੇ ਨਿਕਲ ਆਤੇ ਥੇ, ਉਨਮੈਂ ਏਕ ਟੋਲੀ ਦਿਨ ਕੋ ਜਾਂਗਲ ਦੇ ਲਕਡਿਆਂ ਚੁਨ ਲਾਤੀ ਔਰ ਬੇਚ ਕਰ ਅਪਨੇ ਭਾਈਆਂ ਦੇ ਲਿਯੇ ਕੁਛ ਖਾਨਾ ਮੁਹਾਵਾ ਕਰਤੀ, ਯਹ ਲੋਗ ਦਿਨ ਮੈਂ ਬਾਰਗਾਹੇ

(1) ਸਹੀਹੁਲ ਬੁਖਾਰੀ, ਕਿਤਾਬ ਮਨਾਕਿਬੁਲ ਅੰਸਾਰ, ਬਾਬ ਕੌਲੁਲਲਾਹ ਅੜਾ ਵ ਜਲਲ “وَيُؤْتُرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةً” ਫਲੂਲ ਬਾਰੀ 7-119

(2) ਵਫ਼ਾਤਲ ਵਫ਼ਾ 1-321

नुबूव्वत में हाजिर रहते और हदीसें सुनते और रात को उसी चबूतरा (सुफ़्फ़ा) पर पड़ रहते।<sup>(1)</sup>

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० भी उन्हीं लोगों में थे उनमें से किसी के पास चादर और तहमद दोनों चीजें साथ मुह्या न हो सकीं, चादर को गले से इस तरह बांध लेते कि रानों तक लटक आती<sup>(2)</sup> अक्सर अंसार खजूर की फली हुई शाखें तोड़ कर लाते और छत में लगा देते, खजूरें जो टपक टपक कर गिरतीं यह उठाकर खा लेते, कभी दो दो दिन खाने को नहीं मिलता, अक्सर ऐसा होता कि रसूलुल्लाह सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाते और नमाज़ पढ़ाते, यह लोग आकर नमाज़ में शरीक होते लेकिन भूक और ज़ोअूफ़ से ऐन नमाज़ की हालत में गिर पड़ते, बाहर के लोग आते और उनको देखते तो समझते कि दीवाने हैं<sup>(3)</sup> आंहज़रत सल्ल० के पास जब कहीं से सदक़ा का खाना आता तो मुसल्लम उनके पास भेज देते, और जब दावत का खाना आता तो उनको बुला लेते और उनके साथ बैठ कर खाते<sup>(4)</sup> अक्सर ऐसा होता कि रातों को आंहज़रत सल्ल० उनको मुहाजिरीन और अंसार पर तक़सीम कर देते यअ़नी अपने मक़दूर के मुवाफ़िक हर शख्स् एक एक, दो दो को अपने साथ ले जाए और उनको खाना खिलाए<sup>(5)</sup> हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि० निहायत फ़य्याज़ और दौलतमंद थे, वह कभी अस्सी अस्सी मेहमानों को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारह, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद (2) सहीहुल बुखारी 1-114, हिलयतुल औलिया 1-341 (3) सुनन तिर्मिज़ी, अबदाबुज़ज़ोहद मा जाओ फ़ी बेअूसति असहाबिन्बी सल्ल० (4) सहीहुल बुखारी, किताबुर्रकाइक, बाब कैफ़ा कान ऐशुन्नबी सल्ल० व अस्हाबहु (5) सहीहुल बुखारी, किताबुल मवाकीत, बाब मअ़ज़ज़ैफ़ वल अहल, अस्सहर

लेकर जाते, आंहज़रत सल्ल० उन लोगों का इस कदर ख्याल रखते थे कि जब एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल० से हज़रत फ़ातिमा जुहरा रज़ि० ने दरख्वास्त की कि मेरे हाथों में चक्की पीसते पीसते नील पड़ गए हैं, मुझको एक कनीज़ इनायत हो, तो फरमाया यह नहीं हो सकता कि तुम को दूं और सुफ़्फ़ा वाले भूके मरें।<sup>(1)</sup> रातों को उमूमन यह लोग इबादत करते और कुर्�आन मजीद पढ़ा करते, उनके लिये एक मुअल्लिम मुकर्रर था उसके पास जाकर पढ़ते इसी बिना पर उनमें से अक्सर कारी कहलाते थे, दावते इस्लाम के लिये कहीं भेजना होता तो यह लोग भेजे जाते थे, ग़ज़वए मऊना में इन्हीं में से सत्तर आदमी इस्लाम सिखाने के लिये भेजे गए थे।<sup>(2)</sup>

### ग़ज़व बढ़

कुरैश ने हिजरत के साथ ही मदीना पर हमला की तैयारियां शुरू कर दी थीं, अब्दुल्लाह बिन उबैय को उन्होंने ख़त लिख भेजा था कि या मुहम्मद (सल्ल०) को क़ल्ल कर दो, या हम आकर तुम्हारा भी फैसला कर देते हैं।<sup>(3)</sup> कुरैश की छोटी छोटी टुकड़ियां मदीना की तरफ़ ग़श्त लगाती रहती थीं, कुर्ज़ फ़ेहरी मदीना की चरागाहों तक आकर ग़ारतगरी करता था, हमला के लिये सबसे ज़रूरी चीज़

(1) सुनन बैहकी 9-304, मुस्नद अहमद 1-79, 106

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शाहीद, सही बुखारी में भी इसका ज़िक्र है।

(3) सुनन अबी दाऊद 2-67, बाब खबरुन्नज़ीर

मसारिफ़े जंग का बंदोबस्त था, इसलिये अब के मौसम में कुरैश का जो कारवाने तिजारत शाम को रवाना हुआ तो मक्का की तमाम आबादी ने जिसके पास जो रक़म थी कुल की कुल दे दी, न सिफ़र मर्द बल्कि औरतें जो कारोबारे तिजारत में बहुत कम हिस्सा लेती थीं उनका भी एक एक फ़र्द उसमें शरीक था, काफ़िला अभी शाम से रवाना नहीं हुआ था कि हज़रमी के क़त्ल का इत्तिफ़ाक़िया वाकिआ पेश आ गया, जिसने कुरैश की आतिशे ग़ज़ब को और भी भड़का दिया, इसी अस्ता में यह ख़बर मक्का मुअज्ज़मा में फैल गई कि मुसलमान काफ़िला लूटने को आ रहे हैं, कुरैश के ग़ैज़ व ग़ज़ब का बादल बड़े ज़ोर व शोर से उठा और तमाम अरब पर छा गया।<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्ल0 को इन हालात की इतिला हुई तो आप सल्ल0 ने सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम को जमा किया और वाकिआ का इज़हारा फ़रमाया।<sup>(2)</sup> हज़रत अबू बक्र रज़ि0 वगैरा ने जानिसाराना तक़रीरें कीं, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 अंसार की तरफ़ देखते थे अंसार ने बैअूत के वक्त

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0, अल्लामा शिल्पी जि01-315, कुर्ज़ फेहरी का वाकिआ तबक़ाते इन्हे सज़द 2-9 में और हज़रमी का वाकिआ सुनन बैहकी 9-11 में मौजूद है।

(2) यह वाज़ेह रहे कि यह वाकिआ मदीना मुनव्वरा से निकलने के बाद का है, मदीना मुनव्वरा से आप सल्ल0 काफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से चले थे, जबकि अहादीसे सहीहा में सराहत है कि मदीना मुनव्वरा से खुरूज के बाद अचानक यह बात सामने आई कि कुरैश का लशकरे जरार काफ़िला के दिफ़ाज़ के लिये करीब पहुंच चुका है, उस वक्त आप सल्ल0 ने सहाबए किरामं रज़ि0 से मशवरा फ़रमाया.....यह बात भी ज़ेहन में रहनी चाहिये कि काफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से आपके निकलने का मक्सद उस खतरा को दूर करना था जो मदीना पर हमला की शक्ति में मंडला रहा था, तारीख में सराहत है कि कुरैश ने उस काफ़िला को अस्तन सामाने जंग तैयार करने के लिये रवाना किया था।

सिफ़्र यह इक़रार किया था कि वह उस वक़्त तलवार  
उठाएंगे जब दुश्मन मदीना पर चढ़ आएं, आप सल्ल० ने  
दोबारा मशवरा फ़रमाया, तीसरी बार अंसार समझे कि  
आंहज़रत सल्ल० हमारे जवाब के मुंतज़िर हैं, सअ़द बिन  
मआज़ रज़ि० ने अ़र्ज़ किया शायद हुजूर (सल्ल०) ने यह  
समझा है कि अंसार अपने शहर से निकल कर हुजूर सल्ल०  
की इआनत करना अपना फ़र्ज़ नहीं समझते हैं, अंसार की  
तरफ़ से मैं यह अ़र्ज़ करता हूं कि हम तो हर हालत में हुजूर  
सल्ल० के साथ हैं, किसी से मुआहदा फ़रमाइये किसी से  
मुआहदा को नामंजूर कीजिये, हमारे माल व ज़र से जिस  
कदर मंशाए मुबारक हो लीजिये, हमको जो मज़िये मुबारक  
हो अता कीजिये, माल का जो हिस्सा हुजूर (सल्ल०) हम से  
लेंगे हमें वह ज़्यादा पसंद होगा उस माल से जो हुजूर (सल्ल०)  
हमारे पास छोड़ देंगे, हमको जो हुजूर (सल्ल०) देंगे हम  
उसकी तअ़मील करेंगे, अगर हुजूर (सल्ल०) ग़िमाद के चश्मा  
तक चलेंगे तो हम साथ होंगे अगर हुजूर (सल्ल०) हमको  
समंदर में घुस जाने का हुक्म देंगे तो हुजूर सल्ल० के साथ  
वहां भी चलेंगे।<sup>(1)</sup> हज़रत मिक़दाद रज़ि० ने कहा या  
रसूलुल्लाह (सल्ल०) हम वह नहीं कि कौमे मूसा अलै० की  
तरह فَادْهُبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هُنَّا قَاعِدُوْنَ<sup>(2)</sup> कह दें,  
हम तो हुजूर (सल्ल०) के दाएं बाएं, आगे पीछे किताल के  
लिये हाज़िर हैं, उनकी इस तकरीर से रसूलुल्लाह सल्ल० का  
चेहरा चमक उठा।<sup>(2)</sup>

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-625, फ़हुल बारी 7-287,288, सहीह मुस्लिम, किताबुल  
जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए बद्र (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कौलुह  
तआला “أَذْنَسْتَغْيِبُوْلَ رَبُّكُمْ، الْخَ”

## बद्र की तरफ़ कृच और लशकरे हस्ताम व लशकरे कुप्रफ़ार में ज़बरदस्त तफ़ावुत

12/ रमज़ान 2 हि० को आप सल्ल० तकरीबन तीन सौ जानिसारों के साथ शहर से निकले, एक मील चलकर फौज का जाइज़ा लिया, जो कम उम्र थे वापस कर दिये गए कि ऐसे पुरख़तर मौक़ा पर बच्चों का काम नहीं, उमेर बिन वक़्कास रज़ि० एक कम्सिन बच्चा थे जब उनसे वापसी को कहा गया तो वह रो पड़े, आखिर आंहज़रत सल्ल० ने इजाज़त दे दी, उमेर के भाई सअ़द बिन अबी वक़्कास रज़ि० ने कम्सिन सिपाही के गले में तलवार हमाइल की, अब फौज की कुल तअ़दाद 313/थी, जिसमें साठ मुहाजिर और बाकी अंसार थे।<sup>(1)</sup> लशकर में सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक हज़रत जुबैर रज़ि० की सवारी में था और एक मिक्दाद रज़ि० बिन अलअस्वद की, ऊंट कुल सत्तर थे, एक एक पर दो दो, तीन तीन आदमी बारी बारी से बैठते थे, खुद रसूलुल्लाह सल्ल० हज़रत अली रज़ि० और मरसद ग़नवी एक ऊंट पर बारी बारी बैठते थे<sup>(2)</sup> मक्का मुअज्ज़मा से कुरैश बड़े सर व सामान से निकले थे, हज़ार आदमी की जमइयत थी सौ सौ सवारों का रिसाला था, रुअसाए कुरैश सब शरीक थे, अबू लहब मजबूरी की वजह से न आ सका था, इसलिये अपनी तरफ़ से उस ने काइम मकाम भेज दिया था, रसद का

(1) तफ़सील तबकाते इन्हे सअ़द में है, हज़रत उमेर रज़ि० का वाकिअा असदुल ग़ावा में मज़कूर है। (2) सीरियस इन्हे हिशाम 1-619, ज़ादुल मज़ाद 2-171, मुस्तद अहमद और मुस्तदरक हाकिम की सहीह रिवायात में मरसद ग़नवी के बजाए अबू लुबाबा का ज़िक्र है।

यह इंतिज़ाम था कि उमराए कुरैश यअ़नी अब्बास, उत्बा बिन रबीआ, हर्स बिन आमिर, नसर बिन अलहारिस, अबू जहल, उमय्या, वगैरा बारी बारी हर रोज़ दस दस ऊंट ज़िङ्क करते और लोगों को खिलाते थे, उत्बा बिन रबीआ जो कुरैश का सबसे मुअज्ज़ज़ रईस था फौज का सिपह सालार था।<sup>(1)</sup>

कुरैश को बद्र के करीब पहुंच कर जब मअ़लूम हुआ कि अबू सुफ़्यान का काफ़िला ख़तरा की ज़द से निकल गया है तो कबीला ज़ोहरा और अ़दी के सरदारान ने कहा “अब लड़ना ज़रूरी नहीं” लेकिन अबू जहल ने न माना, ज़ोहरा और अ़दी के लोग वापस चले गए, बाकी फौज आगे बढ़ी।<sup>(2)</sup>

कुरैश चूंकि पहले पहुंच गए थे उन्होंने मुनासिब मौको पर कब्ज़ा कर लिया था, बख़िलाफ़ इसके मुसलमानों की तरफ़ चश्मा या कुंवां तक न था, ज़मीन ऐसी रेतीली थी कि ऊंटों के पांव रेते में धंस धंस जाते थे, हुबाब बिन मुज़िर ने आंहज़रत सल्ल० से अर्ज़ की कि जो मकाम इंतिख़ाब किया गया है वह्य की रु से है या फौजी तदबीर है? इशाद हुआ कि वह्य नहीं है, हुबाब रज़ि० ने कहा तो बेहतर होगा कि आगे बढ़ कर चश्मा पर कब्ज़ा कर लिया जाए और आसपास के कुंवें बेकार कर दिये जाएं, आप सल्ल० ने यह

(1) सीरित इब्ने हिशाम, किसा ग़ज़वए बद्र, अलबिदाया वन्निहाया 3-360, मुस्लिम अहमद 2-193 में लशकरे कुफ़्फ़ार की तज़्दाद का ज़िक्र है।

(2) مُسْتَدِرَكْ حَاكِيم 3-426, سीरित इब्ने हिशाम 1-619

राए पसंद फ़रमाई और इसी पर अमल किया गया, ताइदि एज़दी और हुस्ने इत्तिफ़ाक से मेंह बरस गया, जिससे गर्द जम बई और जा बजा पानी को रोक कर छोटे छोटे हौज़ बना लिये गए, कि वुजू और गुस्ल के काम आएं, इस कुदरती एहसान का खुदा ने कुर्�आन मजीद में भी ज़िक्र किया है “وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لَّيْطَهِرَ كُمْ بِهِ” “और जबकि खुदा ने आसमान से पानी बरसाया कि तुम को पाक करे” पानी पर अगरचे कब्ज़ा कर लिया गया, लेकिन साकिये कौसर का फैज़ आम था, इसलिये दुश्मनों को भी पानी लेने की आम इजाज़त थी।<sup>(1)</sup>

यह रात का वक्त था तमाम सहाबा रज़ि० ने कमर खोल खोल कर रात भर आराम फ़रमाया, लेकिन सिर्फ एक ज़्यात थी (ज़ाते नबवी सल्ल०) जो सुब्ह तक बेदार और मसरूफे दुआ रही, सुब्ह हुई तो लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दी, बादे नमाज़ जिहाद पर वअज़ फ़रमाया।<sup>(2)</sup>

### जंग की तैयारी

कुरैश जंगे के लिये बेताब थे, ताहम कुछ नेक दिल भी थे जिनके दिल ख़ूरेज़ी से लरज़ते थे, उनमें हकीम बिन हिज़ाम (जो आगे चल कर इस्लाम लाए) ने सरदारे फौज उत्ता से जाकर कहा “आप चाहें तो आज का दिन आपकी नेकनामी की अबदी यादगार रह जाए, उत्ता ने कहा क्योंकर? हकीम

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-620, 621, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहकी 3-35, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक 3-326 में हज़रत हुबाब रज़ि० की राए का तज़किरा फ़रमाया है, लेकिन इमाम ज़हबी ने इस हदीस को मुन्कर करार दिया है। (2) ज़ादुल मआद 3-179, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहकी 3-39, अस्सुननुल कुब्या लिन्नसाई, किताबुस्सलात

ने कहा कुरैश का जो कुछ मुतालबा है वह सिफ्र हज़रमी का खून है वह आपका हलीफ़ था, आप उसका खून बहा अदा कर दीजिये” उत्ता नेक नफ़्स आदमी था, उसने निहायत खुशी से मंजूर कर लिया, लेकिन चूंकि अबू जहल का इत्तिफ़ाके राए ज़रूरी था, हकीम उत्ता का पैग़ाम लेकर गए, अबू जहल तरकश से तीर निकाल कर फैला रहा था, उत्ता का पैग़ाम सुनकर बोला “हाँ उत्ता की हिम्मत ने जवाब देंदिया” उत्ता के फ़रज़ंद अबू हुज़ैफ़ा रज़ि0 इस्लाम ला चुके थे और इस मऊरके में आंहज़रत सल्ल0 के साथ आए थे इस बिना पर अबू जहल ने यह बदगुमानी की कि उत्ता इसलिये लड़ाई से जी चुराते हैं कि उसके बेटे पर आंच न आए।

अबू जहल ने हज़रमी के भाई आमिर को बुलाकर कहा देखते हो, तुम्हारा खून बहा तुम्हारी आंख के सामने आकर निकला जाता है, आमिर ने अरब के दस्तूर के मुताबिक कपड़े फाड़ डाले और गर्द उड़ा कर “وَأَعْمَرَاهُ وَأَعْمَرَاهُ” का नऊरा मारना शुरू किया, इस वाकिआ ने तमाम फौज में आग लगा दी।

उत्ता ने अबू जहल का तअना सुना तो गैरत से सख्त बरहम हुआ और कहा कि मैदाने जंग बता देगा कि नामर्दी का दाग़ कौन उठाता है? यह कहकर मिग़फ़र मांगा, लेकिन उसका सर इस क़दर बड़ा था कि कोई मग़फ़र उसके सर पर ठीक न उत्तरा, मजबूरन सर से कपड़ा लपेटा और लड़ाई

के हथियार सजे।<sup>(1)</sup>

चूंकि आंहज़रत सल्ल० अपने हाथ को खून से आलूदा करना पसंद नहीं फ़रमाते थे, सहाबा रज़ि० ने मैदान के किनारे एक छप्पर का साइबना तैयार किया कि आप सल्ल० उसमें तशरीफ़ रखें, सअ़द बिन मआज़ रज़ि० दरवाज़ा पर तेग़ बकफ़ खड़े हुए कि कोई इधर न बढ़ने पाए।<sup>(2)</sup>

अगर्चे बारगाहे इलाही से फ़त्ह व नुस्त का वादा हो चुका था, अनासिरे आलम आमादए मदद थे, मलाइका की फ़ौजें हमरिकाब थीं, ताहम आलमे अस्बाब के लिहाज़ से आप सल्ल० ने उसूले जंग के मुताबिक़ फ़ौजें मुरत्तब कीं, मुहाजिरीन, औस और ख़ज़रज के तीन दस्ते क़ाइम किये, मुहाजिरीन का अलम मुसअब बिन उमैर रज़ि० को इनायत फ़रमाया, ख़ज़रज के अलम बरदार हुबाब बिन मंज़िर रज़ि० और औस के सअ़द बिन मआज़ रज़ि० मुकर्रर हुए।

सुब्ह होते ही आप सल्ल० ने सफ़ आराई शुरू की, दस्ते मुबारक में एक तीर था, उसके इशारे से सफ़े क़ाइम करते थे कि कोई शख्स तिल भर आगे या पीछे न रहने पाए, लड़ाई में शेर व गुल आम बात है, लेकिन मना कर दिया गया कि किसी के मुंह से आवाज़ तक न निकलने पाए।<sup>(3)</sup>

इस मौका पर जबकि दुश्मन की अज़ीमुश्शान तअ़दाद मुकाबिल थी, और मुसलमानों की तरफ़ एक आदमी भी बढ़ जाता तो कुछ न कुछ मुसर्रत होती, आंहज़रत सल्ल०

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-622, 623, जादुल मआद 3-779 (2) जादुल मआद 3-620

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्ली नोअ़मानी 1-320

हमातन वफ़ा थे, अबू हुज़ैफ़ा बिन अल यमान और अबू हुसैल दो सहाबी मक्का से आ रहे थे, राह में कुफ़्फ़ार ने रोका कि मुहम्मद (सल्ल0) की मदद को जा रहे हो? उन्होंने इंकार किया और अदमे शिर्कत का वादा किया, आंहज़रत सल्ल0 के पास आए तो सूरते हाल अर्ज़ की, फ़रमाया हम हर हाल में वादा वफ़ा करेंगे, हमको सिर्फ़ खुदा की मदद दरकार है।<sup>(1)</sup>

अब दो सफ़े आमने सामने मुक़ाबिल थीं, हक् व बातिल, नूर व जुल्मत, कुफ़र व इस्लाम।

**لَقَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتِنَا فِيَّ تَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَى كَافِرَةٍ.**

“जो लोग बाहम लड़े, उनमें तुम्हारे लिये इबरत की निशानियां हैं, एक खुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुन्किरे खुदा था।”

यह अजीब मंज़र था, इतनी बड़ी वसीअ़ दुन्या में तौहीद की किस्मत सिर्फ़ चंद जानों पर मुंहसिर थी, सहीह मुस्लिम में है “कि आंहज़रत सल्ल0 पर निहायत खुजूअ़ की हालत तारी थी, दोनों हाथ फैला कर फ़रमाते थे “खुदाया! तूने मुझसे वादा किया है, आज पूरा कर” महवीयत और खुदी के आलम में चादर कंधे पर से गिर गिर पड़ती थी और आपको ख़बर तक न होती थी, कभी सज्दे में गिरते थे और फ़रमाते थे “कि खुदाया अगर यह चंद नुफूस आज मिट गए तो फिर ख़ए ज़मीन पर कोई तेरी इबादत करने वाला न होगा।”

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाबुल वफ़ा बिल अहद

इस बेक़रारी पर बंदगाने खास को रिक़क़त आ गई, हज़रत अबू बक्र रज़िया ने अर्ज़ की ‘‘हुजूर खुदा अपना वादा वफ़ा करेगा।’’<sup>(1)</sup> आखिर रुहानी तस्कीन के साथ “سَيِّرْ مُبْرَأَ الْجَمْعُ وَيُؤْلُوْنَ الدُّبْرَ” (क़मर) “फौज को शिकस्त दी जाएगी और वह पुश्त फेर देंगे” पढ़ते हुए लबे मुबारक मुज्दए फ़त्ह की पेशीन गोई से आशना हुए।<sup>(2)</sup>

कुरैश की फौजें अब बिल्कुल क़रीब आ गई, ताहम आप सल्ल० ने सहाबए किराम को पेशक़दमी से रोका और फ़रमाया कि जब दुशमन पास आ जाएं तो तीर से रोको।

आप सल्ल० ने सब्र व इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत, इसकी बिना पर अल्लाह की मदद, फ़त्ह व ज़फ़र और आखिरत के सवाब का ज़िक्र फ़रमाया, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जो अल्लाह के रास्ते में शहीद होगा उसके लिये अल्लाह ने जन्नत वाजिब कर दी, यह सुनकर उमैर बिन अल हुमाम रज़िया खड़े हो गए और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान के बराबर हो? फ़रमाया कि “हाँ” कहा कि ऐसी बात है या रसूलुल्लाह सल्ल०? फ़रमाया ऐसी बात क्यों कहते हो? अर्ज़ किया कि नहीं या रसूलुल्लाह सल्ल०! यह मैं सिर्फ़ इस शौक में कह रहा हूं कि शायद मुझे भी वह नसीब हो, फ़रमाया “तुम्हें वह नसीब होगी” उन्होंने अपनी ढाल में से खजूर निकाल कर खाना शुरू किये फिर कहने लगे अगर मैं इन-

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्तियर, बाबुल इम्दाद बिल मलाइका फी ग़ज़वए बद्र

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कौलुहू तआला “ذٰلِ تَسْتَغْشِيُونَ رَبَّكُمْ”

खजूरों के खत्म होने का इंतिज़ार करूं तो यह बड़ी लम्बी ज़िंदगी हुई यह कहकर खजूर फेंके और आगे बढ़कर शहादत से सुख़ रु हुए।<sup>(1)</sup>

यह मअ़रका ईसार व जाँ बाज़ी का सबसे बड़ा हैरत अंगेज़ मंज़र था, दोनों फौजें सामने आई तो लोगों को नज़र आया कि खुद उनके जिगर के टुकड़े तलवार के सामने हैं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० के बेटे (जो अब तक काफ़िर थे) मैदाने जंग में बढ़े तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० तलवार खींच कर निकले,<sup>(2)</sup> उत्था मैदान में आया तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० (उत्था के फ़रज़द थे) उसके मुकाबला को निकले, हज़रत उमर रज़ि० की तलवार मामूं के खून से रंगीन थी।<sup>(3)</sup>

## आग़ाज़े जंग

लड़ाई का आग़ाज़ यूं हुआ कि सबसे पहले आमिर हज़रमी जिसको भाई के खून का दावा था आगे बढ़ा, मुहम्मद् हज़रत उमर रज़ि० का गुलाम उसके मुकाबला को निकला और मारा गया<sup>(3)</sup> उत्था जो सरदारे लशकर था, अबू जहल के तअना से सख्त बरहम था, सबसे पहले वही भाई और बेटे को लेकर मैदान में आया और मुबारज़त तलबी की। अरब में दस्तूर था कि नामवर लोग कोई इम्तियाज़ी निशान लगा कर मैदाने जंग में जाते थे, उत्था के सीने पर शुतुर मुर्ग़

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-238

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्पी नोअमानी 1-322

के पर थे, हज़रत औफ़ रज़ि०, हज़रत मआज़ रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० मुक़ाबला को निकले, उत्त्वा ने नाम व नसब पूछा और जब यह मअ़लूम हुआ कि अंसार हैं तो उत्त्वा ने कहा हमको तुम से ग़र्ज़ नहीं, फिर आंहज़रत (सल्ल०) की तरफ़ ख़िताब करके कहा कि मुहम्मद सल्ल०! यह लोग हमारे जोड़ के नहीं, आंहज़रत सल्ल० के इशाद के मुताबिक़ अंसार हट आए और हज़रत हम्ज़ा रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, और हज़रत अबू उबैदा रज़ि० मैदान में आए, चूंकि उन लोगों के चेहरों पर नकाब थी, उत्त्वा ने पूछा तुम कौन हो? सबने नाम व नसब बताए, उत्त्वा ने कहा “हां अब हमारा जोड़ है।”

उत्त्वा हज़रत हम्ज़ा रज़ि० से, और वलीद हज़रत अली रज़ि० से मुकाबिल हुआ, और दोनों मारे गए, लेकिन उत्त्वा के भाई शैबा ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को ज़ख्मी कर दिया, हज़रत अली रज़ि० ने बढ़कर शैबा को कत्ल कर दिया और अबू उबैदा रज़ि० को कंधे पर उठाकर रसूल सल्ल० की ख़िदमत में लाए, हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से पूछा कि क्या मैं दौलते शहादत से महसूम रहा? आप सल्ल० ने फ़रमाया “नहीं तुमने शहादत पाई” अबू उबैदा रज़ि० ने कहा आज अबू तालिब ज़िंदा होते तो तस्लीम करते कि उनके इस शेअर का मुस्तहिक मैं हूं।<sup>(1)</sup>

(1) सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाबुल मुवारज़ा मिन हदीसे अली, मुस्नद अहमद 1-117, तफसील से ज़रकानी ने अलमवाहिब में यह वाकिअा बयान किया है, سहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र में यह मज़कूर है कि اَنْ اَخْتَصِّمَانَ اَرْبَعَمِ اَنْ اَخْتَصِّمَانَ اَرْبَعَمِ इसी सिलसिला में नाज़िल हुई।

وَنُسْلِمْهُ حَتَّى نُصْرَعَ حَوَالَهُ وَنَذْهَلُ عَنْ أَبْنَائِنَا وَالْحَلَالِ

“हम मुहम्मद (सल्ल०) को उस वक्त दुश्मनों के हवाला करेंगे जब उनके गिर्द लड़कर मर जाएं, और हम मुहम्मद (सल्ल०) के लिये अपने बेटों और बेटियों को भूल जाते हैं।”

सईद बिन अलआस का बेटा (उबैदा) सर से पांव तक लोहे में झूबा हुआ सफ़ से निकला और पुकार कर कहा कि “मैं अबू किरश हूं” हज़रत जुबैर रज़ि० उसके मुकाबला को निकले और चूंकि सिर्फ़ उसकी आंखें नज़र आती थीं, ताक कर आंख में बर्छी मारी वह ज़मीन पर गिरा और मर गया, बर्छी इस तरह पैवस्त हो गई थी कि हज़रत जुबैर रज़ि० ने उसकी लाश पर पांव अड़ा कर खींचा तो बड़ी मुश्किल से निकली, लेकिन दोनों सिरे ख़म हो गए, यह बर्छी यादगार रही, यज़्नी हज़रत जुबैर रज़ि० से आंहज़रत सल्ल० ने मांग ली, फिर चारों खुलफ़ा के पास मुंतकिल होती रही।<sup>(1)</sup> फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० के पास आई, हज़रत जुबैर रज़ि० ने इस मअूरका में कई कारी ज़ख्म उठाए, शाना में जो ज़ख्म था इतना गहरा था कि अच्छे हो जाने पर उसमें उंगली चली जाती थी, चुनांचे उनके बेटे उर्वा बचपन में इन ज़ख्मों से खेला करते थे, जिस तलवार से लड़े थे वह लड़ते लड़ते गिर गई थी, चुनांचे अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० शहीद हुए तो अब्दुल मलिक ने उर्वा से कहा तुम जुबैर (रज़ि०) की तलवार पहचान लोगे? उन्होंने कहा हाँ!

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब शुहदुल मलाइका बदरन

ابدُول ملیک نے پूछा ک्योंकर? بولے بدر کے مअُرکا مें  
उसमें दंदाने पड़ गए थे, अब्दुल मलिक ने तस्दीक की और  
यह مিস्रअू पढ़ा-

(۱) "بِهِنْ فُلُّ مِنْ قِرَاعِ الْكَتَائِبِ"

अब्दुल मलिक ने तलवार उर्वा को दे दी, उन्होंने उसकी  
कीमत लगवाई तो तीन हज़ार ठहरी, उसके कब्ज़ा पर चांदी  
का काम था।<sup>(2)</sup> अब आम हमला शुरू हो गया, मुश्टिकीन  
अपने बल बूते पर लड़ रहे थे, लेकिन इधर सरवरे आलम  
سلسلہ 0 सर बसज्दा, सिफ़ खुंदा की कूव्वत का सहारा ढूँढ़  
रहा था।<sup>(3)</sup>

### نامवर سارदाराने कुफ़्फ़ार का क़ल्प

अबू جहल की शरारत और दुश्मनीये इस्लाम का आम  
चर्चा था इस बिना पर अंसार में मुअ़विज़ और मुआज़ दो  
भाईयों ने अहद किया था कि यह शकी जहां नज़र आ  
जाएगा या उसको मिटा देंगे या खुद मिट जाएंगे, हज़रत  
अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि 0 का बयान है कि मैं सफ़ में था  
कि दफ़अ़तन मुझको दाएं बाएं दो नौजवान नज़र आए, एक  
ने मुझसे कान में पूछा कि अबू جहल कहां है? मैंने कहा  
बिरादर ज़ादा! अबू جहल को पूछकर क्या करेगा? बोला कि

(1) نَابِغَةُ الْجُنُوبِ اکادمی کے شے اُر کا ایک میسٹری ہے جسکا پہلا میسٹری "وَلَا عَيْبٌ" فیہم غیر ان سیوفہم

(2) سہی دُل بُخَاری، کیتاب بُل مَاجَزَیِّ بَابِ كَلْعَةِ أَبْوَيْ جَهَنَّمَ

(3) سیر تونن بی، اعلیٰ امام شیخ لی نو امامی 1-324

मैंने खुदा से अहद किया है कि अबू जहल को जहां देख लूंगा, या उसे क़ल्ल करूंगा या खुद लड़कर मारा जाऊंगा, मैं यह जवाब नहीं देने पाया था कि दूसरे नौजवान ने भी मुझसे कानों में यही बातें कीं, मैंने दोनों को इशारे से बताया कि अबू जहल वह है, मेरा यह बताना था कि दोनों बाज़ की तरह झपटे, और अबू जहल खाक पर था, यह दोनों जवान अफ़राइ के बेटे थे (मअ़विज़ और मुआज़)<sup>(1)</sup> अबू जहल के बेटे अकरमा ने अ़कब से आकर मआज़ के बाएं शाना पर तलवार मारी, जिससे बाजू कट गया लेकिन तस्मा बाकी रहा, मुआज़ ने अकरमा का तआकुब किया, वह बचकर निकल गया, मुआज़ उसी हालत में लड़ रहे थे, लेकिन हाथ लटकने से ज़हमत होती थी, हाथ को पांव के नीचे दबाकर खींचा कि तस्मा भी अलग हो गया और अब वह आज़ाद थे।<sup>(2)</sup> आंहज़रत सल्ल० ने लड़ाई से पहले इशारद करमाया “कुफ़्फार के साथ जो लोग आए हैं उनमें से ऐसे लोग भी हैं जो खुशी से नहीं बल्कि कुरैश के जब्र से आए हैं” उन लोगों के नाम भी आपने बता दिये थे, उनमें अबुल बुख़तरी भी था, मुहज़ज़र अंसारी की नज़र जब उस पर पड़ी तो मुहज़ज़र रज़ि० ने कहा चूंकि रसूलुल्लाह सल्ल० ने तेरे क़ल्ल से मना फ़रमाया है इसलिये तुझको छोड़ देता हूं, अबुल बुख़तरी के साथ उसका एक रफ़ीक भी था, अबुल बुख़तरी ने

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल खुम्स, बाब मन लम यख्मुसिल असलाब, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब इस्तिहकाकुल कातिल सलबुल कतील,

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-635, मुस्लिम अहमद में तफ़सील से इसका तज़किरा है।

कहा इसको भी, मुज़्ज़र ने कहा नहीं, अबुल बुख़तरी ने कहा तो मैं ख़ातूनाने अरब का यह तअूना नहीं सुन सकता कि अबुल बुख़तरी ने अपनी जान बचाने के लिये रफ़ीक का साथ छोड़ दिया, यह कहकर अबुल बुख़तरी यह रिज़ पढ़ता हुआ मुज़्ज़र पर हमला आवर हुआ और मारा गया।

**لَنْ يَتُرُكَ أَبْنُ حُرَّةٍ زَمِيلَةٌ**

“शरीफ़ज़ादा अपने रफ़ीक को नहीं छोड़ सकता जब तक मर न जाए या मौत का रास्ता न देख ले।”<sup>(1)</sup>

उत्ता और अबू जह्ल के मारे जाने से कुरैश का पाए सिबात उखड़ गया और फौज में बेदिली छा गई।

आंहज़रत सल्ल० का शदीद दुश्मन उम्या बिन ख़लफ़ भी जंगे बद्र में शरीक था, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने उससे किसी ज़माने में मुआहदा किया था कि वह मदीना में आएगा तो यह उसकी जान के ज़ामिन होंगे, बद्र में इस दुश्मने खुदा से इंतिकाम लेने का खूब मौक़ा था, लेकिन चूंकि अहद की पाबंदी इस्लाम का शिआर है, हज़रत अब्दुर्रहमान ने चाहा कि वह बच कर निकल जाए उसको लेकर पहाड़ पर चले गए, इत्तिफ़ाक यह कि हज़रत बिलाल रज़ि० ने देख लिया, अंसार को ख़बर कर दी, दफ़अ़तन लोग टूट पड़े, उन्होंने उम्या के बेटे को आगे कर दिया, लोगों ने उसको क़त्ल कर दिया, लेकिन उस पर भी क़नाअ़त न की

(1) असदुल ग़ाबा 4-288, अलबिदाया वन्निहाया 3-285

और उमय्या की तरफ बढ़े, उन्होंने उमय्या से कहा तुम ज़मीन पर लेट जाओ, वह लेट गया तो यह उस पर छा गए कि लोग उसको मारने न पाएं, लेकिन लोगों ने उनकी टांगों के अंदर से हाथ डाल कर उसको क़त्ल कर दिया, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० की भी एक टांग ज़ख्मी हुई और ज़ख्मों का निशान मुद्दतों तक काइम रहा।<sup>(1)</sup> अबू जहल और उत्त्वा वगैरा के क़त्ल के बाद कुरैश ने सपर डाल दी और मुसलमानों ने उनको गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया। हज़रत अब्बास, अक़ील (हज़रत अली रज़ि० के भाई), नौफ़ल, अस्वद बिन आमिर, अब्द बिन ज़म्झा और बहुत से बड़े बड़े मुअज्ज़ज़ लोग गिरफ़्तार हुए।

आंहज़रत सल्ल० ने हुक्म दिया कि कोई शख्स जाकर ख़बर लाए अबू जहल का क्या अंजाम हुआ? अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने जाकर लाशों में देखा तो ज़ख्मी पड़ा हुआ दम तोड़ रहा था, बोले तू अबू जहल है? उसने कहा एक शख्स को उसकी कौम ने क़त्ल कर दिया तो यह फ़खर की क्या बात है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० उसका सरकाट लाए और आंहज़रत सल्ल० के क़दमों पर डाल दिया।<sup>(2)</sup>

## फ़क्के मुखीन

ख़ातमए ज़ंग पर मअलूम हुआ कि मुसलमानों में से सिर्फ 14/ शख्सों ने शहादत पाई, जिसमें 6/ मुहाजिर और बाकी अंसार थे।<sup>(3)</sup> लेकिन दूसरी तरफ कुरैश की अस्ली

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल वकाला, बाब इज़ा वक्कत्ल मुस्लिमु हरबीयन (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कल्लु अबी जहल (3) सीरित इब्ने कसीर

ताकृत टूट गई, रुअसाए कुरैश जो शुजाअत में नामवर और कबाइल के सिपहसालार थे एक एक करके मारे गए, उनमें उत्बा, शैबा, अबू जहल, अबुल बुख्तरी, ज़म्मा बिन अलअस्वद, आस बिन हिशाम, उमय्या बिन ख़लफ़, मुनब्बह बिन अलहज्जाज कुरैश के सरताज थे, तकरीबन 70/आदमी कल्ल और उसी क़दर गिरफ़्तार हुए।<sup>(1)</sup> असीराने जंग में से उक्बा और नुज़र बिन हारिस रिहा कर दिये गए, बाकी गिरफ़्तार होकर मदीना आए, उनमें हज़रत अब्बास, अकील (हज़रत अली रज़ियो के भाई), अबुल आस (आंहज़रत सल्ल० के दामाद) भी थे।<sup>(2)</sup>

लड़ाइयों में आंहज़रत सल्ल० का मअ़मूल था कि जहाँ कोई लाश नज़र आती थी आप सल्ल० उसको वहीं दफ़्न कर देते थे, लेकिन इस मौक़ा पर कुशतों की तअ़दाद ज़्यादा थी इसलिये एक एक का अलग अलग दफ़्न कराना मुश्किल था, एक वसीअ़ कुंवां था, तभाम लाशें आपने उसमें डलवा दीं,<sup>(3)</sup> लेकिन उमय्या की लाश फूल कर इस काबिल नहीं रही थी, इसलिये वहीं ख़ाक में दबा दी गई।<sup>(4)</sup>

### असीराने जंग के साथ सुलूक

असीराने जंग दो दो चार चार सहाबए किराम को तकसीम कर दिये गए और इशादि हुआ कि आराम के साथ रखे जाएं, सहाबा रज़ियो ने उनके साथ यह बरताव किया कि

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र

(2) तारीखे तबरी 3-38, अलबिदाया वन्निहाया 3-297

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब कल्लु अबी जहल

(4) तारीखे तबरी 2-37

उनको खाना खिलाते और खुद खजूर खाकर रह जाते थे, उन कैदियों में अबू उज़ैज़ भी थे, जो हज़रत मस्त्रिय बिन उमैर रज़ि० के भाई थे, उनका बयान है कि मुझको जिन अंसारियों ने अपने घर में कैद कर रखा था, जब सुब्ह या शाम का खाना लाते तो रोटी मेरे सामने रख देते और खुद खजूरें उठा लेते, मुझको शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता लेकिन वह हाथ भी न लगाते और मुझी को वापस कर देते, यह इस बिना पर था कि आंहज़रत सल्ला० ने ताकीद की थी कि कैदियों के साथ अच्छा सुलूक किया जाए।<sup>(1)</sup>

कैदियों में एक शख्स सुहैल बिन अम्र था जो निहायत फसीहुल लिसान था और आम मज्मओं में आंहज़रत सल्ला० के खिलाफ़ तक़रीरें किया करता था, हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, या रसूलुल्लाह! इसके दो निचले दांत उखड़वा दीजिये कि फिर अच्छा न बोल सके, आंहज़रत सल्ला० ने फरमाया कि मैं अगर इसके उज्य बिगाड़ दूंगा (मुस्त्ला) तो गो नबी हूँ लेकिन खुदा इसकी जज़ा में मेरे अअूज़ा भी बिगाड़ेगा।<sup>(2)</sup> असीराने जंग के पास कपड़े न थे, आंहज़रत सल्ला० ने सब को कपड़े दिलवाए, लेकिन हज़रत अब्बास का कद इस कदर ऊँचा था कि किसी का कुर्ता उनके बदन पर ठीक न उतरता था, अब्दुल्लाह बिन उबैय (रईसुल मुनाफ़िकीन) ने जो हज़रत अब्बास का हम कद था अपना कुर्ता मंगवा कर

(1) तारीखे तबरी 2-39, तबकात इब्ने सज़्द 2-14

(2) सीरतुन्नबी 1-330 बहवाला तारीखे तबरी

दिया, सहीह बुखारी में है कि आंहज़रत सल्ल० ने अब्दुल्लाह के कफ़न के लिये जो अपना कुर्ता इनायत फ़रमाया था वह इसी एहसान का मुआवज़ा था।<sup>(1)</sup>

असीराने जंग से चार चार हज़ार दिरहम फ़िदया लिया गया, लेकिन जो लोग नादारी की वज़ह से फ़िदया अदा नहीं कर सकते थे वह छोड़ दिये गए, उनमें से जो लिखना जानते थे उनको हुक्म हुआ कि दस दस बच्चों को लिखना सिखा दें तो छोड़ दिये जाएंगे।<sup>(2)</sup> हज़रत ज़ैद बिन साबित ने इसी तरह लिखना सीखा था।<sup>(3)</sup>

अंसार ने आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में अर्ज़ की कि हज़रत अब्बास हमारे भांजे हैं हम उनका फ़िदया छोड़ देते हैं लेकिन आंहज़रत सल्ल० ने मुसावात की बिना पर गवारा नहीं फ़रमाया और उनको भी फ़िदया अदा करना पड़ा।<sup>(4)</sup> फ़िदया की आम मिक्दार चार हज़ार दिरहम थी, लेकिन उमरा से ज़्यादा लिया गया, हज़रत अब्बास दौलतमंद थे इसलिये उनसे भी ज़्यादा रक़म वसूल की गई, उन्होंने आंहज़रत सल्ल० से शिकायत की, लेकिन उनको क्या मअ़लूम कि इस्लाम ने जो मुसावात क़ाइम की उसमें करीब व बईद, अज़ीज़ व बेगाना, आम व खास के तमाम तफ़रक्के मिट चुके थे, लेकिन एक तरफ़ तो अदाए फ़र्ज़ की यह

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल जिहाद, बाब अल किस्वा लिल उसारा

(2) मुस्नद अहमद बिन हन्�बल 1-247

(3) सीरतुन्नबी, बहवाला तबक़ाते इब्ने सअ़द

(4) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहुदुल मलाइका बदरन

मुसावात थी, दूसरी तरफ मुहब्बत का तकाज़ा यह था कि हज़रत अब्बास की कराह सुनकर रात को अराम न फ़रमा सके, लोगों ने उनकी गिरह खोली तो आपने आराम फ़रमाया।<sup>(1)</sup>

### हज़रत अबुल आस रज़ि० का इस्लाम लाना

आंहज़रत सल्ल० के दामाद अबुल आस रज़ि० भी असीराने जंग में आए थे, उनके पास फ़िदया की रक़म न थी, आंहज़रत सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को (जो उनकी ज़ौजा थीं और मक्का में थीं) कहला भेजा कि फ़िदया की रक़म भेज दें, हज़रत ज़ैनब रज़ि० का जब निकाह हुआ था तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने जहेज़ में उनको एक कीमती हार दिया था, हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने वही हार गले से उतार कर भेज दिया, आंहज़रत सल्ल० ने देखा तो 25/ बरस पहले का मुहब्बत आमेज़ वाकिआ याद आ गया, आप सल्ल० बेइख्तियार रो पड़े, और सहाबा से फ़रमाया कि तुम्हारी मर्ज़ी हो तो बेटी को मां की यादगार वापस कर दो, सबने तस्लीम की, गर्दनें झुका दीं और हार वापस कर दिया।

अबुल आस रज़ि० रिहा होकर मक्का आए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को मदीना भेज दिया, अबुल आस बहुत बड़े तिजारियों थे, चंद साल के बाद बड़े सरव सामान से शाम की तिजारत लेकर निकले, वापसी में मुसलमान दस्तों ने उनको

(1) अलबिदाया बन्निहाया 2-300

मअः तमाम माल व अस्बाब गिरफ्तार कर लिया, अस्बाब एक एक सिपाही पर तकसीम हो गया, यह छिपकर हज़रत जैनब रज़ि० के पास पहुंचे, उन्होंने पनाह दी, आंहज़रत सल्ल० ने लोगों से फरमाया कि अगर मुनासिब समझो तो अबुल आस का अस्बाब वापस कर दो, फिर तस्लीम की गर्दनें झुक गईं और एक एक धागा तक सिपाहियों ने लालाकर वापस कर दिया, अब यह वार ऐसा न था जो खाली जाता, अबुल आस मक्का आए और तमाम शुरका को हिसाब समझा कर दौलते इस्लाम से फ़ाइज़ हुए, और यह कह दिया कि मैं इसलिये आकर हिसाब समझा कर वापस जा रहा हूं ताकि यह न कहो कि अबुल आस हमारा रूपया खा गया और तकाज़े के डर से मुसलमान हो गया।<sup>(1)</sup>

### हज़रत उमैर बिन वहब रज़ि० का कबूले इस्लाम

उमैर बिन वहब कुरैश में इस्लाम का एक सख्त दुश्मन था वह और सफ़वान बिन उमर्या हुजरे में बैठे हुए मक़तूलीने बद्र का मातम कर रहे थे, सफ़वान ने कहा “खुदा की कसम अब जीने का मज़ा नहीं” उमैर ने कहा सच कहते हो अगर मुझ पर कर्ज़ न होता और बच्चों का ख्याल न होता तो मैं सवार होकर जाता और मुहम्मद (सल्ल०) को कत्ल कर आता, मेरा बेटा वहां कैद है।

सफ़वान ने कहा तुम कर्ज़ की और बच्चों की फिक्र न करो इन कामों का मैं ज़िम्मादार हूं उमैर ने घर आकर

(1) सीरियस इब्ने हिशाम 1-657, दलाइलुन्नबूब्वा लिलबैहकी 3-154 ता 157, तारीखे तबरी 3-43, 44

तलवार ज़हर में बुझाई और मदीना पहुंचा, हज़रत उमर रज़ि0 ने उसके तेवर देख लिये, गला दबाए हुए उसको आंहज़रत सल्ल0 की खिदमत में लाए, आप सल्ल0 ने फ़रमाया उमर! छोड़ो, उमैर! क़रीब आ जाओ, पूछा किस इरादे से आए हो? जवाब दिया बेटे को छुड़ाने आया हूं फ़रमाया फिर तलवार क्यों हमाइल है? उमैर ने कहा आखिर तलवारें बद्र में किस काम आई, फ़रमाया क्यों नहीं, तुमने और सफ़वान ने हुजरे में बैठ कर मेरे क़ल्ल की साज़िश नहीं की? उमैर यह बात सुनकर सन्नाटे में आ गया, बेइखियार बोला, मुहम्मद (सल्ल0) बेशक तुम पैग़म्बर हो, बखुदा मेरे और सफ़वान के सिवा इस मुआमला की किसी को ख़बर न थी। कुरैश जो आंहज़रत सल्ल0 के क़ल्ल की ख़बर सुनने के मुंतज़िर थे उन्होंने उमैर के मुसलमान होने की ख़बर सुनी।

नबी सल्ल0 ने सहाबा से फ़रमाया अपने भाई को दीन सिखाओ, कुर्झन याद कराओ और इसके फ़रज़ंद को आज़ाद कर दो, उमैर ने अर्ज़ किया ऐ रसूले खुदा सल्ल0! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं मक्का ही वापस जाऊं और लोगों को इस्लाम की दावत दूँ मेरे दिल में आता है कि अब मैं बुत परस्तों को उसी तरह सताया करूँ जिस तरह मुसलमानों को सताता रहा हूं उमैर के मदीना जाने के बाद सफ़वान का यह हाल था कि सरदाराने कुरैश से कहा करता था। देखो चंद रोज़ में क्या गुल खिलने वाला है कि बद्र का सदमा भूल जाओगे, सफ़वान को ख़बर लगी कि उमैर

मुसलमान हो गया तो उसे सख्त सदमा हुआ और उसने कहसम खाई कि जब तक ज़िंदा हूं उमैर से बात न करूंगा, न उसे कोई फाएदा पहुंचने दूंगा, उमैर मक्का में आया वह इस्लाम की मुनादी किया करता था और अक्सर लोग उसके हाथ पर मुसलमान हो गए थे।<sup>(1)</sup>

### हज़रत फ़ातिमा रज़िया अन्दा का अपद

हज़रत फ़ातिमा रज़िया जो हुजूर की सबसे कमिसन साहबज़ादी थीं, अब उनकी उम्र 18/ बरस की हो चुकी थी और शादी के पैग़ाम आने लगे थे, हज़रत अली रज़िया ने जब दरख़्वास्त की तो आप سल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़िया की मर्ज़ी दरयापूत की, वह चुप रहीं, यह एक तरह का इज़हार था, आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़िया से पूछा कि तुम्हारे पास महर में देने के लिये क्या है? बोले कुछ नहीं, आप सल्ल० ने फ़रमाया “वह हतीया की ज़िरह क्या हुई” (बद्र में हाथ आई थी) अर्ज़ की वह तो मौजूद है, आप सल्ल० ने फ़रमाया “बस वह काफ़ी है।”

नाज़िरीन को ख़्याल होगा कि बड़ी कीमती चीज़ होगी, लेकिन अगर वह उसकी मिक़दार जानना चाहते हैं तो जवाब यह है कि सिर्फ़ सवा सौ रुपये की ज़िरह के सिवा और जो कुछ हज़रत अली रज़िया का सरमाया था वह एक भेड़ की खाल और एक बोसीदा यमनी चादर थी, हज़रत अली रज़िया ने यह सब सरमाया हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़िया के नज़्र

(1) दलाइलुन्नुबूब्वा लिलबैहकी 3-147 ता 149, सीरित इब्ने हिशाम 1-661

किया, हज़रत अली रज़ि० अब तक आंहज़रत सल्ल० के ही पास रहते थे, शादी के बाद ज़खरत हुई कि अलग घर लें, हारिसा बिन नोअूमान अंसारी के मुतअ़द्दद मकानात थे, जिनमें से वह कई आंहज़रत सल्ल० की नज़्र कर चुके थे, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से कहा कि उन्हीं से और मकान दिलवा दीजिये, आप सल्ल० ने फ़रमाया कहाँ तक, अब उनसे कहते कहते शर्म आती है। हारिसा रज़ि० ने सुना तो दौड़े हुए आए कि हुजूर (सल्ल०) मैं और मेरे पास जो कुछ है सब आपका है, खुदा की क़सम जो मकान आप ले लेते हैं मुझको इससे ज़्यादा खुशी होती है कि वह मेरे पास रह जाए, ग़र्ज़ उन्होंने अपना एक मकान खाली कर दिया, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० उसमें उठ गई।

शहंशाहे कौनैन ने सव्यदए आलम को जो जहेज़ दिया वह बान की चारपाई, चमड़े का गदा जिसके अंदर रुई के बजाए खजूर के पत्ते थे, एक छागल, एक मशक, दो चकिकयां, दो मिट्टी के घड़े।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जब नए घर में जा लीं तो आंहज़रत सल्ल० उनके पास तशरीफ ले गए, दरवाज़े पर खड़े होकर इज़्न मांगा, फिर अंदर आए एक बर्तन में पानी मांगवाया दोनों हाथ उसमें डाले और हज़रत अली रज़ि० के सीने और बाजुओं पर छिड़का, फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया वह शर्म से लड़खड़ाती हुई आई, उन पर भी पानी छिड़का और फ़रमाया कि मैंने अपने खानदान में सबसे

अफ़ज़्लतर शख्स से तुम्हारा निकाह किया है।<sup>(1)</sup>

### जाहिली हमीयत और ज़ज़बए इंतिक़ामे बद्र

अरब में सिर्फ़ एक शख्स का कल्ला लड़ाई का एक सिलसिला छेड़ देता था जो सैकड़ों बरस तक ख़त्म नहीं हो सकता था, तरफ़ैन में से जिसको शिकस्त होती थी वह इंतिक़ाम को ऐसा फ़र्ज़ मुअक्कद जानता था जिसके अदा किये बगैर उसकी हस्ती नहीं क़ाइम रह सकती थी, बद्र में कुरैश के सत्तर आदमी मारे गए जिनमें अक्सर वह थे जो कुरैश के ताज व अफ़सर थे, इस बिना पर तमाम मक्का जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ था।<sup>(2)</sup>

कुरैश का कारवाने तिजारत जो ज़ंगे बद्र के जमाने में नफ़्रए कसीर के साथ शाम को वापस आ रहा था उसका रासुल माल हिस्सादारों को तक़सीम कर दिया गया था लेकिन ज़रे मुनाफ़ा अमानत के तौर पर महफूज़ था।

कुरैश को कुश्तगाने बद्र के मातम से फुर्सत मिली तो इस फ़र्ज़ की अदाइगी का ख्याल आया, चंद सरदाराने कुरैश जिनमें अबू जहल का बेटा अकरमा भी था, उन लोगों को जिनके अज़ीज़ व अक़ारिब ज़ंगे बद्र में कल्ला हो चुके थे साथ लेकर अबू सुफ़यान के पास गए और कहा मुहम्मद (सल्ल०) ने हमारी कौम का ख़ातमा कर दिया, अब इंतिक़ाम

(1) सुनन अबी दाऊद किताबुन निकाह, बाब अर्जल यदखल बअम्रजता, तफसीलात दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहकी 3-160, अलइसाबा और तबकात इन्ने सज़्द में मौजूद हैं, सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्ली नोअमानी 1-366

(2) सीरतुन्नबी 1-369

का वक़्त है हम चाहते हैं कि माले तिजारत का जो नफ़ा अब तक जमा है व इस काम में सर्फ़ किया जाए, यह ऐसी दरख़्बास्त थी जो पेश होने से पहले क़बूल कर ली गई थी, लेकिन अब कुरैश को मुसलमानों की कूप्यत व ज़ोर का अंदाज़ा हो चुका था, वह जानते थे कि ज़ंगे बद्र में जिस सामान से वह गए थे उससे अब कुछ ज़्यादा दरकार है, अरब में जोश फैलाने और दिलों को गमनि का सबसे बड़ा आला शेअर था, कुरैश में दो शाइर शाइरी में मशहूर थे, अम्र जुम्ही और मसाफ़ेअू। अम्र जुम्ही ग़ज़वए बद्र में गिरफ़्तार हो गया था लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने इक़ितज़ाए रहम से उसको रिहा कर दिया था, कुरैश की दरख़्बास्त पर वह और मसाफ़ेअू मक्का से निकले और कबाइले कुरैश में अपनी आतिश बयानी से आग लगा आए, लड़ाइयों में साबित क़दमी और जोशे ज़ंग का बड़ा ज़रीआ खातूनाने हरम थीं, जिस लड़ाई में खातूनें साथ होती थीं, अरब जानों पर खेल जाते थे कि शिकस्त होगी तो औरतें बेहुमत होंगी, बहुत सी औरतें ऐसी थीं जिनकी औलाद ज़ंगे बद्र में क़त्ल हो चुकी थी इसलिये वह खुद जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ थीं और उन्होंने मन्त्रों मानी थीं कि औलाद के कातिलों का खून पी कर दम लेंगी, ग़र्ज़ फौजें तैयार हुई तो बड़े बड़े मुअज्ज़ज़ घरानों की औरतें भी फौज में शामिल हुई।<sup>(1)</sup>

हज़रत हम्ज़ा रज़ि० ने हिंदा के बाप उत्था को बद्र में

(1) तारीखे तबरी 3-58,59, सीरियस् इब्ने हिशाम 2-60,61

कल किया था, जुबैर बिन मुतझम का चचा भी हम्ज़ा रज़ि० के हाथ से मारा गया था, इस बिना पर हिंदा ने वहशी को जो जुबैर का गुलाम और हरबा अंदाज़ी में कमाल रखता था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० के कल पर आमादा किया और यह इकरार हुआ कि इस कारगुज़ारी के सिला में वह आज़ाद कर दिया जाए।<sup>(1)</sup>

हज़रत अब्बास रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा गो इस्लाम ला चुके थे, लेकिन अब तक मवक्का ही में मुकीम थे उन्होंने तमाम हालात लिखकर एक तेज़ रू क़ासिद के हाथ रसूलुल्लाह सल्ल० के पास भेजे और क़ासिद को ताकीद की कि तीन दिन रात में मदीना पहुंच जाए, आंहज़रत सल्ल० को यह खबरें पहुंचीं तो आपने पांचवीं शब्वाल 3 हि० को दो खबर रसां जिनके नाम अनस और मोनिस थे खबर लाने के लिये भेजे, उन्होंने आकर इत्तिला दी कि कुरैश का लशकर मदीना के करीब आ गया, और मदीना की चरागाह (उरैज़) को उनके घोड़ों ने साफ़ कर दिया।<sup>(2)</sup>

आप सल्ल० ने हब्बाब बिन मुंज़िर को भेजा कि फौज की तअ़दाद की खबर लाएं, उन्होंने आकर सही तख्मीन से इत्तिला दी, चूंकि शहर पर हमला का अंदेशा था, हर तरफ पहरे बिठाये गए, हज़रत सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ हथियार लगा कर तमाम रात मस्जिदे नबवी के दरवाज़ा पर पहरा देते रहे।<sup>(3)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कलु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) व (3) सीरते हलबीया 2-490

سुہن کو آپ سلطان نے سہابا سے مshawara کیا، مُعہاجیرین نے عموم ن اور انسار میں سے اکاذبیر نے راء دی کی اور تین بाहر کیلئے میں بھیج دی جائے اور شہر میں پناہ گیر ہو کر مکاہلہ کیا جائے، عبداللہ بن عبای بن سلیمان جو اب تک کبھی شریکے مshawara نہیں کیا گیا اور اس نے بھی راء دی، لیکن ان نے خیڑ سہابا نے جو جنگ بدر میں شریک نہ ہو سکے تھے اس بات پر اسرا ر کیا کہ شہر سے نیکال کر ہملا کیا جائے، آنحضرت سلطان بھر میں تشریف لے گئے اور جیرہ پہن کر بाहر تشریف لائے، اب لوگوں کو ندامت ہوئے کہ ہم نے عبداللہ بن علی کو خیلائے مرجی نیکالنے پر مجبور کیا، سب نے ارجمند کی کہ ہم اپنی راء سے باج آتے ہیں، ارشاد ہوا کہ پیغمبر کو جہاں نہیں کہ ہدیہ پہن کر عطا دے۔<sup>(1)</sup>

### عہد کے دامن میں

کوئیش بودھ کے دن مادینا کے کریب پہنچے اور کوہے عہد پر پڈاں ڈالا، آنحضرت سلطان جو معاذ کے دن نماز جے جو معاذ پढ़ کر اکھڑا سہابا رجیو کے ساتھ شہر سے نیکالے، عبداللہ بن عبای بن سلیمان تین سو کی جمیعت لے کر آیا، لیکن یہ کہ کہ کر واپس چلا گیا کہ “مُحَمَّد (سلطان) نے میری راء ن مانی” آنحضرت سلطان کے ساتھ اب سیف سات سو سہابا رجیو رہ گئے۔<sup>(2)</sup> ان میں اک سو جیرہ

(1) سہیل بخاری، کیتاب الحدیث، باب کامل اللہ تعالیٰ و امرہم شوری

امین مسلمان ۱-۳۵۱، سمعن دارمی ۲-۱۲۹

(2) جادل مسیحی ۳-۱۹۴، سیرت ابن حیشام ۲-۶۴

पोश थे, मदीना से निकल कर फौज का जाइज़ा लिया गया और जो लोग कमिसन थे वापस कर दिये गए, उनमें हज़रत जैद बिन साबित रज़ि०, बराअ० बिन आज़िब रज़ि०, अबू सईद खुदरी रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० और अराबा उवैसी रज़ि० भी थे, जानिसारी का यह ज़ौक़ था कि नौजवानों में से जब राफ़ेअ० बिन खुदैज से कहा गया, कि तुम उम्र में छोटे हो, वापस जाओ, तो वह अंगूठों के बल तन कर खड़े हो गए कि कृद ऊंचा नज़र आए, चुनांचे उनकी यह तरकीब चल गई और वह ले लिये गए, समुरा रज़ि० एक नौजवान जवान के हमसिन थे उन्होंने यह दलील पेश की कि मैं राफ़ेअ० को लड़ाई में पछाड़ लेता हूं, इसलिये अगर उनको इजाज़त मिलती है तो मुझको भी मिलनी चाहिये, दोनों का मुक़ाबला कराया गया और समुरा ने राफ़ेअ० को ज़मीन पर दे मारा, इस बिना पर उनको इजाज़त मिल गई।<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्ल० ने उहुद को पुश्त पर रखकर सफ़ आराई की, मस्अब बिन उमैर रज़ि० को अलम इनायत किया, जुबैर बिन औव्वाम रज़ि० रिसाला के अफ़सर मुकर्रर हुए, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० को उस हिस्सए फौज की कमान मिली जो ज़िरह पोश न थे,<sup>(2)</sup> पुश्त की तरफ़ एहतिमाल था कि दुश्मन उधर से आएं इसलिये पचास तीर अंदाज़ों का एक दस्ता मुअ्यन फ़रमाया और हुक्म दिया

(1) तारीखे तबरी 3-61, सीरत इब्ने कसीर 3-30, सीरत इब्ने हिशाम 2-66

(2) तारीखे तबरी 3-61, 62

कि गोलडाई में फूल हो जाए ताहम वह जगह से न हटें,  
अब्दुल्लाह बिन जुबैर उन तीर अंदाज़ों के अफ़सर मुकर्रर  
हुए।<sup>(1)</sup>

कुरैशी को बद्र में तजर्बा हो चुका था, इसलिये उन्होंने  
निहायत तरतीब से सफ़ आराई की, मैमना पर ख़ालिद बिन  
वलीद को मुकर्रर किया, मैसरा अकरमा को दिया जो अबू  
ज़हल के फ़रज़न्द थे, सवारों का दस्ता सफ़वान बिन उमय्या  
की कमान में था जो कुरैश का मशहूर रईस था, तीर  
अंदाज़ों के दस्ते अलग थे जिनका अफ़सर अब्दुल्लाह बिन  
रबीआ था, तल्हा अलमबरदार था, दो सौ घोड़े ख़रीदे थे कि  
ज़्यूरत के वक्त काम आए<sup>(2)</sup> सबसे पहले तबले जंग के  
बजाए ख़ातूने कुरैश दफ़ पर अशआर पढ़ती हुई बढ़ीं,  
जिनमें कुश्तगाने बद्र का मातम और इंतिकामे खून के रिज़  
थे, हिंदा (अबू سुफ़यान की बीवी) आगे आगे और चौदह  
औरतें साथ साथ थीं, अशआर यह थे-

نَحْنُ بَنَاثُ طَارِقٍ      نَمْشِيْ عَلَى النَّمَارِقِ  
إِنْ تُفْلِئُنَا نَعَانِقُ      أُوتْلَبُرُؤْأْفَارِق

“हम आसमान के तारों की बेटियां हैं, हम कालीनों  
पर चलने वालियां हैं, अगर तुम बढ़कर लड़ोगे तो  
तुम से गले मिलेंगे और अगर पीछे कदम हटाया  
तो हम तुम से अलग हो जाएंगे।”<sup>(3)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद (2) तारीखे तबरी 3-62,  
63 (3) सीरत इब्ने कसीर 3-31, सीरत इब्ने हि�शाम स0 27, 28, इन अशआर का  
ज़िक्र मुस्तदरक में छाकिम ने किया है और इस हदीस को इमाम ज़हबी ने सहीह  
करार दिया है 3-256

## लड़ाई का आगाज़

लड़ाई का आगाज़ इस तरह हुआ कि अबू आमिर जो मदीना का एक मक़बूले आम शख्स था डेढ़ सौ आदमियों के साथ मैदान में आया, इस्लाम से पहले जुहू और पारसाई की बिना पर तमाम मदीना उसकी इज़्ज़त करता था, चूंकि उसको ख्याल था कि अंसार जब उसको देखेंगे तो रसूलुल्लाह सल्ल० का साथ छोड़ देंगे, मैदान में आकर पुकारा “मुझको पहचानते हो? मैं अबू आमिर हूं “अंसार ने कहा हाँ ओ बदकार! हम तुझको पहचानते हैं, खुदा तेरी आरजू बर न लाए।”<sup>(1)</sup>

कुरैश का अलमबरदार तलहा ने सफ़ से निकल कर पुकारा, क्यों मुसलमानों में कोई है? जो मुझको जल्द दोज़ख में पहुंचाए या खुद मेरे हाथों बहिश्त में पहुंच जाए,” अली मुर्तज़ा रज़ि० ने सफ़ से निकल कर कहा “मैं हूं” यह कहकर तलवार मारी और तलहा की लाश ज़मीन पर थी,<sup>(2)</sup> तलहा के बाद उसके बेटे उस्मान ने जिसके पीछे पीछे औरतें अशआर पढ़ती आती थीं, अलम हाथ में लिया और रिज़ पढ़ता हुआ हमला आवर हुआ-

إِنَّ عَلَىٰ أَهْلِ الْلَّوَاءِ حُقُّاٌ أَنْ تَخْضِبَ الصُّعَدَأُرْ تَنْدَقَ

“नेज़ा बरदार का फ़र्ज़ है कि वह नेज़ा खून में रंग दे या टकरा कर टूट जाए।”

(1) मुस्नद अहमद 4-46, मुस्तदरक हाकिम 2-107,108

(2) तारिख तबरी 3-63

हज़रत हम्जा रज़ि० मुकाबला को निकले और शाना पर तलवार मारी कि कमर तक उतर आई, साथ उनकी ज़बान से निकला कि “मैं साकिये हुज्जाज का बेटा हूं” अब आम जंग शुरू हो गई<sup>(1)</sup> हज़रत हम्जा रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, अबू दुजाना रज़ि० फौजों के दल में घुसे और सफें की सफें साफ़ कर दीं<sup>(2)</sup> अबू दुजाना अरब के मशहूर पहलवान थे, आंहज़रत सल्ल० ने दस्ते मुबारक में तलवार लेकर फ़रमाया “कौन इसका हक़ अदा करता है” इस सआदत के लिये दफ़अ़तन बहुत से हाथ बढ़े, लेकिन यह फ़खर अबू दुजाना रज़ि० के नसीब में था, इस ग़ेर मुतवक्केअ इज़ज़त ने उनको मग़र कर दिया, सर पर सुख़र रुमाल बांधा और अकड़ते व तनते हुए फौज से निकले, आंहज़रत सल्ल० ने इशाद फ़रमाया कि “यह चाल खुदा को सख्त नापसंद है लेकिन इस वक्त पसंद है” अबू दुजाना रज़ि० फौजों को चीरते, लाशों पर लाशे गिराते, बढ़ते चले जाते थे, यहां तक कि हिंदा सामने आ गई, उसके सर पर तलवार रखकर उठा ली कि रसूलुल्लाह सल्ल० की तलवार इस क़ाबिल नहीं है कि औरत पर आज़माई जाए।<sup>(3)</sup> हज़रत हम्जा रज़ि० दो दस्ती तलवार मारते थे और जिसकी तरफ़ बढ़ते थे सफें की सफें साफ़ हो जाती थीं, इसी हालत में निबाझ़ ग़बशानी सामने आ गया पुकारे कि “ओ ख़त्तानतुन्निसाअू के बच्चे! कहां जाता है?”

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-34, सीरत इब्ने हिशाम 2-74 (2)तारीखे तबरी (3)मुस्तदरक हाकिम 3-256, ज़हबी ने तौसीक फ़रमाई है, तारीखे तबरी 3-63, सीरत इब्ने कसीर 3-30,31 इस वाकिआ के बजूज़ हिस्से इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद ने भी नक़ल फ़रमाए हैं।

यह कह कर तलवार मारी, वह ख़ाक पर ढेर था, वहशी जो एक गुलाम था और जिससे जुबैर बिन मुहम्मद उसके आका ने वादा किया था कि अगर वह हम्ज़ा को क़त्ल कर दे तो आज़ाद कर दिया जाएगा वह हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की ताक में था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० बराबर आए तो उसने छोटा सा नेज़ा जिसको हिर्बा कहते हैं और जो हृष्णों का ख़ास हथियार है फेंक कर मारा जो नाफ़ में लगा और पार हो गया।<sup>(1)</sup> हज़रत हम्ज़ा रज़ि० ने उस पर हमला करना चाहा लेकिन लड़खड़ा कर गिर पड़े और रुह परवाज़ कर गई।<sup>(2)</sup>

**मुसलमानों के रिप्लाफ़ ज़ंग का पांसा कैसे पलटा**  
 कुफ़्फ़ार के अलम बरदार लड़ लड़ कर क़त्ल हो जाते थे ताहम अलम गिरने नहीं पाता था, एक के गिरने से दूसरा जांबाज़ बढ़कर अलम को हाथ में ले लेता था, एक शख्स ने जिसका नाम सवाब था जब अलम हाथ में लिया तो किसी ने बढ़ कर इस ज़ोर से तलवार मारी कि दोनों हाथ कट कर गिर पड़े लेकिन वह कौमी अलम को अपनी आँखों से ख़ाक बल ज़मीन पर गिरा और अलम को सीना से दबा लिया, उसी हालत में यह कहता हुआ मारा गया कि “मैंने अपना एक बहादुर ख़ातून (उम्रह बिंते अलक़मा) दिलेराना

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) सीरित इब्ने कसीर 3-34

बढ़ी और अलम को हाथ में लेकर बुलंद किया, यह देखकर हर तरफ से कुरैश सिमट आए और उखड़े हुए पांव फिर जम गए।<sup>(1)</sup>

अबू आमिर कुफ्फार की तरफ से लड़ रहा था, लेकिन उसके साहबज़ादे हज़रत हंज़ला रज़िया इस्लाम ला चुके थे उन्होंने आंहज़रत सल्ला<sup>0</sup> से बाप के मुकाबला में लड़ने की इजाज़त मांगी, लेकिन रहमते आलम ने यह गवारा न किया कि बेटा अपने बाप पर तलवार उठाए, हज़रत हंज़ला रज़िया ने कुफ्फार के सिपहसालार (अबू सुफ्यान) पर हमला किया और करीब था कि उनकी तलवार अबू सुफ्यान का फैसला कर दे, दफ़अ़तन पहलू से शद्दाद बिन अलअस्वद ने झपट कर उनके वार को रोका और उनको शहीद कर दिया, ताहम लड़ाई का पल्ला मुसलमानों ही की तरफ भारी था।<sup>(2)</sup>

बहादुर नाज़नीने जोरिज्ज़ से दिलों को उभार रही थीं, बदहवासी के साथ पीछे हटीं और मतलआ साफ़ हो गया, लेकिन साथ ही मुसलमानों ने लूट शुरू कर दी, यह देखकर तीर अंदाज़ जो पुश्त पर मुकर्रर किये गए थे वह भी ग़नीमत की तरफ झुके, अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़िया ने बहुत रोका लेकिन वह न रुक सके।<sup>(3)</sup> तीर अंदाज़ों की जगह खाली देखकर खालिद ने अकब्ब से हमला किया, अब्दुल्लाह बिन जुबैर चंद जांबाज़ों के साथ जम कर लड़े, लेकिन सबके सब शहीद हो गए, अब रास्ता साफ़ था, खालिद ने सवारों

(1) सीरिज इन्हे कसीर 3-43, तबरी 3-65, सीरिज इन्हे हिशाम 2-78 (2) मुस्तदरक डाकिम 3-225, तबरी 3-69 (3) सहीहुल बुखारी, कित्ताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए जुहुद

के दस्ता के साथ निहायत बेजिग्री से हमला किया, लोग लूटने में मसरूफ़ थे, मुड़कर देखा तो तलवारें बरस रही हैं, बदहवासी में दोनों फौजें इस तरह बाहम मिल गई कि खुद मुसलमान मुसलमानों के हाथ से मारे गए।<sup>(1)</sup> मस्त्रब बिन उमैर जो आंहज़रत सल्ल० से सूरत में मुशाबेह थे, इन्हे कर्म्मिया ने उनको शहीद कर दिया।<sup>(2)</sup> मुश्विरकीन का इतने ज़ोर का रेला आया कि अक्सर सहाबा रज़ि० के कदम उखड़ गए और दुश्मन रसूलुल्लाह सल्ल० तक पहुंच गए, आप सल्ल० के चेहरा मुबारक को ज़ख्मी कर दिया, मिग़फ़र की दो टुकड़ियां चेहरए मुबारक में चुभ कर रह गई और दाहिनी तरफ का नीचे का दांत शहीद हो गया।<sup>(3)</sup> चारों तरफ तलवारें और तीर बरस रहे थे, आप सल्ल० अपने पहलू पर एक गढ़े में गिर गए, हज़रत अली रज़० ने हाथ पकड़ा और हज़रत तलहा रज़० ने गोद में उठा लिया।<sup>(4)</sup>

इसी बदहवासी और परेशानी में खबर उड़ गई कि आप सल्ल० शहीद हो गए, इस इजितराब में अक्सरों ने हिम्मत हार दी और जो जहां था वहीं का वहीं रह गया।<sup>(5)</sup> हुज़रत अनस रज़ि० बिन नुज़र ने चंद मुसलमानों को देखा कि हथियार फेंक दिये हैं और मग्नमूम बैठे हैं, पूछा! बैठे क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा कि हुज़र सल्ल० शहीद हो गए,

(1) तबरी ३-६३, सीरत इब्ने हि�शाम २-७८

(2) तबरी ३-६६, सीरत इब्ने हि�शाम २-७३

(३) सहीहल बुखारी, किताबुल खगाजी, वाच मा असावन्नवी सल्लो मिनल जराह यामा उमुद

(4) जादल मजाद 3-197, सीरित इब्ने हिशाम 2-80

(5) तस्वीर ३-६८

बोले फिर जी कर क्या करोगे? उठो! जिस पर रसूल सल्ल० ने जान दी उस पर तुम भी जान दे दो, हज़रत अनस रजि० ने मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके कहा “ऐ अल्लाह इनके फेअ्रल से मैं मअूज़रत करता हूं और मुश्किन के अमल से मैं बरी हूं” आगे बढ़े तो सअ़द बिन मआज़ रजि० मिले, अनस ने कहा सअ़द! मुझे जन्नत की खुशबू उहुद पहाड़ के इसी तरफ़ से आ रही है, यह कहकर बड़े जोश के साथ हमला किया और शहीद हो गए, शहादत के बाद देखा गया तो जिस्म पर अस्सी से ऊपर ज़ख्म थे और लाश पहचान नहीं पड़ती थी, उनकी बहन ने उंगली के पोर के एक निशान से पहचाना।<sup>(1)</sup> एक मुहाजिर का गुज़र एक अंसारी रजि० के पास हुआ, देखा तो वह खून में लोटपोट हैं, कहा तुमको मअ़लूम है कि मुहम्मद सल्ल० शहीद हो गए, उन्होंने जवाब दिया कि अगर आप सल्ल० शहीद हो गए तो अपनी मुराद को पहुंच गए तुम भी अपने दीन पर जान दे दो।”<sup>(2)</sup>

## मुहब्बत व जानिसारी के नमूने और मुसलमानों का द्वेषारा जमाव

जानिसाराने खास बराबर लड़ते जाते थे, लेकिन निगाहें रसूल सल्ल० को ढूँढ़ती थीं, सबसे पहले कअूब बिन मालिक रजि० की नज़र आप सल्ल० पर पड़ी, चेहरए मुबारक पर

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा बद्र

(2) सीरित इब्ने कसीर 3-61

मिग़फ़र था लेकिन आंखें नज़र आती थीं, कअब ने पहचान कर पुकारा, “मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्ल० यह हैं।” यह सुन कर हर तरफ से जां निसार टूट पड़े।<sup>(1)</sup> कुफ़्फ़ार ने अब हर तरफ से हट कर इसी रुख़ पर ज़ोर दिया, दल का दल हुजूम करके बढ़ता था, हज़रत तलहा रज़ि० ने अपने पुरजोश हमलों से उनको पीछे हटा दिया, तीरों की चारों तरफ से बारिश थी, हज़रत अबू दुजाना रज़ि० ने अपनी पीठ को आप सल्ल० पर झुका कर ढाल बना दिया,<sup>(2)</sup> तीर उनकी पीठ पर लग रहे थे और वह बेहिस व हरकत खड़े थे।<sup>(3)</sup> एक मर्तबा ज़ोर शोर का हमला हुआ, आप सल्ल० ने क़रमाया कि कौन उनको पीछे ढकेलता है और जन्त लेता है, सात अंसारी खड़े थे, एक एक आदमी बारी बारी बढ़ता रहा और आप सल्ल० यही फ़रमाते रहे, सातों उस जगह काम आ गए।<sup>(4)</sup> हज़रत तलहा रज़ि० ने अपने हाथ से सिपर का काम लिया और आंहज़रत सल्ल० की जानिब आने वाले तीर अपने हाथ से रोके, यह हाथ हमेशा के लिये शल हो गया।<sup>(5)</sup> बेदर्द रहमते आलम सल्ल० पर तीर बरसा रहे थे और आप सल्ल० की ज़बान पर यह अलफ़ाज़ थे, “رَبِّ أَغْفِرْ لِقَوْمٍ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ” ऐ मेरे खुदा! मेरी कौम को

(1) तबरी 3-67, सीरत इब्ने कसीर 3-68

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-417

(3) तबरी 3-66

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए उहुद

(5) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी

बिद्धा दे यह जानते नहीं”<sup>(1)</sup> हज़रत तलहा ज़ख्म खाते खाते चूर चूर होकर गिर गए, सहाबए किराम रज़ियो जब पलट कर आए तो आप سल्लो ने फ़रमाया तलहा (रज़ियो) की खबर लो उनकी हालत नाजुक है, लोगों ने उनको उठाया तो उन पर दस से ऊपर ज़ख्म थे, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियो के भी बीस से ऊपर ज़ख्म आए थे<sup>(2)</sup> हज़रत अबू तलहा रज़ियो जो मशहूर तीर अंदाज़ थे उन्होंने इस कद्र तीर बरसाए कि दो तीन कमानें उनके हाथ से टूट कर रह गई, उन्होंने सिपर आंहज़रत सल्लो के चेहरा पर ओट कर लिया था कि आप सल्लो पर कोई वार न आने पाए, आप सल्लो कभी गर्दन उठाकर दुश्मनों की फ़ौज की तरफ़ देखते तो अर्ज़ करते कि आप गर्दन न उठाएं, ऐसा न हो कि कोई तीर आकर लग जाए, यह मेरा सीना सामने है<sup>(3)</sup> हज़रत सअ़द बिन वक़्कास रज़ियो भी मशहूर तीर अंदाज़ थे और उस वक़्त आप सल्लो के रिकाब में हाज़िर थे, आंहज़रत सल्लो ने अपना तर्कश उनके सामने डाल दिया और फ़रमाया ‘‘तुम पर मेरे मां बाप कुर्बान’’ तीर मारते जाओ<sup>(4)</sup> एक दफ़ा हुजूम हुआ तो आंहज़रत सल्लो ने फ़रमाया ‘‘कौन मुझ पर जान देता है?’’ ज़ियाद बिन सकन रज़ियो पांच अंसारी लेकर इस खिदमत के अदा करने के लिये बढ़े और एक एक ने जांबाज़ी से लड़कर अपनी जानें फ़िदा कर दी, ज़ियाद को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्तियर, बाब गुज़वए उहुद (2) मुस्तादरक लाकिम 3-348, सीरित इब्ने हिशाम 2-83 (3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब गुज़वए उहुद सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्तियर, बाब गुज़वतुन्निसाअ मज़रिग़िल। (4) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब गुज़वए उहुद

यह शर्फ हासिल हुआ कि आंहज़रत सल्ल० ने हुक्म दिया कि उनका लाशा करीब लाओ, लोग उठ कर लाए कुछ कुछ जान बाकी थी कदमों पर रख दिया और उसी हालत में जान दी।<sup>(1)</sup>

सर बवक्ते ज़िब्ह अपना उसके ज़ेरे पाए है यह नसीब अल्लाहु अक्बर लौटने की जाए है एक बहादुर मुसलमान इस आलम में भी बेपरवाई के साथ खड़ा खजूरें खा रहा था, उसने बढ़कर पूछा कि “या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! अगर मैं मारा गया तो कहाँ हूंगा?” आपने फरमाया “जन्नत में” इस बशारत से बेखुद होकर वह इस तरह कुफ़्कार पर टूट पड़ा कि मारा गया।<sup>(2)</sup> ऐन उस वक्त जबकि काफिरों ने आम हमला कर दिया था और आप सल्ल० के साथ सिर्फ चंद जानिसार रह गए थे, उम्मे अम्मारा रज़ि० आंहज़रत सल्ल० के पास पहुंची और अपना सीना सिपर कर दिया, कुफ़्कार जब आप सल्ल० पर बढ़ते थे तो तीर और तलवार से रोकती थीं, इन्हे कई जब दर्रता हुआ आंहज़रत सल्ल० के पास पहुंच गया तो उम्मे अम्मारा रज़ि० ने बढ़ कर रोका, चुनांचे कंधे पर ज़ख्म आया और ग़ार पड़ गया, उन्होंने भी तलवार मारी लेकिन वह दोहरी ज़िरह पहने हुए था इसलिये कारगर न हुई।<sup>(3)</sup>

उबैय बिन खलफ लोहे में झूबा हुआ आपकी तरफ़ बढ़ा,

(1) तबरी ३-६५, ६६, सीरत इब्ने हिशाम २-४१

(2) सठीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ुज़बए उम्म

(3) सीरत इब्ने कसीर ३-६७, सीरत इब्ने हिशाम २-४१, ४२

वह यह कहता जाता था कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) बच गए तो मेरी ख़ैर नहीं, उसने मक्का में आप सल्ल0 को शहीद करने की क़सम खाई थी, उसकी एक हँसली, ज़िरह और खुद के दर्मियानी सूराख़ से नज़र आ रही थी, आंहज़रत सल्ल0 ने उस पर नेज़ा से वार किया और वह घोड़ा से गिर गया, उसके साथियों ने उसको उठाया, वह बैल की तरह चिल्लाता था, लोगों ने उससे कहा कि घबराने की क्या बात है, यह तो एक मअ़मूली ख़राश है, उसने कहा कि तुमको मअ़लूम नहीं कि मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा था कि वह मुझे क़त्ल करेंगे, मुझे इस ज़ख़्म की इतनी तकलीफ़ है कि वह अगर जुल मजाज़ की बस्ती पर तक़सीम कर दी जाए तो वह सब मर जाएं, उबैय बिन ख़लफ़ राबिग़ पहुंच कर मर गया।<sup>(1)</sup>

सहाबए किराम रज़ि0 सब तरफ़ से आपके पास आकर जमा हो गए, ख़ौद की एक कड़ी रुख़सार मुबारक में धंस गई थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 कहते हैं कि मैं उसको निकालने चला, अबू उबैदा रज़ि0 ने खुदा की क़सम देकर मुझसे कहा कि मुझे इसका मौक़ा दो, उन्होंने दांतों में उसको दबा कर इस तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया कि हुजूर सल्ल0 को तकलीफ़ न हो, कड़ी निकल आई और उसके साथ अबू उबैदा का दांत उखड़ गया, मैं दूसरी कड़ी को निकालने के लिये बढ़ा, अबू उबैदा ने फिर

(1) तबरी 3-67, सीरित इब्ने कसीर 3-69, सीरित इब्ने हिशाम 2-84

कसम दी और इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया और उनका दूसरा दांत भी उखड़ गया<sup>(1)</sup> मालिक बिन सनान अंसारी रज़ि० ने रुख्सार मुबारक के खून को चूस लिया, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि कुल्ली कर दो, उन्होंने अर्ज किया बखुदा कभी कुल्ली न करेंगा, जब वहां से चले तो हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर किसी को जन्नती देखने का शौक हो तो इन्हें देख ले”<sup>(2)</sup>

आप सल्ल० की वफात की ख़बर मदीना पहुंची तो इख्लास शिअ़ार निहायत बेताबी के साथ दौड़े, जनाब फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० ने आकर देखा तो अभी तक चेहरए मुबारक से खून जारी था, हज़रत अली रज़ि० सिपर में भर कर पानी लाए, जनाब सव्यदा धोती थीं लेकिन खून नहीं थमता था, बिलआखिर चटाई का एक टुकड़ा जलाया और ज़ख्म पर रख दिया खून फौन थम गया<sup>(3)</sup> आप सल्ल० ने एक चट्टान पर चढ़ना चाहा लेकिन ना ताकती से चढ़ नहीं सके, हज़रत तलहा रज़ि० बैठ गए और अपने को ज़ीना बना दिया,<sup>(4)</sup> नमाज़ का वक्त हुआ तो आपने बैठे बैठे नमाज़ पढ़ाई<sup>(5)</sup>।

(1) मुस्तदक हाकिम ३-२९, किलादुल याज़ी वसियर

(2) मुस्तदक हाकिम ३-६५, सीरत इब्ने हिजाय २-४०

(3) सहीह बुहारी किलादुल याज़ी बाब पा असानुन्वी सल्ल० यित्त जरूर यीका उहुद, सहीह मुस्तिय किलादुल यित्त वसियर बाब क्षुशर उहुد

(4) मुस्तदक हाकिम ३-२८, किलादुल याज़ी वसियर, हयाम ज़ही ने इन्होंने मुस्तिय की झर्त पर करा दिया है।

(5) यादुल याज़ाद ३-१९७, सीरत इब्ने हिजाय ७-८६, ८७

इस जंग में बअूज़ सहाबा रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 से (जबकि हुजूर सल्ल0 को भी कई ज़ख्म आए थे) अूर्ज़ किया “काश आप मुशिरकीन पर बहुआ फरमाएं, नबी सल्ल0 ने फरमाया-

إِنِّي لَمْ أَبْعَثْ لَعَانًا وَلِكُنْ بَعْثُتْ ذَاعِيَا وَرَحْمَةً، اللَّهُمَّ اهْدِ  
قَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

मैं लअूनत करने के लिये नबी नहीं बनाया गया, मुझे तो खुदा की तरफ बुलाने वाला और सरापा रहमत बनाया गया है, ऐ खुदा! मेरी कौम को हिदायत फरमा, क्योंकि वह मुझे जानते नहीं।<sup>(1)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल0 साबित कदमों के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए कि दुश्मन इधर नहीं आ सकते, अबू सुफ़्यान ने देख लिया, फौज लेकर पहाड़ी पर चढ़ा, लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 और चंद सहाबा रज़ि0 ने पत्थर बरसाए जिससे वह आगे न बढ़ सका।<sup>(2)</sup> अबू सुफ़्यान ने सामने की पहाड़ी पर चढ़ कर पुकारा कि यहां मुहम्मद (सल्ल0) हैं? आप सल्ल0 ने हुक्म दिया कोई जवाब न दे, अबू सुफ़्यान ने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और उमर रज़ि0 का नाम लेकर पुकारा, और जब कुछ आवाज़ न आई, तो पुकार कर बोला सब मारे गए, हज़रत उमर रज़ि0 से ज़ब्त न हो सका बोल उठे ओ दुश्मने खुदा! हम सब ज़िंदा हैं,

अबू सुफ़्यान ने कहा:

“أَعْلَمُ بِهِلْ” “ऐ हुबल! तू ऊंचा रह”

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-111, बहवाला अश्शफा काज़ी अयाज़ स0 48

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-45

सहाबा रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० के हुक्म से कहा:

“اللَّهُ أَعْلَى وَأَجْلٌ” “अल्लाह ऊंचा है और बड़ा है”

अबू सुफ्यान ने कहा:

“لَنَا الْعُزُّى وَلَا عُزْرٍ لِكُمْ” “हमारे पास उज्ज्ञा है, तुम्हारे पास नहीं,

सहाबा रज़ि० ने कहा:

“اللَّهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَى لِكُمْ” “खुदा हमारा आका है और तुम्हारा कोई आका नहीं”

अबू सुफ्यान ने कहा: आज का दिन बद्र के दिन का जवाब है, फौज के लोगों ने मुर्दों के नाक कान काट लिये हैं, मैंने यह हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझको मअ़लूम हुआ तो कुछ रंज भी नहीं हुआ।<sup>(1)</sup>

### चंद शुद्धा का हाल

हज़रत जैद बिन साबित रज़ि० कहते हैं मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सअ़द बिन अर्बीअ० को देखने के लिये भेजा और मुझसे फरमाया कि वह अगर तुमको मिल जाएं तो उनको मेरा सलाम कहना कि रसूलुल्लाह सल्ल० पूछते हैं तुम अपने को किस हाल में पाते हो? जैद कहते हैं कि मैं लाशों को देखता फिरता था कि मेरी नज़र सअ़द पर पड़ी, उनका दमेवापसी था, उनके जिस्म में नेज़े, तलवार के सत्तर ज़ख्म थे, मैंने कहा सअ़द! रसूलुल्लाह सल्ल० तुमको सलाम कहते हैं और फरमाते हैं तुम किस हाल में हो? उन्होंने जवाब दिया

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

कि हुजूर सल्ल० को मेरा सलाम कहना और अ़र्ज करना कि मुझे जन्नत की खुशबू आ रही है, मेरी कौम अंसार से मेरा प्याम कहना कि “जब तक एक झपकने वाली आंख भी तुम में से बाकी है उस वक्त तक अगर दुश्मन नबी सल्ल० तक पहुंच गया तो खुदा के हुजूर में तुम कोई उज्ज्र पेश न कर सकोगे” यह कहकर उनकी रुह परवाज़ कर गई।<sup>(1)</sup>

शुहदा में देखा गया तो अ़प्र बिन साबित की भी लाशी, उनका लकड़ब उसैरम है, यह क़बीला बनी अब्दुल अशहल से तअल्लुक रखते थे, उहुद के मअ़रके से पहले उनको इस्लाम से हमेशा इंकार रहा, उहुद के दिन दफ़अतन उनके दिल में इस्लाम का ज़ज्बा पैदा हुआ, आंहज़रत सल्ल० और सहाबए किराम रज़ि० तशरीफ ले जा चुके थे, यह मुसलमान हुए तलवार हाथ में ली और जंग में शरीक हो गए, किसी को इसकी इत्तिला नहीं हुई, जब मैदान साफ़ हुआ और बनी अब्दुल अशहल अपने क़बीला के शुहदा की तलाश में निकले तो देखा कि उसैरम भी ज़ख्मी पड़े हैं और कुछ सांस बाकी है, उन्होंने कहा यह तो उसैरम मअ़लूम होते हैं, यह यहां कहां, यह तो इस्लाम के मुन्किर थे, फिर उन्होंने उनसे पूछा कि तुम यहां कैसे आए? क्या कौम की हमीद्यत में या इस्लाम की मुहब्बत में? उन्होंने कहा नहीं बल्कि इस्लाम की मुहब्बत में, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और मैंने आंहज़रत सल्ल० के साथ जिहाद में शिर्कत की और इस सज़ादत को पहुंचा, यह कहकर

(1) मुस्तदर हाकिम 3-221, किताब मअरिफतुसहाबा, ज़िक्र मनाकिब सज़द बिन रबीع रज़ि०

उनकी रुह परवाज़ कर गई, लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से तज़किरा किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया: “वह जन्नती हैं” हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि उसैरम को एक वक्त की नमाज़ पढ़ने की भी नौबत नहीं आई, (इस्लाम लाने के बाद ही शहीद हो गए)<sup>(1)</sup>

उन्ही शुहदा में हज़रत जाबिर के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह अम्र भी थे, उन्होंने उहुद से पहले हज़रत मुबश्शर बिन अब्दुल मुंज़िर को (जो बद्र में शहीद हो चुके थे।) ख़बाब में देखा कि वह उनसे कह रहे हैं कि तुम हमारे पास चंद ही दिन में आने वाले हो, उन्होंने कहा तुम कहां हो? मुबश्शर ने कहा जन्नत में, यहां हम आज़ादी के साथ चलते फिरते हैं, अब्दुल्लाह ने कहा क्या तुम बद्र में शहीद नहीं हुए? उन्होंने कहा हां! लेकिन फिर मुझे ज़िंदा कर दिया गया, हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल० से किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया “यह शहादत की तरफ़ इशारा है”,<sup>(2)</sup> हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि मेरे वालिद की लाश को आंहज़रत सल्ल० के पास लाया गया, दुशमनों ने उनके अअूज़ा काटे थे, जब आप सल्ल० के सामने उनको रखा गया तो मैं उनका मुंह खोलने चला तो लोगों ने मुझे मना किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया: कि फ़रिशते बराबर इन पर साया करते रहे हैं।<sup>(3)</sup>

(1) मुस्तदरक हाकिम ३-३०, मुस्नद अहमद ५-४२८, ४२९

(2) मुस्तदरक हाकिम ३-२२५

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन कुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुद

उन्हीं शुहदा में हज़रत ख़ैसमा भी थे, उनके बेटे बद्र में शहीद हुए थे, उन्होंने आंहज़रत सल्ल० से अ़र्ज किया कि बद्र की लड़ाई से मैं रह गया, हालांकि मुझे इसका बड़ा शौक था, लेकिन कुर्जा में मेरे बेटे का नाम निकला और शहादत उन्हीं के नसीब में थी, या रसूलुल्लाह सल्ल० मैंने रात अपने बेटे को ख़बाब में देखा, बेहतरीन शक्ल व सूरत है, जन्नत के मेवों और नहरों के दर्मियान चलता फिरता है और मुझसे कहता है कि मुझसे आ मिलो, साथ रहेंगे, मेरे रब ने मुझसे जो कुछ वादा किया मैंने हक पाया, खुदा की क़सम या रसूलुल्लाह सल्ल० अब मैं जन्नत में उसकी रिफ़ाकत का बहुत मुशताक हूँ मेरी उम्र भी बहुत हो गई, ज़ईफ़ी का ज़माना है, अब मुझे अपने रब की मुलाकात ही का शौक है, आप अल्लाह से दुआ फ़रमाइये कि जन्नत में रिफ़ाकत नसीब फ़रमाए, आप सल्ल० ने उनके हक में दुआ की और वह उहुद में शहीद हो गए।<sup>(1)</sup>

उन्हीं शुहदा में अब्दुर्रहमान बिन जहश रज़ि० भी थे, उन्होंने कहा था कि ऐ अल्लाह! तुझको क़सम है कि कल मेरा दुश्मन का सामना हो वह मुझे क़त्ल करें, फिर मेरा पेट फ़ाड़ें और नाक कान काटें, फिर तू मुझसे सवाल करे कि यह सब किस लिये हुआ? मैं कहूँ यह सब तेरी ख़ातिर हुआ।<sup>(2)</sup>

उन्हीं शुहदा में अ़म्र बिन अलजमूह रज़ि० भी थे, उनके पांव में सख्त लंग था, उनके चार जवान जवान बेटे थे.....

(1) ज़ादुल मज़ाद ३-२०८

(2) असदुल ग़ाबा ३-१, ज़ादुल मज़ाद ३-२०८

.....जब उहुद का मअरका पेश आया तो अम्ररजि० ने भी मैदान का इरादा किया, बेटों ने कहा अल्लाह ने आपको जिहाद से मुआफ़ी दी है, आप घर में रहें और हम लड़ने जाएं, वह आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए और कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे बेटे मुझे जिहाद से रोकते हैं, मैं तो उम्मीद करता हूं कि मैं शहीद हूं और अपने इस लंगड़े पांव से जन्नत में चलूं, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि “अल्लाह ने तुमको जिहाद से रुख़सत दी है” और उनके बेटों से फ़रमाया कि “तुम्हारा क्या हरज है इनको जाने दो शायद अल्लाह इनको शहादत नसीब करे।”<sup>(1)</sup>

उन्ही शुहदा में हज़रत मस्तुब बिन उमैर रजि० भी थे, जिनके बदन पर इस्लाम से पहले दो सौ रूपये से कम की पौशाक नहीं होती थी, वह सिर्फ़ एक कम्मल छोड़कर शहीद हुए थे, जो इतना छोटा था कि कफ़न देने में जब उनका सर छिपाया जाता था तो पांव खुल जाते थे और जब पैर छिपाए जाते थे तो सर खुल जाता था, आंहज़रत सल्ल० ने इशाद फ़रमाया कि कम्मल से सर छिपा दो और पांव पर घास डाल दो।<sup>(2)</sup>

इसी जंग में नबी सल्ल० के महबूब चचा शेरे खुदा हज़रत हम्ज़ा रजि० भी शहीद हुए, दुशमनों ने उनके अजूज़ा काट कर उनकी लाश को बेहर्मत किया था, हिंदा जौजा अबू सुफ़यान ने उन फूलों का हार बनाया और अपने गले

(1) पुस्तक इकाइय ३-२२८, सीरियस इन्डिया प्रिंट २००

(2) सलीमुल बुखारी, बिलादुल बगाज़ी, बाब कुलकर जुह

में डाला, हज़रत हम्ज़ा रज़ियो की लाश पर गई और उनका पेट चाक करके कलेजा निकाला और चबा गई, लेकिन गले से उतर न सका इसलिये उगल देना पड़ा।<sup>(1)</sup>

हज़रत सफीया रज़ियो (हज़रत हम्ज़ा रज़ियो की बहन) शिकस्त की खबर सुन कर मदीना से निकलीं, आंहज़रत सल्ल० ने उनके साहबज़ादे हज़रत जुबैर को बुलाकर इशाद फ़रमाया कि हम्ज़ा की लाश न देखने पाएं, जुबैर ने आंहज़रत सल्ल० का पैग़ाम सुनाया, बोलीं कि मैं अपने भाई का माजिरा सुन चुकी हूं, लेकिन खुदा की राह में यह कोई बड़ी कुर्बानी नहीं, आंहज़रत सल्ल० ने इजाज़त दी, लाश पर गई, खून का जोश था और अज़ीज़ भाई के टुकड़े बिखरे पड़े थे लेकिन “إِنَّ اللَّهَ وَإِنَا إِلَيْهِ رَاجُونَ” कहकर चुप हो रहीं और मग़रिफ़रत की दुआ मांगी।<sup>(2)</sup>

### रातूनाने इस्लाम की रिक्विडमत गुज़ारी व जानिसारी

इस ग़ज़वा में अक्सर ख़ातूनाने इस्लाम ने भी शिर्कत की, हज़रत आइशा रज़ियो और उम्मे सुलैम रज़ियो जो हज़रत अनस रज़ियो की माँ थीं, ज़ख़िमयों को पानी पिलाती थीं, सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियो से मनकूल है कि ‘‘मैंने आइशा और उम्मे सुलैम रज़िय़अल्लाहु अन्हुमा को देखा कि पाएंचे चढ़ाए हुए मशक भर भर कर लाती थीं और ज़ख़िमयों को पानी पिलाती थीं, मशक ख़ाली हो जाती थी तो जाकर फिर भर लाती थीं।<sup>(3)</sup> एक रिवायत में है कि उम्मे सुलैत

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-74, इब्ने हिशाम 2-91 (2) मुस्तदरक हाकिम 3-218, तारीखे तबरी 3-72 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

रज़ि० ने भी जो हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० की माँ थीं  
यही खिदमत अंजाम दी।<sup>(1)</sup>

अंसार में से एक अफ़ीफ़ा के बाप, भाई, शौहर सब इस  
मंअरका में मारे गए थे, बारी बारी तीन हादसों की सदा  
उनके कानों में पड़ी थी, लेकिन वह हर बार सिफ़ यह  
पूछती थीं कि रसूलुल्लाह सल्ल० कैसे हैं? लोगों ने कहा  
बखैर हैं, उन्होंने पास आकर चेहरए मुबारक देखा और  
बेइखियार पुकार उठीं: “كُلْ مُصِبَّةٍ بَعْدَكَ جَلْ”<sup>(2)</sup> आप  
के होते सब मुसीबतें हेच हैं”

मैं भी और बाप भी, शौहर भी, बिरादर भी फिदा  
ऐ शहे दीं तिरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम  
मुसलमानों की तरफ़ सत्तर आदमी मारे गए जिनमें  
ज्यादातर अंसार थे, लेकिन मुसलमानों के इफ़लास का यह  
हाल था कि इतना कपड़ा भी न था कि शोहदा की पर्दा  
पोशी हो सकती, शुहदा बे गुस्त उसी तरह खून में लुथड़े  
हुए, दो दो मिलाकर एक क़ब्र में दफ़ن किये गए, जिसको  
कुर्�आन ज्यादा याद होता उसको मुक़द्दम किया जाता,<sup>(3)</sup> आठ  
बरस बाद (वफ़ात से एक दो बरस पहले) जब आप उधर से गुज़रे  
तो बेइखियार आप पर रिक़क़त तारी हुई और इस तरह आपने  
पुर दर्द कलिमात इशाद फ़रमाए जैसे कोई ज़िंदा किसी मुर्दा  
से रुख़सत हो रहा हो, और इसके बाद आप सल्ल० ने

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ज़िक्रे उम्म सुलैत

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-99, सीरत इब्ने कसीर 3-93, तबरी 3-74

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन कुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुد

सुफ़्यान से मिला, अबू सुफ़्यान ने अपना इरादा ज़ाहिर किया, मअ्रूबद ने कहा ‘‘मैं देखता आता हूं कि मुहम्मद (सल्ला) इस सर व सामान से आ रहे हैं कि उनका मुक़ाबला नामुम्किन है, ग़र्ज़ अबू सुफ़्यान वापस चला गया।’’<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्ला मदीना में तशरीफ लाए तो तमाम मदीना मातम कदा था, आप सल्ला जिस तरफ से गुज़रते थे घरों से मातम की आवाजें आती थीं, आपको इबरत हुई कि सबके अज़ीज़ व अक़ारिब मातमदारी का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं, लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़िया का कोई नौहा ख्वां नहीं है, रिक़क़त के जोश में आपकी ज़बान मुबारक से बेइख़ियार निकला ‘‘أَمَا حَمْزَةٌ فَلَا يَكُونُ كَوْنَى’’ लेकिन हम्ज़ा (रज़िया) का कोई रोने वाला नहीं।’’

अंसार ने यह अलफ़ाज़ सुने तो तड़प उठे, सबने जाकर अपनी बीबियों को हुक्म दिया कि दौलत कदा पर जाकर हज़रत हम्ज़ा रज़िया का मातम करो, आंहज़रत सल्ला ने देखा तो दरवाज़े पर पर्दा नशीनाने अंसार की भीड़ थी और हम्ज़ा रज़िया का मातम बुलंद था, उनके हक्क में दुआए खैर की और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हमदर्दी का शुक्र गुज़ार हूं लेकिन मुर्दों पर नौहा करना जाइज़ नहीं।<sup>(2)</sup>

(1) मुस्नद अहमद 2-84, इब्ने हिशाम 2-100 ता 104

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-215, ज़हबी ने हदीस की तस्हीह फ़रमाई है, इब्ने हिशाम

## उज़ल व कारा और बीरे मऊना के दिलदोज

### वाकिंआत और खुबैव रज़ि० की जवांमदर्दी

जंगे उहुद के बाद दुश्मनों ने मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने और पामाल करने की मुख्तालिफ़ तदाबीर पर अमल किया, चुनांचे 4 हि० में कुरैश ने कौमे उज़ल और कारा के सात शख्सों को गांठ कर मदीना में नबी सल्ल० के पास भेजा कि हमारे कबीले इस्लाम लाने को तैयार हैं, हमारे साथ मुअल्लिम कर दीजिये।<sup>(2)</sup> रसूलुल्लाह सल्ल० ने दस बुजुर्ग सहाबा को जिनके सरदार आसिम बिन साबित रज़ि० थे उनके साथ कर दिया, जब यह सहाबा रज़ि० उनकी ज़द में पहुंच गए तो उनके दो सौ जवान आए कि उन्हें ज़िंदा गिरफ़्तार कर लें, तीर अंदाज़ों ने उनसे कहा कि “उत्तर आओ हम तुम को अम्न देते हैं” हज़रत आसिम रज़ि० ने कहा “मैं काफिर की पनाह में नहीं आता।” यह कहकर खुदा से ख़िताब किया कि “अपने पैग़म्बर को ख़बर पहुंचा दे” ग़र्ज़ वह मअ़ सात आदमियों के लड़कर तीरअंदाज़ों के हाथ शहीद हो गए।<sup>(2)</sup> कुरैश ने चंद आदमियों को भेजा कि आसिम रज़ि० के बदन से गोश्त का एक लोथड़ा काट लाएं कि उनकी शनाख्त न हो, कुदरते खुदावंदी ने शहीद मुस्लिम की यह तहकीर गवारा न की, शहद की मकिखयों ने लाश पर परा डाल दिया, कुरैश नाकाम फिर गए।<sup>(3)</sup> लेकिन दो

(1) तबकात इब्ने सज़्द 2-50

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाद ग़ज़वतुर्जीज़

(3) सीरित इब्ने हिशाम 2-171

शख्सों ने जिनके नाम खुबैब रज़िया और ज़ैद रज़िया थे काफिरों के वादों पर एतिमाद किया और टीकरे से उतर आए, सुफ़्यान हुज़ली मक्का में ले गया और कुरैश के पास फ़रोख़ा कर आया, कुरैश ने उन्हें हारिस बिन आमिर के घर में चंद रोज़ भूका प्यासा कैद रखा, एक दिन हारिस का बच्चा खेलता हुआ हज़रत खुबैब रज़िया के पास पहुंच गया, उनके पास उस वक्त उस्तुरा था, उन्होंने बच्चा को ज़ानों पर बिठा लिया, जब बच्चा की माँ ने यकायक देखा कि उसका बच्चा कैदी के पास है, जिसे चंद रोज़ से उन्होंने बे आब व दाना रखा था और उसके पास उस्तुरा भी है, तो बे इखितयार चीख़ मारी, हज़रत खुबैब रज़िया ने कहा: यह समझती है कि मैं बच्चा को क़त्ल कर दूँगा, नहीं जानती कि मुसलमानों का काम ग़दर करना नहीं।

ज़ातिम कुरैश वालों ने चंद रोज़ के बाद हज़रत खुबैब रज़िया को सलीब के नीचे ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा “अगर इस्लाम छोड़ दो तो तुम्हारी जाँ बख्शी हो सकती है” दोनों बुजुर्गवार ने जवाब दिया कि “जब इस्लाम न बाकी रहा तो जान रखकर क्या करेंगे।”

अब कुरैश ने पूछा कि कोई तमन्ना हो तो बयान करो, हज़रत खुबैब रज़िया ने कहा कि दो रक़अत नमाज़ पढ़ लेने की हमें मोहल्लत दी जाए, मोहल्लत दी गई तो उन्होंने नमाज़ अदा की, हज़रत खुबैब रज़िया ने कहा मैं नमाज़ में ज़्यादा वक्त सर्फ़ करता, लेकिन सोचा कि दुश्मन यह न कहें कि

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।<sup>(1)</sup>

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना क़ाइम था, उनको दीने हक पर कितनी इस्तिकामत थी, उनको हमेशा की नजात और खुदा की खुशनूदी का कितना यकीन था कि इन तमाम तकलीफों और ज़ख्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ तक न की।

एक सख्त दिल ने हज़रत खुबैब रज़ि० के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल०) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, खुबैब रज़ि० ने निहायत जोश से जवाब दिया “खुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल० के पांव में कांटा भी लगे।<sup>(2)</sup>

खुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्द तरीन जवांमर्दान) ने मक़तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्झार कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफियत और उस बुजुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

“अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्जीज़ व रज़ल व ज़कवान

(2) ज़ादुल मज़ाद 3-245

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।<sup>(1)</sup>

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना काइम था, उनको दीने हक पर कितनी इस्तिकामत थी, उनको हमेशा की नजात और खुदा की खुशनूदी का कितना यकीन था कि इन तमाम तकलीफों और ज़ख्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ़ तक न की।

एक सख्त दिल ने हज़रत खुबैब रज़ि० के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल०) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, खुबैब रज़ि० ने निहायत जोश से जवाब दिया “खुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल० के पांव में कांटा भी लगे।<sup>(2)</sup>

खुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्दी तरीन जवांमर्दान) ने मक़तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्झार कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफियत और उस बुजुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

“अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब ग़ज़वतुर्रज़ीज़ व रज़ूल व ज़कवान

(2) ज़ादुल मज़ाद 3-245

यह सब के सब अदावत निकाल रहे हैं और मेरे खिलाफ जोश दिखा रहे हैं, और मैं इस हलाकत गाह में बंधा हुआ हूं, क़बीलों ने अपनी औरतों और बच्चों को भी बुला रखा है और मुझे एक मज़बूत बुलंद लकड़ी के पास ले आए हैं, उन्होंने कह दिया है कि कुफ़ इख्तियार करने से मुझे आज़ादी मिल सकती है मगर इससे तो मौत मेरे लिये ज़्यादा सहल है, मेरी आँखों से लगातार आँसू जारी हैं, मगर मुझे कुछ ना शकेबाई नहीं, मैं दुश्मन के सामने न आजिज़ी करूँगा और न रोऊँ चिल्लाऊँगा, मैं जानता हूं कि मैं खुदा की तरफ़ जा रहा हूं, मौत से मुझे इसलिये डर नहीं कि मर जाऊँगा, लेकिन मैं तो लपट वाली आग के खून चूसने से डरता हूं, इस अर्शे अज़ीम के मालिक ने मुझ से कोई ख़िदमत लेनी चाही और मुझे शकेबाई के लिये फ़रमाया है, अब उन्होंने ज़द व कोब से मेरा तमाम गोश्त कूट कूट दिया है और मेरी उम्मीद जाती रही है, मैं अपनी दरमांदगी और बेवतनी व बेकसी की फ़रयाद और उन इरादों की (जो मेरे जान तोड़ने के बाद यह लोग रखते हैं) खुदा से करता हूं, बखुदा जब मैं इस्लाम पर जान दे रहा हूं तो मैं यह परवाह नहीं करता कि राहे खुदा मैं किस पहलू पर गिरता और क्योंकर जान देता हूं, खुदा की ज़ात से अगर वह चाहे यह बिल्कुल उम्मीद है कि वह पारहाए गोश्त के हर एक टुकड़े को बरकत अता फ़रमाए ।”<sup>(1)</sup>

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-245, इन्ने हिशाम 2-176

सबसे आखिर में यह दुआ थी:

اللَّهُمَّ إِنَّا قَدْ بَلَغْنَا رِسَالَةَ رَسُولِكَ فَبِلِفْغَةِ الْغَدَاءِ مَا يَصْنَعُ بِنَا.

‘ऐ खुदा हमने तेरे रसूल सल्ल0 के अहकाम उन लोगों को पहुंचा दिये, अब तू अपने रसूल सल्ल0 को हमारे हाल की और उनके करतूतों की ख़बर फ़रमा दे।’<sup>(1)</sup>

सईद बिन आमिर रज़ि0 (जो हज़रत उमर फ़ारुक रज़ि0 के उम्माल में से थे) का हाल यह था कि कभी कभी यक़बारगी बेहोश हो जाया करते, उमर फ़ारुक रज़ि0 ने उनसे वजह पूछी वह बोले मुझे न कोई मर्ज़ है, न कुछ शिकायत है, जब खुबैब रज़ि0 को सलीब पर चढ़ाया गया तो मैं मज्मा में मौजूद था, मुझे जिस वक्त खुबैब की बातें याद आ जाती हैं तो मैं कांप कर बेहोश हो जाता हूं।<sup>(2)</sup>

अबू बराऊ आमिर ने भी ऐसा ही फ़रेब किया, वह नबी सल्ल0 की खिदमत में आया और अर्ज़ की कि मुल्के नज्द की तअ़लीम व हिदायत के कुछ मुनादी मेरे साथ भेज दीजिये, उसका भतीजा नज्द का रईस था, आमिर ने यक़ीन दिलाया था कि मुनादी करने वालों की हिफ़ाज़त की जाएगी, नबी सल्ल0 ने मुंज़िर बिन अ़म्र अंसारी रज़ि0 को मअू सल्तर सहाबा रज़ि0 जो कुर्ाऊ व फुज़ला व मुंतख़ब बुजुर्गवार थे, उसके साथ कर दिया, जब वह बीरे मऊना पर जा पहुंचे, जो बनी आमिर का इलाक़ा था वहां से हराम बिन, मल्हान को नामए नबवी सल्ल0 देकर तुफ़ैल हाकिम के पास भेजा

(1) व (2) इन्हे हिशाम 2-173

गया, उसने उस सफीर को कत्ल करा दिया, जब्बार बिन सलमा एक शख्स था, जिसने हाकिम के इशारे से उनकी पुश्त में नेज़ा मारा था जो छाती से साफ़ निकल गया, उन्होंने गिरते हुए कहा “فُرْثُ وَرَبُّ الْكَعْبَةِ” “क़स्म है कअब्बा के खुदा की मैं अपनी मुराद को पहुंच गया।”

कातिल पर इस फ़िक्रह ने ऐसा असर किया कि वह नबी सल्ल० की खिदमत में आकर मुसलमान हो गया, हाकिम ने बाकी सब को भी कत्ल करा दिया, कअब बिन जैद ने जो कुश्तगाने ख़ंजरे तस्लीम की ओट में छिप कर बच रहे थे, इस वाकिआ की ख़बर आंहज़रत सल्ल० को पहुंचाई।<sup>(1)</sup>

### बनू नज़ीर की जिलावतनी

बनी इस्राईल (यहूद) अपने इब्लिदाई ज़माना में खुदा की मक़बूल और बरगुज़ीदा कौम थी, लेकिन आखिर दौर में वह खुदा से इस कदर दूर होते गए कि खुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक ठहरे।

हज़रत मसीह अलै० जैसे रहम दिल ने उनकी हालतों को देखकर उन्हें सांप और सांप के बच्चे बताया था और यह भी ख़बर दी थी कि खुदा की बादशाहत इस कौम से ले जाकर एक दूसरी कौम को दी जाएगी जो इसके अच्छे फल लाए।

जब इस बशारत के जुहूर का वक्त आ गया और

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्जीअ, इन्हे हिशाम 2-184

मुहम्मद सल्ल० ने अपनी बेहतरीन तज़्लीम की तबलीग़ शुरू की तो यहूद ने सख्त पेच व ताब खाया और आखिर यही फैसला किया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को भी वैसे ही जुल्म व सितम की आमाजगाह बनाया जाए जैसा कि मसीह अलै० को बना चुके थे।<sup>(1)</sup>

यहूद अगर्चे हिज्रत के पहले ही साल मुआहदा करके अप्ने आप्सा का पैमान बांध चुके थे, लेकिन फिरी शरारत ने ज़्यादा देर तक छिपा न रहने दिया, मुआहदा से डेढ़ साल ही के बाद शरारतों का आग़ाज़ हो गया, जब नबी सल्ल० बद्र की जानिब गए हुए थे उन्हीं दिनों का ज़िक्र है कि एक मुसलमान औरत बनू कैनकाअ़ के मुहल्ला में दूध बेचने गई, चंद यहूदियों ने शरारत की और उसे सरे बाज़ार बरहना कर दिया, औरत की चीख़ व पुकार सुनकर एक मुसलमान मौक़ा पर जा पहुंचा, उसने तैश में आकर फ़साद अंगेज़ यहूदी को क़त्ल कर दिया, इस पर सब यहूदी जमा हो गए, उस मुसलमान को भी मार डाला और बलवा भी किया, नबी सल्ल० ने बद्र से वापस आकर यहूदियों को इस बलवा के मुतअ़लिक दरयाफ़त करने के लिये बुलाया, उन्होंने मुआहदा का काग़ज़ भेज दिया और खुद जंग पर आमदा हो गए।<sup>(2)</sup>

यह हरकत अब बग़ावत तक पहुंच गई थी, इसलिये उनको यह सज़ा दी गई कि मदीना छोड़ दें<sup>(3)</sup> कुरैश ने

(1) रहमतुल लिलआलमीन 1-129, 130 (2) अलबिदाया वन्निहाया 4-403, उयूनुल असर 1-295 (3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस बनी अन्नज़ीर

मदीना के बुत परस्तों को नबी सल्ल० के खिलाफ़ जंग करने की बाबत ख़त लिखा था, मगर आंहज़रत सल्ल० की ज़ीरकी व दानाई से उनकी यह तदबीर कारगर न हुई, अब बद्र में शिकस्त पाने के बाद कुरैश ने यहूद को फिर लिखा कि “तुम जाइदादों और किलों के मालिक हो, तुम मुहम्मद (सल्ल०) से लड़ो, वर्ना हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे, तुम्हारी औरतों की पाज़ेबें तक उतार लेंगे, इस ख़त के मिलने पर बनू नज़ीर ने अहद शिकनी का और आंहज़रत सल्ल० से फ़रेब करने का इरादा कर लिया”<sup>(1)</sup>

4 हि० का ज़िक्र है कि नबी सल्ल० एक कौमी चंदा फ़राहम करने के लिये बनू नज़ीर के मुहल्ला में तशरीफ़ ले गए, उन्होंने आंहज़रत सल्ल० को एक दीवार के नीचे बिठा दिया और तदबीर की कि इन्हे जहाश मलऊन दीवार के ऊपर जाकर एक भारी पत्थर नबी सल्ल० पर गिरा दे और हुजूर सल्ल० की ज़िंदगी का ख़ातमा कर दे।

आंहज़रत सल्ल० को वहां जा बैठने के बाद बएलामे रब्बानी इस शरारत का इल्म हो गया और हिफ़ाज़ते इलाही से बच कर चले आए।<sup>(2)</sup>

बिलआखिर बनू नज़ीर को यह सज़ा दी गई कि खैबर जाकर आबाद हो जाएं उन्होंने छः सौ ऊंटों पर अस्खाब लादा, अपने घरों को अपने हाथ से गिराया, बाजे बजाते हुए निकले और खैबर जा बसे।<sup>(3)</sup>

(1) सुनन अबी दाऊद, बाब फ़ी खैबर बनी अन्नज़ीर (2) सीरित इन्हे हिशाम 2-190

(3) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़ाक 5-358, इन्हे हिशाम 2-191, 192

## ग़ज़्वर रघुंदक़

बनू नज़ीर मदीना से निकल कर ख़ैबर पहुंचे तो उन्होंने एक निहायत अज़ीमुश्शान साज़िश शुरू की, उन रुअसा में से सलाम बिन अबी अलहुकैक, हुय्य बिन अख्ताब, कनाना बिन अर्बीअ़ वगैरा मक्का मुअ़ज़्ज़मा गए और कुरैश से मिल कर कहा “अगर हमारा साथ दो तो इस्लाम का इस्तीसाल किया जा सकता है” कुरैश इसके लिये हमेशा तैयार रहते, कुरैश को आमादा करके यह लोग क़बीला ग़तफ़ान के पासा गए और उनको लालच दिया कि ख़ैबर का निस्फ़ मुहासिल उनको हमेशा दिया करेंगे, बनू असद ग़तफ़ान के हलीफ़ थे, ग़तफ़ान ने उनको लिख भेजा कि तुम भी साथ फौजें लेकर आओ, क़बीला बनू सुलैम से कुरैश की कराबत थी, इस तज़्ल्लुक़ से उन्होंने भी साथ दिया, बनू सअूद का क़बीला यहूद का हलीफ़ था, इस बिना पर यहूद ने उनको भी आमादा किया, ग़र्ज़ तमाम कबाइले अरब से लशकरे गिरां तैयार होकर मदीना की तरफ़ बढ़ा, उनकी तअ़दाद दस हज़ार से ज़ाइद थी।<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्ल० ने यह ख़बरें सुनीं, सहाबा से मशवरा किया, हज़रत सलमान फारसी रज़ि० ईरानी होने की वजह से ख़दक़ के तरीका से वाकिफ़ थे, उन्होंने राए दी कि खुले मैदान में निकल कर मुकाबला करना मस्लिहत नहीं, एक महफूज़ मकाम में लशकर जमा किया जाए और इर्द गिर्द

(1) फूहुल बारी 7-393, इन्द्रे द्विषाय 2-214, 215

खंदक खोद ली जाए, तभाम लोगों ने इस राए को पसंद किया और खंदक खोदने के आलात मुहव्या किये गये ।

मदीना में तीन जानिब मकानात और नख्लस्तान का सिलसिला था जो शहर पनाह का काम देता था, सिफ़ शामी रुख़ खुला हुआ था, आंहज़रत सल्ल० ने ३/ हज़ार सहाबा रज़ि० के साथ शहर से निकल कर उसी मकाम में खंदक की तैयारियां शुरू कीं, यह जुलक़अदा ५ हि० की ४/ तारीख़ थी ।

आंहज़रत सल्ल० ने निशानात खुद काइम किये, दाग़ बेल डाल कर दस दस आदमियों पर दस दस गज़ ज़मीन तक़सीम की, खंदक का उमुक ५/ गज़ रखा गया ६/ दिन में तीन हज़ार मुतबर्क हाथों से यह काम अंजाम पाया ।<sup>(1)</sup>

जब मस्जिदे नबवी बन रही थी तो सरवरे दो जहां सल्ल० मज़दूरों की सूरत में थे, आज भी वही इबरत अंगेज़ मंज़र है, जाड़े की रातें हैं, तीन तीन दिन का फ़ाक़ा है, मुहाजिरीन और अंसान अपनी पीठों पर मिट्टी लाद लाद कर फेंकते हैं और जोशे मुहब्बत में हम आवाज़ होकर कहते हैं

نَحْنُ الْذِينَ بَأَيَّلْعُرُوا مُحَمَّدًا  
عَلَى الْإِسْلَامِ مَا بَقِيَّنَا أَبَدًا

‘‘हम वहीं हैं जिन्होंने हमेशा के लिये मुहम्मद (सल्ल०) के हाथ पर बैअूत की है’’,<sup>(2)</sup>

(1) फहुल बारी 7-393,394, इब्ने हिशाम 2-216,217

(2) सहीहुल बुखारी किताबुल मगाज़ी ग़ज़वतुल खंदक

سارے دو آلمان بھی میटھی فک رہے ہیں، شیکھ مُبَارک پر گردِ اٹ گई ہے۔ عسیٰ حالت میں یہ ریجِ جہاں پر ہے۔

وَاللّٰهِ لَوْلَا اللّٰهُ مَا اهْتَدَيْنَا      فَأَنْزَلْنَا سَكِينَةً عَلَيْنَا  
وَرَبَّتِ الْأَقْدَامَ إِنْ لَاقْيْنَا      إِنَّ الْأُولَى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا  
إِذَا أَرَادُوا فُتْنَةً أَبْيَنْنَا      إِنْ أَبْيَنْنَا

”ابینا“ کا لفظ جب آتا�ا تو آواز بولند ہو جاتی ہی اور مکرر کہتے ہے، اسکے ساتھ انسار کے ہک میں دعا بھی دتے ہے، اور یہ میتوں اعلماجہ جہاں پر آتے ہے۔

<sup>(1)</sup> اللّٰهُمَّ إِنَّهٗ لَا خَيْرٌ إِلَّا خَيْرٌ الْآخِرَةِ      قَبَرَكَ فِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ

پتھر خودتے خودتے ایتیفاکن اک سخن چڑھان آ گئی، کیسی کی جرب کام نہیں دتی ہی، رضوی سلسلہ تشریف لاء، تین دن کا فاکا ہا اور پتھر بندھا ہوا ہا آپنے دستے مُبَارک سے فاٹھا مارا تو چڑھان اک تؤدھے خاک ہی۔<sup>(2)</sup>

سیلز کی پھاڈی کو پوشش پر رکھکر سف آرائی کی گئی، مسٹر رات شہر کے مہفوج کیلوں میں بھیج دی گئی اور چونکی بنو کوئڑا کے ہملہ کا اندھہ ہا اس لیے سالمہ بین اسلام 200 / آدمیوں کے ساتھ موت ایکن کیے گئے کی یہاں سے ہملہ ن ہونے پاے۔<sup>(3)</sup>

(1) & (2) سہی ہل بخشی، کلیات بول مگاڑی، باب گزج و تول بندک

(3) سیرت بنبی، اعلما مسلمی نویسی ۱-۴۲۲

बनू कुरैज़ा के यहूद अब तक अलग थे, लेकिन बनू नज़ीर ने उनको मिला लेने की कोशिश की, हैय बिन अख्तब (हज़रत सफ़ीया रज़ि० का बाप) खुद कुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद के पास गया, उसने मिलने से इंकार किया, हैय ने कहा ‘‘मैं फौजों का दरयाएं बेकरां लाया हूं कुरैश और तमाम अरब उमंड आया है और एक मुहम्मद (सल्ल०) के खून का प्यासा है, यह मौक़ा हाथ से जाने देने के काबिल नहीं, अब इस्लाम का ख़ातमा है।’’ कअब अब भी राज़ी न था, उसने कहा: मैंने मुहम्मद (सल्ल०) को हमेशा सादिकुल वअूद पाया, उनसे अहद शिकनी खिलाफ़े मुरव्वत है, लेकिन हैय का जादू राईगां नहीं जा सकता था।

आं हज़रत सल्ल० को यह हाल मअलूम हुआ तो तहकीक और इत्मामे हुज्जत के लिये सअूद बिन मआज़ रज़ि० और सअूद बिन उबादा रज़ि० को वहां भेजा और फ़रमाया कि अगर दरहकीकत बनू कुरैज़ा ने मुआहदा तोड़ दिया हो तो वहां से आकर इस ख़बर को मुळम लफ़ज़ों में बयान करना कि लोगों में बेदिली न फैलने पाए, दोनों साहिबों ने बनू कुरैज़ा को मुआहदा याद दिलाया तो उन्होंने कहा ‘‘हम नहीं जानते मुहम्मद (सल्ल०) कौन हैं और मुआहदा क्या चीज़ है।’’<sup>(1)</sup>

ग़र्ज़ बनू कुरैज़ा ने.....इस बेशुमार फौज में और इज़ाफा कर दिया, कुरैश, यहूद, और कबाइले अरब की दस

(1) सीरियस इन्डियन हिंदू 2-220, 224

हज़ार फौजें तीन हिस्सों में तक़सीम होकर मदीना के तीन तरफ़ इस ज़ोर शोर से हमला आवर हुई कि मदीना की ज़मीन हिल गई।<sup>(1)</sup>

इस मअ़रका की तस्वीर खुद खुदा ने खींची है:

إذْ جَاءُوكُم مِّنْ فَوْقَكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ رَأَتِ  
الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْعَنَاجِرَ وَتَظْنُونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا.  
هُنَالِكَ ابْتُلَى الْمُؤْمِنُونَ وَزُلِّزُلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا

“जबकि दुश्मन ऊपर की तरफ और नशेब की तरफ से आ पड़े, और जब आंखें डगने लगीं और कलेजे मुँह में आ गए और तुम खुदा की निस्बत तरह तरह के गुमान करने लगे, तब मुसलमानों की जांच का वक़्त आ गया वह ज़ोर से लरज़ने लगे।”<sup>(2)</sup>

फौजे इस्लाम में मुनाफिकों की तज़्दाद भी शामिल थी, जो बज़ाहिर मुसलमानों के साथ थे, लेकिन मौसम की सख्ती, रसद की किल्लत, मुतवातिर फ़ाक़े, रातों की बेख्वाबी, बेशुमार फौजों का हुजूम, ऐसे वाकि़आत थे जिन्होंने उनका पर्दा फ़ाश कर दिया, आ आकर आंहज़रत सल्ल० से इजाज़त मांगनी शुरू की कि हमारे घर महफूज़ नहीं, हमको शहर में वापस चले जाने की इजाज़त दी जाए।<sup>(3)</sup>

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिल्पी नोअमानी 1-423, फ़हुल बारी में और सीरत की किताबों में लशकर की तज़्दाद दस हज़ार मज़कूर है। (2) सहीहुल बुखारी में मौजूद है कि यह आयात ग़ज़वए खंदक के बारे में नाज़िल हुई, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल खंदक (3) ज़ादुल मज़ाद 3-272, सीरत इन्हे हिशाम 2-222

يَقُولُونَ إِنْ يُبُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ، إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا

“कहते हैं कि हमारे घर खुले पड़े हैं और वह खुले नहीं हैं,  
बल्कि उनको भागना मक्सूद है।” (अहज़ाਬ)

लेकिन जाँनिसाराने इस्लाम का तिलाए इख्लास इसी  
कस्तौटी पर आज़माने के काबिल था।<sup>(1)</sup>

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَخْرَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ  
وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادُهُمْ إِلَّا إِيمَانًا  
وَتَسْلِيمًا

‘जब मुसलमानों ने कबाइल की फौजें देखीं तो  
बोल उठे कि यह वही है जिसका वादा खुदा ने  
और उसके रसूल (सल्ल0) ने किया था और खुदा  
और उसका रसूल सल्ल0 सच्चे थे और इस बात ने  
उनके यकीन और इताअृत को और भी बढ़ा  
दिया।’ (अहज़ाਬ)

**ਮੁਹਾਸਰਾ ਕੀ ਸ਼ਿਦ਼ਦਤ ਔਰ ਸਹਾਬਰ ਕਿਰਾਮ ਕੀ ਅਜੀਮਤ**  
ਤਕ਼ਰੀਬਨ ਏਕ ਮਹੀਨਾ ਤਕ ਇਸ ਸਖ਼ਕੀ ਸੇ ਮੁਹਾਸਰਾ ਕਾਇਮ  
ਰਹਾ ਕਿ ਆਂਹਜ਼ਰਤ ਸਲਲ0 ਔਰ ਸਹਾਬਾ ਰਜ਼ਿ0 ਪਰ ਤੀਨ ਤੀਨ  
ਫ਼ਾਕੇ ਗੁਜਰ ਗਏ, ਏਕ ਦਿਨ ਸਹਾਬਾ ਰਜ਼ਿ0 ਨੇ ਬੇਤਾਬ ਹੋਕਰ  
ਆਂਹਜ਼ਰਤ ਸਲਲ0 ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਪੇਟ ਖੋਲ ਕਰ ਦਿਖਾਏ, ਕਿ ਪਤਥਰ  
ਬਂਧੇ ਹੈਂ, ਲੇਕਿਨ ਜਬ ਆਪ ਸਲਲ0 ਨੇ ਸ਼ਿਕਮ ਮੁਬਾਰਕ ਖੋਲਾ  
ਤੋ ਏਕ ਕੇ ਬਜਾਏ ਦੋ ਪਤਥਰ ਥੇ।<sup>(2)</sup> ਮੁਹਾਸਰਾ ਇਸ ਕਦਰ ਸ਼ਦੀਦ  
ਔਰ ਪੁਰ ਖ਼ਤਰ ਹੋ ਗਿਆ ਥਾ ਕਿ ਏਕ ਦਫ਼ਾ ਆਂਹਜ਼ਰਤ ਸ0

(1) ਤਫ਼ਸੀਰੇ ਕੁਰਤਬੀ 14-157 (2) ਸ਼ਮਾਇਲੇ ਤਿਰਮਿਜ਼ੀ, ਬਾਬ ਮਾਜਾਅ ਫੀ ਐਸ਼ਿਨਵੀ ਸਲਲ0

ने लोगों से खिताब करके फ़रमायाः कोई है जो बाहर निकल कर मुहासिरीन की खबर लाए? तीन दफा आप सल्ल0 ने यह अलफाज़ फरमाए, लेकिन हज़रत जुबैर रज़ि0 के सिवा और कोई सदा नहीं आई, आंहज़रत सल्ल0 ने उसी मौका पर हज़रत जुबैर रज़ि0 को हवारी का लक्ष्य दिया।<sup>(1)</sup>

मुहासिरीन खंदक को उबूर नहीं कर सकते थे, इसलिये दूर से तीर और पत्थर बरसाते थे, आंहज़रत सल्ल0 ने खंदक के मुख्तलिफ़ हिस्सों पर फौजें तक़सीम कर दी थीं जो मुहासिरीन के हमलों का मुकाबला करती थीं, एक हिस्सा खुद आप सल्ल0 के एहतिमाम में था।<sup>(2)</sup>

मुहासरा की सख्ती देखकर आप सल्ल0 को ख्याल हुआ कि ऐसा न हो कि अंसार हिम्मत हार जाएं, इसलिये आप सल्ल0 ने ग़तफ़ान से इस शर्त पर मुआहदा करना चाहा कि मदीना की पैदावार का एक सुलुस उनको दे दिया जाए, सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हुमा को रुअसाएं अंसार ने बुलाकर मशवरा फ़रमाया, दोनों ने अर्ज़ की कि अगर यह खुदा का हुक्म है तो इंकार की मजाल नहीं, लेकिन अगर राए है तो यह अर्ज़ है कि कुफ़ की हालत में भी कोई शख्स हमसे खिराज मांगने की जुर्जत न कर सका और अब तो इस्लाम ने हमारा पाया बहुत बुलंद कर दिया है, यह इस्तिक़लाल देखकर आप सल्ल0 को इत्मीनान हुआ, सअ़द रज़ि0 ने मुआहदा का

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल खंदक

(2) सीरिया रसूलो सल्ल0 1-425

काग़ज़ लेकर तमाम इबारत मिटा दी और कहा उन लोगों से जो बन आए कर दिखाएं।<sup>(1)</sup>

अब मुश्विरकों की तरफ से हमला का यह इंतिज़ाम किया गया कि कुरैश के मशहूर जनरल यअ़नी अबू सुफ़यान, ख़ालिद बिन वलीद, अम्र बिन अलआस, ज़िरार बिन अलख़त्ताब, हुबैरा, का एक एक दिन मुकर्रर हुआ, हर जनरल अपनी बारी के दिन पूरी फौज लेकर लड़ता था, ख़ंदक को उबूर नहीं कर सकते थे, लेकिन ख़ंदक का अर्ज़ चूंकि ज़्यादा न था इसलिये बाहर से तीर और पत्थर बरसाते थे।<sup>(2)</sup> चूंकि इस तरीक़ा में कामियाबी नहीं हुई इसलिये करार पाया कि अब आम हमला किया जाए, तमाम फौजें यक्जा हुई, क़बाइल के तमाम सरदार आगे आगे थे, ख़ंदक एक जगह से इत्तिफ़ाक़न कम अ़रीज़ थी, यह मौका हमला के लिये इंतिख़ाब किया गया, अरब के मशहूर बहादुरों यअ़नी ज़िरार, हुबैरा, नौफ़ल, अम्र बिन अब्दे वुद्द ने ख़ंदक के इस किनारे से घोड़ों को महमीज़ किया तो उस पार थे, इनमें सबसे ज़्यादा बहादुर अम्र बिन अब्दे वुद्द था, वह एक हज़ार सवारों के बराबर माना जाता था, ज़ंगे बद्र में ज़ख्मी होकर वापस चला गया और क़सम खाई थी कि जब तक इंतिकाम न लूंगा बालों में तेल न डालूंगा, उस वक्त उसकी उम्र 90/ बरस की थी, ताहम सबसे पहले वही आगे बढ़ा और अरब के दस्तूर के मुवाफ़िक पुकारा कि मुकाबला को कौन आता है? हज़रत अली रज़ि० ने उठ कर कहा कि

(1) कशफुल अस्तार लिल बज़ाज़ 1-332, सीरत इन्ने हिशाम, 2-223

(2) सीरते हलबीया 2-636

“मैं” लेकिन आंहज़रत सल्ल० ने रोका कि यह अम्र बिन अब्दे वुद्द है! हज़रत अली रज़ि० बैठ गए, लेकिन अम्र की आवाज़ का और किसी तरफ से जवाब नहीं आता था, अम्र ने दोबारा पुकारा और फिर वही एक सदा जवाब में थी, तीसरी दफ़ा जब आंहज़रत सल्ल० ने फरमाया कि “यह अम्र है” तो हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ की हाँ मैं जानता हूं कि यह अम्र है, ग़र्ज़ आप सल्ल० ने इजाज़त दी, खुद दस्ते मुबारक से तलवार इनायत की, सर पर अमामा बांधा।

अम्र का कौल था कि कोई शख्स दुन्या में अगर मुझसे तीन बातों की दरख्बास्त करे तो एक ज़खर कबूल करूँगा, हज़रत अली रज़ि० ने अम्र से पूछा कि क्या वाक़ई तेरा कौल है, फिर हसबे जैल गुफ्तगू हुई:

हज़रत अली रज़ि०:- मैं दरख्बास्त करता हूं कि तू इस्लाम ला।

अम्रः यह नहीं हो सकता।

हज़रत अली रज़ि०: लड़ाई से वापस चला जा।

अम्रः- मैं खातूनाने अरब का तज़्ना नहीं सुन सकता।

हज़रत अली रज़ि०: मुझसे मअरका आरा हो,

अम्र हँसा और कहा मुझको उम्मीद न थी कि आसमान के नीचे यह दरख्बास्त भी मेरे सामने पेश की जाएगी, हज़रत अली रज़ि० प्यादा थे, अम्र की गैरत ने यह गवारा न किया, घोड़े से उतर आया और पहली तलवार घोड़े के पांव पर मारी कि कोंचें कट गईं, फिर पूछा कि तुम कौन हो?

आपने नाम बताया, उसने कहा मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता, आपने फ़रमाया “हाँ लेकिन मैं चाहता हूं” अब्र अब गुस्सा से बेताब था, पर्तले से तलवार निकाली और आगे बढ़कर वार किया, हज़रत अली रज़ि० ने सिपर पर रोका, लेकिन सिपर में झूब कर निकल आई और पेशानी पर लगी, गोज़ख़म कारी न था, ताहम यह तुग़रा आपकी पेशानी पर यादगार रह गया, कामूस में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि० को जुलक़रनैन भी कहते थे, जिसकी वजह यह थी कि आपकी पेशानी पर दो ज़ख़मों के निशान थे, एक अंम्र के हाथ का और एक इब्ने मुलजिम का, दुशमन का वार हो चुका तो हज़रत अली रज़ि० ने वार किया, उनकी तलवार शाना काट कर नीचे उतर आई, साथ ही हज़रत अली रज़ि० ने अल्लाहु अकबर का नज़्रा मारा और फ़त्ह का एलान हो गया।<sup>(1)</sup> अब्र के बाद ज़िरार और हुबैरा ने हमला किया लेकिन जब जुलफ़िक़ार का हाथ बढ़ा तो पीछे हटना पड़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने ज़िरार का तआकुब किया, ज़िरार ने मुड़कर बर्छे का वार करना चाहा, लेकिन रोक लिया और कहा उमर! इस एहसान को याद रखना।<sup>(2)</sup>

नौफ़ल भागते हुए ख़ंदक में गिरा, सहाबा रज़ि० ने तीर मारने शुरू किये, उसने कहा “मुसलमानो! मैं शरीफ़ाना मौत चाहता हूं” हज़रत अली रज़ि० ने उसकी दरख़स्त मंजूर की

(1) मुस्तदरक हाकिम ३-३४, सीरत इब्ने हिशाम २-२२४, २२५, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहकी ३-४३६, ४३९, सीरतुन्नबी सल्ल० १-४२७, ४२८

(2) सीरते हलबीया २-६४४

और खंडक में उतर कर तलवार से मारा कि शरीफों के शायान था।<sup>(1)</sup> हमला का यह दिन बहुत सख्त था तमाम दिन लड़ाई रही, कुफ्फार हर तरफ से तीरों और पथरों का मेंह बरसा रहे थे और एक दम के लिये यह बारिश थमने न पाई थी, यही दिन है जिसका ज़िक्र अहादीस में है कि आंहज़रत सल्लू० की मुसलसल चार नमाज़ें क़ज़ा हुईं, मुसलसल तीर अंदाज़ी और संग बारी से जगह से हटना नामुम्किन था।<sup>(2)</sup>

### हज़रत सफ़ीया रज़ि० का दिलोराना छव्दाम

मस्तूरात जिस किला में थीं, बनू कुरैज़ा की आबादी से मुत्तसिल था, यहूदियों ने यह देखकर कि तमाम जमईयत आंहज़रत सल्लू० के साथ है, किला पर हमला किया, एक यहूदी किला के फाटक तक पहुंच गया और किला पर हमला करने का मौका ढूँढ रहा था, हज़रत सफ़ीया रज़ि० (आंहज़रत सल्लू० की फूफी) ने देख लिया, मस्तूरात की हिफाज़त के लिये हज़रत हस्सान रज़ि० बिन साबित (शाईरे रसूल सल्लू०) मुतअ़्यन कर दिये गए थे, हज़रत सफ़ीया रज़ि० ने उनसे कहा कि उतर कर इसको क़त्ल कर दो, वर्ना यह जाकर दुशमनों को पता करेगा, हज़रत हस्सान रज़ि० को एक आरज़ा हो गया था, जिसने उनमें इस क़दर जुब्न पैदा कर दिया था कि वह लड़ाई की तरफ नज़र उठाकर भी नहीं देख सकते थे, इस बिना पर अपनी मअ़जूरी ज़ाहिर की

(1) दलाइलुन्नुबुववा ३-४३८, सीरते हलबीया २-६३७

(2) सुनन अन्साई, किताबुस्सलात

और कहा कि मैं इस काम का होता तो यहाँ क्यों होता, हज़रत सफीया रज़ि० ने खेमा की एक चोब उखाड़ी और उतर कर यहूदी के सर पर इस ज़ोर से मारी कि सर फट गया, हज़रत सफीया रज़ि० चली आई और हस्सान रज़ि० से कहा कि हथियार और कपड़े छीन लाओ, हस्सान रज़ि० ने कहा जाने दीजिये मुझको इसकी ज़रूरत नहीं, हज़रत सफीया रज़ि० ने कहा अच्छा जाओ उसका सर काट कर किला के नीचे फेंक दो कि यहूदी मरऊब हो जाएं, लेकिन यह खिदमत भी हज़रत सफीया रज़ि० ही को अंजाम देनी पड़ी, यहूदियों को यक़ीन हुआ कि किला में भी फौज मुतअ़्यन है, इस ख्याल से फिर उन्होंने हमला की जुर्त न की।<sup>(1)</sup>

### नुस्रते गैबी और मुहासरा का रवातमा

मुहासरा जिस क़दर तूल होता जाता था, मुहासरा करने वाले हिम्मत हारते जाते थे, दस हज़ार आदमियों को रसद पहुंचाना, आसान काम न था, इत्तिफ़ाक़ यह कि बावजूद सर्दी के मौसम के इस ज़ोर की हवा चली कि तूफ़ान आ गया, खेमों की तनाबें उखड़ उखड़ गई, खाने के देगचे चूल्हों पर उलट उलट जाते थे, इस वाकिआ ने फौजों से बढ़कर काम दिया, इसी बिना पर कुर्�আন मजीद ने इस बादे सरसर को अस्करे इलाही से तअ़बीर किया है।<sup>(2)</sup>

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ  
جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِبْحًا

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-228

(2) दलाइलुन्नुबूवा लिलबैहकी 3-448

وَجُنُودًا لِمَ تَرُهَا،

“मुसलमानो! खुदा के उस एहसान को याद करो कि जब तुम पर फौजें आं पड़ीं तो हमने उन पर आंधी भेजी और वह फौजें भेजीं जो तुम को दिखाई नहीं देती थीं।” (अहज़ाब)

नुऐम बिन मसऊद सकफ़ी एक ग़तफ़ानी रईस थे, कुरैश और यहूद दोनों उनको मानते थे, वह इस्लाम ला चुके थे, लेकिन कुफ़्फ़ार को अभी इसका इल्म न था, उन्होंने कुरैश और यहूद से अलग अलग जाकर इस किस्म की बातें कीं जिससे दोनों में फूट पड़ गई।<sup>(1)</sup>

मौसम की सख्ती, मुहासरा का इम्तिदाद, आंधी का ज़ोर, रसद की क़िल्लत, यहूद की अलाहिदगी, यह तमाम अस्बाब ऐसे जमा हो गए थे कि कुरैश के पाए सिबात अब नहीं ठहर सकते थे, अबू सुफ़यान ने फौज से कहा, रसद ख़त्म हो चुकी, मौसम का यह हाल है, यहूद ने साथ छोड़ दिया, अब मुहासरा बेकार है, यह कहकर तबले रहील बजने का हुक्म दिया<sup>(2)</sup> ग़तफ़ान भी उसके साथ रवाना हो गए, बनू कुरैज़ा मुहासरा छोड़ कर अपने किलों में चले आए और मदीना का उफुक 20,22/दिन तक गुबार आलूद रह कर साफ़ हो गया।

وَرَدَ اللَّهُ أَلَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا وَكَفَى اللَّهُ  
الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ،

(1) सीरत इब्ने हिशाम

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-232

“और खुदा ने काफिरों को गुस्सा में भरा हुआ हटा दिया कि उनको कुछ हाथ न आया, और मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आई।”

(अहज़ाब)

इस मअ़रका में फौजे इस्लाम का जानी नुक्सान कम हुआ, लेकिन अंसार का सबसे बड़ा बाजू टूट गया, यज़नी हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि० जो क़बीला औस के सरदार थे ज़ख्मी हुए और फिर जां बर न हो सके, उनके ज़ख्म खाने का वाकिआ मुअस्सिर और इबरत अंगेज़ है।

**माँ अपने जिगर के दुकड़े को जिहाद और शहदत पर आमादा करती है**

हज़रत आइशा रज़ि० जिस किला में पनाह गुज़ीं थीं, सअ़द बिन मआज़ रज़ि० की माँ भी वहीं उनके साथ थीं, हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि मैं किला से बाहर निकल कर फिर रही थी, अकब से पांव की आहट मअ़लूम हुई, मुङ्कर देखा तो सअ़द रज़ि० हाथ में हर्बा लिये जोश की हालत में बड़ी तेज़ी से बढ़े जा रहे हैं और यह शेअर ज़बान पर है-

**بِئْثَ قَلِيلًا يُدْرِكُ الْهَيْجَاجَ جَمْلٌ لَا بَاسَ بِالْمَوْتِ إِذَا الْمَوْتُ نَزَلَ**

“ज़रा ठहर जाना कि लड़ाई में एक शख्स और पहुंच जाए, जब वक्त आ गया तो मौत से क्या डर है।”

हज़रत सअ़द रज़ि० की माँ ने सुना तो आवाज़ दी

बेटा! दौड़ कर जा, तूने देर लगा दी, सअ़द रज़ि० की ज़िरह  
इस क़दर छोटी थी कि उनके दोनों हाथ बाहर थे, हज़रत  
आइशा रज़ि० ने सअ़द रज़ि० की माँ से कहा “काश सअ़द  
की लम्बी ज़िरह होती” इल्लिफ़ाक़ यह कि इब्नुल अरक़ा ने  
ताक कर खुले हुए हाथ पर तीर मारा जिससे अकहल की  
रग कट गई।<sup>(1)</sup> ख़ंदक का मअ़रका हो चुका तो आंहज़रत  
सल्ल० ने उनके लिये मस्जिद के सिहन में एक ख़ेमा खड़ा  
कराया और उनकी तीमारदारी शुरू की, इस लड़ाई में रुफ़ैदा  
एक ख़ातून शरीक थीं, जो अपने पास दवाएं रखती थीं और  
ज़ख्मों की मरहम पट्टी करती थीं, यह ख़ेमा उन्हीं का था  
और वह इलाज की निगरां थीं, आंहज़रत सल्ल० ने खुद  
दस्ते मुबारक से मिशकस लेकर दाग़ा, लेकिन वह फिर वरम  
कर आया, दोबारा दाग़ा, लेकिन फिर फ़ाएदा न हुआ, कई<sup>(2)</sup>  
दिन के बाद यअ़नी बनू कुरैज़ा की हलाकत के बाद ज़ख्म  
खुल गया और उन्होंने वफ़ात पाई।

## ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअू

ग़ज़वए ख़ंदक के बाद आप सल्ल० ने ग़तफ़ान के  
कबाइल के मुकाबला के लिये चार सौ सहाबा रज़ि० के  
साथ नज्द का रुख़ किया, इस ग़ज़वा में सहाबा रज़ि० के  
पांव ऐसे ज़ख्मी हो गए थे कि चीथड़े लपेट कर चलते थे  
इसलिये इस ग़ज़वा का नाम ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअू है।<sup>(3)</sup> इस

(1) सहीहुल बुखारी, बाब रजउन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब, तफसील सीरित इब्ने  
हिशाम 2-226, 1227 और दलाइलुन्नबूब्वा 3-440-441में है। (2) सहीहुल बुखारी,  
किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब, फ़त्हुल बारी 7-412 (3)  
सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअू

ग़ज़वा के बाद यह वाकिःआ पेश आया कि दो सहाबी अब्बाद बिन बि�श्व रज़ि० और अम्मार बिन यासिर रज़ि० एक जगह पहरे पर मुकर्रर थे, हज़रत अब्बाद रज़ि० खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत अम्मार सोए हुए थे, एक दुशमन ने हज़रत अब्बाद रज़ि० को एक तीर मारा, उन्होंने तीर निकाल कर फेंक दिया और नमाज़ बराबर पढ़ते रहें, यहां तक कि उनके तीन तीर लगे, लेकिन वह नमाज़ में मशगूल रहे, सलाम फेरने के बाद अपने साथी को जगाया, उन्होंने कहा कि मैं एक सूरत पढ़ रहा था मेरा जी न चाहा कि उसको नातमाम छोड़ूँ।<sup>(1)</sup>

### ग़ज़वर बनू कुरैज़ा

आंहज़रत सल्ल० ने आग़ाज़े क्याम में यहूद के साथ मुआहदा किया था, और उनको जान व माल व मज़हब हर चीज़ में अम्न व आज़ादी बख्शी, लेकिन जब कुरैश ने उनको तहरीज़ व तहदीद का ख़त लिखा तो वह आमादए बग़ावत हो गए, आंहज़रत सल्ल० ने उन लोगों से तज्दीदे मुआहदा करनी चाही, बनू नज़ीर ने इंकार किया और जिला वतन कर दिये गये, लेकिन बनू कुरैज़ा ने नए सिरे से मुआहदा कर लिया, चुनांचे उनको अम्न दे दिया गया, सहीह मुस्लिम में इन वाकिःआत को इद्खितसार के साथ इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है.....<sup>(2)</sup>

(1) मुस्लिम अहमद ३-३४४, सुनन अबू दाऊद, किताबुल्हारत, बाबुल बुजू मिनदम

(2) सीरतुन्नबी सल्ल० १-४३३

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ يَهُودَ بَنِي النَّضِيرِ وَقُرَيْظَةَ حَارَبُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَجَلَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَنِي النَّضِيرِ وَأَقْرَأَ قُرَيْظَةَ وَمَنْ عَلَيْهِمْ،

‘‘हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० से रिवायत है कि बनू नज़ीर और बनू कुरैज़ा के यहूद ने आंहज़रत सल्ल० से लड़ाई की तो आप सल्ल० ने बनू नज़ीर को जिला वतन कर दिया और कुरैज़ा को रहने दिया और एहसान किया।<sup>(1)</sup>

बनू नज़ीर जब जिला वतन हुए तो उनके रईसे अअूज़म हुय्य बिन अख्तब, अबू रफ़ेअ़, सलाम बिन अबिल हुकैक खैबर में जाकर आबाद हुए और वहां रियासते आम हासिल कर ली, जंगे अहज़ाब उन्हीं की कोशिशों का नतीजा था, कबाइले अरब में दौरा करके तमाम मुल्क में आग लगा दी और कुरैश के साथ मिल कर मदीना पर हमला आंवर हुए, उस वक्त तक कुरैज़ा मुअहादा पर क़ाइम थे, लेकिन हुय्य बिन अख्तब ने उनको बहका कर तोड़ लिया और उनसे वादा किया कि खुदा नख्वास्ता अगर कुरैश दस्त बर्दार होकर चले गए तो मैं खैबर छोड़ कर यहीं रहूंगा, चुनांचे उसने वादा वफ़ा किया, कुरैज़ा ने अहज़ाब में एलानिया शिर्कत की और शिकस्त खाकर हट आए, तो इस्लाम के सबसे बड़े दुशमन हुय्य बिन अख्तब को साथ लाए,<sup>(2)</sup> अब इसके सिवा कोई चारा न था कि उनका कोई آधिकारी

(1) سہیہ مسلم، کیतا بول جیہاد و سیسیار، باب ۱ جیلائل یہود میں لہیجہ

(2) سیرت بنہبی ۱-۴۳۴ بہبولا تباری و سیرت ابنہہشام

फैसला किया जाए, आंहज़रत सल्ल० ने अहज़ाब से फ़ारिग़ होकर हुक्म दिया कि अभी लोग हथियार न खोलें और कुरैज़ा की तरफ़ बढ़ें।<sup>(1)</sup> कुरैज़ा अगर सुलह व आश्ती से पेश आते तो काबिले इत्मीनान तस्फ़िया के बाद उनके अम्न हो जाता, लेकिन वह मुकाबला का फैसला कर चुके थे, फौज से आगे बढ़कर जब हज़रत अली रज़ि० उनके किलों के पास पहुंचे तो उन्होंने एलानिया आंहज़रत सल्ल० को गालियां दीं, ग़र्ज़ उनका मुहासरा कर लिया गया और तक़रीबन एक महीना मुहासरा रहा, बिलआखिर उन्होंने दरख़्वास्त पेश की कि हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि० जो फैसला करें वह हमें मंजूर है।

हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि० और उनका क़बीला (औस) कुरैज़ा का हलीफ़ और हम अहद था और अरब में यह तअल्लुक हम नसबी से बढ़कर था, आंहज़रत सल्ल० ने उनकी यह दरख़्वास्त मंजूर की।<sup>(2)</sup>

कुर्अन मजीद में जब तक कोई ख़ास हुक्म नहीं आता था, आंहज़रत सल्ल० तौरात के अहकाम की पाबंदी फ़रमाते थे, चुनांचे अक्सर मसाइल, किला, नमाज़, रज्म, किसास बिलमिस्ल, वगैरा वगैरा में जब तक ख़ास वह्य नहीं आई, आंहज़रत सल्ल० ने तौरात ही की पाबंदी फ़रमाई, सअ़द रज़ि० ने जो फैसला किया यअ़नी यह लड़ने वाले क़त्ल किये जाएं, औरतों बच्चे कैद हों, माल व अस्बाब ग़नीमत करार

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रज्ञन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब

(2) हज़रत सअ़द रज़ि० की तहकीम का ज़िक्र बुखारी में मौजूद है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रज्ञन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब

दिया जाए<sup>(1)</sup> तौरात के मुताबिक था, तौरात किताब सनीया इस्त्वाह 20, आयत 10/ में है:

“जब किसी शहर पर हमला करने के लिये तू जाए तो पहले सुलह का पैग़ाम दे, अगर वह सुलह तस्लीम कर लें और तेरे लिये दरवाज़े खोल दें तो जितने लोग वहां मौजूद हों सब तेरे गुलाम हो जाएंगे, लेकिन अगर सुलह न करें तो उनका मुहासरा कर और जब तेरा खुदा तुझको उन पर क़ब्ज़ा दिला दे तो जिस कदर मर्द हों, सबको क़त्ल कर दे, बाकी औरतें, बच्चे, जानवर और जो चीज़ें शहर में मौजूद हों सब तेरे लिये माले ग़नीमत होंगी।<sup>(2)</sup>

अहादीस में मज़कूर है कि हज़रत सअ़्द रज़ि० ने जब यह फैसला किया तो आंहज़रत सल्ल० ने फरमाया कि तुमने आसमानी फैसला किया।<sup>(3)</sup> तौरात के इसी हुक्म की तरफ इशारा था, यहूदियों को जब यह हुक्म सुनाया गया तो जो फ़िक्रे उनकी ज़बान से निकले उससे साबित होता है कि वह खुद भी इस फैसला को हुक्मे इलाही के मुवाफ़िक समझते थे।

हुय्य बिन अख्बाब जो इन तमाम फ़ितन का बानी था, मक़तल में लाया गया तो आंहज़रत सल्ल० की तरफ उसने नज़र उठा कर देखा और यह फ़िक्रे कहे:

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब जवाज़े किताल फी नक्ज़िल अहद

(2) सीरियस्सी सल्ल०, अल्लामा शिल्पी नोज़मानी 1-435, बहवाला तौरात

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रज़उन्नबी सल्ल० मिनल अहज़ाब

أَمَّا وَاللَّهِ مَا لَمْتُ نَفْسِي فِي عَدَاؤِكَ وَلَكِنَّهُ مَنْ يَعْذِلُ  
اللَّهُ يُعْذِلُ

“हां खुदा की क़सम मुझको इसका अफ़सोस नहीं है कि मैंने तेरी (आप सल्ल० की) अदावत की, लेकिन बात यह है कि जो शख्स खुदा को छोड़ देता है खुदा भी उसको छोड़ देता है।”

फिर लोगों की तरफ मुख़ातब होकर कहा:

أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَا بَأْسَ بِأَمْرِ اللَّهِ كِتَابٌ وَقُدْرٌ وَمَلْحَمَةٌ  
كَتَبَهَا اللَّهُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ

“लोगो ! खुदा के हुक्म की तअ़मील में कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, यह एक हुक्मे इलाही था जो लिखा हुआ था, यह एक सज़ा थी जो खुदा ने बनी इस्राईल पर लिखी थी।”<sup>(1)</sup>

हुय्य बिन अख़्ताब की यह बात ख़ास तौर पर लिहाज़ रखने के काबिल है कि जब वह जिला वतन होकर ख़ैबर जा रहा था तो उसने यह मुआहदा किया था कि आंहज़रत सल्ल० की मुख़ालफ़त पर किसी को मदद न देगा, इस मुआहदा पर उसने खुदा को ज़ामिन किया था, लेकिन अहज़ाब में उसेन इस मुआहदा की जिस तरह की तअ़मील की उसका हाल अभी गुज़र चुका।

**सरीयए नज्द और हज़रत सुमामा रज़ि० का क़बूले इस्लाम**  
नबी सल्ल० ने कुछ सवार नज्द की जानिब रवाना

(1) सीरत इब्ने हि�शाम 2-241

फरमाए थे, वह वापस होते हुए सुमामा बिन असाल को गिरफ्तार कर लाए थे, फौज वालों ने उन्हें मस्जिदे नबवी सल्लाह के सुतून से ला बांधा था, नबी सल्लाह ने वहाँ तशरीफ लाकर दरयाप्त किया कि सुमाका क्या हाल है? सुमाना ने कहा मुहम्मद (सल्लाह) मेरा हाल अच्छा है, अगर आप मेरे कल्ले किये जाने का हुक्म दें तो यह हुक्म एक खूनी के हक्क में होगा और अगर आप इन्हाम फरमाएंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर रहमत करेंगे और अगर माल की ज़रूरत है तो जिस कदर चाहिये बता दीजिये।

दूसरे रोज़ नबी सल्लाह ने सुमामा से फिर वही सवाल किया, सुमामा ने कहा मैं कह चुका हूं कि अगर आप एहसान फरमाएंगे तो एक शुक्र गुज़ार शख्स पर फरमाएंगे।

तीसरे रोज़ नबी सल्लाह ने फिर सुमामा से वही सवाल किया, उसने कहा मैं अपना जवाब दे चुका हूं, नबी सल्लाह ने हुक्म दिया कि सुमामा को छोड़ दो, सुमामा रिहाई पाकर खजूर के एक एक बाग में गए, जो मस्जिदे नबवी सल्लाह के करीब ही था, वहाँ जाकर गुस्त किया और फिर मस्जिदे नबवी सल्लाह में लौट कर आ गए और आते ही कलिमा पढ़ लिया।

सुमाम रज़िया ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लाह! कहसम है खुदा की कि सारे आलम में आप से ज़्यादा और किसी शख्स से मुझे नफरत न थी, लेकिन अब तो आप सल्लाह ही मुझे दुन्या में सबसे बढ़ कर प्यारे मज़लूम होते हैं।

बखुदा आपके शहर से मुझे निहायत नफरत थी, मगर आज तो वह मुझे सब मकामात से पसंदीदा नज़र आता है, बखुदा आपके दीन से बढ़कर मुझे और किसी दीन से बुर्जन था, लेकिन आज तो आप ही का दीन मुझे महबूब तर हो गया है।

सुमामा रज़ि० ने यह भी अर्ज किया कि मैं अपने वतन से मक्का को उम्रा के लिये जा रहा था, रास्ता में गिरफ्तार कर लिया गया था, अब उम्रा के बारे में क्या इशारा है, नबी सल्ल० ने उन्हें इस्लाम कबूल करने की बशारत दी और उम्रा करने की इजाज़त फरमाई।

हज़रत सुमामा रज़ि० मक्का पहुंचे तो वहाँ के एक शख्स ने पूछा कहो तुम साबी बन गए? हज़रत सुमामा रज़ि० ने कहा नहीं! मैं मुहम्मद रसूलुल्ला सल्ल० पर ईमान लाया हूं और इस्लाम कबूल किया है और अब याद रखना कि मुल्के यमामा से तुम्हारे पास एक दानए गंदुम भी नहीं आएगा, जब तक नबी सल्ल० की इजाज़त न होगी।<sup>(1)</sup>

हज़रत सुमामा रज़ि० ने अपने मुल्क पहुंचते ही मक्का की तरफ़ आने वाला अनाज बंद कर दिया, ग़ल्ला की आमद के रुक जाने से अहले मक्का बिलबिला उठे और आखिर नबी सल्ल० ही से इलितजा करनी पड़ी, नबी सल्ल० ने सुमामा रज़ि० को लिख दिया कि ग़ल्ला बदस्तूर जाने दें<sup>(2)</sup>

(1) सहीह मुस्लिम, किंताबुल जिहाद वस्सियर, बाब रबतुल असीर व हब्सुह्ह सहीह बुखारी में इख्लासार के साथ रिवायत मन्कूल है।

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहकी 4-80

(उन दिनों अहले मक्का नबी सल्ल0 के जानी दुश्मन थे)

इस किस्सा से न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 ने क्योंकर एक शख्स की जान बख्शी फ़रमाई जो खुद भी अपने आपको वाजिबुल क़त्ल समझता था और न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 के पाकीज़ा हालात और अख्लाक़ का कैसा असर लोगों पर पड़ता था कि सुमामा जैसा शख्स जो इस्लाम और मदीना और आंहज़रत सल्ल0 से सख्त नफ़रत व अदावत रखता था, तीन रोज़ के बाद बखुशी खुद मुसलमान हो गया था, बल्कि नबी सल्ल0 की नेकी और तीनत की पाकी और रहमदिली का सुबूत इस तरह मिलता है कि मक्का के जिन काफ़िरों ने आंहज़रत सल्ल0 को मक्का से निकाला था और बद्र, उहुद, ख़दक़ में अब तक नबी सल्ल0 और मुसलमानों के तबाह व बर्बादी करने के लिये सारी ताक़त सर्फ़ कर चुके थे, उनके लिये रहमतुल लिल आलमीन यह पसंद नहीं फ़रमाते कि उनका ग़ल्ला रोक दिया जाए और उनको तंग व ज़्लील करके अपना फ़रमां बरदार बनाया जाए।

### सुलह दुदैविया

6 हिरो में नबी सल्ल0 ने अपना एक ख़बाब मुसलमानों को सुनाया, फ़रमाया कि मैंने देखा गोया मैं और मुसलमान मक्का पहुंच गए हैं और बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं, इस ख़बाब के सुनने से ग़रीबुल वतन मुसलमानों को इस शौक़ ने जो बैतुल्लाह के तवाफ़ का उनके दिल में था, बेचैन

कर दिया और उन्होंने उसी साल नबी सल्ल0 को सफरे मक्का के लिये आमादा कर लिया।<sup>(1)</sup>

चूंकि मुहाजिरीन उमूमन और अक्सर अंसार इस सआदत के मुंतज़िर थे, 1400/अशख़ास इस सफर में हमरिकाब हुए, मकामे जुल हुलैफा पहुंच कर कुर्बानी की इब्लिदा की, रस्में अदा हो गई यज़नी कुर्बानी के ऊंट साथ थे, उनकी गर्दनों पर कुर्बानी की अलामत के तौर पर लोहे के नश्वर लगा दिये गए।<sup>(2)</sup>

एहतियात के लिये कबीले खुज़ाआ का एक शख्स जिसके इस्लाम लाने का हाल कुरैश को मअ़्लूम न था, पहले भेज दिया गया कि कुरैश के इरादा की ख़बर लाए, जब काफिला उस्फ़ान के करीब पहुंचा उसने आकर ख़बर दी कि कुरैश ने तमाम कबाइल (अहाबीश) को यक्जा करके कह दिया है कि मुहम्मद (सल्ल0) मक्का में कभी नहीं आ सकते।<sup>(3)</sup>

ग़र्ज़ कुरैश ने बड़े ज़ोर व शोर से मुक़ाबला की तैयारी की, कबाइले मुल्तहिदा के पास पैग़ाम भेजा कि वह जमईयते अज़ीम लेकर आएं, मक्का से बाहर बलदह के मकाम पर फौजें फ़राहम हुईं, ख़ालिद बिन वलीद जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, दो सौ सवार लेकर जिनमें अबू जहल का बेटा अकरमा भी था, मुकद्दमतुल जैश के तौर पर आगे बढ़े और गुमैम तक पहुंच गए जो राबिग़ और जुहफा के दर्मियान है।<sup>(4)</sup>

(1) सीरते हलबीया 2-688 (2) व (3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया (4) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-449

आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि कुरैश ने ख़ालिद बिन वलीद को तलीआ बनाकर भेजा है और वह मकामे गुमैम तक आ गए हैं, इसलिये कतरा कर दाहनी तरफ से चलो, फौजे इस्लाम जब गुमैम के करीब पहुंच गई तो ख़ालिद को घोड़ों की गर्द उड़ती नज़र आई, वह घोड़ा उड़ाते हुए गए और कुरैश को ख़बर की कि लशकरे इस्लाम गुमैम तक आ गया।

आंहज़रत सल्ल० आगे बढ़े और हुदैबिया में पहुंच कर क़्याम किया, यहां पानी की क़िल्लत थी, एक कुंवां था वह पहली ही आमद में ख़ाली हो गया, लेकिन एजाज़े नबवी सल्ल० से उसमें इस कदर पानी आ गया कि सब सैराब हो गए।<sup>(1)</sup>

कबीलए खुज़ाआ ने अब तक इस्लाम नहीं कबूल किया था, लेकिन इस्लाम के हलीफ़ और राज़दार थे, कुरैश और आम कुफ़्फ़ार जो मंसूबे इस्लाम के ख़िलाफ़ बनाया करते थे वह हमेशा आंहज़रत सल्ल० को उससे मुत्तलअू कर दिया करते थे, इस कबीला के रहस्ये अज़्ज़म बुदैल बिन वरका थे (फ़त्हे मक्का में इस्लाम लाए) उनको आंहज़रत सल्ल० का तशरीफ़ लाना मअ़लूम हुआ तो चंद आदमी साथ लेकर बारगाहे नबवी सल्ल० में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि कुरैश की फौजों का सैलाब आ रहा है, वह आपको कअूबा में न जाने देंगे, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि कुरैश से जाकर

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

कह दो कि “हम उम्रा की ग़र्ज़ से आए हैं, लड़ना मक्सूद नहीं, जंग ने कुरैश की हालत ज़ार कर दी है और उनको सख्त नुकसान पहुंचा है, उनके लिये यह बेहतर है कि एक मुद्दते मुअ़्य्यन के लिये मुआहदए सुलह कर लें और मुझको अरब के हाथ में छोड़ दें, इस पर भी अगर राज़ी नहीं तो उस खुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं यहां तक लड़ूंगा कि मेरी गर्दन अलग हो जाए और खुदा को जो फैसला करना हो कर दे।”

बुदैल ने जाकर कुरैश से कहा कि “मैं मुहम्मद (सल्ल0) के पास से पैग़ाम लेकर आया हूं, इजाज़त दो तो कह दूं” चंद शरीर बोल उठे कि हमको मुहम्मद (सल्ल0) के पैग़ाम सुनने की ज़रूरत नहीं, लेकिन संजीदा लोगों ने इजाज़त दी, बुदैल ने आंहज़रत सल्ल0 की शर्तें पेश कीं, उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी ने उठ कर कहा क्यों कुरैश! क्या मैं तुम्हारा बाप और तुम मेरे बच्चे नहीं? बोले हां! उर्वा ने कहा मेरी निस्बत तुमको बदगुमानी तो नहीं? सबने कहा “नहीं” उर्वा ने कहा “अच्छा तुम मुझको इजाज़त दो कि मैं खुद जाकर मुआमला तै करूं, मुहम्मद (सल्ल0) ने मअ़कूल शर्तें पेश की हैं” ग़र्ज़ आंहज़रत सल्ल0 की खिदमत में आए, कुरैश का पैग़ाम सुनाया और कहा मुहम्मद (सल्ल0)! फ़र्ज़ करो तुमने कुरैश का इस्तीसाल कर दिया तो क्या इसकी और भी कोई मिसाल है कि किसी ने अपनी कौम को बर्बाद कर दिया हो, इसके सिवा अगर लड़ाई का रुख़ बदला तो तुम्हारे साथ जो यह भीड़ है गर्द की तरह उड़ जाएगी, हज़रत अबू बक्र

रजि० को इस बदगुमानी पर इस क़दर गुस्सा आया कि गाली देकर कहा क्या हम मुहम्मद सल्ल० को छोड़ कर भाग जाएंगे? उर्वा ने आंहज़रत सल्ल० से पूछा यह कौन हैं?.....आप सल्ल० ने फरमाया “अबू बक्र” उर्वा ने कहा मैं इनकी सख्त कलामी का जवाब देता, लेकिन इनका एहसान मेरी गर्दन पर है जिसका बदला मैं अभी तक अदा नहीं कर सका।<sup>(1)</sup>

उर्वा आंहज़रत सल्ल० से बेतकल्लुफ़ाना तरीक़ा से गुफ्तगू कर रहा था और जैसा कि अरब का काएदा है कि बात करते करते मुख़ातब की दाढ़ी पकड़ लेते हैं, वह रीश मुबारक पर बार बार हाथ डालता था, मुग़ीरा बिन शोअबा रजि० जो हथियार लगाए आंहज़रत सल्ल० की पुश्त पर खड़े थे इस जुर्जत को गवारा न कर सके, उर्वा से कहा “अपना हाथ हटा ले वर्ना यह हाथ बढ़ कर वापस न जा सकेगा” उर्वा ने मुग़ीरा को पहचाना और कहा: ओ दग़ाबाज़! क्या मैं तेरी दग़ाबाज़ी के मुआमला में तेरा काम नहीं कर रहा हूं (मुग़ीरा ने चंद आदमी क़त्ल कर दिये थे जिनका खून बहा उर्वा ने अपने पास से अदा किया था)<sup>(2)</sup>

उर्वा ने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ सहाबा रजि० की हैरत अंगेज़ अकीदत का जो मंज़र देखा उसने उसके दिल पर अजब असर किया, कुरैश से जाकर कहा कि ‘‘मैंने कैसर व किस्रा व नजाशी के दरबार देखे हैं, यह अकीदत

(1) पूरी रिवायत सहीह बुखारी में मौजूद है, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीह बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

और वारफ़तगी कहीं नहीं देखी, मुहम्मद (सल्ल०) बात करते हैं तो सन्नाटा छा जाता है, कोई शख्स उनकी तरफ नज़र भर कर देख नहीं सकता, वह वुजू करते हैं, तो जो पानी गिरता है उस पर खिल्क़त टूट पड़ती है, थूक गिरता है तो अकीदत केश हाथों हाथ लेते हैं, और चेहरा और हाथों पर मल लेते हैं।”<sup>(1)</sup>

चूंकि यह मुआमला नातमाम रह गया, आंहज़रत सल्ल० ने ख़राश बिन उमय्या को कुरैश के पास भेजा, लेकिन कुरैश ने उनकी सवारी का ऊंट जो ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल० की सवारी का था मार डाला और खुद उन पर भी यही गुज़रने वाली थी, लेकिन कबाइले मुत्तहिदा के लोगों ने बचालिया और वह किसी तरह जान बचाकर चले आए।<sup>(2)</sup>

अब कुरैश ने एक दस्ता भेजा कि मुसलमानों पर हमला आवर हो, लेकिन यह लोग गिरफ़तार कर लिये गए, गोया सख़त शरारत थी, लेकिन रहमते आलम सल्ल० का दामने अफ़व इससे ज़्यादा वसीअ़ था, आप सल्ल० ने सबको छोड़ दिया और मुआफ़ी दे दी<sup>(3)</sup> कुर्झन मजीद की इस आयत में इसी वाकिआ की तरफ इशारा है।

وَهُوَ الَّذِي كَفَ أَيْدِيهِمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيْكُمْ عَنْهُمْ بِطْرِنْ مَكَّةَ  
مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ.

(1) सहीह बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-314, मुस्नद अहमद 4-324

(3) सहीह बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

‘वह वही खुदा है जिसने मक्का में उन लोगों का हाथ तुमसे और तुम्हारा हाथ उनसे रोक दिया बाद इसके कि तुमको उन पर क़ाबू दे दिया था।’

### बैअृते रिज़वान

बिलआखिर आप सल्ल० ने गुफ्तगूए सुलह के लिये हज़रत उमर रज़ि० का इंतिख़ाब किया लेकिन उन्होंने मअ़ज़िरत की कि कुरैश मेरे सख्त दुश्मन हैं और मक्का में मेरे क़बीला का एक शख्स भी नहीं कि मुझको बचा सके, आप सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ि० को भेजा वह अपने एक अज़ीज़ (अबान बिन सईद) की हिमायत में मक्का गए और आंहज़रत सल्ल० का पैग़ाम सुनाया, कुरैश ने उनको नज़र बंद कर लिया, लेकिन आम तौर पर यह ख़बर मशहूर हो गई कि वह कत्ल कर डाले गए।<sup>(1)</sup> यह ख़बर आंहज़रत सल्ल० को पहुंची तो आप सल्ल० ने फ़रमाया ‘उस्मान के खून का किसास लेना फ़र्ज़ है’ यह कहकर आप सल्ल० ने एक बबूल के दरख़त के नीचे बैठकर सहाबा रज़ि० से जानिसारी की बैअृत ली, तभाम सहाबा रज़ि० ने जिनमें ज़नव मर्द दोनों शामिल थे वलवला अंगेज़ जोश के साथ दस्ते मुबारक पर जानिसारी का अहद किया, यह तारीख़े इस्लाम का मोहतम्म बिश्शान वाक़िआ है, इस बैअृत का नाम ‘बैअृतुर्रिज़वान’ है, सूरए फ़त्ह में इस वाक़िआ का और दरख़त का ज़िक्र है।

(1) مُسْنَدِ اَحْمَادٍ 4-324، سِيَرَتِ اِبْنِ اَحْمَادٍ 2-314,315

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يَأْتِيَعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ  
فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَآثَابَهُمْ فَتَحَا  
قَرِيبًا.

“खुदा मुसलमानों से राज़ी था जबकि वह तेरे हाथ पर दरख्त के नीचे बैज़त कर रहे थे, सो खुदा ने जान लिया जो कुछ उन लोगों के दिलों में था तो खुदा ने उन पर तसल्ली नाज़िल की और आजिलाना फ़त्ह दी।”

लेकिन बाद को मअ़लूम हुआ वह खबर सही न थी।<sup>(1)</sup>

## मुआहदा व सुलहनामा

कुरैश ने सुहैल बिन अ़म्र को सफीर बना कर भेजा, वह निहायत फ़सीह व बलीग मुकर्रिर थे, चुनांचे उन लोगों ने “ख़तीबे कुरैश” का ख़िताब दिया था।<sup>(2)</sup> कुरैश ने उनसे कह दिया कि सुलह सिफ़ इस शर्त पर हो सकती है कि मुहम्मद (सल्ल0) इस साल वापस चले जाएं।

सुहैल आंहज़रत सल्लो की खिदमत में हाजिर हुए और देर तक सुलह के शराइत पर गुफ्तगू रही, बिलआखिर चंद शर्तों पर इतिफ़ाक़ हुआ और आंहज़रत सल्लो ने हज़रत अली को बुलाकर हुक्म दिया कि मुआहदा के अलफ़ाज़ क़लमबंद करें, हज़रत अली रज़ियो ने उन्वान पर “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” लिखा, अरब का कदीम तरीक़ा था कि खुतूत की इच्छिदा में “بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ” लिखते थे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-315, 316, इज्मालन बैअत का तज़किरा सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में भी प्रौजूद है। (2) ज़रकानी 2-223

”بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ“ سے وہ نا آشنا�ے، اس بینا پر سुہل بین امیر نے کہا ”بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ“ کے بجائے وہی کردیم الفاظ لیکھے جائے، آنحضرت سلسلہ ۰ نے مجبور فرمایا، آگے کا فیکرہ ثا ”هذا ما قاضى“ علیہ مُحَمَّدُ رَسُولُ اللّٰهِ یعنی ”یہ وہ مُعاہدہ ہے جو مُحَمَّدُ رَسُولُ اللّٰہِ سلسلہ ۰ نے تسلیم کیا“ سुہل نے کہا ”اگر ہم آپکو پیغمبر ہی تسلیم کرتے تو فیر جانڈا کیا ثا، آپ سیفِ اپنا اور اپنے باپ کا نام لیکھوایں“ آنحضرت سلسلہ ۰ نے فرمایا کی گو تو ہم تک جیب کرتے ہو لیکن خودا کی کسماں میں خودا کا پیغمبر ہون، یہ کہکر آپ سلسلہ ۰ نے حضرت اعلیٰ رجی ۰ کو ہکم دیا کی اچھا میرا نام لیخو، حضرت اعلیٰ رجی ۰ سے زیادا کون فرمائی گزار ہو سکتا ہا، لیکن آلام میں ہبھت میں اسے مکاوم بھی پہنچاتے ہیں جہاں فرمائیں ردا ری سے انکار کرنے پڑتا ہے، حضرت اعلیٰ رجی ۰ نے کہا میں ہرگیز آپکا نام ن میٹا جائے، آپ نے فرمایا کی اچھا میڈکو دیکھا اور میرا نام کہا ہے؟ حضرت اعلیٰ رجی ۰ نے اس جگہ ہنگامی رخ دی، آپ نے رضویہ سلسلہ ۰ کا لفظ میٹا دیا۔

### شراہتو سولہ یہ ہے:

- 1- مسلمان اس سال واسطے چلے جائے ।
- 2- اگلے سال آئے اور سیفِ تین دن کیام کر کے چلے جائے ।

3- हथियार लगा कर न आएं, सिफ़्र तलवार साथ लाएं, वह भी नियाम में और नियाम भी जिलबान (थैला वगैरा) में।

4- मक्का में जो मुसलमान पहले से मुकीम हैं उनमें से किसी को अपने साथ न ले जाएं और मुसलमानों में से कोई मक्का में रह जाना चाहे तो उसको न रोकें।

5- काफिरों या मुसलमानों में से कोई शख्स अगर मदीना जाए तो वापस कर दिया जाए, लेकिन अगर कोई मुसलमान मक्का में जाए तो वह वापस नहीं किया जाएगा।

6- कबाइले अरब को इख्तियार होगा कि फ़रीकैन से जिसके साथ चाहें मुआहदा में शरीक हो जाएं।<sup>(1)</sup>

### मुसलमानों की आज़माझ़ा

यह शर्तें बज़ाहिर मुसलमानों के सख्त खिलाफ़ थीं, इतिफ़ाक़ यह कि ऐन उस वक्त जबकि मुआहदा लिखा जा रहा था सुहैल के साहबज़ादे (अबू जुंदल) जो इस्लाम ला चुके थे और मक्का में काफिरों ने उनको कैद कर रखा था और तरह तरह की अज़ीयतें देते थे, किसी तरह भाग कर पांव में बेड़ियां पहने हुए आए और सबके सामने गिर पड़े, सुहैल ने कहा “मुहम्मद (सल्ल०) सुलह की तअ़मील का यह पहला मौक़ा है, इस (अबू जुंदल) को शराइते सुलह के मुताबिक़ मुझको वापस दे दो” आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया “अभी मुआहदा क़लमबंद नहीं हो चुका।” सुहैल ने कहा

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया

“तो हमको सुलह भी मंजूर नहीं।” आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया: ‘‘कि अच्छा इनको यहीं रहने दो’’ सुहैल ने नामंजूर किया, आप सल्ल० ने चंद दफ़ा इस्तार से कहा, लेकिन सुहैल किसी तरह राज़ी न हुआ, मजबूरन आंहज़रत सल्ल० को तस्लीम करना पड़ा, अबू जुंदल को काफ़िरों ने इस क़दर मारा था कि उनके जिस्म पर निशान थे, मज्मा के सामने तमाम ज़ख्म दिखाए और कहा बिरादराने इस्लाम! क्या फिर मुझको उसी हालत में देखना चाहते हो? मैं इस्लाम ला चुका हूं क्या फिर मुझको काफ़िरों के हाथ में देते हो, तमाम मुसलमान तड़प उठे, हज़रत उमर रज़ि० ज़ब्त न कर सके, आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में आए और कहा: या रसूलुल्लाह! क्या आप पैग़म्बरे बरहक़ नहीं हैं? आप सल्ल० ने इशाद फ़रमाया ‘‘हाँ हूं’’ हज़रत उमर रज़ि० ने कहा: तो हम दीन में यह ज़िल्लत क्यों गवारा करें? आप सल्ल० ने फ़रमाया ‘‘मैं खुदा का पैग़म्बर हूं और खुदा के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं कर सकता, खुदा मेरी मदद करेगा’’ हज़रत उमर रज़ि० ने कहा: क्या आप (सल्ल०) ने यह नहीं फ़रमाया था कि हम लोग कअूबा का तवाफ़ करेंगे? आप सल्ल० ने फ़रमाया लेकिन यह तो नहीं कहा था कि इसी साल करेंगे, हज़रत उमर रज़ि० उठकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास आए और वही गुफ़्तगू की, हज़रत अबू बक्र

रज़ि० ने कहा वह पैगम्बरे खुदा हैं, जो कुछ करते हैं खुदा के हुक्म से करते हैं।<sup>(1)</sup>

हज़रत उमर रज़ि० को अपनी इन गुस्ताख़ाना मअरुज़ात का जो बेइख़ितयारी में उनसे सरज़द हुई तमाम उम्र सख्त रंज रहा और उसके कफ़्फ़ारा के लिये उन्होंने नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, खैरात की, गुलाम आज़ाद किये। बुख़ारी शरीफ में अगर्चे इन अभूमाल का ज़िक्र इज्मालन है लेकिन इब्ने इस्हाक़ ने तफ़सील से यह बातें गिनाई हैं।<sup>(2)</sup>

इस हालत का गवारा करना सहाबी की इताअत शिआरी का सख्त ख़तरनाक इम्तिहान था, एक तरफ़ इस्लाम की तौहीन है, अबू जुंदल रज़ि० बेड़ियां पहने चौदह सौ जानिसाराने इस्लाम से इस्तिग़ासा करते हैं, सबके दिल जोश से लबरेज़ हैं, और अगर रसूलुल्लाह सल्ल० का ज़रा ईमाअू हो जाए तो तलवार फैसलए क़ातेअू के लिये मौजूद है, दूसरी तरफ़ मुआहदा पर दस्तख़त हो चुके हैं और ईफ़ाए अहद की ज़िम्मादारी है, रसूलुल्लाह सल्ल० ने अबू जुंदल की तरफ़ देखा और फ़रमाया:

يَا أَبَا جُنْدَلٍ اصْبِرْ وَأَخْتَسِبْ فَإِنَّ اللَّهَ جَاعِلٌ لَكَ وَلِمَنْ  
مَعَكَ مِنَ الْمُسْتَضْعَفِينَ فَرَجَاً وَمُخْرَجَاً، إِنَّا قَدْ عَقَدْنَا  
صُلْحًا وَإِنَّا لَا نَغْدِرُ بِهِمْ.<sup>(3)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया व किताबुश्शुरूत फ़िल जिहाद, इब्ने हिशाम 2-317

(3) मुस्लद अहमद 4-325, इब्ने हिशाम 2-318

“अबू जुंदल! सब्र और ज़ब्त से काम लो, खुदा  
तुम्हारे और मज़लूमों के लिये कोई राह निकालेगा,  
सुलह अब हो चुकी है और हम उन लोगों से  
बदअहदी नहीं कर सकते।”

आंहज़रत सल्ल० ने हुक्म दिया कि लोग यहीं कुर्बानी  
करें, लेकिन लोग इस क़दर दिल शिकस्ता थे कि एक शख्स  
भी न उठा, यहां तक कि जैसा सहीह बुख़ारी में है, तीन  
दफ़ा बार बार कहने पर भी एक शख्स आमादा न हुआ<sup>(1)</sup>  
आंहज़रत सल्ल० घर में तशरीफ़ ले गए और उम्मुल  
मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से शिकायत की, उन्होंने  
कहा “आप किसी से कुछ न फ़रमाएं बल्कि बाहर निकल  
कर खुद कुर्बानी करें और एहराम उतरवाने के लिये बाल  
मुंडवाएं” आप सल्ल० ने बाहर आकर खुद कुर्बानी की और  
बाल मुंडवाए, अब जब लोगों को यकीन हो गया कि इस  
फैसला में तबदीली नहीं हो सकती तो सबने कुर्बानियां कीं  
और एहराम उतारा<sup>(2)</sup>।

### बसूरत नाकामी बढ़कीकृत कामियाबी

सुलह के बाद तीन दिन तक आप सल्ल० ने हुदैबिया में  
क्याम फ़रमाया, फिर रवाना हुए तो राह में यह सूरत उतरी:

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فُتُحًا مُبِينًا

“हमने तुझको खुली हुई फ़त्ह इनायत की।”

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

(2) सहीह बुख़ारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

तमाम मुसलमान जिस चीज़ को शिक्षित समझते थे खुदा ने उसको फ़त्ह कहा, आंहज़रत सल्ल० ने हज़रत उमर को बुला कर फ़रमाया यह आयत नाज़िल हुई है, उन्होंने तअ़ज्जुब से पूछा: क्या यह फ़त्ह है? इशाद हुआ कि “हाँ” सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत उमर रज़ि० को तस्कीन हो गई और मुतमइन हो गए<sup>(1)</sup> नताइजे माबअूद ने इस राजे सरबस्ता की उक्दा कुशाई की।

अब तक मुसलमान और काफिर बाहम मिलते जुलते न थे, अब सुलह की वजह से आमद व रफ़त शुरू हुई और तिजारती तअ़ल्लुक़ात की वजह से कुफ़्फ़ार मदीना में आते, महीनों क्याम करते और मुसलमानों से मिलते जुलते थे, बातों बातों में इस्लामी मसाइल का तज़किरा आता रहता था, इसके साथ हर मुसलमान इखलास, हुस्ने अमल, नेकूकारी, पाकीज़ा अख़लाकी की एक ज़िंदा तस्वीर था, जो मुसलमान मक्का जाते थे उनकी सूरतें यही मनाजिर पेश करती थीं, इससे खुद बखुद कुफ़्फ़ार के दिल इस्लाम की तरफ़ खिंचते आते<sup>(2)</sup> मुअर्रिखीन का बयान है कि इस मुआहदए सुलह से लेकर फ़त्हे मक्का तक इस कदर कसरत से लोग इस्लाम लाए कि कभी नहीं लाए थे<sup>(3)</sup> हज़रत ख़ालिद रज़ि० (फ़ातिहे शाम) और अम्र बिन आस रज़ि० (फ़ातिहे मिस्र) का इस्लाम भी उसी ज़माना की यादगार है।<sup>(4)</sup>

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्तियर, बाब सुलह हुदैबिया, सहीह बुखारी, किताबुलफसीर, तफ़सीर सूरतुल फ़त्ह (2) ज़ादुल मज़ाद ३-३०९ (3) दलाइलुन्नुबूवा

4-160 (4) सीरतुन्नबी 1-459

مُعاہدہ سُلہ مें यह जो शर्त थी कि जो मुसलमान मदीना चला आएगा वह फिर मक्का को वापस कर दिया जाएगा, इसमें सिफ़र मर्द दाखिल थे, औरतें न थीं, औरतों के मुतअल्लिक खास यह आयत उतरी।<sup>(1)</sup>

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ، اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ، فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ، لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُنْ يَحْلُونَ لَهُنَّ، وَآتُوهُنَّ مَا أَنفَقُوا، وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ، وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصْمٍ الْكَوَافِرِ.

“मुसलमानो! जब तुम्हारे पास औरतें हिज्रत करके आएं तो उनको जांच लो, खुदा उनके ईमान को अच्छी तरह जानता है, अब अगर तुमको मअ़्लूम हो कि वह मुसलमान हैं तो उनको काफिरों के यहां वापस न भेजो, न वह औरतें काफिरों के क़ाबिल हैं और न काफिर उन औरतों के क़ाबिल हैं और उन औरतों पर उन लोगों ने जो खर्च किया हो वह उनको दे दो, और तुम उनसे शादी कर सकते हो बशर्ते कि उनके महर अदा कर दो, और काफिर औरतों को अपने निकाह में न रखो।”

(سُورَةُ مُعْتَدِلٍ ۱۰)

जो मुसलमान मक्का में मजबूरी से रह गए थे, चूंकि

(1) سہیل بخاری, کیتاب بخشش علی, باب بخشش علی, فیل جیہاد

कुफ़्फार उनको सख्त तकलीफ़ें देते थे इसलिये वह भाग भाग कर मदीना आते थे, सबसे पहले उत्त्बा बिन उसैद रज़ि० (अबू बुसैर रज़ि०) भाग कर मदीना आए.....आंहज़रत सल्ल० ने उत्त्बा रज़ि० से फ़रमाया कि वापस जाओ, उत्त्बा रज़ि० ने अर्ज़ की कि क्या आप मुझको काफ़िरों के पास भेजते हैं कि जो मुझको कुफ़्र पर मजबूर करें? आप सल्ल० ने फ़रमाया “खुदा इसकी तदबीर निकालेगा” उत्त्बा रज़ि० मजबूरन दो काफ़िरों की हिरासत में वापस गए, लेकिन मकामे जुल हलैफ़ा पहुंच कर उन्होंने एक शख्स को कत्ल कर डाला, दूसरा शख्स जो बच रहा उसने मदीना आकर आंहज़रत सल्ल० से शिकायत की, साथ ही अबू बुसैर रज़ि० पहुंचे और अर्ज़ की कि आप ने अहद के मुवाफ़िक अपनी तरफ से मुझको वापस कर दिया, अब आप पर कोई ज़िम्मादारी नहीं, यह कह कर मदीना से चले गए और मकामे ऐस में जो समंदर के किनारे जूमिरा के पास है रहना इखियार किया, मक्का के बेकस और सितम रसीदा लोगों को जब इल्म हुआ कि जान बचाने का ठिकाना पैदा हो गया है, तो चोरी छिपे भाग भाग कर यहां आने लगे, चंद रोज़ बाद अच्छी ख़ासी जर्मईयत हो गई और अब उन लोगों ने इतनी कूप्पत हासिल कर ली कि कुरैश का कारवाने तिजारत जो शाम को जाया करता था उसको रोक लेते थे, उन हमलों में जो माले ग़नीमत मिल जाता था वह उनकी मअ़ाश का सहारा था। कुरैश ने मजबूर होकर आंहज़रत

सल्ल० को लिख भेजा कि मुआहदा की इस शर्त से हम बाज़ आते हैं, अब जो मुसलमान चाहे मदीना जाकर आबाद हो सकता है हम उससे तअर्झज़ न करेंगे, आप सल्ल० ने आवारा वतन लोगों को लिख भेजा कि यहां चले आओ, चुनांचे अबू जुंदल रज़ि० और उनके साथी मदीना में आकर आबाद हो गए और कारवाने कुरैश का रास्ता बदस्तूर खुल गया।<sup>(1)</sup>

मस्तूरात में से उम्मे कुल्सूम रज़ि० जो रईसे मक्का (उक्बा बिन अबी मुईत) की बेटी थीं और मुसलमान हो चुकी थीं, मदीना हिज्रत करके आई, लेकिन उनके साथ उनके दोनों भाई अम्मरा और वलीद भी आए और आंहज़रत सल्ल० से दरख़्वास्त की कि इनको वापस दे दीजिये आप सल्ल० ने मंजूर नहीं फरमाया।<sup>(2)</sup> सहाबा में से जिन लोगों की अज़्याज मक्का में रह गई थीं और अब तक काफ़िरा थीं सहाबा रज़ि० ने उनको तलाक़ दे दी।<sup>(3)</sup>

हुदैबिया की सुलह को खुदा ने फ़त्ह कहा है, लेकिन अज्साम की नहीं कुलूब की, इस्लाम को अपनी इशाअ़त के लिये जो अम्न दरकार था वह इस सुलह से हासिल हो गया था, इस सुलह को खुद दुश्मन फ़त्ह समझते थे, कुरैश और मुसलमानों में अब तक जो मअ़रके हुए फौजी हैसियत से

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुशशुरूत, बाबुशशुरूत फ़िल जिहाद

कुरैश की सफ़ में हर जगह ख़ालिद बिन वलीद का नाम मुम्ताज़ नज़र आता है, जाहिलीयत में रिसाला की अफ़सरी उन्हीं के सिपुर्द थी, उहुद में कुरैश के उखड़े हुए पांच उन्हीं की कोशिशों से संभले थे, हुदैबिया के मौक़ा पर भी कुरैश का तलाया उन्हीं की ज़ेरे अफ़सरी नज़र आया था, लेकिन कुरैश का यह सिपहसालारे अअूज़म भी आखिर इस्लाम के हमलए कारी से बच न सका।<sup>(1)</sup>

सुलह हुदैबिया के बाद हज़रत ख़ालिद ने मक्का से निकल कर मदीना का रुख़ किया, रास्ता में हज़रत अम्र बिन अलआस मिले, पूछा किधर का क़स्द है? बोले इस्लाम लाने जाता हूं आखिर कब तक? अम्र बिन अलआस ने कहा हमारा भी यही इरादा है, दोनों साहब एक साथ बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।<sup>(2)</sup> और अब वह जौहर जो इस्लाम की मुख़ालफ़त में सफ़ हो रहा था, इस्लाम की मुहब्बत में सफ़ होने लगा।

फ़त्हे मक्का में हज़रत ख़ालिद जब एक मुसलमान दस्ता के अफ़सर बन कर आंहज़रत सल्ल० के सामने से गुज़रे, आप सल्ल० ने पूछा कौन? लोगों ने कहा, ख़ालिद हैं, आपने फ़रमाया खुदा की तलवार है।<sup>(3)</sup>

ग़ज़वए मौता में जब हज़रत जअफ़र, जैद बिन हारसा और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़िअल्लाहु अन्हुम के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने अलम अपने हाथ में लिया तो मुसलमान ख़तस से बाहर थे।

(1) सीरतुन्बी 1-473 (2) अलइसाबा 1-418 (3) सुनन तिर्मिज़ी अबवाबुल मनाकिब

अहदे खिलाफ़त में एक (ख़ालिद रज़ि०) ने शाम का मुल्क कैसर से छीन लिया और दूसरा (अम्र बिन अलआस रज़ि०) मिस्र का फ़ातेह हुआ।<sup>(1)</sup>

### सत्रातीन व उमराअ० को दावते इस्लाम

7 हिँ० के मुहर्रम की पहली तारीख़ थी कि नबी सल्ल० ने बादशाहाने आलम के नाम दावते इस्लाम के खुतूत मुबारक अपने सफ़ीरों के हाथ रखाना फ़रमाए, जो सफ़ीर जिस कौम के पास भेजा गया वह वहां की ज़बान जानता था ताकि तब्लीग़ बखूबी कर सके।<sup>(2)</sup>

अब तक नबी सल्ल० ने कोई मुहर न बनाई थी, जब शाहाने आलम के खुतूत लिखे गए तो उन पर मुहर करने के लिये खातिम तैयार की गई, यह चांदी की थी, तीन सुतूर में यह इबारत कंदा थी।<sup>(3)</sup> (محمد رسول اللہ)

उन खुतूत के देखने से मअ़्लूम होता है कि खुतूत ईसाई बादशाहों के नाम थे, उनमें खुसूसियत से यह आयते शरीफ़ भी थी:

بِأَهْلِ الْكِتَابِ تَعَالُوا إِلَيْنَا كَلِمَةُ سَرَّاً بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لَا  
نَعْبُدُ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَجَزَّءَ بَعْضُنَا بَعْضًا  
أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ

‘ऐ अहले किताब! आओ ऐसी बात पर इत्तिफ़ाक करें जो हमारे तुम्हारे दीन में मुसावी है यज़नी खुदा

(1) सीरियन्स 1-474 (2) तबक़त इब्ने सज़्द 2-23 (3) सहीहुल खुखारी किताबुल खियास, बाब खालिदु मु फ़िल खसिर

के सिवा किसी दूसरे की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराएं और खुदा के सिवा खुदाई का दर्जा हम अपने जैसे इंसानों के लिये तज्जीज़ न करें।”

अब हम मुख्तसर तौर पर उस सिफारतों का हाल दर्ज करते हैं।

### नामए मुबारक बनाम नजाशी शाहै हब्शा

असहम बिन अब्जर बादशाहे हबश अल मुलक्कब बनजाशी के पास अप्र बिन उमय्या अज्जुम्री आंहज़रत सल्ल0 का नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह ईसाई था।<sup>(1)</sup>

तारीखे तबरी से नामा मुबारक का तर्जुमा नक्ल किया जाता है।

### बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

“यह ख़त अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल0) की तरफ से नजाशी असहम बादशाहे हबश के नाम है, तुझे सलामती हो, मैं पहले अल्लाह की सताइश करता हूं जो मलिक, कुदूस, सलाम, मोमिन और मुहैमिन है, और ज़ाहिर करता हूं कि ईसा बिन मरयम अलै0 अल्लाह की मख्लूक और उसका हुक्म हैं, जो मरयम अलै0 बतूल तथियबा की जानिब भेजा गया और उन्हें ईसा अलै0 का उससे हमल ठहर गया, खुदा ने ईसा अलै0 को अपनी

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-689

रुह और नफ़्ख़ से इस तरह पैदा किया जैसा कि आदम अलै० को अपने हाथ और नफ़्ख़ से पैदा किया था, अब मेरी दावत यह है कि तू खुदा पर जो अकेला और लाशरीक है, ईमान ले आ, और हमेशा उसकी फ़रमां बदारी में रहा कर और मेरा इत्तिबा कर और मेरी तअ़्तीम का सच्चे दिल से इकरार कर, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूं।  
मैं कब्ल इसके उस मुल्क में अपने चर्चेरे भाई जअफ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेज चुका हूं, तुम उसे बआराम ठहरा लेना, नजाशी! तुम तकब्बुर छोड़ दो क्योंकि मैं तुमको और तुम्हारे दरबार को खुदा की तरफ़ बुलाता हूं, देखो मैंने अल्लाह का हुक्म पहुंचा दिया और तुम्हें बखूबी समझा दिया, अब मुनासिब है कि मेरी नसीहत मान लो, सलाम उस पर जो सीधी राह पर चलता है।”<sup>(1)</sup>

नजाशी इस फरमान मुबारक पर मुसलमान हो गया, और जवाब में यह अरीज़ा तहरीर किया:

**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**

“मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में नजाशी असहम बिन अब्जर की तरफ़ से, ऐ नबी अल्लाह के, आप पर अल्लाह की सलामती, रहमत, और बरकतें हों, उसी खुदा की जिसके सिवा कोई मअ़बूद

(1) तारीखे तबरी 2-131, 132, जादुल मज़ाद 3-689

नहीं, और जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत फरमाई है, अब अर्ज़ यह है कि हुजूर सल्ल० का फरमान मेरे पास पहुंचा, ईसा अलै० के मुतअल्लिक जो कुछ आपने तहरीर फरमाया है, बखुदाए ज़मीन व आसमान वह उससे ज़रा बराबर भी बढ़ कर नहीं, उनकी हैसियत इतनी ही है जो आपने तहरीर फरमाई है, हमने आपकी तअलीम सीख ली है और आपका चचेरा भाई और मुसलमान मेरे पास आराम से हैं, और मैं इक़रार करता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, सच्चे हैं और रास्त बाज़ों की सच्चाई ज़ाहिर करने वाले हैं, मैं आप से बैअंत करता हूं, मैंने आपके चचेरे भाई के हाथ पर बैअंत और अल्लाह की फरमांबरदारी का इक़रार कर लिया है, और मैं हुजूर सल्ल० की खिदमत में अपने फरज़द अरहा को रखाना करता हूं, मैं तो अपने ही नफ़्स का मालिक हूं अगर हुजूर सल्ल० का मंशा होगा कि मैं हाज़िर खिदमत हो जाऊं तो ज़रूर हाज़िर हो जाऊंगा, क्योंकि मैं यकीन करता हूं कि हुजूर सल्ल० जो फरमाते हैं वही हक़ है, ऐ खुदा के रसूल सलाम आप पर ।”<sup>(1)</sup>

### बनाम शाहे बहरैन

(2) मुंज़िर बिन सावी शाहे बहरैन था, शहंशाहे फारस का खिराज गुज़ार था, अलाअू बिन अलहज़रमी उसके पास

(1) तारीखे तबरी 2-232, ज़ादुल मआद 3-690 नजाशी और कैसर व किसा को फरमाने मुबारक इसाल करने का ज़िक्र इजमालन सहीह मुस्लिम में मौजूद है, किताबुल जिहाद वस्तियर, बाब कुतुबुन्नबी सल्ल०

नामए मुबारक लेकर गए थे, यह मुसलमान हो गया और इसकी रिआया का अक्सर हिस्सा भी मुसलमान हुआ, उसने जवाब में आंहज़रत सल्ल0 की खिदमत में लिखा था कि बअूज़ लोगों ने तो इस्लाम को अज़हद पसंद किया है, बअूज़ ने कराहत का इज़हार किया है, बअूज़ ने मुख़ालफ़त की है, मेरे इलाका में यहूदी और मजूसी बहुत हैं, उनके लिये जो इशाद हो किया जाए, नबी सल्ल0 ने जवाब में तहरीर फ़रमाया था:

وَمَنْ يَنْصُحُ فِلِنْفِسِهِ، وَمَنْ أَقَامَ عَلَىٰ يَهُودِيَّةٍ أَوْ مَجُوسِيَّةٍ  
فَعَلَيْهِ الْجِزِيرَةُ

“जो न सीहत करता है वह अपने लिये, और जो यहूदीयत या मजूसीयत पर काइम रहे वह जिज्या (खिराज रईयताना) दिया करे।”<sup>(1)</sup>

### बनाम शाहे उम्मान

(3) जैफ़र व अब्द फ़रज़ दाने जुलंदी मालिक उम्मान के नाम अम्र बिन अलअ़ास रज़ि0 के बदस्त ख़त भेजा गया, अम्र का कौल है कि जब मैं उम्मान पहुंचा तो पहले अब्द को मिला, यह सरदार था और अपने भाई की निस्बत ज़्यादा नर्म व खुश खुल्क था, मैंने उसे बताया कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 का सफ़ीर हूं और तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास आया हूं।

अब्द बोला मेरा भाई उम्र में मुझसे बड़ा और मुल्क का

(1) जादुल मज़ाद 3-693, उयूनुल असर 2-266

मालिक है, मैं तुम्हें उसकी ख़िदमत में पहुंचा दूंगा, मगर यह तो बताओ कि तुम किस चीज़ की दावत देते हो?

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने कहा: अकेले खुदा की तरफ़ जिसका कोई शरीक नहीं, नीज़ इस शहादत की तरफ़ कि मुहम्मद सल्ल० खुदा के बंदे और (उसके) रसूल हैं।

अब्द ने कहा अम्र तू सरदारे कौम का बेटा है, बता तेरे बाप ने क्या किया, क्योंकि हम उसे नमूना बना सकते हैं?

अम्र बिन अलआस रज़ि० ने जवाब दिया वह मर गया, नबी सल्ल० पर ईमान न लाया था, काश वह ईमान लाता और आंहज़रत सल्ल० की रास्त बाज़ी का इक़रार करता, मैं भी अपने बाप की राए पर था हत्ताकि खुदा ने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई।

अब्दः तुम कब से मुहम्मद (सल्ल०) के पैरु हो गए हो?

अम्र बिन अलआस रज़ि०: अभी थोड़ा अर्सा हुआ।

अब्दः कहाँ?

अम्र बिन अलआस रज़ि०: नजाशी के दरबार में, और नजाशी भी मुसलमान हो गया।

अब्दः वहाँ की रिआया ने नजाशी के साथ क्या सुलूक किया?

अम्र बिन अलआस रज़ि०: उसे बदस्तूर बादशाह रहने दिया और उन्होंने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

अब्दः (तअज्जुब से) क्या बिशप पादरयों ने भी?

अम्र बिन अलआस रज़ि०: हाँ!

अब्दः देखो अम्र क्या कह रहे हो, इंसान के लिये कोई चीज़ भी झूट से बढ़ कर ज़िल्लत बख्शा नहीं।

अम्र बिन अलअ़ास रज़ि०: मैंने झूट नहीं कहा और इस्लाम में झूट बोलना जाइज़ भी नहीं।

अब्दः हिरक़ल ने क्या किया, क्या उसे नजाशी के इस्लाम लाने का हाल मअ़्लूम है?

अम्र बिन अलअ़ास रज़ि०: हाँ!

अब्दः तुम क्योंकर ऐसा कह सकते हो?

अम्र बिन अलअ़ास रज़ि०: नजाशी हिरक़ल को खिराज दिया करता था, जब से मुसलमान हुआ कह दिया है कि अब अगर वह एक दिरहम भी मांगे तो न दूंगा।

हिरक़ल तक यह बात पहुंच गई, हिरक़ल के भाईयन्नाक़ ने कहा यह नजाशी हुजूर का अदना गुलाम अब खिराज देने से इंकार करता है और हुजूर के दीन को भी उसने छोड़ दिया है, हिरक़ल ने कहा फिर क्या हुआ उसने अपने लिये एक मज़हब पसंद कर लिया और क़बूल कर लिया, मैं क्या करूँ? बुखुदा अगर इस शहंशाही का मुझे ख़्याल न होता तो मैं भी वही करता जो नजाशी ने किया है।

अब्दः देखा अम्र! क्या कह रहे हो?

अम्र बिन अलअ़ास रज़ि०: क़सम है खुदा की सच कह रहा हूँ।

अब्दः अच्छा बताओ वह किन चीज़ों के करने का हुक्म देते

हैं और किन चीज़ों से मना करते हैं।

अम्र बिन अलअास रज़ि०: वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की इताअत का हुक्म देते हैं और मअ़सियते इलाही से रोकते हैं, वह ज़िना, शराब के इस्तेमाल से और पत्थरों, बुतों और सलीब की परस्तिश से मना फ़रमाते हैं।

अब्दः कैसे अच्छे अहकाम हैं जिनकी वह दावत देते हैं, काश मेरा भाई मेरी राए कबूल करे, हम दोनों मुहम्मद सल्ल० की ख़िदमत में जाकर ईमान लाएं।

मैं समझता हूं कि अगर मेरे भाई ने इस पैग़ाम को रद किया और दुन्या ही का राग़िब रहा तो वह अपने मुल्क के लिये भी सरापा नुक़सान साबित होगा।

अम्र बिन अलअास रज़ि०: अगर वह इस्लाम कबूल करेगा तो नबी सल्ल० उसी को इस मुल्क का बादशाह तस्लीम फ़रमा लेंगे, वह सिफ़ इतना करेंगे कि यहां सदका वसूल करके यहां के गुरबा को तकसीम करा दिया करेंगे।

अब्दः यह तो अच्छी बात है, मगर सदका से क्या मुराद है?

अम्र बिन अलअास रज़ि० ने ज़कात के मसाइल बताए, जब यह बताया कि ऊंट में भी ज़कात है, तो अब्द बोला क्या वह हमारे मवाशी में से भी सदका देने को कहेंगे? वह तो खुद ही दरख़तों के पत्तों से पेट भर लेता और खुद ही पानी पीता है।

अम्र बिन अलअास रज़ि० ने कहा, हाँ! ऊंटों से सदका लिया जाता है।

अब्दः मैं नहीं जानता कि मेरी कौम के लोग जो तअदाद में

ज्यादा हैं और दूर दूर तक बिखरे पड़े हैं वह इस हुक्म को मान लेंगे।

अलगुर्ज अम्र बिन अलआस रजि० वहां चंद रोज़ ठहरे, अब्द रोज़ रोज़ की बातें अपने भाई को पहुंचाया करता था, एक रोज़ अम्र बिन अलआस रजि० को बादशाह ने तलब किया, चोबदारों ने दोनों जानिब से बाजू थाम कर उन्हें बादशाह के हुजूर में पेश किया, बादशाह ने फ़रमाया इन्हें छोड़ दो, चोबदारों ने छोड़ दिया, यह बैठने लगे, चोबदारों ने फिर टोका, उन्होंने बादशाह की तरफ देखा, बादशाह ने कहा, बोलो तुम्हारा क्या काम है?

अम्र बिन अलआस रजि० ने ख़त दिया जिस पर मुहर सब्त थी।

जैफ़र ने मुहर तोड़कर ख़त खोला, पढ़ा, फिर भाई को दिया, उसने भी पढ़ा, और अम्र बिन अलआस रजि० ने देखा कि भाई ज्यादा नर्म दिल है।

बादशाह ने पूछा कि कुरैश का क्या हाल है?

अम्र बिन अलआस रजि० ने कहा: सबने तौअन व करहन उनकी इताअत इखियार कर ली है।

बादशाह ने पूछा कि उनके साथ रहने वाले कौन लोग हैं?

अम्र बिन अलआस रजि०: जिन्होंने इस्लाम को बरज़ा व रग़बत कबूल किया, सब कुछ छोड़ कर नबी सल्ल० को इखियार कर लिया है और पूरी फ़िक्र और अक़ल व तर्जबा से नबी सल्ल० की जांच कर ली है, बादशाह ने कहा अच्छा

तुम कल फिर मिलना, अप्रबिन अलअ़ास रज़ि० दूसरे रोज़ बादशाह के भाई से फिर मिले, वह बोला कि अगर हमारी हुकूमत को सदमा न पहुंचे तो बादशाह मुसलमान हो जाएगा।

अप्रबिन अलअ़ास रज़ि० फिर बादशाह से मिले।

बादशाह ने कहा, मैंने इस मुआमला में गौर किया, देखो अगर मैं ऐसे शख्स की इताउत इखिलयार करता हूं जिसकी फौज हमारे मुल्क तक नहीं पहुंची तो मैं सारे अरब में कमज़ोर समझा जाऊंगा, हालांकि अगर उनकी फौज इस मुल्क में आए तो मैं ऐसी सख्त लड़ाई लड़ूंगा कि तुम्हें कभी साबिक़ा न हुआ हो।

अप्रबिन अलअ़ास रज़ि० ने कहा बेहतर मैं कल वापस चला जाऊंगा।

बादशाह ने कहा नहीं! कल तक ठहरो।

दूसरे दिन बादशाह ने उन्हें आदमी भेजकर बुलाया और दोनों भाई मुसलमान हो गए और रिआया का अक्सर हिस्सा भी इस्लाम ले आया।<sup>(1)</sup>

### बनाम हाकिमे दमिश्क् व हाकिमे यमामा

(4) मुंज़िर बिन हारिस बिन अबू शिमर दमिश्क् का हाकिम और शाम का गवर्नर था, शुजाअ़ बिन वहबुल असदी उसके पास बतौरे सिफारत भेजे गए, यह ख़त पढ़कर बहुत बिगड़ा, कहा मैं खुद मदीना पर हमला करूंगा बिल-

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-693 ता 696, नसबुर्या 4-423, 424, उयूनुल असर 2-267 ता 269

आखिर सफ़ीर को बएज़ाज़ रुख़त किया, मगर मुसलमान न हुआ।<sup>(1)</sup>

(5) हौज़ह बिन अली हाकिमे यमामा ईसाइयुल मज़हब था, सुलैत बिन अम्र रज़ि० नामए मुबारक उसके पास ले गए थे, उसने कहा कि अगर इस्लाम पर मेरी आधी हुकूमत तस्लीम कर ली जाए तो मुसलमान हो जाऊंगा, हौज़ा इस जवाब से थोड़े दिनों बाद हलाक हो गया।<sup>(2)</sup>

### बनाम शाहे इस्कंदरिया

(6) जुरैह बिन मत्ता अलमुलक़ब बिही मुकौक़स शाहे इस्कंदरिया व मिस्र ईसाइयुल मज़हब था, हातिब रज़ि० बिन अबी बलतअ़ा उसके पास सफ़ीर होके गए थे, नबी सल्ल० ने ख़त के आखिर में तहरीर फ़रमा दिया था कि अगर तुमने इस्लाम से इंकार किया तो तमाम मिस्रियों (अह्ले क़िब्ला) के मुसलमान न होने का गुनाह तुम्हारी गर्दन पर होगा।

सफ़ीर ने ख़त पहुंचाने के अलावा बादशाह को इन अलफ़ाज़ में समझाया था:

“साहब! आप से पहले इस मुल्क में एक शख्स हो चुका है जो “اَنْارْبُكُمُ الْأَعْلَى” (मैं तुम लोगों का बड़ा खुदा हूँ) कहा करता था, और खुदा ने उसे दुन्या और आखिरत की रुस्वाई दी, जब खुदा का ग़ज़ब भड़का तो वह मुल्क वगैरा कुछ भी न रहा, इसलिये तुम दूसरों को देखो और इबरत पकड़ो, यह न हो कि दूसरे तुम से इबरत लिया

(1) ज़ादुल मज़ाद ३-६९७ (2) ज़ादुल मज़ाद ३-६९६, उयूनुल अस २-२६९

करें।”

बादशाह ने कहा हम खुद एक मज़हब रखते हैं, उसे तर्क नहीं करेंगे, जब तक उससे बेहतर दीन कोई न मिले।

हज़रत हातिब रज़ि० ने कहा, मैं आपको उस दीन की जानिब बुलाता हूं जो जुम्ला मज़ाहिब से किफ़ायत कुनिंदा है।

नबी सल्ल० ने सब ही को दावते इस्लाम फ़रमाई है, कुरैश ने मुख़ालफ़त की है और यहूद ने अदावत की, लेकिन सब में से मवद्दत व मुहब्बत के साथ क़रीब तर नसारा रहे हैं, बखुदा जिस तरह हज़रत मूसा अलै० ने हज़रत ईसा अलै० के लिये बशारत दी, इसी तरह हज़रत ईसा अलै० ने मुहम्मद सल्ल० की बशारत दी है, कुर्झन मजीद की दावत हम आपको उसी तरह देते हैं जैसे आप अह्ले तौरात को इंजील की दावत दिया करते हैं।

जिस नबी को जिस क़ौम का ज़माना मिला वही क़ौम उसकी उम्मत समझी जाती है, इसलिये आप पर लाज़िम है कि ‘उस नबी की इताउत करें जिसका अहद आपको मिल गया है और यह समझ लें कि हम आपको हज़रत मसीह अलै० के मज़हब ही की दावत देते हैं।

मुक़ौक़श ने कहा, मैंने इस नबी के बारे में ग़ौर किया, हुनूज़ मुझे कोई रग़बत मअलूम नहीं हुई, अगर्चे वह किसी मरगूब शैय से नहीं रोकते हैं, मैं जानता हूं कि वह साहिर ज़रर रसां हैं, न काहिन काज़िब, और उनमें तो नुबूव्वत ही

की अलामत पाई जाती है बहरहाल मैं इस मुआमला में  
मज़ीद गौर करूँगा ।

फिर आंहज़रत सल्ल० के ख़त को हाथी दांत के डब्बे  
में रखवा कर मुहर लगवाकर ख़ज़ाना में रखवा दिया,  
आंहज़रत सल्ल० के लिये तहाइफ़ भेजे और जवाबे ख़त में  
यह लिखा कि यह तो मुझे मअ़लूम है कि एक नबी का  
जुहूर बाकी है, मगर मैं यह समझता रहा कि वह रसूल मुल्के  
शाम में होंगे ।

दुलदुल, मशहूर ख़च्चर, इसी ने तोहफे में भेजा था ।<sup>(1)</sup>

### बनामे हिरक़ल शाहे कुस्तुन्तुनिया

(7) हिरक़ल शाहे कुस्तुन्तुनिया या रूमा की मशिरकी  
शाख़े सलतनत का नामवर शहंशाह ईसाइयुल मज़हब था,  
हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा अलकल्बी रज़ि० उसके पास  
नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह से बैतुल मक़िदस  
के मकाम पर मिले, हिरक़ल ने सफ़ीर के एज़ाज़ में बड़ा  
शानदार दरबार किया और सफ़ीर से नबी सल्ल० के  
मुतअ़लिक बहुत ही बातें दरयापूत करता रहा ।

इसके बाद हिरक़ल ने मज़ीद तहकीक़ात करना भी  
ज़रूरी समझा, हुक्म दिया कि अगर मुल्क में कोई शख़्स  
मक्का का आया हुआ मौजूद हो तो पेश किया जाए ।

इत्तिफ़ाक़ से उन दिनों अबू सुफ़यान मअ़ दीगर  
ताजिराने मक्का शाम आए हुए थे, उन्हें बैतुल मक़िदस

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-691, नसबुर्या 4-421-422, उयूनुल अस्स 2-665, 666

पहुंचाया और दरबार में पेश किया गया, कैसर ने हमराही ताजिरों से कहा कि मैं अबू सुफ़्यान से सवाल करूँगा अगर यह कोई जवाब ग़लत दें तो मुझे बता देना ।

अबू सुफ़्यान उन दिनों नबी सल्ल० के जानी दुश्मन थे, उनका अपना व्यापार है कि अगर मुझको यह डर न होता कि मेरे साथ वाले मेरा झूट ज़ाहिर कर देंगे तो मैं बहुत सी बातें बनाता, मगर उस वक्त कैसर के सामने मुझे सच सच ही कहना पड़ा ।

**सवाल व जवाब यह हैं:-**

**कैसरः** मुहम्मद (सल्ल०) का खानदान और नसब कैसा है?

**अबू सुफ़्यानः** शरीफ़ व अज़ीम ।

यह जवाब सुनकर हिरव़ल ने कहा, “सच है नबी शरीफ़ धराने के होते हैं ताकि उनकी इताउत में किसी को आर न हो ।”

**कैसरः** मुहम्मद (सल्ल०) से पहले भी किसी ने अरब में नबी होने का दावा किया है?

**अबू सुफ़्यानः** “नहीं ।”

यह जवाब सुनकर हिरव़ल ने कहा “अगर ऐसा होता होतो मैं समझ लेता कि अपने से पहले की तक़लीद और रेस करता है ।

**कैसरः** नबी होने से पहले क्या यह शख्स झूट बोला करता था, इसको झूट बोलने की कभी तोहमत दी गई थी?

**अबू सुफ़्यानः** “नहीं”

हिरक़ल ने इस जवाब पर कहा ‘‘यह नहीं हो सकता कि जिस शख्स ने लोगों पर झूट न बोला वह खुदा पर झूट बांधे।’’

कैसरः उसके बाप दादा में से कोई शख्स बादशाह भी हुआ है?

अबू सुफ़्यानः ‘‘नहीं।’’

हिरक़ल ने इस जवाब पर कहा ‘‘अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता नुबूव्वत के बहाने से बाप दादा की सलतनत हासिल करना चाहता है।

कैसरः मुहम्मद (सल्ल०) के मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ज़्यादा हैं या सरदार और क़वी लोग?

अबू सुफ़्यानः मिस्कीन और हकीर लोग।

हिरक़ल ने जवाब पर कहा हर एक नबी के पहले मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ही होते रहे हैं।

कैसरः उन लोगों की तज़्दाद रोज़ बरोज़ बढ़ रही है या कम हो रही है?

अबू सुफ़्यानः बढ़ रही है।

हिरक़ल ने कहा, ईमान का यही ख़ास्सा है कि आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता और हद्दे कमाल तक पहुंच जाता है।

कैसरः कोई शख्स उनके दीन से बेज़ार होकर फिर भी जाता है?

अबू सुफ़्यानः ‘‘नहीं।’’

हिरक़ल ने कहा ‘‘लज़्ज़ते ईमान की यही तअ्रसीर है कि

जब दिल में बैठ जाती है और रुह पर अपना असर काइम कर लेती है तब जुदा नहीं होती ।”

कैसरः यह शख्स कभी अहद व पैमान को ठोड़ भी देता है?

अबू सुफ़्यानः नहीं, इम्साल हमारा इससे मुआहदा हुआ है देखिये क्या अंजाम हो?

अबू सुफ़्यान कहते हैं कि मैं सिर्फ़ इस जवाब में इतना फ़िक्रा ज्यादा कर सका था, मगर कैसर ने उस पर कुछ तवज्जोह न की और यूँ कहा, बेशक नबी अहद शिकन नहीं होते, अहद शिकनी दुन्यादार ही करता है, नबी दुन्या के तालिब नहीं होते ।

कैसरः कभी उस शख्स के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई?

अबू सुफ़्यानः “हां ।”

कैसरः जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफ़्यानः कभी वह ग़ालिब रहे (बद्र में) और कभी हम (उहुद में) ।

हिरक़ल ने कहा “खुदा के नबियों का यही हाल होता है लेकिन आखिर खुदा की मदद और फ़ल उन ही को हासिल होती है ।”

कैसरः उनकी तअ़्लीम क्या है?

अबू सुफ़्यानः एक खुदा की इबादत करो, बाप दादा के तरीक (बुत परस्ती) को छोड़ दो, नमाज़, रोज़ा, सच्चाई, पाकदामनी, सिला रहम की पाबंदी इखिलयार करो ।

हिरक़ल ने कहा “कि नबीये मौऊद की यही अलामतें

हमको बताई गई हैं, मैं समझता था कि नबी का जुहूर होने वाला है, लेकिन यह न समझता था कि वह अरब में से “होगा” अबू सुफ्यान! अगर तुमने सच सच जवाब दिये हैं तो वह एक रोज़ इस जगह का जहां मैं बैठा हुआ हूं (शाम व बैतुल मक्किदस) का ज़रूर मालिक हो जाएगा, काश मैं उनकी खिदमत में पहुंच सकता और नबी (सल्ल०) के पांव धोया करता।

इसके बाद आंहज़रत सल्ल० का नामए मुबारक पढ़ा गया, अराकीने दरबार उसे सुन कर बहुत चीखे और चिल्लाए और हमको दरबार से बाहर निकाल दिया गया, अबू सुफ्यान कहते हैं कि मेरे दिल में उसी रोज़ से अपनी ज़िल्लते नफ़्स और आंहज़रत सल्ल० की आइंदा अज़मत का यकीन हो गया।<sup>(1)</sup>

### बनाम किस्या शाहे ईरान

(8) खुस्तु व परवेज़ किस्रा ईरान (निस्फ़ मशिरकी दुन्या) का शहंशाह था, ज़रतुश्ती मज़हब रखता था, अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा उसके पास नामए मुबारक ले गए थे, नामए मुबारक की नक़्ल यह है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ إِلَىٰ كِسْرَى عَظِيمٍ فَارَسَ، سَلَامٌ  
عَلَىٰ مَنِ التَّبَعَ الْهُدَىٰ وَآمَنَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَشَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ  
إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ،

(1) सहीहुल बुखारी, किताब बदूल वह्य, बाब हहसना अबुल यमान हकीम बिन नाफेज, सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्तिसयर, बाब किताबुन्नबी सल्ल० इलाहिरक्त।

وَادْعُوكَ بِدِعَايَةِ اللَّهِ فَإِنِّي أَنَا رَسُولُ اللَّهِ إِلَى النَّاسِ كَافِةً  
لِينْذِرَ مَنْ كَانَ حَيَا وَيَحْقُّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ، أَسْلِمْ  
تَسْلِمْ، فَإِنْ أَبْيَثَ فَعَلَيْكَ إِثْمُ الْمَجُوسِ.

अल्लाह रहमाने रहीम के नाम से:-

“मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ से किस्रा बुजुर्ग  
फ़ारस के नाम, सलाम उस पर जो सीधे रास्ता पर  
चलता और खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता  
और यह शहादत अदा करता है कि खुदा के सिवा  
कोई इबादरत के लाइक नहीं और मुहम्मद सल्ल०  
उसका बंदा और रसूल है, मैं तुझे खुदा के पैग़ाम  
की दावत देता हूं और मैं खुदा का रसूल हूं, मुझे  
जुम्ला नस्ले आदम की तरफ भेजा गया है ताकि  
जो कोई ज़िंदा है उसे अज़ाबे इलाही का डर  
सुनाया जाए और जो मुन्किर हैं उन पर खुदा का  
कौल पूरा हो, तू मुसलमान हो जा सलामत रहेगा,  
वर्ना मजूस का गुनाह तेरे ज़िम्मा होगा।”

खुस्ल ने देखते ही ख़त गुस्से से चाक कर डाला और  
ज़बान से कहा मेरी रिआया का अदना शख़्स मुझको ख़त  
लिखता है और अपना नाम मेरे नाम से पहले तहरीर करता  
है?

उसने खुस्ल बाज़ान को जो यमन में उसका वाइस्ताए  
(नाइबे सलतनत) था और अरब का तमाम मुल्क उसी के  
ज़ेरे इक़ितदार या ज़ेरे असर समझा जाता था, यह हुक्म भेजा

कि उस शख्स (नबी सल्ल०) को (मआज़ल्लाह) गिरफ्तार करके मेरे पास रवाना कर दो।

बाज़ान ने एक फौजी दस्ता मामूर किया फौजी अफ़सर का नाम खुर्रखुस्ता था, एक मुल्की अफ़सर भी रवाना किया जिसका नाम बाबवैह था, बाबवैह को यह हिदायत की थी कि आंहज़रत सल्ल० के हालात पर गहरी नज़र डाले और आंहज़रत सल्ल० को किसा के पास पहुंचा दे, लेकिन अगर आप साथ जाने से इंकार करें वापस आकर रिपोर्ट करे।

जब यह अफ़सर मदीना में नबी सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए तो नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि वह कल को फिर हाज़िर हों, दूसरे रोज़ नबी सल्ल० ने फ़रमाया: “आज रात तुम्हारे बादशाह को खुदा ने हलाक कर डाला, जाओ और तहकीक करो, अफ़सर यह खबर सुनकर यमन को लौट गए, वहां वाइस्ताए के पास सरकारी इत्तिला आ चुकी थी खुस्तू को उसके बेटे ने कत्ल कर दिया है और तख्त का मालिक “शेरवैह” है जो बाप का कातिल था।

अब बाज़ान ने नबी सल्ल० के आदात व अख्लाक और तज़्लीम व हिदायत के मुतज़लिक कामिल तहकीकात कीं और तहकीकात के बाद मुसलमान हो गया, दरबार और मुल्क का अक्सर हिस्सा मुसलमान हो गया।<sup>(1)</sup>

जो सफीर नबी सल्ल० ने भेजा था उसने वापस आकर

(1) तारीखे तबरी 2-133

अर्ज किया कि शाहे ईरान ने नामए मुबारक चाक कर डाला, उस वक्त नबी सल्ल० ने फरमाया “مَرْزُقُ مُلْكَه” (उसने अपनी कौम के फरमाने सलतनत को चाक कर दिया है।)<sup>(1)</sup>

नाज़िरीन! इस मुख्तसर और पुरहैबत जुम्ला को देखें और सवा चौदह सौ बरस की तारीखे आलम में तलाश करें कि किसी जगह उस कौम की सलतनत का निशान मिलता है जो इस वाकिआ से पेशतर चार पांच हज़ार बरस से निस्फ़ दुन्या पर शहंशाही करती थी और जिसकी फुतूहात बारहा यूनान व रूमा को नीचा दिखा चुकी थीं, हरगिज़ नहीं।

### ग़ज़्वर खैबर

खैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक मकाम का नाम है, यह यहूदियों की ख़ालिस आबादी का कस्बा था, आबादी के गिर्द गिर्द मुस्तहकम किले बने हुए थे।<sup>(2)</sup>

नबी सल्ल० को सफरे हुदैबिया से पहुंचे हुए अभी थोड़े ही दिन (एक माह से कम) हुए थे कि सुनने में आया कि खैबर के यहूदी फिर मदीना पर हमला करने वाले हैं, उन्होंने कबीला बनू ग़तफ़ान के चार हज़ार जंगजू बहादुरों को भी अपने साथ मिला लिया था और मुआहदा यह था कि अगर

(1) सहीहुल बुखारी में नामए मुबारक के चाक करने और आप सल्ल० की बहुआ किंग्रेस है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन्नबी सल्ल० इला किसा व कैसर।

(2) सीरते हलबीया 2-726

मदीना फ़त्ह हो गया तो पैदावार का निस्फ़ हिस्सा हमेशा  
बनू ग़तफ़ान को देते रहेंगे।<sup>(1)</sup>

नबी सल्ल0 ने इस ग़ज़वा में सिर्फ़ उन्हीं सहाबा को  
لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي  
وَعَدَ كُمْ“<sup>(2)</sup> की बशरत से मुम्ताज़ थे और जिनको ”اللَّهُ مَغَانِيمَ كَثِيرَةٌ تَأْخُذُونَهَا  
उनकी तअ़दाद सोलह सौ थी जिनमें दो सौ सवार थे।<sup>(3)</sup>

लशकरे इस्लाम आबादिये ख़ैबर के मुत्तसिल रात के  
वक्त पहुंच गया था, नबी सल्ल0 की आदते मुबारक यह थी  
कि रात को लड़ाई शुरू न करते और न कभी शबखून डाला  
करते, इसलिये लशकरे इस्लाम ने मैदान में डेरे डाल दिये।<sup>(4)</sup>  
यह मैदान अहले ख़ैबर और बनू ग़तफ़ान के दर्मियान पड़ता  
था, इस तदबीर का फ़ाएदा यह हुआ कि जब बनू ग़तफ़ान  
यहूदियाने ख़ैबर की मदद के लिये निकले तो उन्होंने लशकरे  
इस्लाम को सद्दे राह पाया और इसलिये चुपचाप अपने घरों  
को वापस चले गए।<sup>(5)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सबसे पहले ख़ैबर के किलों की  
तरफ़ तवज्जोह फरमाई, और एक एक करके उन किलों को  
फ़र्फ़ करना शुरू किया, उन किलों में एक ऐसा किला था

(1) सीरियस नबी सल्ल0 1-478, मन्कूल अज़ तारीखुल ख़मीस

(2) सीरियस हलबीया 2-726

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ैबर

(4) इब्ने हिशाम 2-230

जो नामवर यहूदी शहसवार मरहब का तख्त गाह था, उसको हज़रत अली रज़ि0 ने सर किया, उसका वाकिअा यह है कि यह किला मुसलमानों के लिये बहुत सख्त दुश्वार गुज़ार साबित हो रहा था और उनका काबू उस पर नहीं चल रहा था, हज़रत अली रज़ि0 की आंखें उस वक्त आशोब कर आई थीं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: “**لَا عَطِيَّنَ الرَّأْيَةَ**” “**غَدَارَ جُلَّا يُجْبِهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ يَفْتَحُ اللَّهُ عَلَىٰ يَدِيهِ**” (कल फौज का अलम उस शख्स को दिया जाएगा जिससे खुदा तआला और रसूलुल्लाह मुहब्बत करते हैं और खुदा तआला फ़त्ह इनायत फ़रमाएगा।) यह ऐसी तअरीफ़ थी कि जिसे सुनकर फौज के बड़े बड़े बहादुर अगले दिन की कमान मिलने के आरजूमंद हो गये थे, सुन्ह हुई तो नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 को याद फ़रमाया, लोगों ने अर्ज़ किया कि उन्हें आशोबे चश्म है और आंखों में दर्द भी होता रहा है, हज़रत अली रज़ि0 आ गए तो नबी सल्ल0 ने लुआब मुबारक जनाब मुर्तज़ा रज़ि0 की आंखों को लगा दिया, उसी वक्त आंखें खुल गईं, न आशोब की सुर्खी बाकी थी और न दर्द की तकलीफ़, फिर फ़रमाया अली जाओ, राहे खुदा में जिहाद करो, पहले इस्लाम की दावत दो बाद में जंग, अली! अगर तुम्हारे हाथ पर एक शख्स भी मुसलमान जो जाए तो यह काम भारी ग़नीमतों के हासिल हो जाने से बेहतर होगा।<sup>(1)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए खैबर, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़वए खैबर

ہجڑتِ اُلیٰ مُرْتَजَا رَجِّو نے کیلہ ناہم پر جنگ کی نجڑی ڈالی، مُوکَابَلے کے لیے کیلہ کا مشہور سردار مارہب جب میدان میں نیکلا، یہ اپنے آپ کو ہجڑا بہادر کے برابر کہا کرتا تھا، اُس نے آتے ہی یہ ریجڑ پढنا شروع کر دیا

قَدْ عِلِّمْتُ خَيْرًا إِنِّي مَرْحُبٌ  
شَاءِكَى السِّلَاحَ بَطْلٌ مُجَرْبٌ  
إِذَا لَقُلْوُبُ أَقْبَلَتْ تَلَهُبٌ

“خیبر جانتا ہے کہ میں ہدیثیار سجائے والا، بہادر، تجربکار مارہب ہوں، جب لوگوں کے ہوش مارے جاتے ہیں تو میں بہادری دی�ایا کرتا ہوں۔”

اسکے مُوکَابَلہ کے لیے ہجڑتِ اُمیر بینِ اُلیٰ اکتوبر رَجِّو نیکلا، وہ بھی اپنی ریجڑ پढتے جاتے تھے،

قَدْ عِلِّمْتُ خَيْرًا إِنِّي غَامِرٌ  
شَاءِكَى السِّلَاحَ بَطْلٌ مُفَافِرٌ

“خیبر جانتا ہے کہ میں ہدیثیار چلانے میں ہستاد، نبُردِ آنجما، تلخ ہوں میرا نام اُمیر ہے۔”

مارہب نے اُن پر تلواہ سے وار کیا، ہجڑتِ اُمیر رَجِّو نے اُسے ڈال پر روکا اور مارہب کے ہیتسےِ جُری پر وار چلایا، مگر اُنکی تلواہ جو لمبائی میں چوٹی تھی، اُن ہی کے گھٹنے پر لگی، جسکے سدما سے بیل آخیر شاہید ہو گئے، فیر ہجڑتِ اُلیٰ مُرْتَجَا رَجِّو نیکلا، ریجڑِ ہمدادی سے میدان گزج ٹھا، آپ فرماتے تھے-

أَنَّا الَّذِي سَمِّتُنِي أُمِّيْ حَيْدَرَةَ

كَلَيْثٌ غَابَاتٌ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَةُ

أُوفِيْهُمْ بِالصَّاعِ كَيْلَ السُّنْدَرَةِ

“मैं हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम शेरे ग़ज़बनाक रखा है, मैं जंगलों के शेर की तरह हूं और बहुत ही हैबतनाक हूं, मैं अपने पैमाने की सख़ावत से बड़े बड़े पैमाने अता करूँगा।”

हज़रत अली रज़ि० ने एक ही हाथ तलवार का ऐसा लगाया कि उसका काम तमाम हो गया, और फ़त्ह हो गई।<sup>(1)</sup>

ख़ैबर का वाकि़ा है कि एक सियाह फ़ाम हब्शी गुलाम जो अपने यहूदी आका की बकरियां चराता था, यह देखकर कि यहूदी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं, उनसे पूछा कि आप लोगों का क्या इरादा है? उन्होंने कहा कि हम उस शख्स से लड़ने जा रहे हैं जो नुबूव्वत का दावा करता है, उसके दिल में नबी सल्ल० का शौक पैदा हुआ वह अपना गल्ला लेकर आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्ल० से पूछा कि आप क्या फ़रमाते हैं और किस बात की दावत देते हैं? आप सल्ल० ने फ़रमाया ‘‘मैं इस्लाम की दावत देता हूं और यह कि तुम इसकी गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और यह कि मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूं और अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वा कर्द, किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबे अली रज़ि०

न करो” गुलाम ने कहा कि अगर मैंने यह गवाही दी और अल्लाह पर ईमान ले आया तो मुझे क्या मिलेगा? फ़रमाया: “अगर तुम इसी पर मरे तो जन्नत है।” गुलाम ने इस्लाम कबूल किया और अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 यह गल्ला मेरे पास अमानत है, मैं क्या करूँ? आप सल्ल0 ने फ़रमाया “उनको हँका दो और कंकरी मारो अल्लाह तुम्हारी अमानत अदा करा देगा” उसने ऐसा ही किया और बकरियां अपने मालिक के पास पहुंच गईं, मालिक समझ गया कि गुलाम मुसलमान हो गया, इतने में आंहज़रत सल्ल0 ने वअ़ज़ फ़रमाया और सहाबा को जिहाद पर उभारा, जब मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुकाबला हुआ तो शहीदों में यह गुलाम भी था, लोग उसकी लाश उठाकर ख़ेमा में ले गए, आंहज़रत सल्ल0 ने उसको देखकर फ़रमाया “अल्लाह ने इस गुलाम पर बड़ा फ़ू़ल फ़रमाया और इसको बड़ी तौफ़ीक दी” मैंने इसके सरहाने दो हूरें देखीं हालांकि इसको एक मर्तबा भी सज्दा करने की नौबत नहीं आई।<sup>(1)</sup>

इसी तरह का एक दूसरा वाकि़ा है कि आंहज़रत सल्ल0 की खिदमत में एक शख्स आया और उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 में सियाह फाम, कम रु आदमी हूं बू भी ख़राब है, माल भी मेरे पास नहीं है, अगर मैं यहूदियों से लड़ूं और मारा जाऊं तो क्या जन्नत में जाऊंगा? फ़रमाया “हां” यह सुन कर वह आगे बढ़ा, जंग की, और मारा गया, आंहज़रत सल्ल0 उसके पास आए, आपने फ़रमाया “अल्लाह

(1) दलाइलुन्नबूब्बा 4-219, ज़ादुल मज़ाद 3-323

ने तुम्हारा चेहरा हसीन कर दिया, तुम्हें खुशबूदार बना दिया और तुम्हें बहुत सा माल दिया, फिर फ़रमाया ‘‘मैंने देखा कि हूरों में से उसकी दो बीवियां हैं।’’<sup>(1)</sup>

खैबर की लड़ाई से पहले एक अअराबी आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, ईमान लाया और आप के साथ हो गया, आपने उसको एक सहाबी के सिपुर्द कर दिया कि वह उसकी तअ़्लीम व तरबियत करें, जब खैबर की जंग हुई और कुछ माल ग़नीमत हाथ आया तो आपने उस अअराबी का भी हिस्सा लगाया, अअराबी अपने साथियों के ऊंट चराने गया था, जब पलट कर आया तो लोगों ने उसका हिस्सा दिया, वह अपना हिस्सा लिये हुए आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० यह क्या है? फ़रमाया कि ‘‘यह तुम्हारा हिस्सा है।’’ उसने कहा मैं इसलिये थोड़ी आपके साथ हुआ था, मैं तो इसलिये साथ हुआ था कि (हलक़ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) यहां मेरे तीर लगे और मैं मर कर जन्नत में चला जाऊं, फ़रमाया ‘‘अगर तुम इस इरादा में सच्चे हो तो अल्लाह भी यही करके दिखाएगा।’’ खैबर की लड़ाई में अअराबी शहीद हुआ तो उसकी लाश लोग हुजूर सल्ल० के पास लाए आपने देख कर फ़रमाया ‘‘यह वही है?’’ लोगों ने कहा हां या रसूलुल्लाह! फ़रमाया ‘‘इसका मुआमला अल्लाह से सच्चा था, अल्लाह ने वही कर दिया’’ आंहज़रत सल्ल० ने उसको उसी के जुब्बा में रखकर

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221, ज़ादुल मआद 3-324

कफनाया फिर उसको मुकद्दम रखकर नमाज़ पढ़ाई, दुआ में यह भी करमाया ‘कि ऐ अल्लाह यह तेरा बंदा तेरे रास्ता में हिज्रत करके निकला था और शहीद मारा गया है मैं इसका गवाह हूं।<sup>(1)</sup>

फृल्ह के बाद ज़मीने मफतूह पर कब्ज़ा कर लिया गया लेकिन यहूद ने दरख़्वास्त की कि ज़मीन हमारे कब्ज़ा में रहने दी जाए, हम पैदावार का निस्फ़ हिस्सा अदा किया करेंगे, यह दरख़्वास्त मंजूर हुई।<sup>(2)</sup>

बटाई का वकृत आता था तो आंहज़रत सल्ल० अब्दुल्लाह बिन खवाहा को भेजते थे वह ग़ल्ला को दो हिस्सों में तक़सीम करके यहूद से कहते थे कि इसमें से जो हिस्सा चाहो ले लो, यहूद इस अदल पर मुतहैयर होकर कहते कि ज़मीन और आसमान ऐसे ही अदल से क़ाइम हैं।<sup>(3)</sup> ख़ैबर की ज़मीन तमाम मुजाहिदीन पर जो इस जंग में शरीक थे तक़सीम कर दी गई।<sup>(4)</sup>

ख़ैबर ही के मौक़ा पर हज़रत जअूफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० अपने साथियों के साथ हब्शा से पहुंचे, उनके साथ यमन के अश्ऊरी भी थे, यह कुछ ऊपर पचास आदमी थे, एक कशती पर सवार थे, कशती ने उनको हब्शा के साहिल पर पहुंचा दिया, वहां हज़रत जअूफ़र बिन अबी

(1) सुनन नसाई 4-60, मुस्तदरक हाकिम 3-495, दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221

(2) सुनन अबी दाऊद, किताबुल खिराज वलइमारा, बाब मा जाअू फी हुक्मे अर्ज़े खैबर

(3) फ़खुल बुल्दान बलाज़री स० 34

(4) अबू दाऊद, किताबुल खिराज वल इमारा, बाब मा जाअू फी हुक्मे अर्ज़े खैबर

तालिब और उनके साथियों से मुलाक़ात हुई, हज़रत जअफ़र रज़ि० ने कहा हमको यहाँ रसूलुल्लाह सल्ल० ने भेजा है और ठहरने का हुक्म दिया है, तुम लोग भी हमारे साथ ठहरो, यह लोग ठहर गए और हब्शा से साथ ही रखाना हो गए, जब यह हुजूर सल्ल० की खिदरमत में पहुंचे और आप सल्ल० ने हज़रत जअफ़र की आवाज़ सुनी तो बड़ी मुसर्रत से उनसे बढ़कर मिले और पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया “खुदा की क़सम मैं नहीं कह सकता कि मुझे खैबर की फ़त्ह की ज़्यादा खुशी है या जअफ़र के आने की” आप सल्ल० ने खैबर के माले ग़नीमत में आने वालों का भी हिस्सा लगाया।<sup>(1)</sup>

खैबर ही के मौक़ा पर एक यहूदी औरत ने आंहज़रत सल्ल० को ज़हर दिया, सल्लाम बिन मशकम यहूदी की बीवी जैनब ने लोगों से पूछा कि हुजूर सल्ल० को कौनसा गोश्त ज़्यादा मरगूब है, लोगों ने कहा दस्त का, उसने आपकी खिदमत में एक भुनी हुई बकरी पेश की और दस्त में खूब ज़हर मिला दिया, जब आपने उसमें से गोश्त नोचा, तो अल्लाह ने उस दस्त ही के ज़रीआ आपको मुत्तलअ० कर दिया कि इसमें ज़हर मिला हुआ है, आपने यहूदियों से दरयापूत फ़रमाया क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया है? उन्होंने इक्बाल किया, फ़रमाया क्यों? उन्होंने कहा हमने सोचा कि अगर आप (मआज़ल्लाह) झूटे हैं तो हमको छुट्टी मिल जाएगी और अगर पैग़म्बर हैं तो आपको कोई

(1) सहीह बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब ग़ज़वए खैबर, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल

नुक़सान नहीं होगा, औरत को भी खिदमत में हाज़िर किया गया और उसने एतिराफ़ किया कि मेरा इरादा मार डालने ही का था, फ़रमाया “अल्लाह तआला तुझे इसका मौक़ा नहीं दे सकता था” सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया हम इसे क़त्ल कर दें, आपने फ़रमाया “नहीं”।<sup>(1)</sup>

सुलह हुदैबिया में कुरैश से मुआहदा हुआ था कि अगले साल आंहज़रत सल्ल० मक्का में आकर उम्रा अदा करेंगे और तीन दिन क़्याम करके वापस चले जाएंगे,<sup>(2)</sup> इस बिना पर आंहज़रत सल्ल० ने इस साल उम्रा अदा करना चाहा और एलान करा दिया कि जो लोग वाकिफ़ अए हुदैबिया में शरीक थे उनमें से कोई न रह जाए, चुनांचे बजुज़ उन लोगों के जो इस अस्ना में मर चुके थे सबने यह सआदत हासिल की।<sup>(3)</sup>

मुआहदा में शर्त थी कि मुसलमान मक्का में आएं तो हाधियार साथ न लाएं, इसलिये अस्लहा ज़ंगे बतन या जुज में जो मक्का से आठ मील उधर है छोड़ दिये गए, और दो सौ सवारों का एक दस्ता अस्लहा की हिफ़ाज़त के लिये मुतअ़्यन कर दिया गया,<sup>(4)</sup> रसूलुल्लाह सल्ल० लब्बैक कहते हुए हरम की तरफ़ बढ़े, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ऊंट की महार थामे हुए आगे आगे यह रिञ्ज़ पढ़ते जाते थे।

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाबुश्शातुल्लती सुम्मत लिन्बीये बिखैबर।

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उमरतुल कज़ा

(3) सीरत इब्ने कसीर ३-४२९

(4) जादुल मज़ाद ३-३७०

خَلُّوا بِنِي الْكُفَّارِ عَنْ سَبِيلِهِ  
الْيَوْمَ نَضْرِبُكُمْ عَلَىٰ تَنْزِيلِهِ  
ضَرْبًا يُزِيلُ الْهَامَ عَنْ مَقِيلِهِ  
وَيُنْهِلُ الْخَلِيلَ عَنْ خَلِيلِهِ<sup>(1)</sup>

“काफिरो! सामने से हट जाओ, आज जो तुमने उतरने से रोका है तो हम तलवार का वार करेंगे, वह वार जो सर को ख्वाबगाह से अलग कर दे और सारी दोस्ती हवा कर दे”

सहाबा का जम्मे ग़फ़ीर साथ था और बरसों की देरीना तमन्ना, वह बड़े जोश के साथ मनासिके हज्ज अदा कर रहे थे, अहले मक्का का ख्याल था कि मुसलमानों को मदीना की आब व हवा ने कमज़ोर कर दिया है, इस बिना पर आपने हुक्म दिया कि लोग तवाफ में तीन पहले फेरे में अकड़ते हुए चलें<sup>(2)</sup> अरबी ज़बान में इसको “रमल” कहते हैं, चुनांचे आज तक यह सुन्नत बाकी है।

अहले मक्का ने अगर्चे चार व नाचार मुसलमानों को उम्रा की इजाज़त दी थी, ताहम उनकी आंखें इस मंज़र के देखने की ताब नहीं ला सकती थीं, रुअसाए कुरैश ने उमूमन शहर खाली कर दिया और पहाड़ों पर चले गए, तीन दिन के बाद हज़रत अली रज़ियो के पास आए और कहा मुहम्मद (सल्ल०) से कह दो कि शर्त पूरी हो चुकी अब मक्का से

(1) सुनन तिर्मिज़ी, अबदाबुल अम्साल, बाब माजाज की इंशाअश्शेऊर, सुनन नसाई,

किताब मनासिकुल हज्ज, बाब इंशाउश्शेऊर फ़िल हज्ज

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब उम्रतुल कज़ा

निकल जाएं, हज़रत अली रज़ि० ने आंहज़रत सल्ल० से अर्ज की, आप उसी वक्त रवाना हो गए,<sup>(1)</sup> चलते वक्त हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की सग़ीरस्सिन साहबज़ादी उमामा जो मक्का में रह गई थीं, आंहज़रत सल्ल० के पास “चचा चचा” कहती दौड़ती आई, हज़रत अली रज़ि० ने हाथों में उठालिया, लेकिन हज़रत जअफ़र रज़ि० (हज़रत अली रज़ि० के भाई) और ज़ैद बिन हारसा ने अपने दावे पेश किये, हज़रत जअफ़र रज़ि० कहते कि यह मेरे चचा की लड़की है, ज़ैद कहते थे कि हम्ज़ा रज़ि० मेरे मज़हबी भाई थे इस रिश्ता से यह मेरी भतीजी है, हज़रत अली रज़ि० को दावा था कि मेरी हमशीरा भी है और पहले मेरी ही गोद में आई है, आंहज़रत सल्ल० ने सबके दअवों को बराबर देख कर उनको अस्मा की गोद में दे दिया, वह उमामा की ख़ाला थीं, फिर फ़रमाया “कि ख़ाला मां के बराबर होती है।”<sup>(2)</sup>

## ग़ज़वर मौता

सलातीन और रुअसा को दावते इस्लाम के जो खुतूत भेजे गए थे उनमें एक ख़त शुरहबील बिन अम्र के नाम था जो बसरा (हूरान) का बादशाह और कैसर का मातहत था, यह अरबी ख़ानदान एक मुद्दत से ईसाई था और शाम के सरहदी मकामात में हुक्मरां था, यह ख़त हारिस बिन उमैर रज़ि० लेकर गए थे, शुरहबील ने उनको क़त्ल कर दिया, इसके किसास के लिये आंहज़रत सल्ल० ने तीन हज़ार फौज

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल कज़ा

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल कज़ा

तैयार करके शाम की तरफ खाना की<sup>(1)</sup> जैद बिन हारसा रज़ि० को जो आंहज़रत सल्ल० के गुलाम थे सिपहसालारी मिली और इशाद हुआ कि इनको दौलते शहादत नसीब हो तो जअफ़र तव्यार रज़ि० और वह भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह रज़ि० बिन खाना फौज के सरदार हों।<sup>(2)</sup>

गो यह मुहिम किसास लेने की ग़र्ज़ से थी, लेकिन चूंकि तमाम मुहिम्मात का अस्ली मेहवर तबलीग़े इस्लाम था, इशाद हुआ कि पहले उनको दावते इस्लाम दी जाए, अगर वह इस्लाम कबूल कर लें तो जंग की ज़खरत नहीं, यह भी हुक्म हुआ कि इज़हारे हमदर्दी के लिये उस मकाम पर जाना जहां हारिस बिन उमैर रज़ि० ने अदाए फ़र्ज़ में जान दी है, सनीयतुल वदाअ० तक आंहज़रत सल्ल० खुद फौज की मुशायअत के लिये तशरीफ ले गए, सहाबा रज़ि० ने पुकार कर दुआ की कि खुदा सलामत और कामियाब लाए।<sup>(3)</sup>

फौज मदीना से खाना हुई तो जासूसों ने शुरहबील को खबर दी, उसने मुकाबला के लिये कम व बेश एक लाख की फौज तैयार की, उधर कैसरे रूम (हिरक़ल) कबाइले अरब की बेशुमार फौज लेकर मआब में खेमा ज़न हुआ जो बुलक़ाअ० के अज़्लाअ० में है, हज़रत जैद रज़ि० ने यह हालात सुनकर चाहा कि इन वाकिआत से दरबारे रिसालत को इत्तिला दी जाए और हुक्म का इंतिज़ार किया जाए, लेकिन अब्दुल्लाह बिन खाना रज़ि० ने कहा, हमारा अस्ल मक्सद

(1) ज़ादुल मआद 3-381 (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

(3) सीरतुन्बी 1-506

फूह नहीं बल्कि दौलते शहादत है, जो हर वक़्त हासिल हो सकती है।<sup>(1)</sup> ग़र्ज़ यह मुख्तासर गिरोह आगे बढ़ा और एक लाख फौज पर हमला आवर हुआ, हज़रत ज़ैद रज़ि० बर्छियां खाकर शहीद हुए, उनके बाद हज़रत जअूफ़र तव्यार रज़ि० ने अलम हाथ में लिया, घोड़े से उतर कर पहले खुद अपने घोड़े के पांव पर तलवार मारी कि उसकी कोंचें कट गई, फिर इस बेजिग्री से लड़े कि तलवारों से चूर चूर होकर गिर पड़े<sup>(2)</sup> हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का बयान है कि मैंने उनकी लाश देखी तलवारों और बर्छियों के 90/ज़ख्म थे लेकिन सबके सब सामने की जानिब थे, पुश्त ने यह दाग़ नहीं उठाया था,<sup>(3)</sup> हज़रत जअूफ़र रज़ि० के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अलम हाथ में लिया और वह भी दादे शुजाअ़त देकर शहीद हुए, अब हज़रत ख़ालिद रज़ि० सरदार बने और निहायत बहादुरी से लड़े, सहीह बुखारी में है कि आठ तलवारें टूट कर गिरीं,<sup>(4)</sup> लेकिन लाख से तीन हज़ार का मुकाबला किया था, बड़ी कामियाबी यही थी कि फौजों को दुशमन की ज़द से बचा लाए।

रसूलुल्लाह सल्ल० को इस वाकिआ का सख्त सदमा हुआ, हज़रत जअूफ़र रज़ि० से आप सल्ल० को ख़ास मुहब्बत थी, उनकी शहादत का निहायत क़लक था, आप

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-375

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-378

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

(4) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता, पूरी तफसील इब्ने हिशाम में मौजूद है, 2-379, 380

सल्ल० मस्जिद में जाकर ग़मज़दा बैठे, उसी हालत में एक शख्स ने आकर कहा कि जअूफ़र रज़ि० की मस्तूरात मातम कर रही हैं और रो रही हैं, आप सल्ल० ने मना करा भेजा, वह गए और वापस आकर कहा कि मैंने मना किया, लेकिन वह बाज़ नहीं आतीं, आप सल्ल० ने दोबारा भेजा, वह फिर गए और वापस आकर अर्ज़ की कि हम लोगों की नहीं चलती, आप सल्ल० ने इशाद फरमाया कि “तो इनके मुंह में खाक भर दो” यह वाकिआ हज़रत आइशा रज़ि० से सहीह बुखारी में मन्कूल है, सहीह बुखारी में यह भी है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने उस शख्स से कहा कि “खुदा की क़सम तुम यह न करोगे (मुंह में खाक डालना) और आंहज़रत सल्ल० को तकलीफ़ से नजात न मिलेगी”<sup>(1)</sup>

### फ़ट्ठे मवक्त्र

6 हि० में जो मुआहदा कुरैश ने नबी सल्ल० से बमकामे हुदैबिया किया था उसकी एक दफ़आ में यह था कि दस साल जंग न होगी, इस शर्त में जो कौमें नबी सल्ल० की जानिब मिलना चाहें वह उधर मिल जाएं और जो कुरैश की जानिब मिलना चाहें वह इधर मिल जाएं।

इसके मुवाफ़िक बनी खुज़ाआ नबी सल्ल० की तरफ और बनू बक्र कुरैश की तरफ मिल गए थे, मुआहदा को अभी दो बरस भी न पूरे हुए थे कि बनू बक्र ने बनू खुज़ाआ पर हमला कर दिया और कुरैश ने भी अस्लहा से

(1) सहीह बुखारी, किताबुल मगाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

इम्दाद दी, अकरमा बिन अबी जहल, सुहैल बिन अम्र, (मुआहदा पर उसी ने दस्तख़त किये थे) सफ़वान बिन उमय्या (मशहूर सरदाराने कुरैश) खुद भी नक़ाब पोश होकर मअू अपने हवाली व मवाली बनू खुज़ाआ पर हमला आवर हुए, उन बेचारों ने अमान भी मांगी, भाग कर खानए कअबा में पनाह ली, मगर उनको हर जगह बेदरेग़ तहेतेग़ किया गया, जब यह मज़लूम “الْهَكَ إِلَهُكَ” (अपने खुदा के वास्ते) कह कर रहम की दरख़्वास्त करते तो यह ज़ालिम उनके जवाब में कहते थे “لَا إِلَهَ إِلَّا يَوْمُ” (आज खुदा कोई चीज़ नहीं)<sup>(1)</sup>

मज़लूमों के बचे खुचे चालीस आदमी जिन्होंने भागकर अपनी जान बचाई थी, नबी सल्ल० की खिदमत में पहुंचे और अपनी मज़लूमी व बरबादी की दास्तान सुनाई, अम्र बिन सालिम खुज़ाई ने पुरदर्द नज़्म में तमाम वाकिआत गोश गुज़ार किये, उसके जस्ता जस्ता अश्झार दर्ज किये जाते हैं:

إِنَّ قُرَيْشًا أَخْلَفُوكَ الْمَوْعِدَا  
وَنَقْضُوا مِيَشَاقَكَ الْمُؤْكَدَا  
وَجَعَلُوا بِيْ فِي كَدَاءِ رُصْدَا  
وَزَعَمُوا أَنْ لَسْتُ أَدْعُو أَحَدًا  
وَهُمْ أَذْلُّ وَأَقْلُّ عَدَدًا  
هُمْ بَيْتُونَا بِالْوَتِيرِ هُجَّدَا  
فَقَاتَلُونَا رُكْعًا وَسُجْدًا

तरजुमा: “कुरैश ने आप सल्ल० से वादा खिलाफ़ी की, उन्होंने मज़बूत मुआहदा को जो आप सल्ल० से किया था तोड़ डाला, मकामे कदाअू में लोगों को

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-390, तारीखे तबरी 2-153

घात में लगा दिया, वह समझते हैं कि हमारी इम्दाद को कोई नहीं आने का, वह ज़लील हैं और क़लील हैं, उन्होंने बतीर में हमको सोते में जालिया, हमको रुकूअ़ व सुजूद की हालत में पारा पारा कर दिया।”

मुआहदा की पाबंदी, फ़रीक़े मज़लूम की दाद रसी, दोस्तदार क़बाइल की आइंदा हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से नबी سल्ल० मक्का की जानिब सवार हो गए, दस हज़ार की जमईयत हमरिकाब थी,<sup>(1)</sup> दो मंज़िल चले थे कि राह में अबू सुफ़्यान बिन अल हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुललाह बिन अबू उमय्या आंहज़रत सल्ल० से मिले।

यह वह लोग थे जिन्होंने नबी सल्ल० को सख्त ईज़ाएं दी थीं और इस्लाम के मिटाने में बड़ी कोशिशें की थीं, आंहज़रत सल्ल० ने उन्हें देखा और रुख़ फेर लिया, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा ने अर्ज़ की:

“या रसूलुल्लाह सल्ल०! अबू सुफ़्यान आपके हकीकी चचा का बेटा है और अब्दुल्लाह हकीकी फूफी (आतिका) का लड़का है, इतने क़रीबी तो मरहमत से महरूम न रहने चाहियें।<sup>(2)</sup>

इसके बाद हज़रत अली रज़ि० ने उन दोनों को यह तरकीब बताई कि जिन अलफ़ाज़ में बिरादराजे यूसुफ़ ने मुआफ़ी की दरख़बास्त की थी तुम भी आंहज़रत सल्ल० की

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़त्ह फ़ी रमज़ान

(2) सीरियस इब्ने हिशाम 2-400, मुस्तदरक हाकिम 3-46, ज़हबी ने सनद को मुस्लिम तुकी शर्त पर क़रार दिया है।

खिदमत में जाकर उन्हीं अलफ़ाज़ का इस्तेमाल करो, नबी सत्त्वा० के अप्स्व व करम से उम्मीद है कि ज़रूर कामियाब हो जाओगे।

उन्होंने नबी सत्त्वा० के हुजूर में हाज़िर होकर यह आयत पढ़ी:

تَاللَّهِ لَقَدْ أَثْرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَغَاطِشِينَ

रसूलुल्लाह सत्त्वा० ने जवाब में फरमाया:

لَا تَشْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ<sup>(1)</sup>

उस वक्त अबू सुफ़्यान ने जोश व नशात से यह अशआर पढ़े:

لَعْمُرُكَ إِنِّي يَوْمَ أُخْمَلُ رَأْيَهُ  
لِتُغْلِبَ خَيْلُ الْأَلَّاتِ خَيْلَ مُحَمَّدٍ  
لَكُنْتُ الْمُنْلَجُ الْحَيْرَانِ أَظْلَمُ لَيْلَةً  
هَلَائِنِي هَلَاءً غَيْرَ نَفْسِيٍّ وَنَائِنِي مَعَ اللَّسِهَ مَنْ طَرَدَثْ كُلُّ مُطَرَّدٍ

“क़सम है कि जिन दिनों निशाने जंग इसलिये उठाया करता था कि लात (बुत का नाम) का लशकर मुहम्मद (सत्त्वा०) के लशकर पर ग़ालिब आ जाए, उन दिनों मैं उस खार पुश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टक्करें खाता हो, अब वक्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊं और सीधे रस्ता जाऊं, मुझे हादी ने न कि मेरे नफ़्स ने हिदायत दी है और खुदा का रास्ता मुझे उस शख्स ने बताया

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-400

जिसे मैंने धुतकार दिया और छोड़ दिया था।”

नबी सल्ल० ने फ़रमायाः हाँ! तुम तो मुझे छोड़ते ही रहे  
थे।<sup>(1)</sup>

नबी सल्ल० की ख्वाहिश यह थी कि अहले मक्का को इस आमद की ख़बर न होने पाए, चुनांचे ऐसा ही हुआ कि जब आंहज़रत सल्ल० मक्का तक पहुंच कर बाहर खेमाज़न हो गए, तो आप सल्ल० ने हुक्म फ़रमाया कि आग के अलाव रौशन किये जाएं, चुनांचे इसकी तअ़मील की गई, उस वक्त अबू सुफ़यान बिन हर्ब जासूसी की ग़र्ज़ से और हालात का अंदाज़ा करने के लिये उधर से गुज़रे और उनके मुंह से निकला कि इस शान का लशकर और इस तरह की रौशनी तो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखी थी, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० इससे पहले हिज्रत कर चुके थे और इसी लशकर में मौजूद थे, उन्होंने अबू सुफ़यान की आवाज़ पहचान ली और कहा देखो रसूलुल्लाह सल्ल० लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं, कल कुरैश का अंजाम कितना हौलनाक होगा, फिर यह सोच कर कि कोई मुसलमान पास लाए, जब आप सल्ल० की नज़र मुबारक उन पर पड़ी तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, अबू सुफ़यान तुम्हारा भला हो.....क्या अभी तक इसका वक्त नहीं आया कि तुम इस पर ईमान लाओ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं,

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-401, मुस्तदरक हाकिम 3-46

उन्होंने कहा कि मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम हैं और किस क़दर सिला रहमी करने वाले हैं, खुदा की क़सम मैं तो यह समझता हूं कि अल्लाह के सिवा किसी और मअ़बूद का वुजूद होता तो आज मेरे कुछ काम आता, आप سल्ल0 ने फ़रमाया: अबू सुफ़यान खुदा तुम्हें समझ दे, क्या अब भी इसका वक़्त नहीं आया कि तमु इस बात का इक़रार करो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, अबू सुफ़यान ने कहा मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम और सिला रहमी करने वाले हैं, लेकिन जहां तक इस मुआमला का तअ़ल्लुक है इस बारे में मुझे अभी शुब्ला है, हज़रत अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया बंदए खुदा! क़ब्ल इसके कि तुम्हारी गर्दन तलवार से उड़ा दी जाए इस्लाम कबूल कर लो और गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं, यह सुन कर अबू सुफ़यान इस्लाम लाए और शहादत देकर इस फ़रीज़ा से उहदा बरआ हुए।<sup>(1)</sup>

### मुआफ़ी की सदार आम

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने मुआफ़ी और अम्न व हिफ़ाज़त का दाइरा उस रोज़ वसीअ़ फ़रमा दिया कि अहले मक्का में से सिफ़ वही शख्स हलाक हो सकता था जो खुद मुआफ़ी और सलामती का ख्वाहिशमंद न हो और अपनी ज़िंदगी से बेज़ार हो, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़यान के

(1) सीरित इब्ने हिशाम 2-402, 403, ज़ादुल मज़ाद 3-398, 401, 402

घर में दाखिल हो जाएगा उसको पनाह मिलेगी, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा वह महफूज़ है, जो मस्जिदे हराम में दाखिल होगा उसको अम्न है, रसूलुल्लाह सल्ल० ने अहले लशकर को हिदायत फ़रमाई कि मक्का में दाखिल होते वक्त सिर्फ़ उस शख्स पर हाथ उठाएं जो उनकी राह में हाइल हो और उनसे मज़ाहमत करे, आप सल्ल० ने इसका भी हुक्म फ़रमाया कि अहले मक्का की जाइदाद के बारे में मुकम्मल एहतियात बरती जाए इसमें मुतलक दस्त दराज़ी न की जाए।<sup>(1)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० को हिदायत की कि अबू सुफ़्यान को ऐसी जगह ले जाएं जहाँ से इस्लामी दस्तों की पेशक़दमी का नज़ारा हो सके, यह फ़ातिहाना दस्ते समंदर की मौजों की तरह मुतलातिम नज़र आते थे, मुख्तलिफ़ क़बाइल अपने अपने झँडों के साथ गुज़र रहे थे, जब कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़्यान अब्बास रज़ि० से उसका नाम दरयापृत करते और कहते कि मुझे इस क़बीला से क्या सरोकार।<sup>(2)</sup> यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० बनप़से नफीस एक मुसल्लह दस्ते में तशरीफ लाए जो सब्ज़ मञ्ज़ुलूम हो रहा था, यह मुहाजिरीन और अंसार का आहन पोश दस्ता था कि उनकी सिर्फ़ आंखें नज़र आती थीं, अबू सुफ़्यान ने यह मंज़र देखकर कहा कि खुदा की शान अब्बास यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया कि

(1) ज़ादुल मज़ाद ३-४०३

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ऐना रक्कज़न्नबीयो सल्ल० अर्रायता यौमल फ़त्हे

रसूलुल्लाह सल्ल० हैं जो मुहाजिरीन और अंसार के जुलू में  
तशरीफ ले जा रहे हैं, उन्होंने कहा इनमें से किसी को इससे  
पहले यह ताक़त और शान व शौकत हासिल नहीं थी, खुदा  
की क़सम ऐ अबुल फ़़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे का इक़ितदार  
आज की सुब्ह कितना अज़ीम है, उन्होंने कहा, अबू  
सुफ़्यान! यह नुबूव्वत का मोअज़िज़ा है।

इसके बाद अबू सुफ़्यान ने बुलंद आवाज़ से यह एलान  
किया कि ऐ कुरैश के लोगो! यह मुहम्मद (सल्ल०) इतनी  
ताक़त के साथ तुम्हारे पास आए हैं जिसका तुमको कभी  
तज़्र्बा न हुआ होगा, अब जो अबू सुफ़्यान के घर में आ  
जाएगा उसको अमान दी जाएगी, लोग यह सुनकर कहने  
लगे, अल्लाह तुम से समझे, तुम्हारे घर की हक़ीक़त ही क्या  
है कि हम सबको उस घर में पनाह मिल सके? फिर उन्होंने  
कहा, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा उसको अमान  
मिलेगी, जो मस्जिद (मस्जिदे हराम) में चला जाएगा उसको  
भी अमान मिलेगी, चुनांचे लोग मुंतशिर हो गए, अपने अपने  
घरों और मस्जिदे हराम में पनाह गीर हो गए।<sup>(1)</sup>

### नियाज़मदाना, न कि फ़ातिहना दारिख़िला

रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का में इस शान से दाखिल हुए  
कि सर मुबारक अब्दीयत व तवाज़ोअू के ग़ल्बे से बिल्कुल  
झुक गया था, करीब था कि आप सल्ल० की ठोड़ी ऊंट के

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-404, 405, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वसियर, बाब  
फ़त्ह मक्का।

कजावे से लग जाए<sup>(1)</sup> आप सल्ल० दाखिल होते वक्त सूरए फ़त्ह पढ़ रहे थे।<sup>(2)</sup>

मक्का के इस फ़ातिहाना दाखिले में (जो जज़ीरतुल अरब का कल्ब व जिगर और रुहानी व सियासी मर्कज़ था) अद्ल व मुसावात, तवाज़ोअू और इज़हारे अब्दीयत का कोई अंदाज़ न था, जिसको आप सल्ल० ने इख्तियार न फ़रमाया हो, उसामा को जो आप सल्ल० के मौला (आज़ाद कर्दा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ि० के साहबज़ादे थे, आप सल्ल० ने अपनी सवारी के पीछे जगह दी, बनी हाशिम और अशराफ़ कुरैश में से जिनकी बड़ी तअ़दाद वहाँ मौजूद थी यह शर्फ़ किसी को हासिल न हुआ,<sup>(3)</sup>

फ़त्हे मक्का के रोज़ एक शख्स ने आप सल्ल० से गुफ़तगू की तो उस पर कपकपी तारी हो गई, आप सल्ल० ने फ़रमाया डरो नहीं इत्मीनान रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ, मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का लड़का हूँ जो गोश्त के सूखे टुकड़े खाया करती थी।<sup>(4)</sup>

**मुआफ़ी और रहम का दिन है रबुरेज़ी का नहीं**

जब हज़रत सअूद बिन उबादा रज़ि० जो अंसार दस्ता के अमीर थे, अबू सुफ़्यान के पास से गुज़रे, उन्होंने कहा “الْيَوْمُ يَوْمُ الْمُلْحَمَةِ، الْيَوْمُ تُسْتَحْلِ الْكَعْبَةُ، الْيَوْمُ أَذْلَّ اللَّهُ قُرْيَاً”

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-405, मुस्तदरक हाकिम 3-50

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब दुख्लुन्नबी सल्ल० मिन अज़ूला मक्का

(4) मुस्तदरक हाकिम 3-50, ज़हबी ने शैख़ैन की शर्त पर करार दिया है।

(आज घमसान का दिन है, और ख़ुंरेज़ी का दिन है, आज कअबा में सब जाइज़ होगा, अल्लाह तआला ने कुरैश को ज़्यातील किया है) जब रसूलुल्लाह अपने दस्ते में अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप सल्ल० से इसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल० आपने सुना सअद ने अभी क्या कहा? आप सल्ल० ने फ़रमाया क्या कहा है? उन्होंने वह सब दोहराया, सअद के जुम्ले को आप सल्ल० ने نَارِبِسَانْ فَرَمَّاَيْتُكُمْ يَوْمَ الْمَرْحَمَةِ، أَلَيْوَمَ "يُعِزُّ اللَّهُ قَرِيشًا، وَيُعَظِّمُ اللَّهُ الْكَعْبَةَ" (नहीं! आज तो रहम व मुआफ़ी का दिन है, आज अल्लाह तआला कुरैश को इज़्ज़त अता फ़रमाएगा और कअबा की अज़मत बढ़ाएगा)

आप सल्ल० ने हज़रत सअद रज़ि० को बुलवा भेजा और इस्लामी परचम उनसे लेकर उनके साहबज़ादे कैसे रज़ि० के हवाले किया<sup>(1)</sup> आप सल्ल० ने यह ख्याल फ़रमया कि उनके साहबज़ादे को परचम देने के मअना यह होंगे गोया परचम उनसे वापस नहीं लिया गया है।

इस तरह एक हर्फ़ की तबदली (الملحمة के बजाए अलمرحمة फ़रमा देने) और एक हाथ को दूसरे हाथ से तबदील कर देने से (जिनमें से एक बाप का हाथ था दूसरा बेटे का) आप सल्ल० ने सअद बिन उबादा रज़ि० (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामे اُظہر مِنَ الشَّمْسِ थे) की अदना दिलशिकनी के बगैर अबू सुफ़यान की (जिनकी तालीफ़े क़ल्ब की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान ऐसे

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़त्ह, फ़त्हुल बारी 8-9

हकीमाना बल्कि मुअज्ज़ज़ाना तरीक़ा पर अंजाम दे दिया जिससे बेहतर तरीके पर तस्वीर में आना मुश्किल है, बाप के बजाए उनके बेटे को यह मंसब अता कर दिया, जिससे अबू सुफ़्यान के ज़ख्म खुर्दा दिल की तस्कीन मंजूर थी, दूसरी तरफ़ आप सल्ल० सअूद बिन उबादा रज़ि० को आजुर्दा ख़ातिर नहीं देखना चाहते थे, जिन्होंने इस्लाम के लिये बड़ी ख़िदमात अंजाम दी थीं।

### मअमूली झड़पें

इस मौक़ा पर सफ़्वान बिन उम्या, अकरमा बिन अबू जहल, सुहैल बिन अम्र और ख़ालिद बिन वलीद के साथियों के दर्मियान कुछ झड़पें हुईं, जिनमें तक़रीबन एक दर्जन मुश्किल मारे गए, इसके बाद उन्होंने शिकस्त क़बूल कर ली।<sup>(1)</sup> इसकी वजह यह थी कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस्लामी लशकर के सालारों को यह हिदायत फ़रमा दी थी कि जब वह मक्का में दाखिल हों तो सिर्फ़ उन पर हाथ उठाएं जो उन पर हाथ उठाएं।

### द्वरम से बुतों की सफ़ाई

जब रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का में अपने मकाम पर पहुंच गए, और लोग भी मुत्मइन हो गए तो उस वक्त आप बाहर तशरीफ़ लाए, बैतुल्लाह की तरफ़ रवाना हुए, वहाँ जाकर बैतुल्लाह के गिर्द तवाफ़ किया, उस वक्त आप सल्ल० के दस्ते मुबारक में एक कमान थी, कज़्रबा में तीन

(1) इन्हे हिशाम 2-408

सौ साठ बुत थे, आप सल्ल० इस कमान से उन बुतों को कोंचते थे, और फ़रमाते थे:-

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۖ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا

तरजुमाः हक् आ गया और बातिल मिट गया, और बातिल मिटने ही की चीज़ थी। (सूरा इस्राअ० 81)

इसी के साथ यह तमाम एक करके मुंह के बल गिरते जाते।

आप सल्ल० को कअबा में कुछ तस्वीरें और शबीहें भी नज़र आईं और आपके हुक्म से उनको भी तोड़ फोड़ दिया गया।

जब आप सल्ल० ने तवाफ़ पूरा फ़रमा लिया तो उस्मान बिन तल्हा रज़ि० को जो कअबा के कलीद बरदार थे बुलवाया, कअबा की कलीद उनसे ली, दरवाज़ा खोला गया, और आप सल्ल० कअबा में दाखिल हुए, इससे पहले जब आप सल्ल० ने मदीना हिजरत से क़ब्ल एक दिन यह कलीद तलब फ़रमाई थी, तो उन्होंने सख्त जवाब दिया था, और आप सल्ल० से इहानत आमेज़ गुफ्तगू की थी, और आप सल्ल० ने हिल्म और बुर्दबारी से काम लेते हुए यह फ़रमाया था, उस्मान! “तुम कलीद किसी वक्त मेरे हाथ में देखोगे, उस वक्त मैं जिसे चाहूंगा उसे यह दूंगा” इसके जवाब में उन्होंने कहा था, “अगर ऐसा हुआ तो वह दिन तो कुरैश की बड़ी ज़िल्लत व तबाही का होगा” आप सल्ल० ने फ़रमाया “नहीं उस दिन वह आबाद और बाइज़ज़त होंगे” यह अलफाज़ उस्मान बिन तलहा के दिलनशीं हो गए और

उन्होंने महसूस किया कि जैसा आप सल्ल० ने फ़रमाया है वैसा ही होगा।<sup>(1)</sup>

जब आप सल्ल० कअब्बा से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुंजी आप सल्ल० के दस्ते मुबारक में थी, आप सल्ल० को देखते ही हज़रत अली रज़ि० खड़े हो गए और अर्ज़ किया, अल्लाह आप सल्ल० पर दुर्लद व सलाम भेजे आप सल्ल० सक़ाया (पानी पिलाने का इंतिज़ाम) के साथ हजाबा (बैतुल्लाह की दरबानी) भी हमें अता फ़रमाएं।

نबी सल्ल० ने फ़रमाया “الْيَوْمُ يَرْبُّ الْبِرُّ وَالْوَفَاءُ” (आज का दिन तो सुलूक करने, पूरे अतीयात देने का है) फिर उस्मान को बुलाया, उन्ही को कलीद मरहमत फ़रमाई, और इशाद फ़रमाया कि ‘‘जो कोई तुमसे यह कलीद छीनेगा वह ज़ालिम होगा।<sup>(2)</sup>

अरब में दस्तूर था कि कोई शख्स किसी को कत्ल कर देता था तो उसके खून का इंतिकाम लेना ख़ानदानी फर्ज़ करार पा जाता था, यअ़नी-अगर उस वक्त कातिल न हाथ आ सका तो ख़ानदानी दफ़तर में मकतूल का नाम लिख लिया जाता और सैकड़ों बरस गुज़रने के बाद भी इंतिकाम का फर्ज़ अदा किया जाता था, कातिल अगर मर चुका है तो उसके ख़ानदान या कबीला के आदमी को कत्ल करते थे, इसी तरह ख़ूं बहां का मुतालबा भी اَبَّعْنَ جُرْجُ اचला आता था, यह खून का इंतिकाम अरब में सबसे बड़े फ़खर की बात थी, इसी तरह और बहुत सी लग्ज़ बातें मफ़ाखिरे कौमी में थीं, इसी तरह और बहुत सी लग्ज़ बातें मफ़ाखिरे कौमी में

(1) ज़ादुल मआद जि०1, स० 425 सहीह बुखारी में भी यह वाकिआ आया है।

(2) सीरियत इब्ने हिशाम 2-412

दाखिल हो गई थीं, इस्लाम इन सबके मिटाने के लिये आया था और इस बिना पर आप सल्ल0 ने इंतिकाम और खूं बहा और तमाम ग़ुलत मुफाखरात की निस्वत फरमाया कि “मैंने इनको पांव से कुचल दिया।”<sup>(1)</sup>

अरब और तमाम दुन्या में नस्ल और कौम व खानदान के इम्तियाज़ की बिना पर हर कौम में फ़र्कें मरातिब काइम किये गए थे, जिस तरह हिंदुओं ने चार ज़ातें काइम कीं, और शूद्र को वह दर्जा दिया जो जानवरों का दर्जा है, इसके साथ यह बंदिश कर दी कि वह कभी अपने रुत्बा से आगे न बढ़े।

इस्लाम का सबसे बड़ा एहसान जो उसने तमाम दुन्या पर किया, मुसावाते आम का काइम करना था, यअ़नी अरब व अजम, शरीफ व रज़ील, शाह व गदा सब बराबर हैं, हर शख्स तरक्की के हर इंतिहाई दर्जा तक पहुंच सकता है, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल0 ने कुर्�आन मजीद की आयत पढ़ी और फिर तौज़ीह फरमाई कि “तुम सब ऐलादे आदम हो और आदम मिट्टी से बने थे।”<sup>(2)</sup>

खुत्बा के बाद आप सल्ल0 ने मज्मा की तरफ देखा तो जब्बाराने कुरैश सामने थे, उनमें वह हौसलामंद भी थे जो इस्लाम के मिटाने में सबसे पेशरौ थे, वह भी थे जिनकी ज़बानें रसूलुल्लाह सल्ल0 पर गालियों का बादल बरसाया करती थीं, वह भी थे जिनकी तेग़ व सनान ने पैकरे कुदसी

(1) इन्हें हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी खताए शुक्ल अमद

(2) इन्हें हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी खताए शुक्ल अमद

के साथ गुस्ताखियां कीं थीं, वह भी थे जिन्होंने आंहज़रत सल्ल० के रास्ता में काटे बिछाए थे, वह भी थे जो वअ॒ज़ के वक्त आंहज़रत सल्ल० की एड़ियों को लहू लहान कर दिया करते थे, वह भी थे जिनकी तश्ना लबी खूने नुबूव्वत के सिवा किसी चीज़ से बुझ नहीं सकती थी, वह भी थे जिनके हमलों का सैलाब मदीना की दीवारों से आ आकर टकराता था, वह भी थे जो मुसलमानों को जलती हुई रेत पर लिटा कर उनके सीनों पर आतशीं मोहरें लगाया करते थे।

रहमते आलम सल्ल० ने उनकी तरफ देखा और खौफ अंगेज़ लहजा में पूछा “तुम को कुछ मअ़लूम है? मैं तुम से क्या मुआमला करने वाला हूं।”

यह लोग अगर्वे ज़ालिम थे, शूक्री थे, लेकिन मिज़ाज शनास थे, पुकार उठे कि: أَخْ كَرِيمٌ وَابْنُ أَخْ كَرِيمٍ “आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ बिरादरज़ादा हैं।”

इर्शाद हुआ:

“لَا تَشْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ إِذْ هَبُوا، فَأَنْتُمُ الظَّلَقَاءُ”<sup>(1)</sup>

“तुम पर कुछ इलज़ाम नहीं जाओ, तुम सब आज़ाद हो” कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम मुहाजिरीन के मकानात पर कब्ज़ा कर लिया था, अब वक्त था कि उनको हुकूक दिलाए जाते, लेकिन आपने मुहाजिरीन को हुक्म दिया कि वह भी अपनी मम्लूकात से दस्त बदार हो जाएं।

नमाज़ का वक्त आया तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने बामे कअ॒बा पर चढ़ कर अज़ान दी, वही सरकश जो अभी राम

(1) इब्ने हिशाम 2-412, इस मअ़ना की रिवायत मुस्नद अहमद 5-135 में भी है।

हो चुके थे, उनकी आतिशे गैरत फिर मुश्तइल थी, अत्ताब  
बिन उसैद ने कहा “खुदा ने मेरे बाप की इज़्ज़त रख ली  
कि इस आवाज़ के सुनने से पहले उसको दुन्या से उठा  
लिया” एक और सरदारे कुरैश ने कहा “अब जीना बेकार  
है”,<sup>(1)</sup>

मकामे सफ़ा में आप सल्ल० एक बुलंद मकाम पर जा  
बैठे, जो लोग इस्लाम कबूल करने आते थे आप सल्ल० के  
हाथ पर बैअृत करते थे, मर्दों की बारी हो चुकी, तो  
मस्तूरात आई, औरतों से बैअृत लेने का यह तरीक़ा था कि  
पहले उनसे अरकाने इस्लाम और महासिने अख्लाक का  
इकरार लिया जाता था, फिर पानी के एक लबरेज़ प्याला में  
आंहज़रत सल्ल० दस्ते मुबारक डुबो कर निकाल लेते थे,  
आप सल्ल० के बाद औरतें उसी प्याला में हाथ डालती थीं  
और बैअृत का मुआहदा पुख्ता हो जाता था।<sup>(2)</sup>

रुअसाए अरब में दस शख्स थे जो कुरैश के सरताज  
थे, उनमें सफ़वान बिन उमय्या जदा भाग गए, उमैर बिन  
वह्ब ने आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में आकर अर्ज़ की  
कि रईसे अरब मक्का से जिला वतन हुआ जाता है, आप  
सल्ल० ने अलामाते अमान के तौर पर अपना अमामा  
इनायत किया। उमैर जदा पहुंच कर उनको वापस लाए,  
हुनैन के मज़ूरका तक यह इस्लाम नहीं लाए।<sup>(3)</sup>

(1) इन्हे दिशाम 2-413

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-120,121

(3) इन्हे दिशाम 2-417, 418

अब्दुल्लाह बिन जुबेअरा अरब का शाइर जो आंहज़रत सल्ल० की हज्च किया करता और कुर्झन मजीद पर नुक्ता चीनियां करता था, नजरान भाग गया, लेकिन फिर आकर इस्लाम लाया।<sup>(1)</sup>

हारिस बिन हिशाम की साहबज़ादी उम्मे हकीम अकरमा बिन अबू जहल की ज़ौजा थीं, वह फ़त्हे मक्का के दिन इस्लाम लाई, लेकिन उनके शौहर अकरमा बिन अबू जहल इस्लाम से भाग कर यमन चले गए, उम्मे हकीम यमन गई और उनको इस्लाम की दावत दी और वह मुसलमान हो गए और मक्का में आए, आंहज़रत सल्ल० ने जब उनको देखा तो फ़र्ते मुसर्रत से फौरन उठ खड़े हुए, और इस तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़े कि जिस्म मुबारक पर चादर तक न थी, फिर उनसे बैअूत ली।<sup>(2)</sup>

वहशी को भी मुआफ़ी दी गई, जिसने अमीर हम्ज़ा (असदुल्लाह व रसूलिही) को धोका से मारा था और फिर नअूश को बेहुर्मत किया था।<sup>(3)</sup>

फ़त्ह से दूसरे दिन का ज़िक्र है, नबी सल्ल० कअूबा का तवाफ़ कर रहे थे, फुज़ाला बिन उमैर ने मौका देखकर इरादा किया कि आंहज़रत सल्ल० को क़त्ल कर डाले, जब वह इस इरादे से क़रीब पहुंचा तो नबी सल्ल० ने फ़रमाया: “क्या फुज़ाला आता है?” फुज़ाला: “हां”!

(1) इन्हे हिशाम 2-418, 419, दलाइलुन्नुबूव्वा 99

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहकी 5-95

(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

नबी सल्ल० ने फ़रमाया: “तुम अपने दिल में अभी क्या इरादा कर रहे थे?” फुज़ाला ने कहा: “कुछ नहीं, मैं तो अल्लाह अल्लाह कर रहा था।”

नबी सल्ल० यह सुन कर हँस पड़े और फ़रमाया “अच्छा तुम अपने खुदा से अपने लिये मुआफ़ी की दरख़्वास्त करो” यह फ़रमा कर अपना हाथ भी उसके सीना पर रख दिया।

फुज़ाला का बयान है कि हाथ रख देने से मुझे इत्मीनाने क़ल्ब हासिल हुआ और आंहज़रत सल्ल० की मुहब्बत इस क़दर मेरे दिल में पैदा हो गई कि हुजूर सल्ल० से बढ़ कर कोई भी महबूब न रहा।

मैं यहां से घर को चला, रास्ता में मेरी मअ़शूक़ा मिली जिसके पास मैं बैठ करता था, उसने कहा: फुज़ाला एक बात सुनते जाओ, मैंने जवाब दिया नहीं, नहीं! खुदा और इस्लाम ऐसी बातों से मुझे मना करते हैं।<sup>(1)</sup>

### ग़ज़व़र हुनौन

मक्का जब फ़ल्ह हुआ तो तमाम क़बाइल ने खुद पेश क़दमी की और इस्लाम कबूल करना शुरू किया<sup>(2)</sup> लेकिन हवाज़िन और सक़ीफ़ पर इसका उल्टा असर हुआ, यह क़बीले निहायत जंगजू और फुनूने जंग से वाक़िफ़ थे, इस्लाम को जिस क़दर ग़ल्बा होता जाता था यह ज़्यादा मुज़तर होते थे कि उनकी रियासत और इम्तियाज़ का

(1) सीरियस इब्ने हिशाम 2-417

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मकारिमुन्नबी सल्ल० दिमक्का

ख़ातमा हुआ जाता है, इन बिना पर फ़त्हे मक्का से पहले हवाज़िन के रुअसा ने अरब का दौरा किया और हर जगह मुख़ालफ़ते इस्लाम का जोश फैलाया, पूरे साल उनकी यह कोशिश जारी रही और तमाम क़बाइले अरब से क़रादाद हो गई कि एक आम हमला किया जाए, मक्का फ़त्ह हुआ तो उनको यक़ीन हो गया कि अब जल्द तदारुक न किया गया तो फिर कोई ताक़त इस्लाम को ज़ेर न कर सकेगी।<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सत्त्वा० की रवानगी के वक्ता उनको यह ग़्लत ख़बर पहुंची थी कि हमला का रुख़ उन्हीं की तरफ है इसलिये इंतिज़ार की हाज़त भी नहीं रही, दफ़अ़तन बड़े ज़ोर व शोर के साथ खुद हमला के लिये बढ़े, जोश का यह आलम था कि हर क़बीला अपने तमाम अहल व अयाल लेकर आया<sup>(2)</sup> कि बच्चे और औरतें साथ होंगे तो उनकी हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से लोग जानें दे देंगे।<sup>(3)</sup>

इस मअूरका में अगर्चे सक़ीफ़ और हवाज़िन की तमाम शाख़ें शरीक थीं, ताहम कअब और कुलाब अलग रहे, फ़ौज की सरदारी के लिये दो शख़स इंतिख़ाब किये गए, मालिक बिन औफ़ और दुरैद बिन अस्सम्मा, अब्बलुज़िज़क्र क़बीला हवाज़िन का रईसे अअ़ज़म था, दुरैद बिन अस्सम्मा अरब का मशहूर शाइर और क़बीलए जशम का सरदार था, उसकी शाइरी और बहादुरी के मअूरके अब तक अरब की तारीख़

(1) सीरतुन्बी, अल्लामा शिब्ली 1-530, 531

(2) मुस्तदरक छाकिम 3-51

(3) सीरतुन्बी सत्त्वा० 1-531

में यादगार हैं, लेकिन उसकी उम्र सौ बरस से ज्यादा हो चुकी थी और सिफ़ हड्डियों का ढाँचा रह गया था, चूंकि अरब उसको मानता था और उसकी राए व तदबीर पर तमाम मुल्क को एतिमाद था, खुद मालिक बिन औफ़ ने उससे शिक्षण की दरख़्वास्त की, पलंग पर उठाकर उसको मैदाने जंग में लाए, उसने पूछा! कि यह कौनसा मकाम है? लोगों ने कहा “ओतास” बोला कि हाँ “यह मकाम जंग के लिये मौजूद है, इसकी ज़मीन न बहुत सख़्त है, न इस कदर नर्म कि पांव धंस जाएं” फिर पूछा कि “यह बच्चों के रोने की आवाजें कैसी आ रही हैं?” लोगों ने कहा “बच्चे और औरतें साथ आई हैं कि कोई शख़्स पांव पीछे न हटाए, बोला “जब पांव उखड़ जाते हैं तो कोई चीज़ रोक नहीं सकती, मैदाने जंग में सिफ़ तलवार काम देती है, बदकिस्मती से अगर शिक्ष्ट हुई तो औरतों की वजह से और ज़िल्लत होगी”

फिर पूछा कि “कअब और कुलाब भी शरीक हैं या नहीं?” जब मअ़लूम हुआ कि इन मुअ़ज़ज़ क़बीलों का एक शख़्स भी मैदाने जंग में नहीं, तो कहा “अगर आज का दिन इज़्ज़त व शर्फ़ का होता तो कअब व कुलाब गैर हाज़िर न होते” उसकी राए थी कि मैदान से हट कर किसी महफूज़ मकाम में फौजें जमा की जाएं और वहीं एलाने जंग किया जाए, लेकिन मालिक बिन औफ़ ने जो तीस साला नौजवान था जोशे शबाब में इस राए को कबूल करने से

इंकार किया और कहा कि आपके होश जाते रहे और आप की अक्ल बेकार हो चुकी।<sup>(1)</sup>

रसूलुल्लाह सल्ल० को इन वाकिआत की खबर पहुंची तो आपने तस्दीक के लिये अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद को भेजा, वह जासूस बन कर हुनैन में आए और कई दिन फौज में रह कर तमाम हालात तहकीक किये<sup>(2)</sup> आंहज़रत सल्ल० ने मजबूरन मुक़ाबला की तैयारियां कीं, रसद और सामाने जंग के लिये क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आई, अब्दुल्लाह बिन रबीआ जो निहायत दौलतमंद थे उनसे तीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिये।<sup>(3)</sup> सफ़्वान बिन उमय्या जो मक्का का रईसे अअ़ज़म था, मेहमान नवाज़ी में मशहूर था, लेकिन अब तक इस्लाम नहीं लाया था उससे आंहज़रत सल्ल० ने अस्लहए जंग मुस्तआर मांगे, उसने सौ ज़िरहें और उनके लवाज़िमात पेश किये।<sup>(4)</sup>

शब्वाल 8 हि० मुताबिक़ जनवरी, फ़रवरी 630 ई० इस्लामी फौजें, जिनकी तअ़दाद बारह हज़ार थी, इस सर सामान से हुनैन पर बढ़ीं कि सहाबा रज़ि० की ज़बान से बेइख़ितयार यह लफ़्ज़ निकल गया कि “आज हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है” लेकिन बारगाहे एज़दी में यह नाज़िश पसंद न थी।<sup>(5)</sup>

(1) ज़ादुल मआद 3-466, सीरत इब्ने हिशाम 2-338, 339

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-51, इब्ने हिशाम 2-440

(3) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-533

(4) सुनन बैहकी 6-89, सुनन अबी दाऊद, किताबुल बुयूज़, बाब फ़ी तज़्रीनिल आरिया

(5) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-533, सीरत इब्ने हिशाम 2-444

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبْتُكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا،  
وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحِبَّ ثُمَّ وَلَيْتُمْ مُّدْبِرِينَ، ثُمَّ  
أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ، وَأَنْزَلَ  
جُنُودًا لِّمَ تَرَوُهَا وَعَذَبَ الَّذِينَ كَفَرُوا، وَذَلِكَ جَزَاءُ  
الْكَافِرِينَ.

“और हुनैन का दिन याद करो जब तुम अपनी कसरत पर नाज़ां थे, लेकिन वह कुछ काम न आई, और ज़मीन बावजूद वुस्त्रत के तुम पर तंगी करने लगी, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले, फिर अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल0 पर और मुसलमानों पर तसल्ली नाज़िल की, और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमने नहीं देखीं, और काफिरों को अज़ाब दिया, और काफिरों की यही सज़ा है।”

मुसलमानों को पहले कामियाबी हुई और लोग ग़नीमत पर टूट पड़े, दुश्मन के तीर अंदाज़ों ने मौक़ा पाकर तीर अंदाज़ी शुरू कर दी, जिससे मुसलमानों की सफ़ों में बेतरतीबी, इंतिशार और परागंदगी पैदा हो गई।<sup>(1)</sup>

हज़रत अबू क़तादा जो शरीके जंग थे, उनका बयान है कि जब लोग भाग निकले तो मैंने एक काफिर को देखा कि एक मुसलमान के सीना पर सवार है, मैंने अक़ब से उसके शाना पर तलवार मारी जो ज़िरह को काट कर अंदर उतर गई, उसने मुड़कर मुझको इस ज़ोर से दबोचा कि मेरी जान

(1) سہیہل بُخَاری, کیتَابُ الْمَغَاضِی, بَابُ الْجَنَاحَاتِ, حُنَيْن

पर बन गई, लेकिन फिर वह ठंडा होकर गिर पड़ा, इसी अस्ना में उमर रज़ि० को देखा “पूछा कि मुसलमानों का क्या हाल है?” बोले क़ज़ाए इलाही यही थी।<sup>(1)</sup>

इस ज़ाहिरी शिकस्त के मुख्ततिफ़ अस्बाब थे, मुकद्दमतुल जैश में जो हज़रत ख़ालिद रज़ि० की अफ़सरी में था, ज्यादातर मक्का के जदीदुल इस्लाम नौजवान थे, वह जवानी के गुरुर में अस्लहए जंग भी पहन कर नहीं आए थे, फौज में दो हज़ार तुलकाअू यअ़नी वह लोग थे, जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, हवाज़िन तीर अंदाज़ी में तमाम अरब में अपना जवाब नहीं रखते थे, मैदाने जंग में उनका एक तीर भी खाली नहीं जाता था, कुफ़्फ़ार ने मअूरका गाह में पहले पहुंच कर मुनासिब मकामात पर क़ब्ज़ा कर लिया था और तीर अंदाज़ों के दस्ते पहाड़ की घाटियों, खोओं और दरों में जा बजा जमा दिये थे।<sup>(2)</sup>

तीरों का मेंह बरस रहा था, बारह हज़ार फौजें हवा हो गई थीं, लेकिन एक पैकरे मुकद्दस पा बर जा था जो तन्हा एक फौज, एक मुल्क, एक अक़लीम, एक आलम, बल्कि मज्मूआए काइनात था।<sup>(3)</sup>

आंहज़रत सल्ल० ने दाहनी जानिब देखा और पुकारा “يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ” आवाज़ के साथ सदा आई “हम हाज़िर हैं” फिर आप सल्ल० ने बाई जानिब मुड़कर पुकारा,

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए हुनैन

(2) सीरतुन्नबी 1-535

(3) सीरतुन्नबी 1-535, 538, इमाम नौवी रज़ि० ने शहै मुस्लिम में शिकस्त के इन बअज़ अस्बाब का जिक्र किया है

अब भी वही आवाज़ आई, आप सल्ल० सवारी से उत्तर पड़े और जलाले नुबूव्वत के लहजा में फ़रमाया ‘‘मैं खुंदा का बंदा और उसका पैग़म्बर हूं।’’<sup>(1)</sup>

बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि यह रिज़ू आप सल्ल० की ज़बाने मुबारक पर था।

**أَنَّ النَّبِيَّ لَا كَذِبُ أَنَا أَبْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ**

‘‘मैं पैग़म्बर हूं यह झूट नहीं है, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं।’’<sup>(2)</sup>

हज़रत अब्बास रज़ी० निहायत बुलंद आवाज़ थे, आप सल्ल० ने उनको हुक्म दिया कि मुहाजिरीन और अंसान को आवाज़ दो, उन्होंने नज़रा मारा:

**يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ يَا اصْحَابَ السَّمْرَةِ**

ऐ गिरोहे अंसार! ऐ बैज़ते रिज़वान वालो!

इस पुर असर आवाज़ का कानों में पड़ना था कि तमाम फौज पलट पड़ी, जिनके घोड़े कशमकश और घमसान की वजह से मुड़ न सके, उन्होंने ज़िरहें फेंक दीं और घोड़ों से कूद पड़े, दफ़्तरतन लड़ाई का रंग बदल गया,<sup>(3)</sup> कुफ़्फ़ार भाग निकले और जो रह गए उनके हाथों में हथकड़ियां थीं, बनू मालिक (सक्रीफ़ की एक शाख़ थी) जम कर लड़े, लेकिन उनके सत्तर आदमी मारे गए, और जब उनका

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल्लाइफ

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, ग़ज़वए हुनैन

(3) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब फ़ी ग़ज़वए हुनैन, मुसन्नफ़

अब्दुरज़ाक 5-380, 381

अलमबरदार उस्मान बिन अब्दुल्लाह मारा गया, तो वह भी साबित कदम न रह सके।<sup>(1)</sup>

शिकस्त खुर्दा फौज टूट फूट कर कुछ औतास में जमा हुई और कुछ ताइफ में जाकर पनाह गुज़ीं हुई, जिसके साथ सिपहसालारे लशकर (मालिक बिन औफ) भी था।<sup>(2)</sup>

दुरैद बिन अस्सिम्मा कई हज़ार की जमईयत लेकर औतास में आया, आंहज़रत सल्ल० ने (अबू आमिर अशअरी के मातहत) थोड़ी सी फौज उसके इस्तीसाल के लिये भेज दी, अबू आमिर दुरैद के बेटे के हाथ से मारे गए और अलमे इस्लाम उसके हाथ में था, यह हालत देखकर हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० ने आगे बढ़ कर हमला किया, दुशमन को क़त्ल करके अलम उसके हाथ से छीन लिया।<sup>(3)</sup>

असीराने जंग की तअ़दाद हज़ारों से ज्यादा थी उनमें हज़रत शीमा भी थीं, जो रसूलुल्लाह सल्ल० की रज़ाई बहन थीं, लोगों ने जब उनको गिरफ़तार किया तो उन्होंने कहा “मैं तुम्हारे पैग़म्बर की बहन हूं” लोग तस्दीक के लिये आंहज़रत सल्ल० के पास लाए, उन्होंने पीठ खोल कर दिखाई कि एक दफ़ा बचपन में आपने दांत से काटा था यह उसका निशान है, फर्ते मुहब्बत से आप सल्ल० की आंखों में आंसू भर आए, उन के बैठने के लिये खुद रिदाए मुबारक बिछाई, मुहब्बत की बातें कीं, चंद शुतुर और बकरियां

(1) इब्ने हिशाम 2-449, 450

(2) इब्ने हिशाम 2-453

(3) इब्ने हिशाम 2-454, सहीह बुखारी, बाब ग़ज़वए औतास

इनायत कीं और इशाद किया जी चाहे तो मेरे घर चल कर रहे और अगर घर जाना चाहे तो वहां पहुंचा दिया जाए, उन्होंने खानदान की मुहब्बत से घर जाना चाहा, चुनांचे इज़्ज़त और एहतिराम के साथ पहुंचा दी गई।<sup>(1)</sup>

हुनैन की बक़िया शिकस्त खुर्दा फौज ताइफ़ जाकर पनाह गुज़ीं हुई और जंग की तैयारियां कीं, ताइफ़ महफूज़ मकाम था, ताइफ़ इसको इसलिये कहते हैं कि इसके गिर्द शहरे पनाह के तौर पर चहार दीवारी थी, यहां सक़ीफ़ का जो क़बीला आबाद था, निहायत शुजाऊ़, तमाम अरब में मुस्ताज़ और कुरैश का गोया हमसर था, उर्वा बिन मसऊद जो यहां का रईस था, अबू सुफ़यान (अमीर मुआविया रज़ि० के बाप) की लड़की उसको ब्याही थी, कुप़फ़ारे मक्का कहते थे कि कुर्झान अगर उत्तरता तो मक्का या ताइफ़ के रुअसाऊ़ पर उत्तरता, यहां के लोग फ़न्ने जंग से भी वाक़िफ़ थे।<sup>(2)</sup> तबरी और इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि उर्वा बिन मसऊद और ग़लान बिन सलमा ने जर्श (यमन का एक ज़िला) में जाकर किला शिकन आलात यअ़नी दब्बाबा, सन्बूर और मिंजिनीक़ के बनाने और इस्तेमाल करने का फ़न सीखा था।<sup>(3)</sup>

यहां एक महफूज़ किला था, अहले शहर और हुनैन की शिकस्त खुर्दा फौज ने उसकी मरम्मत की, साल भर का रसद का सामान जमा किया, चारों तरफ़ मिंजिनीक़ और

(1) इब्ने हिशाम 2-458, तबरी 2-171 (2) सीरतुन्नबी सल्ल० 1-541, तारीखे तबरी 2-171 (3) इब्ने हिशाम 2-478

जा बजा क़द्र अंदाज़ मुतअ़्यन किये।<sup>(1)</sup>

आंहज़रत सल्ला० ने हुनैन के माले ग़नीमत और असीराने जंग के मुतअ़्लिक हुक्म दिया कि जिइर्ना में महफूज़ रखे जाएं और खुद ताइफ़ का अज़म किया, हज़रत ख़ालिद रज़ि० मुक़द्दमतुल जैश के तौर पर पहले रवाना कर दिये गए, ग़र्ज़ मुहासरा हुआ और इस्लाम में यह पहला मौक़ा था कि किला शिकन आलात यअ़नी दब्बाबा और मिंजिनीक़ इस्तेमाल किये गए, दब्बाबा पर अहले किला ने लोहे की गर्म सलाखें बरसाई और इस शिद्दत से तीर बारी की कि हमलाआवरों को हटना पड़ा, बहुत से लोग ज़ख्मी हुए, बीस दिन तक मुहासरा रहा, लेकिन शहर फ़त्ह न हो सका<sup>(2)</sup> आंहज़रत सल्ला० ने नौफ़ल बिन मुआविया को बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या राए है? उन्होंने कहा लोमझी भट में घुस गई है, अगर कोशिश जारी रही तो पकड़ ली जाएगी, लेकिन छोड़ दी जाए तब भी कुछ अंदेशा नहीं, चूंकि सिर्फ़ मुदाफ़अत मक्सूद थी, आंहज़रत सल्ला० ने हुक्म दिया कि मुहासरा उठा लिया जाए, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ की कि आप इनको बद्दुआ दें, आप सल्ला० ने यह दुआ दी:

”اللَّهُمَّ اهْدِ ثَقِيفاً وَأَنْتَ بِهِمْ.“

“ऐ खुदा सकीफ़ को हिदायत कर और तौफ़ीक दे कि मेरे पास हाज़िर हो जाएं।”<sup>(3)</sup>

(1) तबकात इब्ने सज़्द 2-158

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-482, 483, तबकात इब्ने सज़्द 2-158

(3) तबकात इब्ने सज़्द 2-159, इब्ने हिशाम 2-488

मुहासरा छोड़ कर आप सल्ल० जिइरना में तशरीफ लाए, ग़नीमत का बेशुमार ज़खीरा था, छः हज़ार असीराने जंग, चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार बकरियाँ और चार हज़ार ऊकिया चांदी थी, असीराने जंग के मुतअल्लिक आप सल्ल० ने इंतिज़ार किया कि उनके अज़ीज़ व अक़ारिब आएं तो उनसे गुफ्तगू की जाए, लेकिन कई दिन गुज़रने पर कोई न आया, माले ग़नीमत के पांच हिस्से किये गए, चार हिस्से हसबे काएदा अहले फौज को तकसीम किये गए, ख़म्स बैतुल माल और गुरबा व मसाकीन के लिये रखा गया।

मक्का के अक्सर रुअसाअू जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया था अभी तक मुज़बज़बुल एकाद थे, इन्ही को कुर्झान मजीद में “مُؤْلِفُهُ الْقُلُوب” कहा है, कुर्झान मजीद में जहां ग़नीमत के मसारिफ़ बयान किये हैं, इन लोगों का नाम भी है, आंहज़रत सल्ल० ने इन लोगों को निहायत फ़्याज़ाना इन्ज़ामात दिये।<sup>(1)</sup>

जिन लोगों पर इन्ज़ाम की बारिश हुई, उमूमन अहले मक्का और अक्सर जदीदुल इस्लाम थे, इस पर अंसार को रंज हुआ, बअूज़ों ने कहा रसूलुल्लाह सल्ल० ने कुरैश को इन्ज़ाम दिया और हमको महरूम रखा, हालांकि हमारी तलवारों से अब तक कुरैश के खून के कर्ते टपकते हैं, बअूज़ बोले कि मुश्किलात में हमारी याद होती है और ग़नीमत औरों को मिलती है।

(1) दलाइलुन्नुबूवा 5-171, इन्ने हिशाम 2-489, सीरतुन्नबी सल्ल० 1-542, 543, इन्ज़ामात का ज़िक्र सहीहैन में मौजूद है।

आंहज़रत सल्ल० ने यह चर्चे सुने तो अंसार को तलब फ़रमाया, एक चर्मी खेमा नसब किया गया, जिसमें लोग जमा हुए, आप सल्ल० ने अंसार से ख़िताब किया और फ़रमाया तुमने ऐसा कहा? लोगों ने अर्ज़ की कि “हुजूर सल्ल०! हमारे सर बरआवुदा लोगों में से किसी ने यह नहीं कहा, नौखेज़ नौजवानों ने यह फ़िक्रे कहे थे, सहीह बुखारी बाब मनाकिबुल अंसार में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि जब आंहज़रत सल्ल० ने अंसार को बुला कर पूछा “यह क्या बाकिआ है?” तो चूंकि अंसार झूट नहीं बोलते थे, उन्होंने कहा: “आप सल्ल० ने जो सुना सही है।”<sup>(1)</sup>

आप सल्ल० ने एक खुत्बा दिया, जिसकी नज़ीर फ़न्ने बलाग़त में नहीं मिल सकती, अंसार की तरफ ख़िताब फ़रमाकर कहा “क्या यह सच नहीं है कि तुम पहले गुमराह थे, खुदा ने मेरे ज़रीआ तुमको हिदायत की? तुम मुंतशिर और परागंदा थे, खुदा ने मेरे ज़रीआ तुम में इत्तिफ़ाक पैदा किया? तुम मुफ़िलस थे खुदा ने मेरे ज़रीआ से तुमको दौलतमंद किया? आप सल्ल० यह फ़रमाते जाते थे और हर फ़िक्रा पर अंसार कहते जाते थे कि ‘‘खुदा और रसूल सल्ल० का एहसान सबसे बढ़ कर है।’’

आप सल्ल० ने फ़रमाया नहीं, तुम यह जवाब दो कि “ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! आप (सल्ल०) को जब लोगों ने झुटलाया तो हमने आपकी तस्दीक की, आप (सल्ल०) को

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल्लाइफ, व किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबुल अंसार।

तबक्कुआत हैं, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि “ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब का जिस कदर हिस्सा है वह तुम्हारा है लेकिन आम रिहाई की तदबीर यह है कि नमाज़ के बाद जब मज्मा हो तो सब के सामने यह दरख़्बास्त पेश करो, नमाज़े जुहर के बाद उन लोगों ने यह दरख़्बास्त मज्मा के सामने पेश की, आप सल्ल० ने फ़रमाया “मुझको तो सिर्फ़ अपने ख़ानदान पर इख़ितायार है, लेकिन मैं तमाम मुसलमानों से उनके लिये सिफारिश करता हूं” मुहाजिरीन और अंसार फौरन बोल उठे “हमारा हिस्सा भी हाज़िर है” इस तरह ४ हज़ार दफ़अतन आज़ाद हुए।<sup>(1)</sup>

### ग़ाज़वए तबूक

एक क़ाफिला शाम से आया और उन्होंने ज़ाहिर किया कि कैसर की फौजें मदीने पर हमला आवर होने के लिये तैयार और फ़राहम हो रही हैं, अरब के ईसाई कबाइल भी उनके साथ शामिल हैं।<sup>(2)</sup>

नबी सल्ल० ने ख़्याल फ़रमाया कि हमला आवर फौज की मुदाफ़अत अरब की सरज़मीन में दाख़िल होने से पहले मुनासिब है, ताकि अंदुरुने मुल्क के अन्न में ख़त्ल वाकेअन हो।

यह मुकाबला ऐसी सलतनत से था जो निस्फ़ दुन्या पर हुक्मरां थी और जिसकी फौज हाल ही में सलतनते ईरान को नीचा दिखा चुकी थी।<sup>(3)</sup>

(1) तारीखे तबरी 2-173, इब्ने हिशाम 2-488, 489 (2) तबकात इब्ने सज़्द

(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-136

मुसलमान बे सर व सामान थे सफर दूर दराज़ का था, अरब की मशहूर गर्मी खूब ज़ोरों पर थी, मदीना में मेवे पक गए थे, मेवे खाने और साया में बैठने के दिन थे।<sup>(1)</sup>

नबी करीम सल्ल० ने तैयारिये सामान के लिये आम चंदा की फेहरिस्त खोली, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० ने तीन सौ ऊंट, पचास घोड़े और एक हज़ार दीनार चंदा में दिये उनको “مَجْهُزٌ جَيْشُ الْعُسْرَةِ” का खिताब मिला।<sup>(2)</sup>

हज़रत अब्दुर्रह्मान बिन औफ़ ने चालीस हज़ार दिरहम पेश किये।<sup>(3)</sup>

हज़रत उमर फ़ारुक रज़ि० ने घर में जो कुछ था उसका निस्फ़ जो कई हज़ार रूपया था हाज़िर किया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० जो कुछ लाए अगर्चे वह कीमत में कम था मगर मअ़लूम हुआ कि वह घर में अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल० की मुहब्बत के सिवा और कुछ भी बाकी छोड़ कर न आए थे।<sup>(4)</sup>

अबू अकील अंसारी रज़ि० ने दो सेर छूहारे लाकर पेश किये और यह भी अ़र्ज की कि “रात भर पानी निकाल निकाल कर एक खेत को सैराब करके चार सेर छूहारे मज़दूरी के लाया था, दो सेर बीवी बच्चे के लिये छोड़ कर बाकी दो सेर ले आया हूं।” नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि छूहारों को जुम्ला कीमती माल व मताऊ के ऊपर बिखेर दो।<sup>(5)</sup>

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-516 (2) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाकिब, बाब मनाकिबे उस्मान बिन अफ़्फान, मुस्नद अहमद 5-63 (3) तफसीर तबरी में बीस हज़ार का जिक्र है 10-191 (4) रहमतुल लिल आलमीन 1-136 (5) तफसीर तबरी 10-197

ग़र्ज हर सहाबी ने इस मौक़ा पर ऐसे ही खुलूस व  
फ़राख दिली से काम लिया, तकरीबन बयासी शख्स जो  
दिखावे के मुसलमान थे बहाना करके अपने घरों में रह  
गए।<sup>(1)</sup>

अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल मशहूर मुनाफ़िक ने  
इन लोगों को इत्मीनान दिलाया था कि अब मुहम्मद सल्ल०  
और उनके साथी मदीना वापस न आ सकेंगे, कैसर उन्हें  
कैद कर के मुख्तलिफ़ मुमालिक में भेज देगा।<sup>(2)</sup>

खुदा का नबी सल्ल० तीस हज़ार की जमईयत से तबूक  
को रवाना हुआ।<sup>(3)</sup>

मदीना में सिबाअू बिन उरफुता को ख़लीफ़ा बनाया  
और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० को मदीना में अहले बैत की  
ज़रूरीयात के लिये मामूर फ़रमाया।<sup>(4)</sup>

लशकर में सवारियों की बड़ी किल्लत थी अट्ठारह  
शख्सों के लिये एक ऊंट मुकर्रर था, रसद के न होने से  
अक्सर जगह दरख्तों के पत्ते खाने पड़े, जिससे होंट सूज  
गए थे, पानी बअूज़ जगह मिला ही नहीं, ऊंटों को (अगच्छे  
सवारी के लिये पहले ही कम थे) ज़िब्ब करके उनकी आंतों  
का पानी पिया करते थे।<sup>(5)</sup>

(1) ज़ादुल मज़ाद ३-५२९, इब्ने सज़्द २-१६५

(2) रहमतुल लिलआलमीन १-१३६

(3) तबक़ात इब्ने सज़्द जुज्ज्व मग़ाज़ी, स० ११९

(4) इब्ने हिशाम २-५१९

(5) मदारिजुन्नुबूवा २-५७७, ५८०

अलग़र्ज़ सब्र व इस्तिक्बाल से तमाम तकालीफ़ को बदाश्त करते हुए तबूक पहुंच गए। अभी तबूक के रास्ते ही में थे कि अली मुर्तज़ा रज़ि० भी पहुंच गए, मअ़्लूम हुआ कि मुनाफ़िकीन बाद में हज़रत अली रज़ि० को चिढ़ाने और खिजाने लगे थे, कोई कहता निकम्मा समझ कर छोड़ दिया, कोई कहता तरस खाकर छोड़ दिया, इन बातों से शेरे खुदा को गैरत आई, दो मंज़िला सेह मंज़िला तै करते हुए नबी करीम सल्ल० की खिदमत में पहुंच गए, लम्बे लम्बे सफ़र और सख्त गर्मी की तकलीफ़ से पांव मुतवर्रम थे और छाले पड़ गए थे, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया “اَتَرْضِيْ اُنْ”<sup>۱</sup> “تَكُوْنَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَىٰ إِلَّا أَنَّهُ لَا نَبِيٌّ بَعْدِي”<sup>۲</sup> “अली! तुम इस पर खुश नहीं होते कि तुम मेरे लिये वैसे ही हो जैसा कि मूसा के लिये हारून थे, गो मेरे बाद कोई नबी ‘नहीं’” यह सुनकर अली मुर्तज़ा खुश व खुर्रम मदीना को वापस तशरीफ़ ले गए।<sup>(1)</sup>

तबूक पहुंच कर नबी सल्ल० ने एक माह क़्याम फ़रमाया, अहले शाम पर इस दिलेराना इक़दाम का यह असर हुआ कि उन्होंने अरब पर हमला आवर होने का ख्याल उस वक्त छोड़ दिया और इस हमला आवरी का बेहतरीन मौका आंहज़रत सल्ल० की वफ़ात के बाद का ज़माना करार दिया।<sup>(2)</sup>

(1) इने हिशाम 2-519, 520, सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए तबूक

(2) रह्मतुल लिल आलमीन

तबूक में एक नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्लो ने एक मुख्तसर और निहायत जामेअू वअजू फरमाया, जैल में इसे मअू तर्जुमा दर्ज किया जाता है।

अल्लाह पाक की बेहतरीन हम्द व सना के बाद  
फरमाया:

امّا بعد:

”فَإِنَّ أَصْدَقَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ، وَأَوْثَقَ الْعُرَى كَلِمَةُ  
الْتَّقْوَى، وَخَيْرُ الْمَلِكِ مِلَّةُ إِبْرَاهِيمَ، وَخَيْرُ الشَّرِّينِ سُنَّةُ  
مُحَمَّدٍ، وَأَشْرَقَ الْحَدِيثِ ذِكْرُ اللَّهِ، وَأَخْسَنُ الْقَصَصِ  
هَذَا الْقُرْآنُ، وَخَيْرُ الْأُمُورِ عَوَازِمُهَا، وَشَرُّ الْأُمُورِ  
مُحَدَّثَاتُهَا، وَأَخْسَنُ الْهَدِيَّ هَدْيُ الْأَنْبِيَاءِ، وَأَشْرَقَ  
الْمَوْتِ قَتْلُ الشَّهِيدَاءِ، وَأَغْمَى الْعَمَى الْضَّلَالَةُ بَعْدَ  
الْهُدَى، وَخَيْرُ الْأَعْمَالِ مَا نَفَعَ، وَخَيْرُ الْهَدِيَّ مَا اتَّبَعَ، وَشَرُّ  
الْعَمَى غَمَى الْقَلْبِ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى،  
وَمَا قَلَّ وَكَفَى خَيْرٌ مِمَّا كَثُرَ وَأَهْلَهُ . وَشَرُّ الْمُعْنَى حِينَ  
يَخْضُرُ الْمَوْتُ، وَشَرُّ النَّدَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمِنَ النَّاسِ مَنْ  
لَا يَأْتِي الْجَمَعَةَ إِلَّا ذُبْرًا، وَمَنْ لَا يَذْكُرُ اللَّهَ إِلَّا هَجْرَا، وَمِنْ  
أَعْظَمِ الْخَطَايَا التَّسَانُ الْكَذُوبُ، وَخَيْرُ الْغَنِيِّ غَنِيَ  
النَّفْسِ، وَخَيْرُ الزَّادِ التَّقْوَى، وَرَأسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللَّهِ  
عَزَّ وَجَلَّ، وَخَيْرُ مَا وَقَرَفَ فِي الْقُلُوبِ الْيَقِينُ، وَالْأَرْتَيَابُ مِنْ  
الْكُفْرِ، وَالنِّيَاخَةُ مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ، وَالْغُلُولُ مِنْ

حَرَّ جَهَنَّمُ، وَالْكَنْزُ كَيْ مِنَ النَّارِ، وَالشَّفَرُ مِنْ مَزَامِيرِ  
إِبْلِيسَ، وَالخَمْرُ جَمَاعُ الْإِثْمِ، وَشَرُّ الْمَاكِلِ مَالُ الْيَتَمِ،  
وَالسَّعِيدُ مَنْ وُعِظَ بِغَيْرِهِ، وَالشَّقِيقُ مَنْ شَقِيقٌ فِي بَطْنِ أَمْهِ،  
وَمَلَائِكَةُ الْعَمَلِ خَوَاتِمُهُ وَشَرُّ الرَّوَايَا رَوَايَا الْكَذِبِ، وَكُلُّ  
مَاهُوَاتٍ قَرِيبٌ، وَسَبَابُ الْمُؤْمِنِ فُسُوقٌ وَقِتَالُهُ كُفْرٌ،  
وَأَكْلُ لَحْمِهِ مِنْ مَعْصِيَةِ اللَّهِ وَحُرْمَةُ مَا لِهِ كَحْرُمَةُ ذَمِيَّهِ،  
وَمَنْ يَتَأَلَّ عَلَى اللَّهِ يُكَذِّبُهُ، وَمَنْ يَغْفِرُ يُغْفَرُ لَهُ، وَمَنْ يَعْفُ  
يَعْفُ اللَّهُ عَنْهُ، وَمَنْ يَكْظِمُ الغَيْظَ يَأْجُرُهُ اللَّهُ، وَمَنْ يَصْبِرُ  
عَلَى الرِّزْيَةِ يُعَوِّضُهُ اللَّهُ، وَمَنْ يَتَّبِعُ السُّمْعَةَ يُسَمِّعُهُ اللَّهُ،  
وَمَنْ يَصْبِرُ يُضَعِّفُ اللَّهُ لَهُ، وَمَنْ يَعْصِي اللَّهَ يَعَذِّبُهُ اللَّهُ، ثُمَّ  
اسْتَغْفِرَ ثَلَاثًا۔“<sup>(1)</sup>

“हर एक कलाम में सिदूक में बढ़कर अल्लाह की किताब है, सबसे बढ़कर भरोसा की बात तक्वा का कलिमा है, सब मिल्लतों से बेहतर मिल्लत, इब्राहीम (अलै०) की है, सब तरीकों से बेहतर तरीका मुहम्मद (सल्ल०) का है, सब बातों पर अल्लाह के ज़िक्र को शर्फ है, सब बयानात से पाकीज़ा तर कुर्झनि है, बेहतरीन काम उलुल अ़ज़्म के काम हैं, उमूर में बदतरीन अम्र वह है जो नया निकाला गया हो, अंबिया की रविश सब रविशों से खूब तर है, शहीदों की मौत, मौत की

(1) دلائل علی نبوبت لیل بیہکی 5-241, 242

सब किस्मों से बुजुर्ग तर है, सबसे बढ़ कर अंधापन वह गुमरही है जो हिदायत के बाद हो जाए, अमलों में वह अमल अच्छा है जो नफा देह हो, बेहतरीन रविश वह है जिस पर लोग चल सकें, बदतरीन कोरी (अंधापन) दिल की कोरी है, बुलंद हाथ पस्त हाथ से बेहतर होता है, थोड़ा और काफ़ी माल उस बुहतात से अच्छा है जो ग़फ़लत में डाल दे, बदतरीन मअ़ज़िरत वह है जो जाँ कनी के वक्त की जाए, बदतरीन नदामत वह है जो क्यामत को होगी, बअूज़ लोग जुमुआ को आते हैं दिल पीछे लगे होते हैं, उनमें बअूज़ लोग वह हैं जो अल्लाह का ज़िक्र कभी कभी किया करते हैं, सब गुनाहों से अज़ीम तर झूटी ज़बान है, सबसे बड़ी तवंगरी दिल की तवंगरी है, सबसे उम्दा तोशा तत्क्षा है, दानाई यह है कि खुदा का खौफ़ दिल में हो, दिल नशीन होने के लिये बेहतरीन चीज़ यकीन है, शक पैदा करना कुफ़ (की शाख) है, बैन से रोना जाहिलीयत का काम है, ख़यानत करना अज़ाबे जहन्नम का सामान है, माल व दौलत नारे दोज़ख़ का दाग़ है, शेअर इबलीस का बाजा गाजा है, शराब तमाम गुनाहों का मज्मूआ है, बदतरीन रोज़ी यतीम का माल खाना है, सआदतमंद वह है जो दूसरे से नसीहत पकड़ता है, अस्ल बदबख़त वह है जो माँ के पेट ही से बदबख़त हो, अमल का

सरमाया उसका बेहतरीन अंजाम है, बदतरीन बात वह है जो झूटी है, जो बात होने वाली है वह बहुत क़रीब है, मोमिन को गाली देना फ़िस्क है, मोमिन को क़ल्ल करना कुफ़ है, मोमिन का गोश्त खाना (उसकी ग़ीबत करना) अल्लाह की मअूसियत है, मोमिन का माल दूसरे पर ऐसा ही हराम है जैसा कि उसका खून, जो खुदा से इस्तिग़फ़ार करता है खुदा उसे झुटलाता है, जो किसी का ऐब छिपाता है खुदा उसके उयूबे छिपाता है, जो मुआफ़ी देता है उसे मुआफ़ी दी जाती है, जो गुस्सा को पी जाता है खुदा उसे अज्ज देता है, जो नुक़सान पर सब्र करता है खुदा उसे अज्ज देता है, जो चुग्ली को फैलाता है खुदा उसकी रुस्वाई आम कर देता है, जो सब्र कर करता है खुदा उसे बढ़ाता है, जो खुदा की नाफ़रमानी करता है, खुदा उसे अज़ाब देता है, फिर तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़कर आंहज़रत सल्ल० ने इस खुत्बा को ख़त्म फ़रमाया।”

अच्यामे क्यामे तबूक में जुलबजादीन का इंतिकाल हुआ इस मुख्लिस के ज़िक्र से वाज़ेह होता है कि नबी करीम सल्ल० मुफ़्लिस सहाबा पर किस क़दर मज़ीद लुत्फ़ व इनायत फ़रमाते थे, उनका नाम अब्दुल्लाह था, अभी बच्चा ही थे कि बाप मर गया, चचा ने परवरिश की थी, जब जवान हुए तो चचा ने ऊंट, बकरिया, गुलाम देकर उनकी हैसियत दुरुस्त कर दी थी, अब्दुल्लाह ने इस्लाम के

मुतअल्लिक कुछ सुना और दिल में तौहीद का ज़ौक़ पैदा हुआ, लेकिन चचा से इस कदर डरते थे कि इ़्हारे इस्लाम न कर सके, जब नबी करीम सल्ल० फ़त्हे मक्का से वापस गए तो अब्दुल्लाह ने चचा से जाकर कहा:

प्यारे चचा! मुझे बरसों इंतिज़ार करते गुज़र गए कि कब आपके दिल में इस्लाम की तहरीक पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं, लेकिन आपका हाल वही पहले का सा चला आता है, मैं अपनी उम्र पर ज़्यादा एतिमाद नहीं कर सकता, मुझे इजाज़त फ़रमाइये कि मैं मुसलमान हो जाऊं।

चचा ने जवाब दिया “देख अगर तू मुहम्मद (सल्ल०) का दीन कबूल करना चाहता है तो मैं सब कुछ तुझसे छीन लूंगा, तेरे बदन पर चादर और तहबंद तक बाकी न रहने दूंगा।”

अब्दुल्लाह ने जवाब दिया “चचा साहब! मैं मुसलमान ज़खर बनूंगा और मुहम्मद सल्ल० की इत्तिबाअ़ ही कबूल करूंगा, शिर्क और बुत परस्ती से मैं बेज़ार हो चुका हूं अब ज़र व माल वगैरा है सब कुछ संभाल लीजिये, मैं जानता हूं कि इन सब चीज़ों को आखिर एक रोज़ यहीं दुन्या में छोड़ जाना है, इसलिये मैं उसके लिये सच्चे दीन को तर्क नहीं कर सकता।

अब्दुल्लाह ने यह कहकर कपड़े उतार दिये और मां के

सामने गए, माँ देख कर हैरान हुई कि क्या हुआ, अब्दुल्लाह ने कहा मैं मोमिन और मुवहिहद हो गया हूं नबी करीम सल्ल० की खिदमत में जाना चाहता हूं सत्र पोशी के लिये कपड़े की ज़खरत है, मेहरबानी करके दीजिये, माँ ने एक कम्बल दे दिया, अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़ कर आधे कातहबंद बना लिया, आधा ओढ़ लिया और मदीना को खाना हो गए, अलस्सुल्लाह मदीना मस्जिदे नबवी में पहुंच गए और मस्जिद से तकिया लगा कर मुंतज़िराना बैठ गए, नबी करीम सल्ल० जब मस्जिद मुबारक में आए उन्हें देखकर पूछा कौन हो? कहा मेरा नाम अब्दुल उज्ज़ा है, फ़कीर व मुसाफ़िर हूं आशिके जमाल और तालिबे हिदायत होकर दरे दौलत आ पहुंचा।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया “तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह है, जुलबजादीन लक़ब, तुम हमारे क़रीब ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो।”

हज़रत अब्दुल्लाह अस्हाबे सुफ़क़ा में शामिल हो गए, नबी करीम सल्ल० से कुर्�आन सीखते और दिन भर अजब जौक़ व शौक़ और जोश व नशात से पढ़ा करते।

एक दफ़ा उमर फ़ारुक़ रज़ि० ने कहा कि लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह अअूराबी इस क़दर बुलंद आवाज़ से पढ़ रहा है कि दूसरों की किराअत में मुज़ाहमत होती है, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया उमर! उसे कुछ न कहो यह तो खुदा और रसूल के लिये सब कुछ छोड़ छाड़ कर आया

है।

अब्दुल्लाह के सामने ग़ज़वए तबूक की तैयारी होने लगी तो यह भी रसूलुल्लाह सल्लो की खिदमत में आए, अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लो दुआ फरमाइये कि मैं भी राहे खुदा में शहीद हो जाऊं, नबी करीम सल्लो ने फरमाया जाओ किसी दरख्त का छिल्का उतार लाओ, अब्दुल्लाह छिल्का ले आए तो नबी करीम सल्लो ने वह छिल्का उनके बाजू पर बांध दिया और ज़बाने मुबारक से फरमाया “इलाही में कुफ़्फ़ार पर इसका खून हराम करता हूं” अब्दुल्लाह ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लो! मैं तो शहादत का तालिब हूं, नबी करीम सल्लो ने फरमाया “जब ग़ज़वा की नीयत से तुम निकलो और फिर तप आ जाए और मर जाओ तब भी तुम शहीद ही होगे।”

तबूक पहुंच कर यही हुआ कि तप चढ़ी और आलमे बक़ा को सिधार गए, बिलाल बिन हारिस मुज़नी का बयान है कि मैंने अब्दुल्लाह के दफ़्न की कैफ़ियत देखी है।

रात का वक्त था हज़रत बिलाल रज़ियो के हाथ में चराग़ था, अबू बक्र रज़ियो व उमर रज़ियो उसकी लाश को लहद में रख रहे थे, नबी करीम सल्लो भी उसकी कब्र में उतरे थे और अबू बक्र रज़ियो व उमर रज़ियो से फरमा रहे थे “أَنْجِلَى دُنْيَا كَمَا“ अपने भाई को मुझसे क़रीब करो, आंहज़रत सल्लो ने कब्र में इटि भी अपने हाथ से रखीं और फिर दुआ में फरमाया: “ऐ अल्लाह मैं इनसे राज़ी हुआ तू भी इनसे राज़ी हो जा” इब्ने मसउद रज़ियो फरमाते हैं काश

इस कब्र में मैं दफ़न किया जाता ।<sup>(1)</sup>

तबूक से वापस फिरे और मदीना के करीब पहुंचे तो लोग आलमे शौक में इस्तिकबाल को निकले, यहाँ तक कि पर्दा नशीनाने हरम भी जोश में घरों से निकल पड़े ।

जो मुनाफिकीन यह समझे हुए थे कि अब मुहम्मद (सल्ल०) और उनके दोस्त कैद होकर किसी दूर दराज़ जज़ीरा में भेजे जाएंगे और सही व सालिम मदीना न पहुंचेंगे, वह अब पशेमां हुए और उन्होंने साथ न चलने के झूट मूट उँग बनाए, नबी करीम सल्ल० ने सब को मुआफ़ी दी, लेकिन तीन मुख्लिस सहाबी भी थे जो अपनी मअ़मूली सुस्ती व काहिली की वजह से हमरिकाब जाने से रह गए थे, उनको अपनी सदाकृत की वजह से इम्तिहान भी देना पड़ा ।

उनमें से एक बुजुर्ग सहाबी रज़ि० ने अपने मुतअलिक जो कुछ अपनी ज़बान से बयान किया है मैं उसी को इस जगह लिख देना ज़रूरी समझता हूं ।

यह बुजुर्गवार हज़रत कअब बिन मालिक अंसारी रज़ि० हैं और उन 73/साबिकीन में से हैं, जो उक्बा की बैअते सानिया में हाजिर हुए थे और शुअ़राए ख़ास में से थे ।<sup>(2)</sup> हज़रत कअब रज़ि० का बयान कि इस सफ़र में मेरा घर पर रह जाना इक्तिलाए महज़ था, ऐसा करने का न मेरा इरादा था, न कोई उँग था, सफ़र का सामान मुरत्तब था, उम्दा

(1) मदारिजुन्नुबूब्वा, मुतरज़म 2-90,91, इब्ने हिशाम 2-527, 528

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

ऊंटनियां मेरे पास मौजूद थीं, मेरी माली हालत ऐसी अच्छी थी कि पहले कभी न हुई थी, उस सफ़र के लिये मैंने दो मज़बूत शुतुर भी ख़रीद लिये थे, हालांकि इससे पेशतर, मेरे पास दो ऊंट कभी न हुए थे, लोग सफ़र की तैयारी करते थे और मुझे ज़रा तरहुद न था, मैंने सोच रखा था कि जिस रोज़ कूच होगा मैं चल पड़ूँगा, लशकरे इस्लाम जिस रोज़ रवा हुआ मुझे कुछ थोड़ा सा काम था, मैंने कहा खैर मैं कल जा मिलूँगा, दो तीन रोज़ इसी तरह सुस्ती और तज़ब्जुब में गुज़र गए, अब लशकर इतनी दूर निकल गया था कि उसका मिल सकना मुश्किल हो गया, मुझे निहायत सदमा था कि यह क्या हुआ ।

मैं एक रोज़ घर से निकला, मुझे उन मुनाफ़िकीन के सिवा जो झूट मूट उज़्ज़ करने के आदी थे या जो मअ़जूर थे, और कोई भी रास्ता में न मिला, यह देखकर मेरे तन बदन को रंज व ग़म की आग लग गई, यह दिन मेरे इस तरह गुज़र गए कि नबी करीम सल्ल० वापस भी तशरीफ़ ले आए, अब मैं हैरान था कि क्या करूँ और क्या कहूँ और क्योंकर खुदा के रसूल सल्ल० के इताब से बचाव करूँ, लोगों ने मुझे बअूज़ हीले बहाने बताए, मगर मैंने यही फैसला किया कि नजात सच ही से मिल सकती है, आखिर मैं नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल० ने मुझे देखा और तबस्सुम फ़रमाया, तबस्सुम ख़श्म आमेज़ था, मेरे तो होश उसी वक़्त जाते रहे ।

नबी करीम सल्ल० ने पूछा कअूब! तुम क्यों रह गए थे, क्या तुम्हारे पास कोई सामान मुहय्या न था? मैंने अ़ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! मेरे पास तो सब कुछ था, मेरे नफ़्स ने मुझे ग़ाफ़िल बनाया, काहिली ने मुझ पर ग़ल्बा किया, शैतान ने मुझ पर हमला किया और मुझे हिर्मान व खिज़लान के गिर्दाब में डाल दिया, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: “तुम अपने घर ठहरो और हुक्मे इलाही का इंतिज़ार करो”

बअूज़ लोगों ने कहा देखो! अगर तुम भी कोई हीला बना लेते तो ऐसा न होता, मैंने कहा “वह्ये इलाही से मेरा झूट खुल जाता और मैं कहीं का भी न रहता, मुआमला किसी दुन्यादार से नहीं, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ है” मैंने दरयाप़त किया कि “जो हुक्म मेरे लिये हुआ है किसी और के लिये भी हुआ है?” लोगों ने कहा “हाँ हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअू की भी यही हालत है” यह सुनकर मुझे ज़रा तसल्ली हुई कि दो मर्दों सालेह और भी मुझ जैसी हालत में हैं।

फिर रसूले खुदा सल्ल० ने हुक्म दिया कि कोई मुसलमान हमारे साथ बातचीत न करे और न हमारे पास आकर बैठे, अब ज़िंदगी और दुन्या हमारे लिये वबाल मअ़लूम होने लगी, उन दिनों में हिलाल और मुरारा तो घर से बाहर भी न निकले, क्योंकि वह बूढ़े भी थे, लेकिन मैं जवान और दिलेर था, घर से निकलता मस्तिज़दे नबवी में

जाता, नमाज़ पढ़कर मस्जिद मुबारक के एक गोशाम में बैठ जाता।

नबी करीम सल्ल० मुहब्बत भरी निगाह और गोशए चशम से मुझे दखा करते, मेरी शिकस्तगी को मुलाहज़ा फरमाते, और जब मैं हुजूर सल्ल० की जानिब आंख उठाता तो हुजूर सल्ल० एराज़ फरमाते।

मुसलमानों का यह हाल था कि न कोई मुझसे बात करता न कोई मेरे सलाम का जवाब देता, एक रोज़ मैं निहायत रंज व अलम में मदीना से बाहर निकला, अबू क़तादा रज़ि० मेरा चचेरा भाई था और हम दोनों में निहायत मुहब्बत थी, सामने उसका बाग़ था, वह बाग़ में कुछ इमारत बनवा रहा था, मैं उसके पास चला गया, उसे सलाम किया तो उसने जवाब तक न दिया और मुँह फेर कर खड़ा हो गया, मैंने कहा “अबू क़तादा (रज़ि०)! तुम खूब जानते हो कि मैं खुदा और रसूल सल्ल० से मुहब्बत रखता हूं और निफाक व शिर्क का मेरे दिल पर असर नहीं, फिर तुम क्यों मुझसे बात नहीं करते?” अबू क़तादा ने अब भी जवाब न दिया, जब मैंने तीन बार इसी बात को दोहराया तो चचेरे भाई ने सिर्फ़ इस कदर जवाब दिया कि “अल्लाह और रसूल सल्ल० ही को खूब मअलूम है” मुझे बहुत ही रिक्कूत हुई और खूब ही रोया, मैं शहर में लौट कर आया तो मुझे एक ईसाई मिला, यह मदीना में मुझे तलाश कर रहा था, लोगों ने बता दिया कि वह यही शख्स है, उसके पास

बादशाहे ग्रन्सान का एक ख़त मेरे नाम था, ख़त में लिखा था:

‘हमने सुना है कि तुम्हास आक़ा तुमसे नाराज़ हो गया है, तुमको अपने सामने से निकाल दिया है और बाकी सब लोग भी तुम पर जौर व जफ़ा कर रहे हैं, हमको तुम्हारे दर्जा व मंज़िलत का हाल बखूबी मअ़लूम है और तुम ऐसे नहीं हो कि कोई तुम से ज़रा भी बे इल्लिफ़ाती करे या तुम्हारी इज़्ज़त के खिलाफ़ तुमसे सुलूक किया जाए, अब तुम यह ख़त पढ़ते ही मेरे पास चले आओ और आकर देखो कि मैं तुम्हारा एज़ाज़ व इकराम क्या कुछ कर सकता हूं।’

ख़त पढ़ते ही मैंने कहा कि यह एक और मुसीबत मुझ पर पड़ी, इससे बढ़ कर मुसीबत और क्या हो सकती है? कि आज एक ईसाई मुझ पर और मेरे दीन पर काबू पाने की आरजू करने लगा है और मुझे कुफ़ की दावत देता है, इस ख्याल से मेरा रंज व अंदोह चंद दर चंद बढ़ गया, ख़त को कासिद के सामने ही मैंने आग में डाल दिया और कह दिया ‘जाओ कह देना कि आपकी इनायात व इल्लिफ़ात से मुझे अपने आक़ा (सल्ल0) की बेइल्लिफ़ाती लाख दर्जा बेहतर व खुशतर है।’

मैं घर पहुंचा तो देखा कि नबी करीम सल्ल0 की तरफ से एक शख्स आया हुआ मौजूद है, उसने कहा: नबी करीम सल्ल0 ने हुक्म दिया है कि ‘तुम अपनी बीवी से अलाहीदा

कहा नहीं, सिफ़ अलाहिदा रहने को फ़रमाया है, यह सुनकर अपनी बीवी को उसके मैके भेज दिया, मुझे मअ़्लूम हुआ कि हिलाल और मुरारा के पास भी यही हुक्म पहुंचा था, हिलाल की बीवी नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया, या रसूलुल्लाह सल्ल०! हिलाल कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं और उनकी खिदमत के लिये कोई ख़ादिम भी नहीं, अगर इज़न हो तो मैं उनकी खिदमत करती रहूँ, फ़रमाया “हां उसके बिस्तर से दूर रहो” औरत ने कहा “या रसूलुल्लाह सल्ल०! हिलाल का रंज व ग़म से ऐसा हाल है कि उन्हें तो और कोई भी ख़्याल नहीं रहा।

अब मुझे लोगों ने कहा तुम भी इजाज़त ले लो कि तुम्हारी बीवी तुम्हारा काम काज तो कर दिया करे, मैंने कहा “मैं तो ऐसी जुर्त नहीं करने का, क्या ख़बर हुजूर सल्ल० इजाज़त दें या न दें, और मैं जवान हूँ अपना काम खुद कर सकता हूँ मुझे खिदमत की ज़रूरत नहीं।

अलग़र्ज़ इसी तरह मुसीबत के पचास दिन गुज़र गए, एक रात मैं अपनी छत पर लेटा हुआ था और अपनी मुसीबत पर सख्त नालां था कि कोहे सल्ज़ पर चढ़कर जो मेरे घर के क़रीब था, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० ने आवाज़ दी, कअूब को मुबारक हो कि उसकी तौबा कबूल हो गई, यह आवाज़ सुनते ही मेरे दोस्त व अह्बाब दौड़ पड़े और मुबारकबाद कहने लगे कि मुख्लिस की तौबा कबूल, मैंने यह सुनते ही पेशानी को खाक पर रख दिया और

सज्दए शुक्राना अदा किया और फिर दौड़ा दौड़ा नबी करीम सल्लूल० की खिदमत में हाजिर हुआ ।

नबी करीम सल्लूल० मुहाजिरीन व अंसार में तशरीफ़ फ़रमा थे, मुझे देखकर मुहाजिरीन ने मुबारकबाद दी और अंसार खामोश रहे, मैंने आगे बढ़कर सलाम अर्ज किया, उस वक्त चेहरए मुबारक खुशी व मुसर्रत से चौदहवीं के चांद की तरह ताबां व दरख्शां हो रहा था और आदते मुबारक थी कि खुशी में चेहरए मुबारक और भी ज्यादा रौशन हो जाता था, मुझे फ़रमाया “कअबु मुबारक! उस बेहतरीन दिन के लिये जब से तू मां के पेट से पैदा हुआ कोई दिन ऐसा मुबारक तुझ पर आज तक नहीं गुज़रा, आओ: तुम्हारी तौबा को रब्बुल आलमीन ने कबूल फ़रमा लिया है ।”

मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लूल०! इस कबूलियत के शुक्राना में अपना कुल माल राहे खुदा में सदक़ा देता हूं नबी करीम सल्लूल० ने फ़रमाया “नहीं” मैंने अर्ज किया “निस्फ़” फ़रमाया “नहीं” मैंने अर्ज किया “सुलुस” फ़रमाया, हाँ सुलुस खूब है और सुलुस भी बहुत है ।<sup>(1)</sup>

मुनाफ़िकीन हमेशा इस फ़िक्र में रहते थे कि मुसलमानों में किसी तरह फूट डाल दें, एक मुद्दत से वह इस ख्याल में थे कि मस्जिदे कुबा की तोड़ पर वहीं एक और मस्जिद इस हीला से बनाएं कि जो लोग जुअ्रफ़ या किसी और वजह से मस्जिदे नबवी में न पहुंच सकें यहां आकर नमाज़ अदा कर लिया करें, अबू आमिर जो अंसार में से ईसाई हो गया था

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस कअब बिन मालिक रज़ि०

उसने मुनाफ़िकीन से कहा तुम सामान करो, मैं कैसर के पास जाकर वहां से फौजें लाता हूं कि इस मुल्क को इस्लाम से पाक कर दे।

आंहज़रत सल्ल० जब तबूक तशरीफ ले जाने लगे तो मुनाफ़िकीन ने आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में आकर अर्ज़ की कि हमने बीमारों और मअजूरों के लिये एक मस्जिद तैयार की है, आप चल कर उसमें एक दफ़ा नमाज़ पढ़ा दें तो मक्बूल हो जाए, आप सल्ल० ने फ़रमाया इस वक्त मैं मुहिम पर जा रहा हूं जब तबूक से वापस फिरे तो हज़रत मालिक और हज़रत मअून बिन अदी को हुक्म दिया कि जाकर मस्जिद में आग लगा दें, इसी मस्जिद की शान में यह आयतें उतरीं हैं।<sup>(1)</sup>

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيَقًا بَيْنَ  
 الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلِ  
 وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدُنَا إِلَّا الْحُسْنَى وَاللَّهُ يَشْهُدُ إِنَّهُمْ لَحَادِثُونَ  
 لَا تَقْمُ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ  
 أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ، فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا، وَاللَّهُ  
 يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ.

“और इनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने इस ग़र्ज से मस्जिद बनाई है कि ज़रर पहुंचाएं और कुफ्र करें और मोमिनों में तफ़रक़ा डालें और जो लोग खुदा

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-529, 530, ज़ादुल मज़ाद 3-549

और उसके रसूल (सल्ल0) से पहले जंग कर चुके हैं उनके घात की जगह बनाएं, और क़समें खाएंगे कि हमारा मक्सूद तो सिर्फ भलाई थी, मगर खुदा गवाही देता है कि यह झूटे हैं, तुम इस मस्जिद में कभी खड़े भी न होना, अलबत्ता वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले दिन से तक़वा पर रखी गई है इस काबिल है कि उसमें जाया करो, उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और खुदा पाक रहने वालों ही को पसंद करता है।”

(तौबा)

## वफ़दे दोस

तुफ़ैल बिन अ़म्र रज़ि0 दोसी के इस्लाम लाने का ज़िक्र इस किताब में पहले आ चुका है, इस्लाम के बाद जब यह बुजुर्गवार वतन को जाने लगे तो इन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! दुआ फ़रमाइये कि मेरी कौम भी मेरी दावत पर मुसलमान हो जाए, दुआ फ़रमाई, खुदाया तुफ़ैल को तू एक निशान (आयत) बना दे, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 घर पहुंचे तो बूढ़े बाप मिलने के लिये आए, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा, बावा जान अब न मैं आपका हूं और न आप मेरे हैं, उन्होंने कहा क्यों? हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा मुहम्मद सल्ल0 का दीन कबूल करके और मुसलमान होके आया हूं उन्होंने कहा बेटा जो तेरा दीन है वही मेरा भी दीन है,

हज़रत तुफ़ैल ने कहा खूब, तब आप उठिये, गुस्त फ़रमाइये, पाक कपड़े पहन कर तशरीफ़ लाइये, ताकि मैं इस्लाम की तअलीम दूँ फिर हज़रत तुफ़ैल की बीवी आई, उससे भी इसी तरह बातचीत हुई और वह भी मुसलमान हो गई, अब हज़रत तुफ़ैल रज़िया<sup>(1)</sup> ने इस्लाम की मुनादी शुरू कर दी लेकिन लोग कुछ मुसलमान न हुए।

हज़रत तुफ़ैल रज़िया<sup>(1)</sup> फिर नबी करीम सल्ला<sup>اللهُ مَصَّلِيْلَهُ وَسَلَّمَ</sup> में आए, अर्ज़ किया मेरी कौम में ज़िना की कसरत है। (चूंकि इस्लाम ज़िना को सख्ती से हराम ठहराता है) इसलिये लोग मुसलमान नहीं हुए, हुजूर सल्ला<sup>اللهُ مَصَّلِيْلَهُ وَسَلَّمَ</sup> ने कहा: اهْدِ دُوْسَ (ऐ खुदा दौस को सीधा रास्ता दिखा) फिर हज़रत तुफ़ैल रज़िया<sup>(2)</sup> से फ़रमाया “जाओ” लोगों को दीने खुदा की तरफ बुलाओ, उनसे नर्मा और मुहब्बत का बरताव करो।

इस दफ़ा हज़रत तुफ़ैल को अच्छी कामियाबी हुई, वह 5 हियो में दौस के सत्तर अस्सी लोगों को जो मुसलमान हो चुके थे, साथ लेकर मदीना पहुंचे, मअलूम हुआ कि हुजूर सल्ला<sup>اللهُ مَصَّلِيْلَهُ وَسَلَّمَ</sup> खैबर गए हुए हैं, इसलिये खैबर ही पहुंच कर उन्होंने नबी करीम सल्ला<sup>اللهُ مَصَّلِيْلَهُ وَسَلَّمَ</sup> के दीदार से मुशरफ़ हुए,<sup>(3)</sup> नबी करीम सल्ला<sup>اللهُ مَصَّلِيْلَهُ وَسَلَّمَ</sup> के चर्चेरे भाई भी हब्श से वहाँ के हब्शी कबाइल को जो

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-625 (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ज़ी, बाब किस्सए दौस

(3) ज़ादुल मज़ाद 3-625, 626

मुसलमान हो चुके थे लेकर खैबर ही जा पहुंचे ।

हज़रत जअूफर रज़ि० का हब्श से वहाँ के मुस्लिमों को लेकर और हज़रत तुफ़ैल बिन अ़म्र का यमन से दौस के नौ मुस्लिम ख़ानदानों को लेकर खैबर में पहुंच जाना गोया यहूदियों को खुदा की तरफ से यह बता देना था कि जिस नबी सल्लू० की तअ़्लीम ऐसे दूर दराज़ मुल्कों में दिलों के किलों को आसानी से फ़त्ह कर रही है, उसकी मुखालफ़त में अपने ईंट पत्थर के किलों के ऊपर भरोसा करना किस क़दर बे बुन्याद बात है ।<sup>(1)</sup>

## वफ़दे सक़ीफ़

सक़ीफ़ में सबसे पहला शख्स जो तअ़्लीमे इस्लाम हासिल करने के लिये नबी करीम सल्लू० की खिदमत में आया था वह हज़रत उर्वा बिन मसऊद रज़ि० सक़फ़ी थे, यह अपनी कौम के सरदार थे, और सुलह हुदैबिया में कुफ़्फ़ारे मक्का के वकील बन कर रसूलुल्लाह सल्लू० की खिदमत में आए थे, जिन्हे हवाज़िन व सक़ीफ़ के बाद ज़ज्बए तौफ़ीके इलाही से मदीना मुनव्वरा में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया, हज़रत उर्वा के घर में दस बीवियाँ थीं, नबी करीम सल्लू० ने फ़रमाया कि तुम उनमें से चार को रखकर बाकी को तलाक़ दे दो, चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया ।<sup>(2)</sup>

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-163

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-299, ज़ादुल मज़ाद 3-498

जब हज़रत उर्वा रज़ि० इस्लाम सीख चुके तो उन्होंने आंहज़रत सल्ल० से अर्ज किया कि अब मुझे अपनी कौम में इस्लाम की मुनादी करने की इजाज़त फ़रमा दी जाए, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारी कौम तुम्हें क़त्ल कर देगी, हज़रत उर्वा रज़ि० ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! मेरी कौम को मुझसे इतनी मुहब्बत है जितनी किसी आशिक को अपने मअशूक से होती है, यह बुजुर्गवार अपनी कौम आए और वअूज़े इस्लाम शुरू कर दिया, एक रोज़ अपने बाला खाना में नमाज़ पढ़ रहे थे, किसी शकी ने तीर चलाया, जिससे यह शहीद हो गए।<sup>(1)</sup>

अगर्चे हज़रत उर्वा रज़ि० जांबर न हुए, लेकिन जो आवाज़ उन्होंने कौम के कानों तक पहुंचाई थी वह दिलों पर असर किये बगैर न रही, थोड़ा ही असा गुज़रा था कि कौम ने अपने चंद सर कर्दों को मुंतख़ब किया और नबी करीम सल्ल० की खिदमत में इसलिये भेजा कि इस्लाम की निस्बत पूरी वाकिफ़ीयत हासिल करें।

यह वफ़द 9 हि० में खिदमते नबवी सल्ल० में हाज़िर हुआ था, वफ़द का सरदार अब्द या लैल था, जिसके समझाने को नबी करीम सल्ल० कोहे ताइफ पर 10 हि० नुबूव्वत में गए थे, और उसने वअूज़ सुनने से इंकार कर के आबादी के लड़कों और औबाशों को नबी करीम सल्ल० की तज़्हीक व तहकीर के लिये मुकर्रर कर दिया था, और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-713

जिसके इशारे से ताइफ में रसूलुल्लाह सल्ल० पर पत्थर बरसाए गए और कीचड़ फेंकी गई थी।

नबी करीम सल्ल० ने वहाँ से आते हुए यह फ़रमा दिया था कि मैं इनकी बबादी के लिये दुआ नहीं करूँगा, क्योंकि अगर यह खुद इस्लाम न लाएंगे तो इनकी आइंदा नस्लों को खुद ईमान अता करेगा, अब वही दुश्मने इस्लाम खुद बखुद इस्लाम के लिये अपने दिल में जगह पाते, और दिली व रुही तलब से आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअबा रज़ि० ने नबी करीम सल्ल० से अ़र्ज किया कि यह (अह़ले सक़ीफ़) मेरी कौम के लोग हैं मैं इन्हें अपने पास उतार लूँ और इनकी तवाज़ोअू करूँ, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: “أَنْتُكُرِمَ قَوْمَكَ لَا أُمْنِعُكَ أَنْ تُكُرِمَ قَوْمَكَ” मैं मना नहीं करता कि तुम अपनी कौम की इज़्ज़त करो लेकिन इनको ऐसी जगह उतारो जहाँ कुर्�आन की आवाज़ उनके कान में पड़े।

अलग़र्ज़ उनके ख़ेमे मस्जिद के सिहन में लगाए गए, जहाँ से यह कुर्�आन भी सुनते थे और लोगों को नमाज़ पढ़ते भी देखते, इस तदबीर से उनके दिलों पर इस्लाम की सदाक़त का असर पड़ा, उन्होंने नबी करीम सल्ल० के दस्ते मुबारक पर बैअूते इस्लाम की, और बैअूत से पहले यह दरख़वास्त की कि हम को तकें नमाज़ की इजाज़त दी जाए, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया “لَا حَيْرَ فِي دِينٍ لَّمَسْ فِيهِ رُكُوعٌ”

(जिस मज़हब में नमाज़ नहीं, उसमें कोई भी खूबी नहीं) फिर उन्होंने कहा अच्छा हमें जिहाद के लिये न बुलाया जाए और न ज़कात हमसे ली जाए, आंहज़रत सल्ल० ने यह शर्त कबूल फ़रमा ली और सहाबा रज़ि० से फ़रमाया कि इस्लाम के असर से यह खुद ही दोनों काम करने लगेंगे।<sup>(1)</sup>

कनाना इब्ने अब्द या लैल ने जो उनका सरदार था, मुख्तलिफ़ औकात में नबी करीम सल्ल० से मुंदर्जा जैल मसाइल पर भी गुफ्तगू की।

1- या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! ज़िना के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, हमारी कौम के लोग अक्सर वतन से दूर रहते हैं इसलिये ज़िना के बगैर चारा ही नहीं? नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: ज़िना तो हराम है, और अल्लाह पाक का इसके लिये यह हुक्म है:

لَا تَقْرِبُوا الزِّنَى إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا

‘तुम ज़िना के क़रीब भी न जाओ, यह तो सख्त बेहयाई और बहुत बुरा तरीक़ है।’ (बनी इस्राईल, रुकूअ़ 4)

2- या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! सूद के बारे में हुजूर क्या फ़रमाते हैं, यह तो बिल्कुल हमारा ही माल होता है? नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया तुम अपना अस्ल रूपया ले लो, देखो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوْا مَا بَقَى مِنَ الرِّبَوْا

(1) यह हिस्सा सुनन अबी दाऊद, किताबुल खिराज, बाब माजाजू फी खबरिताइफ़ में भी मज़कूर है।

“ऐ ईमान वालो खुदा से डरो और सूद में से जो लेना रह गया है वह भी छोड़ दो।”

(بکرہ: رکوٰۃ ۴)

3- يَا رَبُّكُمْ لِلَّهِ الْعَزِيزُ وَالْمُنْصَرُ وَالْأَنْصَابُ  
وَالْأَرْجَامُ رَجُسْ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَنِ، فَاجْتَنِبُوهُ لَعْلَكُمْ  
تُفْلِحُونَ

3- يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ  
وَالْأَرْجَامُ رَجُسْ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَنِ، فَاجْتَنِبُوهُ لَعْلَكُمْ  
تُفْلِحُونَ

3- يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ  
وَالْأَرْجَامُ رَجُسْ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَنِ، فَاجْتَنِبُوهُ لَعْلَكُمْ  
تُفْلِحُونَ

نبی کریم ساللٰو نے فرمایا: شراب کو خودا نے حرام کر دिया है, देखो अल्लाह तआला फرمाता है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ  
وَالْأَرْجَامُ رَجُسْ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَنِ، فَاجْتَنِبُوهُ لَعْلَكُمْ  
تُفْلِحُونَ

“ऐ ईमान वालो! शराब, जुवा, अंसाब, व अज़लाम, नापाक और गंदे हैं, शैतान के काम हैं, इनसे बचा करो ताकि फलाह पाओ” (ماएदا: رکوٰۃ ۴)

दूसरे रोज़ उसने आकर कहा खैर हम आपकी बातें मान लेंगे लेकिन (रब्बह) को क्या करें? (रब्बा मुअन्नस है लफ़्ज़ रब का, जिस देवी के बुत को यह पूजा करते थे से रब्बह कहा करते थे) नबी کریم ساللٰو ने فرمाया: उसे गिरादो।

वफ़د के लोगों ने कहा, हाए हाए अगर रब्बह को खबर हो गई कि आप उसे गिरा देना चाहते हैं तो वह हम लोगों को तबाह कर डालेगी।

ہज़رत عمر بن الخطاب رजِّیو نے कहा अफ़سوس इब्ने

अब्द या लैल तुम इतना नहीं समझते कि वह तो सिर्फ पथर ही है, इब्ने अब्द या लैल ने खिसयाने होकर कहा उमर (रज़ि०) हम तुझसे बात करने नहीं आए, फिर रसूलुल्लाह सल्ल० से अ़र्ज़ किया ।

उसे गिराने की ज़िम्मादारी हुजूर (सल्ल०) खुद लें, क्योंकि हम तो उसे कभी नहीं गिराने के, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया खैर मैं गिरा देने वाले को भी भेज दूंगा, उनमें से एक ने अ़र्ज़ किया कि उस शख्स को हमारे बाद रवाना कीजियेगा, वह हमारे साथ न जाए ।

अलग़र्ज़ यह लोग जितने हाज़िर हुए थे वह मुसलमान होकर वतन वापस चले गए, उन्होंने चलते वक्त कहा कि हमारे लिये कोई इमाम मुकर्रर कर दीजिये ।

उन्हीं में एक शख्स हज़रत उस्मान बिन अबुल आस थे जो उम्र में सबसे छोटे थे, वह कौम से खुफिया कुर्अनी मजीद और अहकामे शरीअत सीखते रहते थे, कभी रसूलुल्लाह सल्ल० से, कभी अबू बक्र सिद्दीक से सीख लिया करते, आंहज़रत सल्ल० ने उन्हीं को उनका इमाम मुकर्रर फरमा दिया ।

वफ़द ने रास्ता में यह मशवरा किया कि अपना इस्लाम छिपाकर पहले कौम को मायूस कर देना चाहिये, जब यह वतन पहुंच गए तो कौम ने पूछा कहो क्या हाल हुआ?

वफ़द ने कहा (मआज़ल्लाह) हमें एक सख्त खूं दुरुश्त गो शख्स से साबिक़ा पड़ा, जो हमें अनहोनी बातों का हुक्म

देता है, मसलन लात व उज्ज़ा को तोड़ देना, तमाम सूदी रूपया को छोड़ देना, शराब, ज़िना को हराम समझना, कौम ने क़सम खाकर कहा हम इन बातों को कभी नहीं मानने के।

वफ़्द ने कहा अच्छा हथियारों को दुरुस्त करो और जंग की तैयारी करो, किलों की मरम्मत कर लो, दो दिन तक सक्रीफ़ इसी इरादा पर जमे रहे, तीसरे रोज़ खुद बखुद ही कहने लगे:

भला मुहम्मद (सल्ल०) के साथ हम क्योंकर लड़ सकेंगे, सारा अरब तो उनकी इताअ़त कर रहा है, फिर वफ़्द के लोगों से कहा जाओ जो कुछ वह कहते हैं क़बूल कर लो।

वफ़्द ने कहा, अब हम तुमको सही सही बताते हैं, हमने मुहम्मद सल्ल० को तक़्वा में और वफ़ा में, रहम में और सिद्क में, सब ही से बढ़कर पाया, हम, तुम, सबको इस सफ़र से बड़ी बरकत हासिल हुई।

कौम ने कहा कि तुमने हमसे यह राज़ क्यों पोशीदा रखा और हमको ऐसे सख्त ग़ुम व अलम में क्यों डाला? वफ़्द ने कहा मुदआ यह था कि अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों से शैतानी गुरुर निकाल दे, इसके बाद वह मुसलमान हो गए।

चंद रोज़ के बाद वहाँ रसूलुल्लाह सल्ल० के भेजे हुए अशाख़ास हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की इमारत में पहुंच गए, उन्होंने ने लात के गिरा देने की कार्रवाई का

आग़ाज़ करना चाहा, सकीफ़ के सब मर्द व ज़न, बूढ़े बच्चे, इस काम को दुश्वार समझे हुए थे, पर्दा नशीन औरतें भी यह तमाशा देखने निकल आई थीं, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअबा ने उसके तोड़ने के लिये तीर चलाया, मगर अपने ज़ोर में खुद ही गिर पड़े, यह देख कर सकीफ़ वाले पुकार उठे, खुदा ने मुग़ीरा को धुतकार दिया और रब्बह ने उसे क़त्ल कर डाला, अब खुश खुश होकर कहने लगे तुम कुछ ही कोशिश करो मगर इसे नहीं गिरा सकते।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअबा ने कहा सकीफ़ वालो! तुम बहुत ही बेवकूफ़ हो, यह पत्थर का टुकड़ा ही क्या सकता है, लोगो! खुदा की आफ़ियत क़बूल करो और उसी की बंदगी करो, फिर उस घर का दरवाज़ा बंद करके मुग़ीरा ने अब्ल उस बुत को तोड़ा और फिर उसकी दीवारों पर चढ़ गए और उन्हें गिराना शुरू कर दिया, बाकी मुसलमान भी दीवारों पर चढ़े और उस इमारत का एक एक पत्थर गिरा के छोड़ा।

मूर्ती का पुजारी कहने लगा कि मूर्ती घर की बुन्याद उन्हें ज़रूर ग़र्क़ कर देगी, हज़रत मुग़ीरा ने यह सुना तो बुन्याद भी सारी खोद डाली और इस तरह कौम के दिलों में इस्लाम की बुन्याद मुस्तहकम हो गई।<sup>(1)</sup>

### वफ़दे अब्दुला कैस

क़बीला अब्दुला कैस का वफ़द खिदमते नबवी में हाज़िर

(1) ज़ादुल मआद ३-५९६ ता ५९९, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहकी ५-२९९ ता ३०४ में वफ़दे सकीफ़ का पूरा वाकिआ तफसील से मौजूद है।

हुआ, नबी करीम सल्ल० ने पूछा तुम किस कौम से हो? अर्ज किया कौमे रबीआ से, नबी करीम सल्ल० उन्हें खुश आमदेद फरमाया, उन्होंने अर्ज किया, रसूलुल्लाह (सल्ल०)! हमारे और हुजूर (सल्ल०) के दर्मियान क़बीला मुज़र के काफिर आबाद हैं, हम शहरे हराम ही में हाज़िर हो सकते हैं, इसलिये साफ़ वाज़ेह तौर पर समझा दिया जाए, जिस पर हम भी अमल करते रहें और कौम के बाकी मांदा अश्खास भी।

**फरमाया:** मैं चार चीज़ों पर अमल करने और चार चीज़ों से बचे रहने का हुक्म देता हूं, जिन चीज़ों के करने का हुक्म है, वह यह हैं:

(1) अकेले खुदा पर ईमान लाना, इससे मुराद यह है कि “**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ**” की शहादत अदा करना। (2) नमाज़ (3) ज़कात (4) रमज़ान के रोज़े और माले ग़नीमत से खुम्स निकालना।

चार चीज़ें जिनसे बचने का हुक्म है, यह हैं:

(1) दुब्बा (2) हन्तुम (3) नकीर (4) मुज़फ़्फ़त<sup>(1)</sup>। इन बातों को याद रखो और पिछलों को भी बता दो।<sup>(2)</sup>

(1) “दुब्बा” कहू के छिल्के को कहते हैं जिसको सुखा लिया जाता है। “हन्तुम” सब्ज़ घड़ा “नकीर” दरख़त की जड़ की लकड़ी को अंदर से खोद लिया करते थे, इस बर्तन को “नकीर” कहते हैं, “मुज़फ़्फ़त” तारकोल को बर्तन में लगा लिया करते थे और उन सब बर्तनों को नशा आवर चीज़ों के लिये इस्तेमाल करते थे, इसलिये आप सल्ल० ने मना फरमा दिया।

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल ईमान, बाब अदाउल खुम्स फ़िल ईमान, इसके अलावा नौ जगह इमाम बुखारी ने अपनी सहीह में इसको नक़ल किया है, इमाम मुस्लिम रह० ने भी सहीह मुस्लिम में यह हदीस जिक्र की है, किताबुल ईमान, बाबुल अम्र बिलईमान बिल्लाह।

उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हुजूर (सल्ल0) को क्या मअलूम है कि नकीर क्या होती है? फरमाया जानता हूं खजूर के तने को खोदते हो और उसमें खजूरें डाला करते हो, उस पर पानी डालते हो, उसमें जोश पैदा होता है, जब जोश बैठ जाता है तब पिया करते हो, मुम्किन है कि तुम में से कोई (इस नशा में) अपने चचेरे भाई को भी कत्ल कर डाले, (अजीब बात यह कि इसी वफ़द में एक शख्स ऐसा भी था जिसने नकीर के नशा में अपने चचेरे भाई को कत्ल कर दिया था)

उन लोगों ने पूछा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम कैसे बर्तन में पानी पिया करें, फरमाया मशकों में, जिनका मुंह बांध दिया जाता है, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! हमारे यहां चूहे बक्सरत होते हैं, इसलिये वहां चमड़े की मशकें सालिम नहीं रह सकतीं हैं, फरमाया ख़्वाह सालिम ही न रहें।<sup>(1)</sup>

इसी वफ़द के साथ जारूद बिन मुअल्ला भी आया था, यह मसीहुल मज़हब था, उसने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! मैं इस वक्त भी एक मज़हब रखता हूं, अगर हम इसे छोड़कर आपके दीन में दाखिल हो जाएं, तो क्या आप हमारे ज़ामिन बन सकते हैं? फरमाया हाँ! मैं ज़ामिन बनता हूं, क्योंकि जिस मज़हब की मैं दावत दे रहा हूं यह उससे बेहतर है जिस पर तुम अब हो।

जारूद के साथ और भी ईसाई मुसलमान हो गए थे।<sup>(2)</sup>

(1) दलालुन्नुबूवा 5-366 (2) दलाइलुन्नुबूवा 5-328, इब्ने हिशाम 2-575

## वफ़दे बनू हनीफ़ा

बनू हनीफ़ा का वफ़द नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, हज़रत सुमामा बिन उसाल रज़ि० की कोशिश से उस इलाक़ा में इस्लाम की इशाअत हुई थी, यह वफ़द मदीना आकर मुसलमान हुआ था, इसी वफ़द के साथ मुस्लैमा क़ज़ाब भी था, वह मदीना आकर लोगों में कहने लगा कि अगर मुहम्मद (सल्ल०) साहब यह इक़रार करें कि उनका जानशीन मुझे बनाया जाएगा तो मैं बैअूत करूंगा, नबी करीम सल्ल० ने यह सुना, हुजूर सल्ल० के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी, फ़रमाया मैं तो इस छड़ी के देने की शर्त पर भी बैअूत लेना नहीं चाहता, अगर वह बैअूत न करेगा तो खुदा उसे तबाह फ़रमाएगा, इसका अंजाम खुदा तज़ाला ने मुझे दिखा दिया है, यज़नी मैंने ख़्बाब देखा कि मेरे हाथ में सोने के कंगन हैं, मुझे वह नागवार मञ्ज़लूम हुए, ख़्बाब ही में वह्य से मञ्ज़लूम हुआ कि उन्हें फूंक से उड़ा दो, मैंने फूंक मारी तो वह उड़ गए, मैं ख़्बाल करता हूं कि उनसे मुराद मुस्लैमा साहबे यमामा और अनसी साहबे सुन्ज़ा है।<sup>(1)</sup>

## क़बीला तैय का वफ़द

क़बीला बनू तैय का वफ़द जिसका सरदार ज़ैद अलख़ैल था, नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया “अरब के जिस शख्स की

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़द बनी हनीफ़ा

तअरीफ मेरे सामने हुई, वह देखने के वक्त उससे कम ही निकला, एक जैद अल खैल इससे मुस्तस्ना है, फिर उसका नाम जैद अलखैर रख दिया, यह सब लोग ज़रूरी गुफ़तगू के बाद मुसलमान हो गए थे।<sup>(1)</sup>

क़बीला अशअरीया (जो अहले यमन थे) का वफ़द हाज़िर हुआ, उनके आने पर नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया था:

“अहले यमन आए, जिनके दिल निहायत नर्म और ज़ईफ़ हैं, ईमान यमनीयों का है और हिक्मत यमनीयों की, मस्कन्त बकरियों वालों में, फ़ख़्र और गुरुर ऊंट वालों में है, जो मशिरक़ की तरफ़ रहते हैं।”<sup>(2)</sup>

जब यह लोग मदीना में दाखिल हुए तो यह शेअर पढ़ रहे थे:

مَحْمُدًا وَجِزْبَهُ    غَدَانْلَاقِي الْأَجْبَةُ

‘कल हम अपने दोस्तों, यअ़नी मुहम्मद सल्ल० और उनके साथ वालों से मिलेंगे।’<sup>(3)</sup>

### वफ़दे अज़द

यह वफ़द सात शख़ों का था, नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो नबी करीम सल्ल० ने उनकी वज़़़अ कत्ज़़ को पसंदीदगी की निगाह से देखा, पूछा तुम कौन हो? उन्होंने कहा हम मोमिन हैं, नबी करीम सल्ल० ने

(1) इब्ने हिशाम 2-577

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कुदूमुल अशअरीन व अहलुल यमन

(3) मुस्तद अहमद 3-105, 155 बिसनदिन सहीहिन

फ़रमाया हर एक कौल की हकीकत होती है, बताओ कि तुम्हारे कौल और ईमान की हकीकत क्या है? उन्होंने अर्ज किया हम पंद्रह ख़स्लतें रखते हैं, पांच वह हैं जिन पर एतिकाद रखने का ज़िक्र आप के कासिदों ने किया, और पांच वह हैं जिन पर अमल करने का हुक्म आपने फ़रमाया, पांच वह हैं जिन पर हम पहले से पाबंद हैं।

पांच बातें जिन पर हुजूर सल्ल० के मुबल्लिग़ीन ने ईमान लाने का हुक्म दिया, यह हैं: ईमान खुदा पर, फ़रिशतों पर, अल्लाह की किताबों पर, अल्लाह के रसूलों पर, मरने के बाद जी उठने पर।

पांच बातें अमल करने की हमको यह बताई गई हैं:

“**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ**” कहना, पांच वक्त की नमाज़ों का काइम करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, बैतुल हराम का हज करना जिसे राह की इस्तिताअत हो।

पांच बातें जो पहले से मअ़्लूम हैं, यह हैं:

आसूदगी के वक्त शुक्र करना, मुसीबत के वक्त सब्र करना, क़ज़ाए इलाही पर रज़ामंद होना, इम्तिहान के वक्त साबित क़दम रहना, दुश्मनों को भी गाली गलोज न करना।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया जिन्होंने इन बातों की तअलीम दी वह हकीम व आलिम थे और उनकी दानिशमंदी से मअ़्लूम होता है गोया अंबिया थे, अच्छा पांच चीज़ें और बता देता हूं ताकि पूरी बीस ख़स्लतें हो जाएः

(1) वह चीज़ें जमा न करो जिसे खाना न हो।

- (2) वह मकान न बनाओ जिसमें बसना न हो ।
- (3) ऐसी बातों में मुक़ाबला न करो जिन्हें कल को छोड़ देना हो ।
- (4) खुदा का तक़्दीर रखो जिसकी तरफ़ लौट कर जाना और जिसके हुजूर में पेश होना है ।
- (5) उन चीज़ों की रग़बत रखो जो आखिरत में तुम्हारे काम आएंगी जहां तुम हमेशा रहोगे ।

उन लोगों ने नबी करीम सल्लू की वसीयत पर पूरा पूरा अमल किया ।<sup>(1)</sup>

अरब का जितना शुमाली हिस्सा सलतनते कुस्तुन्तुनिया के क़ब्ज़ा में था, उस सारे इलाक़ा का गवर्नर फ़रवह बिन अ़म्र था, उसका दारुल हुकूमत मआन था, फ़लस्तीन का मुत्तसिला इलाक़ा भी उसी की हुकूमत में था ।

नबी करीम सल्लू ने उसे नामए मुबारक (दावते इस्लाम का) भेजा था, फ़रवह रज़ि० ने इस्लाम क़बूल किया और आंहज़रत सल्लू की खिरदमत में एक क़ासिद रवाना किया और एक सफ़ेद कीमती ख़च्चर हदया में भेजा ।

जब बादशाहे कुस्तुन्तुनिया को उनके मुसलमान हो जाने की इत्तिलाअू मिली तो उन्हें हुकूमत से वापस बुला लिया, पहले इस्लाम से फिर जाने की तरगीब देता रहा, जब हज़रत फ़रवह रज़ि० ने इंकार किया तो उन्हें कैद कर दिया, आखिर यह राए हुई कि उन्हें फ़ांसी पर लटका दिया जाए, शहरे फ़लस्तीन में अफ़राअू नामी तालाब पर उन्हें फ़ांसी दे दी गई ।

(1) ज़ादुल मज़ाद ३-६७२, ६७३, अल इसाबा ३-१५१

جان دے نے سے پہلے شہزادہ پڑا:

(۱) سِلْمُ لِرَبِّيْ أَعْظَمِيْ وَمَقَامِيْ

بلغ سَرَاةَ الْمُسْلِمِينَ بِأَنِی

### وَفَدْهُ حَمْدَانٌ

یہ کعبیہ یمن میں آباد تھا، ان میں اشاعتِ اسلام کے لیے خالد بن ولید رضیٰ اللہ عنہ کو بھیجا گیا تھا، وہ وہاں تک رہے، اسلام ن فلما، نبی کریم ﷺ نے اپنی مورثہ رضیٰ اللہ عنہ کو اس کعبیہ میں اشاعتِ اسلام کے لیے مامور فرمایا، انکے فیضان سے تمام کعبیہ اک دن میں مسلمان ہو گیا۔

سچدنا اپنی کا خاتم نبی کریم ﷺ نے سुنا تو سجدہ شکرانہ ادا کیا اور جواب نے مبارک سے فرمایا ”السَّلَامُ عَلَىٰ هَمْدَانَ“ (حمدان والوں کو سلاماتی میلے)।<sup>(۲)</sup> یہ وفد اپنی لوگوں کا تھا جو حضرت اپنی رضیٰ اللہ عنہ کے ہاتھ پر ایمان لے چکے تھے اور دیدارے نبی ﷺ سے مشرف ہونے آئے تھے۔

تاریخ بین ابduللہ کا بیان ہے کہ میں مکہ میں سکھل مجاہد میں خدا تھا اتنے میں اک شخص آیا جو پوکار پوکار کر کہتا تھا:

”يَا أَيُّهَا النَّاسُ قُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ تُفْلِحُوا“

”لوگو! لا ایلہ ایلہ الا اللہ فلہو“

اک دوسرا شخص اسکے پیछے پیछے آیا جو ککریاں اسے مارتا تھا اور کہتا تھا:

(1) جادوں ماجد 3-646, ابنہ حیثام 2-592 (2) سونن بیہکی 2-369, سہیلہ بخاری, کیتاب بخاری مسند, باب بزرگ اپنی رضیٰ اللہ عنہ کے خالد بن ولید رضیٰ اللہ عنہ اسلام

”يَا أَيُّهَا النَّاسُ لَا تُصِدِّقُوهُ فَإِنَّهُ كَذَابٌ“

“लोगो! इसे सच्चा न समझो यह तो झूटा शख्स है”

मैंने दरयाफ़त किया यह कौन हैं?

लोगों ने कहा कि यह तो बनी हाशिम का एक फ़र्द है, जो अपने आपको रसूलुल्लाह समझता है और यह दूसरा इसका चचा अब्दुल उज्ज़ा है (अबू लह्ब का नाम अब्दुल उज्ज़ा था) तारिक़ कहते हैं कि इसके बाद बरसों गुज़र गए, नबी सल्लूल० मदीना जा रहे थे, उस वक्त हमारी कौम के चंद लोग जिनमें मैं भी था, मदीना गए, ताकि वहाँ की खजूरें मौल लाएं, जब मदीना की आबादी के मुत्तसिल पहुंच गए तो हम इसलिये ठहर गए कि सफ़र के कपड़े उतार कर दूसरे कपड़े बदल कर शहर में दाखिल होंगे।

इतने में एक शख्स आया जिस पर दो पुरानी चादरें थीं, उसने सलाम के बाद पूछा कि किधर से आए, किधर जाओगे? हमने कहा रब्ज़ह से आए हैं और यहीं तक क़स्द है, पूछा मुद्दआ क्या है?

हमने कहा कि खजूरें खरीदनी हैं, हमारे पास एक सुख्ख ऊंट था जिस पर महार थी।

उसने कहा यह ऊंट बेचते हो? हमने कहा हाँ! इस कदर खजूरों के बदले दे देंगे, उस शख्स ने यह सुनकर कीमत घटाने की बाबत कुछ भी नहीं कहा और महारे शुतुर संभाल कर शहर को चला गया, जब शहर के अंदर जा पहुंचा तो अब आपस में लोग कहने लगे कि यह हमने क्या

किया ऊंट ऐसे शख्स को दे दिया जिससे वाकिफ़ तक नहीं और कीमत वसूल करने का कोई इंतिज़ाम ही न किया।

हमारे साथ एक हौदज नशीन (सरदारे कौम की) औरत भी थी, वह बोली कि मैंने उस शख्स का चेहरा देखा था कि चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहा था, अगर ऐसा आदमी कीमत न दे तो मैं अदा कर दूंगी।

हम यही बातें कर रहे थे कि इतने में एक शख्स आया, कहा मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने भेजा है और (कीमत शुतुर की) खजूरें भेजी हैं (तुम्हारी ज़ियाफ़त की खजूरें अलग हैं) खाओ पियो और कीमत की खजूरों को नाप कर पूरा कर लो, जब हम खा पी कर सैर हुए तो शहर में दाखिल हुए, देखा कि वही शख्स मस्जिद के मिंबर पर खड़े वअूज़ कर रहा है, हमने मुंदर्जा जैल अलफ़ाज़ आपके सुने:

”تَصَدَّقُوا فَإِنَّ الصَّدَقَةَ خَيْرٌ لَكُمْ، الْيَدُ الْعُلَيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ  
الشُّفْلَى أَمَّكَ وَأَبَاكَ وَأَخْتَكَ وَأَخَاهَكَ وَأَذْنَاكَ  
أَذْنَاكَ“

‘‘लोगो! खैरात दिया करो, खैरात का दिया तुम्हारे लिये बेहतर है, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है, मां को, बाप को, बहन को, भाई, को, फिर करीबी को और दूसरे करीबी को दो।’’<sup>(1)</sup>

### वफ़दे नजीब

क़बीला नजीब के तेरह शख्स हाज़िर हुए थे, यह अपनी

(1) जादुल मज़ाद 3-654, 647, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में यह रिवायत नक़ल की है, इमाम ज़हबी ने इसकी तस्हीह की है

कौम के माल व मवेशी की ज़कात लेकर आए थे, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि इसे वापस ले जाओ और अपने कबीले के फुक़रा पर तक्सीम कर दो उन्होंने अर्ज़ की:

या रसूलुल्लाह सल्ल० फुक़रा को जो देकर बच रहा है हम वही लेकर आए हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल०! इनसे बेहतर कोई वफ़द अब तक नहीं आया।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया ‘‘हिदायत खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के हाथ में है, खुदा जिसकी बहबूद चाहता है उसके सीना को ईमान के लिये खोल देता है’’

उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल० से चंद बातों का सवाल किया, आंहज़रत सल्ल० ने उनको जवाबात लिखवा दिये थे।

यह लोग कुर्�आन और सुनने हुदा के सीखने में बहुत ही रागिब थे, इसलिये नबी करीम सल्ल० ने हज़रत बिलाल रज़ि० को उनकी तवाज़ोअू के लिये ख़ास तौर पर मुअ़य्यन कर दिया था।

यह लोग वापसी की इजाज़त के लिये बुहत ही इज़ितराब ज़ाहिर करते थे, सहाबा ने पूछा कि तुम यहाँ से जाने के लिये क्यों बेचैन हो? कहा दिल में यह जोश है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के दीदार से जो अनवार हमने हासिल किये, नबी सल्ल० की गुफ़तार से जो फुयूज़ हमने पाए और जो बस्कात और फ़वाइद हमको यहाँ आकर हासिल हुए,

उन सबकी इतिलाअू अपनी कौम को जल्द पहुंचाएं।

आंहज़रत सल्ल० ने उनको अतीयात से सरफ़राज़ किया और रुख्सत फ़रमाया, पूछा! कोई शख्स तुम में से बाकी भी रहा है? उन्होंने कहा हाँ! एक नौजवान लड़का है, जिसे अस्थाब के पास हमने छोड़ दिया था, फ़रमाया उसे भी भेज देना, वह हाजिर हुआ तो उसने कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल०! हुजूर (सल्ल०) ने मेरी कौम के लोगों पर लुत्फ़ व रहमत की है, मुझे भी कुछ मरहमत फ़रमाइये।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: तुम क्या चाहते हो?

कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल०! मेरा मुद्दा अपनी कौम के मुद्दा से अलग है, अगर्चे मैं जानता हूं कि वह यहाँ इस्लाम की मुहब्बत में आए हैं और सदक़ात का माल भी लाए थे, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया तुम क्या चाहते हो?

कहा! मैं अपने घर से सिफ़ इसलिये आया था कि हुजूर मेरे लिये दुआ फ़रमाएं कि खुदा मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम करे और मेरे दिल को ग़नी बना दे।

नबी करीम सल्ल० ने उसके लिये यही दुआ फ़रमा दी, 10 हिं० को जब नबी करीम सल्ल० ने हज किया, तो उस क़बीला के लोग फिर हुजूर सल्ल० से मिले, नबी करीम सल्ल० ने पूछा “उस नौजवान की क्या ख़बर है? लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! उस जैसा शख्स कभी देखने ही में नहीं आया और उस जैसा कानेअ़ कोई सुना ही नहीं गया, अगर दुन्या की दौलत उसके सामने तक़सीम हो रही हो तो वह

नज़र उठाकर भी नहीं देखता।<sup>(1)</sup>

### वफ़दे बनी सअ़द हज़ीम

यह वफ़द जिस वक़्त मस्जिदे नबवी में पहुंचा तो नबी करीम सल्लूल० एक जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा रहे थे।

उन्होंने आपस में तैय किया कि रसूलुल्लाह सल्लूल० की खिदमत में हाज़िर होने से पेशतर हमको कोई भी काम नहीं करना चाहिये, इसलिये एक तरफ़ अलग होकर बैठे रहे, जब आंहज़रत सल्लूल० उधर से फ़ारिग़ हुए उनको बुलाया, पूछा “क्या तुम मुसलमान हो”? उन्होंने कहा हाँ! फ़रमाया “तुम अपने भाई के लिये दुआ में क्यों शामिल न हुए”?

अर्ज़ किया हम समझते थे कि बैअ़ते रसूल सल्लूल० से पहले कोई काम भी करने के मजाज़ नहीं, फ़रमाया “जिस वक़्त तुमने इस्लाम क़बूल किया उसी वक़्त से तुम मुसलमान हो गए।”

इतने में वह मुसलमान भी आ पहुंचा जिसे यह लोग अपनी सवारी के पास बिठा आए थे, वफ़द ने कहा, या रसूलुल्लाह सल्लूल०! यह हमसे छोटा है और इसी लिये हमारा ख़ादिम है, फ़रमाया “أَصْغَرُ الْقَوْمِ خَادِمُهُمْ” (छोटा अपने बुजुर्गों का ख़ादिम होता है) खुदा उसे बरकत दे, इस दुआ की यह बरकत हुई कि वही कौम का इमाम और कुर्झन मजीद का कौम में सबसे ज़्यादा जानने वाला हो गया।

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-650, 651, इब्ने सअ़द 1-323

जब यह वफ़द लौट कर वतन गया तो तमाम क़बीला में  
इस्लाम फैल गया।<sup>(1)</sup>

## वफ़दे बनी असद

यह दस शख्स थे जिनमें वाबसा बिन मुअ़ब्द और  
खुवैलद थे, रसूलुल्लाह सल्ल० अस्हाब के साथ अंदर मस्जिद  
में तशरीफ़ फ़रमा थे, इनमें से एक ने कहा या रसूलुल्लाह  
सल्ल०! हम शहादत देते हैं कि खुदा अकेला है, ला शरीक  
है और आप सल्ल० उसके बंदे और रसूल हैं, देखिये या  
रसूलुल्लाह सल्ल० हम अज़ खुद हाज़िर हो गए हैं और  
आपने तो हमारे पास कोई आदमी भी न भेजा था, इस पर  
आयत का नुजूल हुआ:

يَمْنُونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمْنُوا عَلَىٰ إِسْلَامَكُمْ بَلِ  
اللَّهُ يَمْنُ عَلَيْكُمْ أَنْ هَذَا كُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ.

“यह लोग आप पर एहसान जताते हैं कि इस्लाम  
ले आए हैं, कह दीजिये कि अपने इस्लाम का मुझ  
पर एहसान न जताओ, बल्कि खुदा तुम पर इस  
बात का एहसान जताता है कि उसने तुमको  
इस्लाम की हिदायत की, अगर तुम इस दावा में  
सच्चे हो।” (हुज्जातः रुकूज़ 2)

फिर उन लोगों ने सवाल किया कि जानवरों की  
बोलियों और शगूनों वगैरा से फ़ाल लेना कैसा है?  
रसूलुल्लाह सल्ल० ने इन सबसे उन्हें मना फ़रमाया,

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-652, इब्ने सज़्द 1-329

उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! एक बात रह गई है, इसकी बाबत क्या इशाद है, नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया वह क्या है? उन्होंने कहा ख़त खींचना? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि इसे एक नबी ने लोगों को सिखाया था जिस किसी को सिहत से वह इल्म मिल गया बेशक वह इल्म है।<sup>(1)</sup>

### दफ्दे बहराअ०

यह लोग मदीना में आए, हज़रत मिक़दाद रज़ि० के घर के सामने आकर ऊंट बिठाए, हज़रत मिक़दाद रज़ि० ने घर वालों से कहा कि इनके लिये कुछ खाना तैयार करो और खुद उनके पास गए और खुश आमदेद कहकर अपने घर ले आए, उनके सामने हैस रखा गया, हैस एक खाना है जो खजूर और सत्तू मिलाकर धी में तैयार किया जाता है, धी के साथ कभी चर्बी भी डाल दिया करते हैं।

उसी खाने में से कुछ नबी करीम सल्ल० के लिये भी हज़रत मिक़दाद रज़ि० ने भेजा, नबी करीम सल्ल० ने कुछ खाकर वह बर्तन वापस फ़रमा दिया, अब हज़रत मिक़दाद रज़ि० दोनों वक़्त ही प्याला उन मेहमानों के सामने रख देते वह मज़ा ले लेकर खाया करते, खूब खाया करते, मगर खाना कम न हुआ करता था, उन लोगों को यह देखकर हैरत हुई, आखिर एक रोज़ अपने मेज़बान से पूछा:

(हज़रत) मिक़दार (रज़ि०)! हमने तो सुना था कि मदीना वालों की खूराक सत्तू, जौ वगैरा हैं, तुम तो हर वक़्त वह

(1) जादुल मज़ाद 3-654, इब्ने सज़्द 1-292

खाना खिलाते हो जो हमारे यहां बहुत उम्दा समझा जाता है और जो हर रोज़ हमको भी मुयस्सर नहीं आ सकता और फिर ऐसा लज़ीज़ कि हमने कभी ऐसा खाया भी नहीं।

हज़रत मिक़दाद रज़ि० ने कहा साहिबो! यह सब कुछ आंहज़रत सल्ल० की बरकत है, क्योंकि आंहज़रत सल्ल० की अंगुश्तहाए मुबारक लग चुकी हैं।

यह सुनते ही सबने बइलिफ़ाक़ कहा और अपना ईमान ताज़ा किया कि “बेशक वह अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं, यह लोग मदीना में कुछ अर्सा ठहरे, कुर्झान और अहकाम सीखे और वापस चले गए।<sup>(1)</sup>

### वफ़दे हौलान

यह दस शख्स थे, जो बमाहे शअूबान 10 हि० में खिदमते नबवी सल्ल० में हाज़िर हुए थे, उन्होंने आकर अर्ज़ किया कि हम अपनी कौम के पस्मांदों की जानिब से वकील होकर आए हैं, खुदा और रसूल पर हमारा ईमान है, हम हुजूर सल्ल० की खिदमत में लम्बा सफर तैय करके आये हैं और इक़रार करते हैं कि खुदा और रसूल का हम पर एहसान है, हम यहां महज़ ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए हैं।

رَسُولُ اللَّهِ سَلَّلَوْهُ عَلَيْهِ وَسَلَّلَ عَلَيْهِ الْمَدِينَةَ كَانَ فِي جِوَارِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ زَارَنِي بِالْمَدِينَةِ

“कान फ़ि جِوارِي यَوْمَ الْقِيَامَةِ” (जिसने मदीना में आकर मेरी ज़ियारत की वह क्यामत के दिन मेरा हमसाया होगा) फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने दरयापूर्त फरमाया: अ़म्म अनस का

(1) जादुल मआद 3-655, 656, इब्ने सज़ाद 1-331

क्या हुआ? (यह एक बुत का नाम है जो उस कौम का मअबूद था) वफ़द ने अर्ज किया, हज़ार शुक्र है कि अल्लाह ने हुजूर सल्ल० की तज़्लीम को हमारे लिये उसका बदल बना दिया है, बअूज़ बअूज़ बूढ़े और बूढ़ी औरतें रह गई हैं जो उसकी पूजा किया जाती हैं।

अब इंशा अल्लाह हम उसे जाकर गिरा देंगे, हम मुद्दतों धोके और फ़िला में रहे, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया किसी दिन का वाकिआ तो सुनाओ, वफ़द ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह सल्ल०! एक दफ़ा हमने सौ नर गाव जमा किये और सबके सब एक ही दिन अम्म अनस के लिये कुर्बान किये गए और दरिंदों के लिये छोड़ दिये गये, हालांकि हमको गोश्त और जानवरों की बहुत ज़रूरत थी, उन्होंने यह भी अर्ज किया कि चौपायों और ज़राअ़त में से अम्म अनस का हिस्सा बराबर निकाला जाता था, जब कोई ज़राअ़त करता तो उसका वस्ती हिस्सा अम्म अनस के लिये मुकर्रर करता और एक किनारे का खुदा के नाम मुकर्रर कर देता, अगर खेती को हवा मार जाती तो खुदा का हिस्सा तो अम्म अनस के नाम कर देते, मगर अम्म अनस का हिस्सा खुदा के नाम पर न करते।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़राइज़े दीन सिखाए और खुसूसियत से इन बातों की नसीहत की:

- (1) अहद पूरा करना, (2) अमानत को अदा करना,
- (3) हमसाया लोगों से अच्छा बरताव करना, (4) किसी एक

शख्स पर भी जुल्म न करना, यह भी फरमाया कि जुल्म क्यामत के दिन तारीकी होगा।<sup>(1)</sup>

### वपदे मरवारिव

यह दस शख्स थे, जो कौम के वकील होकर 10 हिं में आए थे, हज़रत बिलाल रज़ि० उनकी मेहमानी के लिये मायूर थे, सुब्ल व शाम का खाना वही लाया करते थे, एक रोज़ जुहर से अस्त्र तक पूरा वक्त नबी करीम सल्ल० ने उन्हें को दिया।

उनमें से एक शख्स को नबी करीम सल्ल० ने देखना शुरू किया, फिर फरमाया कि मैंने तुमको पहले भी देखा है।

यह शख्स बोला, खुदा की कँसम हाँ हुजूर (सल्ल०) ने मुझे देखा था और मुझसे बात भी की थी और मैंने बदतरीन कलाम से हुजूर (सल्ल०) को जवाब दिया और बहुत बुरी तरह हुजूर (सल्ल०) के कलाम को रद्द किया था, यह बाज़ारे उकाज़ का ज़िक्र है जहाँ हुजूर (सल्ल०) लोगों को समझाते फिरते थे।

नबी करीम सल्ल० ने फरमाया “हाँ ठीक है” उस शख्स ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! उस रोज़ मेरे दोस्तों में मुझसे बढ़कर कोई भी हुजूर (सल्ल०) की मुखालफत करने वाला और इस्लाम से दूर रहने वाला न था, वह सब तो अपने आवाई मज़हब ही पर मर गए, खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे आज तक बाकी रखा और हुजूर (सल्ल०) पर ईमान लाना मुझे नसीब हुआ।

(1) जादुस वआद ३-६६२, इबे तअद १-३२४

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया: सबके दिल खुदाए अज्ज़व जल्ल के हाथ में हैं, उस शख्स ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० मेरी पहली हालत के लिये मुआफ़ी की दुआ फ़रमाइये।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया: “इस्लाम उन सब बातों को मिटा देता है जो कुफ़्र में हुई हों।”<sup>(1)</sup>

### वफ़दे बनी अबस

यह वफ़द इंतिकाल मुबारक से चार माह पेशतर आया था, यह इलाक़ा नजरान के बाशिंदे थे, यह लोग मुसलमान होकर आए थे, इन्होंने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह सल्ल० हमने मुनादियाने इस्लाम से सुना है कि हुजूर सल्ल० यह इश्राद फ़रमाते हैं, “لَا إِسْلَامَ لِمَنْ لَا هُجْرَةٌ لَهُ” हमारे पास ज़र व माल भी है और मवेशी भी जिन पर हमारी गुज़रान है, पस अगर हिजरत के बगैर हमारा इस्लाम ही ठीक नहीं है तो माल व मताअ़ क्या हमारे काम आएंगे और मवेशी हमें क्या फ़ाएदा देंगे? बेहतर है कि हम सब कुछ फ़रोख्त करके सब खिदमते आली में हाज़िर हो जाएं।

نबी करीम सल्ल० ने फरमाया, “فَلَئِنْ يَلْتَكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا رَّاهِكُرْ خुदा तरसी को अपना शेवा बनाए रखो तुम्हारे अअूमाल में ज़रा भी कमी नहीं आएगी।”<sup>(2)</sup>

(1) ज़ादुल मज़ाद 3-663, 664, इब्ने सज़द 1-299

(2) ज़ादुल मज़ाद 3-670, इब्ने सज़द 1-295

## वफ़दे ग्रामद

यह वफ़द 10 हि० में आया था, इसमें दस आदमी थे, यह मदीना से बाहर आकर उतरे, एक लड़के को बिठा कर नबी करीम सल्लू० की खिदमत में हाज़िर हुए, नबी करीम सल्लू० ने पूछा कि तुम अस्बाब के पास किसे छोड़ आए हो? लोगों ने कहा एक लड़के को, फ़रमाया तुम्हारे बाद वह सो गया, एक शख्स आया और घड़ी चुरा कर ले गया, चोर के पीछे पीछे भागा, उसे जा पकड़ा, सब माल सहीह सालिम मिल गया, यह लोग आंहज़रत सल्लू० की खिदमत से जब वापस पहुंचे तो लड़के से मअ़लूम हुआ कि ठीक उसी तरह उसके साथ माजिरा हुआ था, यह लोग उसी वक्त मुसलमान हो गए, नबी करीम सल्लू० ने उबैय बिन क़अब रज़ि० को मुकर्रर फ़रमा दिया कि उन्हें कुर्�आन याद कराएँ और शराए़ज़े इस्लाम सिखाएँ, जब वह वापस जाने लगे तो उन्हें शराए़ज़े इस्लाम एक काग़ज़ पर लिखवा कर दे दिये गए।<sup>(1)</sup>

## वफ़दे बनी फुज़ारा

जब रसूलुल्लाह सल्लू० तबूक से वापस आए, तो बनी फुज़ारा का एक वफ़द जिसमें पंद्रह आदमी शामिल थे, खिदमते मुबारक में हाज़िर हुआ, उनको इस्लाम का इकरार था, उनकी सवारी लाग़र कमज़ोर ऊंट थे, रसूलुल्लाह सल्लू० ने पूछा कि तुम्हारी बस्तियों का क्या हाल है?

उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लू०! बस्तियों में

(1) यादुल यज़ाद 3-671, इन्द्रे सज़द 1-345

कहत है, मवाशी मर गए, बाग खुशक हो गए, बाल बच्चे भूके मर रहे हैं, आप खुदा से दुआ करें कि हमारी फरयाद सुने, आप हमारी सिफारिश खुदा से करें, खुदा हमारी सिफारिश आप से करे।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया कि अल्लाह तआला इन बातों से पाक है, ख़राबी हो तेरे लिये, मैं तो खुदा के पास शफ़ाअत करूँगा, लेकिन खुदा किसके पास शफ़ाअत करे? वह मअ़बूद है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह सबसे बुजुर्ग तर है, आसमानों और ज़मीन पर उसी का हुक्म है।

आंहज़रत सल्ल० ने उनकी कौम में बारिश के लिये दुआ फरमाई, जो अलफ़ाज़ महफूज़ हैं, वह यह हैं:

”اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَائِمَكَ، وَانْشُرْ حُمَّتَكَ،  
وَأُخْيِي بَلَدَكَ الْمَيْتَ، أَللَّهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيْثًا مَرِيْعًا  
طَبَقًا وَاسِعًا، عَاجِلًا غَيْرَ أَجِلٍ، نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍ، أَللَّهُمَّ اسْقِنَا  
رَحْمَةً لَا عَذَابٍ وَلَا هَذْمٍ وَلَا غَرْقٍ وَلَا مَحْقٍ، أَللَّهُمَّ اسْقِنَا  
الْغَيْثَ وَانْصُرْنَا عَلَى الْأَعْدَاءِ.“<sup>(1)</sup>

“ऐ खुदा अपने बंदों और जानवरों को सैराब कर, अपनी रहमत को फैला दे, और अपनी मुर्दा बस्तियों को ज़िंदा कर दे, इलाही हम फरयाद रस हैं, ऐसी बाशिर के जो राहत रसां, आराम बख्श हो, जल्द आए, देर न लगाए, नफ़ा पहुंचाए, ज़रर

(1) जादुल मज़ाद 3-653, 654, इन्हे सज़्द 1-297 दुआ के अलफ़ाज़ सुनन अबी दाऊद, मुस्तदरक हाकिम और सुनन बैहकी में मौजूद है।

न करे, सैराब कर दे, इलाही हमको रहमत से सैराब कर दे, न कि अज़ाब व हद्दम व ग़र्क़ व महक़ से भर दे, इलाही बारिशे बारां से हमें सैराब कर दे, और दुशमनों पर हमको नुस्रत अता कर।”

### वफ़दे सुलामान

यह सत्तरह शख्स थे, आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाए थे, इन्हीं में हबीब बिन अ़म्र था, इन्होंने सवाल किया था कि सब अअूमाल से अफ़ज़ल क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया “वक्त पर नमाज़ पढ़ना” उन लोगों ने अर्ज़ किया कि हमारे यहां बारिश नहीं हुई, दुआ फ़रमाइये, रसूलुल्लाह सल्ल० ने ज़बान से फ़रमाया “اللَّهُمَّ اسْقِهِمُ الْغَيْبَ فِي دَارِهِمُ”

हबीब ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! इन मुबारक हाथों को उठाकर दुआ फ़रमाइये, नबी करीम सल्ल० मुस्कुराए और हाथ उठाकर दुआ कर दी।

जब वफ़द अपने वतन लौटकर गया तो मअ़्लूम हुआ कि ठीक उसी रोज़ बारिश हुई थी, जिस दिन नबी करीम सल्ल० ने दुआ फ़रमाई थी।<sup>(1)</sup>

### वफ़दे नजरान<sup>(2)</sup>

इन जुम्ला रिवायात पर जो वफ़दे नजरान के उन्वान के तहत दवावीने अहादीस में पाई जाती हैं, गौर करने से

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-183 बहवाला ज़ादुल मज़ाद

(2) मुंदरजा गैल पूरा वाकिअा ज़ादुल मज़ाद, दलाइलुन्नुबूव्वा में मौजूद है।

मअ़लूम होता है कि ईसाइयाने नजरान के मुअ्रतमद दो दफ़ा नबी करीम सल्ल० की खिदमत में हाजिर हुए थे, इसलिये उसी तरतीब से उनका ज़िक्र किया जाता है।

अबू अब्दुल्लाह हाकिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल० ने अह्ले नजरान को दावते इस्लाम का ख़त तहरीर फ़रमाया, जब उस्कुफ़ ने उस ख़त को पढ़ा तो उसके बदन पर लज़ा पड़ गया और वह कांप उठा, उसने फ़ौरन शुरहबील बिन वदाओं को बुलाया, यह कबीला हमदान का शख्स था, कोई बड़ा काम बगैर उसकी राए के हाकिम या मुशीर या पादरी तैय नहीं करते थे।

उस्कुफ़ ने उसे ख़त दिया और उसने पढ़ लिया तो उस्कुफ़ बोला, अबू मरयम! फ़रमाइये! आपकी क्या राए है?

शुरहबील ने कहा “साहब यह तो आपको मअ़लूम ही है कि खुदा ने इब्राहीम (अलै०) से यह वादा कर रखा है कि इस्माईल (अलै०) की नस्ल में नुबूव्वत भी होगी, मुम्किन है यह वही शख्स हों, लेकिन नुबूव्वत के मुतअ़्लिक क्या राए हो सकती है, कोई दुन्यवी बात होती तो मैं उस पर गैर कर सकता था और अपनी राए अर्ज़ कर सकता था।”

उस्कुफ़ ने कहा: “अच्छा बैठ जाइये।”

उस्कुफ़ ने फिर एक दूसरे शख्स को जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन शुरहबील था और कौमे हमेर से था, बुलाया, और नामए नबी सल्ल० दिखा कर उसकी राए दरयापृत की उसने शुरहबील का सा जवाब दिया।

उस्कुफ ने फिर तीसरे शख्स जब्बार बिन कैस को बुलाया, यह बनू हारिस बिन कअब में से था, नामा दिखलाया और राए दरयाप्त की, उसने भी उन दानों का सा जवाब दिया।

जब उस्कुफ ने देखा कि इनमें से कोई भी जवाब नहीं देता तो उसने हुक्म दिया कि घंटे बजाए जाएं और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटकाए जाएं, उनका दस्तूर था कि कोई मुहिम्मे अज़ीम दरपेश होती तो लोगों के बुलाने का तरीक़ दिन के लिये यह था कि घंटे बजाते और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटका देते, और रात के लिये यह था कि घंटे बजाते और पहाड़ी पर आग रौशन कर देते, इस गिर्जे के मुतअल्लिक तिहत्तर गांव थे, जिनमें से एक लाख से ज़्यादा ज़ंगजू मर्दों की आबादी थी, वादी के बालाई और नशेबी हिस्सा का तूल एक अस्प सवार के एक दिन की राह था, जब कुल इलाक़ा के यह लोग (सबके सब ईसाई थे) जमा हो गए, तो उस्कुफ ने वह नामए मुबारक सबको सुनाया और राए दरयाप्त की, मशवरा के बाद क़रारदाद यह हुई, कि शुरहबील और अब्दुल्लाह और जब्बार को नबी (सल्लू) की खिदमत में रखाना किया जाए और वहाँ के सब हालात मअ़लूम करके मुफ़्सिल बताएं।

यह लोग मदीना पहुंचे और चंद रोज़ नबी करीम सल्लू की खिदमत में हाज़िर रहे, इन्होंने नबी करीम सल्लू से हज़रत ईसा की शख़िसयत के मुतअल्लिक गुफ़तगू की, इस

गुप्तगू पर इन आयात का नुजूल हुआ:

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ  
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ، إِنَّهُ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُمْتَرِينَ،  
فَمَنْ حَاجَكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مَنْ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا  
نَدْعُ أَبْنَائَنَا وَأَبْنَائَكُمْ وَنِسَائَنَا وَنِسَائَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ  
ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لِعْنَةَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ.

“इसा (अलै0) की मिसाल खुदा के नज़दीक आदम (अलै0) की सी है, उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया (इंसान ज़िंदा) बन जा, वह ज़िंदा हो गया, सच्ची बात आपके परवरदिगार की जानिब से यही है, अब तुम इसी रस्सी को लम्बा खींचने वालों में न हो और जो कोई आपसे इस इल्म के बाद झगड़ा करे, उससे कह दीजिये कि हम अपनी औलाद को बुलाते हैं तुम अपनी औलाद को बुलाओ, हमारी औरतें और तुम्हारी औरतें, हम खुद भी और तुम भी जमा हों, फिर खुदा की तरफ मुतवज्जे हों और खुदा की लअ़नत झूटे पर डालें।”

(आले इम्रान: रुकूअ़ 6)

इन आयात के नुजूल पर नबी करीम سल्ल0 ने मुबाहला के लिये हसन रज़ि0 व हुसैन को भी बुलाया और फ़ातिमा रज़ि0 (सय्यदा निसाउल आलमीन) भी बाप की पसेपुश्त आकर खड़ी हो गई।

उन ईसाइयों ने अंलाहिदा होकर बातचीत की, शुरहबील ने अपने साथियों से कहा: इनके मुतअ़्लिक कोई राए काइम करना आसान नहीं है, देखो! तमाम वादी के लोग इकट्ठे हुए तब उन्होंने हमको भेजा था।

मैं समझता हूं कि यह बादशाह हैं, तब भी उनसे मुबाहला करना ठीक न होगा, क्योंकि तमाम अरब में से हम ही उनकी निगाह में खटकते रहेंगे और अगर यह नबीये मुर्सल हैं तब तो इनकी लअनत के बाद हमारा पर्काह भी ज़मीन पर बाकी न मिलेगा, इसलिये मेरे नज़दीक बेहतर यह है कि हम इनकी मातहती कबूल करें और रक़मे जिज्या का फैसला भी इनकी राए पर छोड़ दें, क्योंकि जहां तक मैंने समझा है, यह सख्त मिज़ाज नहीं हैं। दोनों साथियों ने इत्तिफ़ाक किया और उन्होंने जाकर अर्ज कर दिया कि मुबाहला से बेहतर हमारे लिये यह है कि जो कुछ हुजूर (सल्ल०) के ख्याल में कल सुब्ल तक हमारे लिये बेहतर मअ़लूम हो वह हम पर मुकर्रर कर दिया जाए।

अगले रोज़ आंहज़रत सल्ल० ने उन पर जिज्या मुकर्रर कर दिया और एक मुआहदा जिसे मुगीरा सहाबी रज़ि० ने लिखा था और अबू सुफ़यान बिन हर्ब, गैलान बिन अप्र, मालिक बिन औफ़, अकरज़ू बिन हाबिस सहाबा की शहादत उस पर सब्ल थीं, उन्हें मरहमत फ़रमाया, मुआहदा में आंहज़रत सल्ल० ने ईसाइयों को फ़व्याज़ी से मुराआत व हुकूक मरहमत फ़रमाए।

फ़रमान हासिल करके यह लोग नजरान को वापस चले गए, बिशप (उस्कुफ़) और दीगर सरबर आवर्दा लोगों ने एक मंज़िल आगे बढ़कर उनसे मुलाकात की, वफ़द ने यह फ़रमान उस्कुफ़ के सामने पेश कर दिया, वह चलते ही चलते इस फ़रमान को पढ़ने लगा, उसका चर्चेरा भाई बिश्र बिन मुआविया रज़ि0 जिसकी कुन्नियत अबू अल्क़मा थी, उसके बराबर था “वह भी इस तहरीर के मअूना की तरफ़ इस कदर मुतवज्जे हुआ कि बेख्याल हो गया, और ऊंटनी ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया, उसने गिरते ही कहा, “ख़राबी उस शख्स की जिसने हमको इस कदर तकलीफ़ में डाला है।”

बिश्र ने यह इशारा नबी करीम सल्ल0 की तरफ़ किया था।

उस्कुफ़ बोला: देख तू क्या कहता है, बखुदा वह तो नबीये मुसल हैं।

बिश्र ने जवाब दिया बखुदा अब मैं भी नाक़ा का पालान उसी के पास जाकर उतारूंगा, यह कह उसने अपना रुख़ बदल दिया और मदीना को चल पड़ा।

उस्कुफ़ ने उसके पीछे पीछे नाक़ा लगाया, चिल्ला चिल्ला कंर कहता था कि मेरी बात तो सुनो, मेरा मतलब तो समझो, मैंने यह फ़िक़रा इसलिये कहा था कि इन क़बाइल में मुश्तहर हो जाए, ताकि कोई यह न कहे कि हमने सनद हासिल करने में कोई हिमाक़त की है, या

फ़्रयाज़ी कबूल कर ली है, हालांकि दीगर कबाइल ने अब तक उनकी फ़्रयाज़ी को कबूल नहीं किया है और हमारी ताकत और शौकत औरों से बढ़ कर है।

बिश्व बोले नहीं नहीं, बखुदा नहीं, अब मैं नहीं रुकने का, तेरे म़ज़ से ऐसी ग़लत बात निकल ही नहीं सकती थी, यह कहकर वह मदीना चला आया।

यह बिश्व तो ख़िदमते नबवी सल्ल० में पहुंच कर वहीं हुजूर में रहे और बिलआखिर दर्जे शहादत पर फ़ाइज़ हुए, अब वफ़द का बक़िया हाल यह हुआ कि जब यह लोग नजरान पहुंच गए तो नजरान के गिर्जा में रहने वाले एक मुतिक (राहिब) ने भी किसी से यह तमाम दास्तान सुन ली, वह गिर्जा के बुर्ज के बालाई हिस्सा पर (सालहा साल से) रिहा करता था, चीख़ना शुरू कर दिया कि मुझे उतार दो वर्ना मैं ऊपर से कूद पड़ूँगा, ख़्वाह मेरी जान भी जाती रहे, यह राहिब भी चंद तहाइफ़ लेकर नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में रवाना हो गया, एक प्याला, एक असा, एक चादर उसने बतौरे तोहफ़ा पेश की थी, वह चादर खुलफ़ाए अब्बासिया के अहद तक बराबर महफूज़ रही थी, राहिब ने कुछ अर्सा तक मदीना में ठहर कर इस्लामी तअ़लीम से वाक़िफ़ीयत हासिल की और फिर आंहज़रत सल्ल० से इजाज़त लेकर और वापस आने का वादा करके नजरान चला गया।

(2) इस वफ़द में कुछ अर्सा के बाद उस्कुफ़ अबुल

हारिस (जो गिर्जा का इमाम था, कुस्तुन्तुनिया के रुमी बादशाह जिसका निहायत अदब और एहतिराम किया करते थे और आम लोग अक्सर करामात वगैरा जिसकी ज़ात से मंसूब किया करते थे और जो अपने मज़हब का मुज्ञहिद शुमार होता था) नबी करीम सल्ल० की खिदमत में पहुंचा उसके साथ ऐहम नामी इलाक़ा का जज और हाकिम भी था उसे सय्यद के लक़ब से मुलक़क़ब करते थे, और अब्दुल मसीहु अल मुलक़क़ब आकिब भी था, जो सारे इलाक़ा का गवर्नर और अमीर भी था, बाकी 24/मशहूर सरदार थे, कुल क़ाफ़िला 60/सवरों का था, यह अस्त्र के वक्त मस्जिदे नबवी सल्ल० में पहुंचे थे, वह उनकी नमाज़ का वक्त था (ग़ालिबन इतवार का दिन हागा) नबी करीम सल्ल० ने उनको अपनी मस्जिद में नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त फ़रमादी थी और उन्होंने मस्जिद से मशिरक़ की जानिब रुख़ करके नमाज़ अदा की थी, बअूज़ मुसलमानों ने उन्हें मस्जिद में ईसाई नमाज़ पढ़ने से रोकना चाहा था, मगर आंहज़रत सल्ल० ने मुसलमानों को मना फ़रमा दिया था।

यहूदी भी उन्हें देखने आते थे और कभी कभी किसी मस्जिद पर गुफ़तगू भी हो जाया करती थी। एक दफ़ा नबी करीम सल्ल० के सामने यहूदियों ने बयान किया कि हज़रत इब्राहीम (अलै०) यहूदी थे और इन ईसाइयों ने कहा वह ईसाई थे, इस बहस पर कुर्�आन मजीद की इन आयात का नुजूल हुआ:

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحْاجُونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ  
الْتُّورَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ هَا أَنْتُمْ هُوَ لَاءُ  
حَاجَجُتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تَحْاجُونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ  
عِلْمٌ، وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ، مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا  
وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلِكُنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنْ  
الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لِلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ  
وَهُذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ.

“उनसे कहिये कि ऐ किताब वालो ! इब्राहीम (अलै०) के बारे में क्यों झगड़ा करते हो, तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं, क्या तुम नहीं समझते ? जिन बातों में तुम्हारे पास कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ते ही थे मगर जिसके बारे में कुछ इल्म नहीं उसमें झगड़ा क्यों करते हो ? और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते, इब्राहीम (अलै०) यहूदी थे, न ईसाई थे, वह तो पवके मुवहिहद थे और मुसलमान थे और मुशिरक भी न थे, सारी ख़िल्क़त में इब्राहीम से करीब तर वह हैं जिन्होंने उनका इत्तिबाअू किया और मुहम्मद (सल्ल०) और उन पर ईमान रखने वाले लोग, हाँ खुदा मोमिनीन का दोस्तदार हैं।

(आले इमरान: रुकूअू 7)

एक दफ़ा यहूदियों ने (मुसलमानों और ईसाइयों दोनों पर एतिराज़ करने की ग़ज़ से) कहा: मुहम्मद (सल्ल०)

साहब! क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी भी इबादत करने लगें जैसा कि ईसाई ईसा की इबादत किया करते हैं?

नजरान का एक ईसाई बोला:

हाँ मुहम्मद (सल्ल०) साहब! बता दीजिये कि आप का यही इरादा है और इसी अकीदा की दावत आप (सल्ल०) देते हैं? नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह! मैं अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत करूँ या किसी दूसरे को गैरुल्लाह की इबादत का हुक्म दूँ खुदा ने मुझे इस काम के लिये नहीं भेजा और मुझे ऐसा हुक्म नहीं दिया,

इस वाकिअा पर कुर्�आन मजीद की इन आयात का नुजूल हुआ:

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ، ثُمَّ  
يَقُولَ لِلنَّاسِ كُوْنُوا عِبَادًا لِّي مِنْ دُوْنِ اللَّهِ، وَلِكُنْ كُوْنُوا  
رَبَّانِيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْلِمُونَ الْكِتَابَ، وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ،  
وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَخَذُوا الْمَلِئَكَةَ وَالنَّبِيِّنَ أَرْبَابًا، أَيَّاً مُرْكُمْ  
بِالْكُفُرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ.

‘जिस बशर को खुदा किताब और हिक्मत और नुबूव्वत इनायत करे, यह उसके लिये शायां नहीं कि वह फिर लोगों से कहने लगे कि खुदा के सिवा मेरे बंदे बन जाओ, वह तो यही कहा करता है कि किताबे इलाही हो सीख लो और शरीअत का दर्स पाकर तुम अल्लाह वाले बन जाओ, यह नबी तो

नहीं कहते कि फ़रिशतों को या नबियों को भी रब बना लो, भला वह कुफ्र के लिये कह सकते हैं तुम लोगों को जो इस्लाम ला चुके।” (आले इमरान)

मुहम्मद बिन सुहैल रज़ि० की रिवायत है कि आले इमरान की शुरू से 80/ आयात तक नुजूल भी इस वफ़द की मौजूदगी में हुआ था, जब यह वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल० से फिर एक सनद उन्होंने हासिल की जिसमें गिरजाओं और पादरियों की बाबत ज़्यादा सराहत थी।<sup>(1)</sup>

उन्होंने यह भी दरख्वास्त की कि एक अमानतदार शख्स को हमारे साथ भेज दिया जाए जिसे जिज्या अदा कर दिया करें, नबी करीम सल्ल० ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्ाह को उनके साथ भेज दिया और फ़रमाया कि यह शख्स मेरी उम्मत का अमीन है।<sup>(2)</sup>

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० के फैज़ाने सोहबत से इलाका में इस्लाम फैल गया।

## वफ़दे नरद़ा

यह वफ़द निस्फ मुहर्रम 11 हि० में खिदमते नबवी में हाज़िर हुआ था, इसके बाद कोई वफ़द हाज़िर नहीं हुआ,

(1) ज़ादुल मआद 3-629 ता 637, दलाइलुन्नुबूव्वा 5-328 ता 393, इन्हे हिशाम 1-573 ता 584, इन्हे सअ़द 1-357, सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किसान्नरान में इस वाकिआ के बअूज़ अज्ज़ा मौजूद हैं।

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबे अबू उबैदा बिन अल जर्ाह रज़ि०, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि० बाब फ़ज़ाइले अबी उबैदा बिन अल जर्ाह।

यह दो सौ अशख़ास थे और हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० के हाथ पर मुसलमाना होकर आए थे, उनको दारुज़ियाफ़ा (मेहमान खाना) में उतारा गया था।

एक शख़्स उनमें जुरारा बिन अम्र था, उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! मैंने रास्ता में ख़ाब देखे जो अजीब थे।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया “बयान करो” कहा मैंने देखा कि एक बकरी ने बच्चा दिया है, जो सफेद और सियाह रंग का अबलक़ है।

नबी करीम सल्ल० ने पूछा: क्या तुम्हारी औरत के बच्चा होने वाला था? उसने कहा हाँ!

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि उसके फरज़द पैदा हुआ है, जो तेरा बेटा है, जुरारा ने कहा या रसूलुल्लाह! अबलक़ होने के क्या मअ़ना हैं?

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, करीब आओ, फिर आहिस्ता से पूछा क्या तेरे जिस्म पर बर्स के दाग़ हैं जिसे लोगों से छिपाते रहे हो?

जुरारा ने कहा कहां है उस खुदा की जिसने आपको रसूल बनाकर भेजा है कि आज तक मेरे इस राज़ की किसी को इत्तिला न थी।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया बच्चा पर यह उसी का असर है।

जुरारा ने दूसरा ख़ाब सुनाया कि मैंने नोअर्मान बिन

मुंज़िर को देखा कि गोशवारे बाजू बंद, ख़लख़ाल पहने हुए हैं।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया इसकी तावील मुल्के अरब है, जो अब आसाइश व आराइश हासिल कर रहा है।

जुरारा ने अ़र्ज़ किया मैंने देखा कि एक बुढ़िया है, जिसके कुछ बाल सफ़ेद, कुछ सियाह हैं और ज़मीन से बाहर निकली है।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया: यह दुन्या है जिस क़दर बाक़ी रह गई है।

जुरारा ने अ़र्ज़ किया मैंने देखा कि एक आग ज़मीन से नुमूदार हुई, मेरे और मेरे बेटे के दर्भियान आ गई, और वह आग कह रही है, झुलसो झुलसो बीना हो कि नाबीना हो, लोगो! अपनी ग़िज़ा, अपना कुंबा, अपना माल मुझे खाने के लिये दो।

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया, यह एक फ़साद है जो आखिर ज़माने में ज़ाहिर होगा, जुरारा ने अ़र्ज़ किया कि यह कैसा फ़िला होगा?

नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया लोग अपने इमाम को क़त्ल कर देंगे, आपस में फूट पड़ जाएंगी, एक दूसरे से ऐसे गुत्थ जाएंगे जैसे हाथों की उंगलियाँ पंजा डालने में गुत्थ जाती हैं, बदकार उन दिनों अपने आपको नेकूकार समझेगा, मोमिन का खून पानी से बढ़कर खुशगवार समझा जाएगा, अगर तेरा बेटा मर गया, तब तू इस फ़िला को देख लेगा,

तू मर गया तो तेरा बेटा देख लेगा।

जुरारा ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल० दुआ कीजिये कि मैं इस फ़िला को न देखूँ,

रसूलुल्लाह सल्ल० ने दुआ फ़रमाई इलाही! यह इस फ़िला को न पाए।

जुरारा का इंतिकाल हो गया और उसका बेटा बच रहा, उसने सच्चदना उस्माने ग़नी की बैअूत को तोड़ दिया था।<sup>(1)</sup>

### हज्जतुल वदाअू

إِذَا جَاءَ نَصْرٌ اللَّهُ وَالْفَتْحُ، وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ  
اللَّهِ أَفْوَاجًا، فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرُهُ، إِنَّهُ كَانَ  
تَوَابًا.

“जब खुदा की मदद आ गई और मक्का फ़त्ह हो चुका और आपने देख लिया कि लोग खुदा के दीन में फौज दर फौज दाखिल हो रहे हैं तो खुत्ता की तस्बीह पढ़िये और इस्तिग़फ़ार कीजिये, खुदा तौबा क़बूल करने वाला है।” (सूरए नस्र, प० 30)

बज़ाहिर यह ख्याल होता है कि नुस्त और फ़त्ह के मुक़ाबला में शुक्र की हिदायत होनी चाहिये थी, तस्बीह व इस्तिग़फ़ार को फ़त्ह से क्या मुनासबत है? इसी बिना पर एक सोहबत में हज़रत उमर रज़ि० ने सहाबा से मअूना पूछे, लोगों ने मुख्तलिफ़ मअूना बताए, हज़रत उमर रज़ि० ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की तरफ़ देखा, वह कम्सिन

(1) ज़ादुल मआद 3-686, 687, इब्ने सज़्द 1-346

थे और जवाब देते ज़िन्नकते थे, हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी ढारस बंधाई तो उन्होंने कहा “यह आयत आंहज़रत सल्ल० के कुर्बे वफ़ात का एलान है कि इस्तिग़फ़ार मौत के लिये मख़्सूस है।”<sup>(1)</sup>

इस सूरत के नाज़िल होने के बाद आप सल्ल० को मअ़्लूम हो गया था कि रहलत का वक्त करीब आ गया है, इसलिये अब ज़रूरत थी कि तमाम दुन्या के सामने शरीअ़त और अख़लाक के तमाम उसूले असासी का मज्मए अ़ाम में एलान कर दिया जाए, आंहज़रत सल्ल० ने हिज्रत के ज़माने से अब तक फ़रीज़ाए हज अदा नहीं फ़रमाया था।<sup>(2)</sup>

एक मुद्दत तक तो कुरैश सहे राह रहे, सुलह हुदैबिया के बाद मौक़ा मिला, लेकिन मसालेह इसके मुक़्तज़ी थे कि यह फर्ज़ सबसे आखिर में अदा किया जाए,

बहरहाल जुलक़अदा में एलान हुआ कि आंहज़रत सल्ल० हज के इरादा से मक्का तशरीफ़ ले जा रहे हैं, यह ख़बर दफ़अतन फैल गई और शफ़े हमरिकाबी के लिये तमाम अरब उमड़ आया।<sup>(3)</sup> (सनीचर के दिन) जुलक़अदा की 26/तारीख को आप सल्ल० ने गुस्ल फ़रमाया और चादर और तहमद बांधी, नमाज़े जुहर के बाद मदीना से बाहर निकले।<sup>(4)</sup> तमाम अज्याजे मुतहर्रात को साथ ले चलने का हुक्म दिया।<sup>(5)</sup> मदीना से छः मील के फासिला पर जुल-

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुलफ़सीर, बाब तफ़सीर “इज़ा जाअू नस्तुल्लाहि” (2) सहीहुल बुखारी, बाब हज्जतुल वदाअू (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल० (4) जादुल मज़ाद 2-102 (5) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअू

हुलैफ़ा एक मकाम है, जो मदीना की मीकात है, यहां पहुंच कर शबे इकामत फ़रमाई,<sup>(1)</sup> दूसरे दिन दोबारा गुस्ल फ़रमाया, इसके बाद आप सल्ल० ने दो रकअत नमाज़ अदा की फिर कुस्वा पर सवार होकर एहराम बांधा और बुलंद आवाज़ से यह अलफ़ाज़ कहे:-

**لَبِّيْكَ اللَّهُمَّ لَبِّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبِّيْكَ اِنَّ  
الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ.**

“ऐ खुदा हम तेरे सामने हाजिर हैं, ऐ खुदा तेरा कोई शरीक नहीं, हम हाजिर हैं, तअरीफ़ और नेअमत सब तेरी है और सलतनत में तेरा कोई शरीक नहीं”।

हज़रत जाबिर रज़ि० जो इस हदीस के रावी हैं, उनका बयान है कि मैंने नज़र उठा कर देखा तो आगे, पीछे, दाएं, बाएं, जहां तक नज़र काम करती, आदमियों का जंगल नज़र आता था, आंहज़रत सल्ल० जब “लब्बैक” फ़रमाते थे तो हर तरफ़ से इसी सदाए ग़लग़ला अंगेज़ की आवाज़ बाज़ग़श्त आती थी और तमाम दश्त व जबल गूंज उठते थे।<sup>(2)</sup>

फ़हें मक्का में आपने जिन मनाज़िल में नमाज़ अदा की थी, वहां बरकत के ख्याल से लोगों ने मस्जिदें बना ली थीं, आंहज़रत सल्ल० उन मसाजिद में नमाज़ अदा करते जाते थे, मकामे सरफ़ पहुंच कर गुस्ल फ़रमाया, दूसरे दिन (इतवार) के रोज़ जुल हिज्जा की चार तारीख़ को सुब्ह के वक्त)

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब मिन बात बज़ियुल हलीफा

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी व बाबुत्तलबिया

मक्का मुअ़ज्ज़मा में दाखिल हुए, मदीना से मक्का तक यह सफर नौ दिन में तैय हुआ,<sup>(1)</sup> खानदाने हाशिम के लड़कों ने आमद की खबर सुनी तो खुशी से बाहर निकल और, आपने फर्ते मुहब्बत से ऊंट पर किसी को आगे और किसी को पीछे बिठा लिया।<sup>(2)</sup> कअबा नज़र पड़ा तो फरमाया कि “ऐ खुदा इस घर को और ज्यादा इज़्ज़त और शफ्त दे”,<sup>(3)</sup> फिर कअबा का तवाफ़ किया, तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर मकामे इब्राहीम में दोगाना अदा किया और यह आयत पढ़ी:

وَاتَّخُذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى.

“और मकामे इब्राहीम को सज्दा गाह बनाओ”

सफा पर पहुंचने तो यह आयत पढ़ी:

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ

“सफ़ा और मरवह खुदा की निशानियां हैं।”

(यहां से) कअबा नज़र आया, तो यह अलफ़ाज़ फरमाएः

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ يُخْيِي وَيُمْتَثِّلُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا  
اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَخْرَابَ  
وَحْدَهُ۔<sup>(4)</sup>

“अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसके लिये सलतनत और मुल्क और

(1) सीरतुन्बी सल्ल० 2-252 (2) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इस्तिकबाले हज (3) सुनन बैहकी 5-73 (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअू

हम्द है, वह मारता और जिलाता है और वह तमाम चीजों पर कादिर है, कोई खुदा नहीं मगर वह अकेला खुदा, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और अकेले तमाम कबाइल को शिक्षित दी।”

सफ़ा से उतर कर मरवह तशरीफ़ लाए, यहाँ भी दुआ व तहलील की, अहले अरब अय्यामे हज में उम्रा नाजाइज़ समझते थे, सफ़ा व मरवह के तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होकर आपने लोगों को जिनके साथ कुर्बानी के जानवर नहीं थे, उम्रा तमाम करके एहराम उतार देने का हुक्म दिया,<sup>(1)</sup> बअूज़ सहाबा रज़ि० ने गुज़श्ता रुसूमे मालूफ़ा की बिना पर इस हुक्म की बजाआवरी में मअूज़रत की, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया “अगर मेरे साथ कुर्बानी के ऊंट न होते तो मैं भी ऐसा ही करता।<sup>(2)</sup> हज़रत अली रज़ि० हज्जतुल वदाअू से कुछ पहले यमन भेजे गए थे, उसी वक्त वह यमनी हाजियों का काफ़िला लेकर मक्का में वारिद हुए, चौंकि उनके साथ कुर्बानी के जानवर थे इसलिये उन्होंने एहराम नहीं उतारा, जुमेरात के रोज़ आठवीं तारीख़ को आपने तमाम मुसलमानों के साथ मिना में क्याम फ़रमाया, दूसरे दिन नवीं ज़िल हिज्जा को जुमुआ के रोज़ सुब्ल की नमाज़ पढ़ कर मिना से रवाना हुए।<sup>(3)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअू, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअू व बाब बयान बुजूहुल एहराम। (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनासिक, बाब तक़्ज़ी अल हाइज़ अल मनासिक कुल्लहा (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

कुरैश का मअ़मूल था कि जब मकाम से हज के लिये निकलते थे, तो अरफ़ात के बजाए मुज़दलिफ़ा में मकाम करते थे, जो हरम के हुदूद में था, उनका ख्याल था कि कुरैश ने अगर हरम के सिवा और मकाम में मनासिके हज अदा किये तो उनकी शाने यक्ताई में फ़र्क आ जाएगा, लेकिन इस्लाम को जो मुसावाते आम काइम करनी थी, उसके लिहाज़ से यह तख्सीस रवा नहीं रखी जा सकती थी, इसलिये खुदा ने हुक्म दिया:

(1) ثُمَّ أَفْيُضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ.

आप भी आम मुसलमानों के साथ अरफ़ात में आए, और यह एलान करा दिया:

”قِفُوا عَلَىٰ مَشَاعِرِكُمْ فَإِنَّكُمْ عَلَىٰ إِرْبَثٍ مِّنْ أَرْبَثِ أَبِيهِمْ“

(2) ”ابْرَاهِيمَ.“

“अपने मुकुद्दस मकामात में ठहरे रहो, कि तुम अपने बाप इब्राहीम की वरासत पर हो।”

यज़नी अरफ़ा में हाजियों का क्याम, हज़रत इब्राहीम अलै० की यादगार है और उन्हीं ने इस मकाम को इस ग़र्ज़ ख़ास के लिये मुतअ़्यन किया है, अरफ़ात में एक मकाम नम्रा है, वहां आप सल्ल० ने (एक) कम्बल के खेमा में क्याम फ़रमाया, दोपहर ढल गइ तो नाका पर (जिसका नाम कुसवा था) सवार होकर मैदान में आए और नाका के ऊपर

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाबुल बुकूफ बिअरफा

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल हज, बाब मा जाओ फ़िल बुकूफ बिअरफा, अबू दाऊद, किताबुल मनासिक, बाब मौजूउल बुकूफ बिअरफा

لہی سے خुतبا پढ़ا।<sup>(1)</sup>

आज पहला दिन था कि इस्लाम अपने जाह व जलाल के साथ नुमूदार हुआ और जाहिलीयत के तमाम बेहूदा मरासिम को मिटा दिया, इसलिये आप سल्ल0 ने फ़रमाया:

”اَلَا كُلُّ شَئٍ مِنْ اُمْرِ الرَّجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدْمَيْ“  
مَوْضُوعٌ.“<sup>(2)</sup>

“हाँ जाहिलीयत के तमाम दस्तूर मेरे दोनों पांव के नीचे हैं।”

तकमीले इंसानी की मंज़िल में सबसे बड़ा संगे राह इम्तियाज़े मरातिब था, जो दुन्या की कौमों ने, तमाम मज़ाहिब ने, तमाम मुमालिक ने, मुख्तलिफ़ सूरतों में काइम कर रखा था, सलातीन सायए यज़दानी थे, जिनके आगे किसी को चूं व चरा की मजाल न थी, अइस्मए मज़ाहिब के साथ कोई शख्स मसाइले मज़हबी में गुफ़तगू का मजाज़ न था, शुरफ़ा रज़ीलों से एक बालातर मख्लूक थी, गुलाम आका के हमसर नहीं हो सकते थे, आज यह तमाम तफ़र्के, यह तमाम इम्तियाज़ात, यह तमाम हदबंदियां दफ़अतन टूट गईं।

”لَيْسَ لِلْعَرَبِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَجَمِيِّ وَلَا لِلْعَجَمِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَرَبِيِّ، كُلُّكُمْ أَبْنَاءُ آدَمَ وَآدَمُ مِنَ التُّرَابِ“<sup>(3)</sup>

“अरबी को अजमी पर और अजमी को अरबी पर कोई फ़ज़ीलत, नहीं तुम सब आदम (अलै0) की औलाद हो और आदम अलै0 ख़ाक से बने थे।”

(1) سہیہ مسلم، کیتاب بولہ حج، باب حجۃ تونبی سلسلہ (2) سہیہ مسلم، کیتاب بولہ حج، باب حجۃ تونبی سلسلہ (3) اعلیٰ ایک دوں فرید 2-149

अरब में किसी खानदान का कोई शख्स किसी के हाथ क़त्ल होता तो उसका इंतिक़ाम लेना खानदानी फ़र्ज़ हो जाता था, यहां तक कि सैकड़ों बरस गुज़र जाने पर भी यह फ़र्ज़ बाकी रहता था और इसी बिना पर लड़ाइयों का गैर मुन्कृतेअू सिलसिला काइम हो जाता था और अरब की ज़मीन हमेशा खून से रंगीन रहती थी, आज यह सब से क़दीम रस्म, अरब का सबसे मुक़द्दम फ़खर, ख़त्म किया जाता है, इसके लिये नुबूव्वत का मुनादी सबसे पहले अपना नमूना पेश करता है:

”وَدَمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعَةٌ وَإِنَّ أَوَّلَ دَمٍ أَضَعُّ مِنْ دِمَائِنَا دَمٌ  
ابْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ.“<sup>(1)</sup>

“जाहिलीयत के तमाम खून (यअ़नी इंतिक़ामे खून) बातिल कर दिये गए और सबसे पहले मैं (अपने खानदान का खून) रबीआ बिन हारिस के बेटे का खून बातिल कर देता हूं।”

तमाम अरब में सूदी कारोगार का एक जाल फैला हुआ था, जिससे गुरबा का रेशा रेशा ज़क़ड़ा हुआ था और हमेशा के लिये अपने क़र्ज़खाहों के गुलाम बन गए थे, आज वह दिन है कि इस जाल का तार तार अलग होता है इस फ़र्ज़ की तकमील के लिये मुअलिमे हक़्क़ सबसे पहले अपने खानदान को पेश करता है:

”وَرَبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ وَأَوَّلُ رِبَا أَضَعُّ رِبَا عَبَّاسٍ بْنِ عَبْدِ  
الْمُطْلِبِ.“<sup>(2)</sup>

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्लू

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्लू

“जाहिलीयत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गए और सबसे पहले अपने खानदान का सूद, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ‘सूद बातिल करता हूं।’”

आज तक औरतें एक जाइदाद मन्कूला थीं जो किमार बाज़ियों में दांव पर चढ़ा दी जा सकती थीं, आज पहला दिन है कि इस गिरोहे मज़लूम को, इस सिन्फे लतीफ़ को, इस जौहरे नाजुक को, क़द्र दानी का ताज पहनाया जाता है, इशाद होता है:

(1) ”فَاتَّقُو اللَّهَ فِي النِّسَاءِ“.

“औरतों के मुआमला में खुदा से डरो।”

अरब में जान व माल की कुछ कीमत न थी जो शख्स जिसको चाहता था क़त्ल कर देता था और जिसका माल चाहता था छीन लेता था, आज अम्न व सलामती का बादशाह तमाम दुन्या को सुलह का पैग़ाम सुनाता है।

”إِنَّ دِمَائَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمٍ مُّكَبْرٍ هَذَا،

فِي شَهْرٍ كُمْ هَذَا، فِي بَلْدَكُمْ هَذَا، إِلَى يَوْمٍ تُلْقَوْنَ رَبَّكُمْ“ (2)

“बेशक तुम्हारा खून और तुम्हारा माल ता क्यामत उसी तरह हराम है, जिस तरह यह दिन, यह महीना और यह शहर, हराम है।”

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब हज्जतुल बदाअू, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

इस्लाम से पहले बड़े बड़े मज़ाहिब दुन्या में पैदा हुए, लेकिन उनकी बुन्याद खुद साहिबे शरीअत के तहरीरी उसूल पर न थी, उनको खुदा की तरफ से जो हिदायतें मिली थीं बंदों की हवस परस्तियों ने उनकी हकीकत गुम कर दी थी, अबदी मज़हब का पैग़म्बर जिंदगी के बाद हिदायाते रब्बानी का मज्मूआ खुद अपने हाथ से अपनी उम्मत को सिपुर्द करता है और ताकीद करता है:

”وَإِنِّي تَرَكْتُ فِيْكُمْ مَا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ إِنْ اغْتَصَصْتُمْ بِهِ“

(1) ”کتاب اللہ،“

‘‘मैं तुम में एक चीज़ छोड़ जाता हूं अगर तुमने उसको मज़बूत पकड़ लिया तो गुमराह न होगे, वह चीज़ क्या है? किताबुल्लाह! ’’

”أَنْتُمْ مَسْئُولُونَ عَنِّي فَمَا أَنْتُمْ قَائِلُونَ.“

‘‘तुमसे खुदा के यहां मेरी निस्बत पूछा जाएगा, तुम क्या जवाब दोगे?’’

सहाबा रज़ि0 ने अर्ज़ की ‘‘हम कहेंगे आप सल्ल0 ने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और अपना फ़र्ज़ अंदा कर दिया’’ आप सल्ल0 ने आसमान की तरफ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया, اَشْهَدُ اَللّٰهُمَّ<sup>(2)</sup> (ऐ खुदा तू गवाह रह।)

ऐन उसी वक्त जब आप यह फ़र्ज़ नुबूव्वत अदा कर रहे थे, यह आयत उत्तरी:<sup>(3)</sup>

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0

(3) सहीहुल बुखारी, किताबुल मगाजी, बाब हज्जतुल बदाअू

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي  
وَرَضِيَتْ لَكُمُ الْإِسْلَامُ دِينًا.

‘आज मैंने तुम्हारे लिये दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी नेभ्रमत तमाम कर दी और तुम्हारे लिये मज़हबे इस्लाम को मुंतख़ब किया’

(माइदा)

निहायत हैरत अंगेज़ और इबरत खेज़ मंज़र यह था कि शाहंशाहे आलम जिस वक्त लाखों आदमियों के मज्मा में फ़रमाने रब्बानी का एलान कर रहा था उसके तख्ते शाही का मस्नद व बालीन (कजावा और अ़क़र्गीर) एक रूपया से ज़्यादा कीमत का न था।<sup>(1)</sup>

खुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप سल्लٰ0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान का हुक्म दिया और जुहर व अस्स की नमाज़ एक साथ अदा की, फिर नाक़ पर सवार होकर मौक़फ़ तशरीफ़ लाए और वहां खड़े होकर देर तक किला रु दुआ में मस्तुक़ रहे।<sup>(2)</sup> जब आफताब झूबने लगा तो आप سल्लٰ0 ने वहां से चलने की तैयारी की, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 को ऊंट पर पीछे बिठा लिया,<sup>(3)</sup> आप सल्लٰ0 नाक़ की ज़िमाम खींचे हुए थे यहां तक कि उसकी गर्दन कजावे में आकर लगती थी,<sup>(4)</sup> लोगों के हुजूम से एक इज़ितराब सा पैदा हो गया था, लोगों को दस्ते मुबारक से

(1) سیرت نبی سلسلہ، اعلیٰ امام شیبی نو ایضاً نو 2-154 تا 159 (2) جَدُولِ مَاجَاد

2-234 (3) سہیل بخاری، کیتھابُ الحجَّ، بادعنیجُولِ بناء اور فاطمہ بنت الحجَّ (4)

جَدُولِ مَاجَاد 2-246

और बुखारी में है कि कोड़े से इशारा करते जाते थे कि आहिस्ता! और ज़बाने मुबारक से इर्शद फ़रमा रहे थे:

”السَّكِينَةُ إِيَّاهَا النَّاسُ!“

## लोगो! सुकून के साथ!

**”السَّكِينَةُ إِيَّاهَا النَّاسُ!“<sup>(1)</sup>**

## लोगो सुकून के साथ!

अस्नाए राह में एक जगह तहारत की, हज़रत उसामा  
रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल०! नमाज़ का वंकृत तंग  
हो रहा है, फ़रमाया नमाज़ का मौक़ा आगे आता है, थोड़ी  
देर के बाद आप सल्ल० तमाम क़ाफ़िला के साथ मुज्दल्फ़ा  
पहुंचे, यहां पहले मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद लोगों  
ने अपने अपने पड़ाव पर जाकर सवारियों को बिठाया, अभी  
सामान खोलने भी न पाए थे कि फ़ौरन ही नमाज़े इशा की  
तक्बीर हुई।<sup>(2)</sup> नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० लेट गए  
और सुब्ल तक आराम फ़रमाया, बीच में रोज़ाना के दस्तूर  
के खिलाफ़ इबादते शबाना के लिये बेदार न हुए, मुहद्दिसीन  
ने लिखा है कि यही एक शब है जिसमें आप सल्ल० ने  
तहज्जुद अदा नहीं फ़रमाई, सुब्ल सवेरे उठकर बाजमाझ़त  
फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ी,<sup>(3)</sup> कुफ़्फ़ारे कुरैश मुज्दल्फ़ा से उस  
वंकृत कूच करते थे, जब आफ़ताब पूरा निकल आता था, और

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0, सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब अम्रुन्नबी सल्ल0 विस्तकीना

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब अल जम्झु बैनस्सलातैन विल मुज्दत्फ़ा

(३) सीरतुन्नवी सल्लो २-१६०

आसपास के पहाड़ों की चोटियों पर धूप चमकने लगती थी, उस वक्त बाआवाज़े बुलंद कहते थे ‘‘कोहे सबीर! धूप से चमक जा’’ आंहज़रत सल्ल० ने इस रस्म के इब्ताल के लिये सूरज निकलने से पहले यहां से कूच किया।<sup>(1)</sup> यह ज़िल हिज्जा की दसवीं तारीख़ और सनीचर का दिन था।

हज़रत फ़ृज़ल बिन अब्बास रज़ि० आप सल्ल० के बिरादरे अम्मज़ाद नाका पर सवार थे, अहले हाजत दाएँ बाएँ हज के मसाइल दरयापूर्त करने के लिये आ रहे थे, आप सल्ल० जवाब देते थे।<sup>(2)</sup> और ज़ोर ज़ोर से मनासिके हज की तअ़्लीम देते जाते थे, वादिये महसर के रास्ता से आप सल्ल० जम्रह के पास आए, इन्हे अब्बास से जो उस वक्त कम्सिन थे फ़रमाया मुझे कंकरियां दो, आप सल्ल० ने कंकरियां फेंकीं और लोगों को ख़िताब करके फ़रमाया:

**إِيّاُكُمْ وَالْغُلُوُّ فِي الدِّينِ فَأَنَّمَا أَهْلَكَ قَبْلَكُمُ الْغُلُوُّ فِي الدِّينِ**<sup>(3)</sup>

‘‘मज़हब में गुलू और मुबालग़ा से बचो, क्योंकि तुमसे पहले कौमें इसी से बर्बाद हुई’’

इसी अस्ना में आप सल्ल० यह भी इशाद फरमाते,

**لَا خُلُونَوا مَنَابِكُمْ فَإِنِّي لَا أُذْرِي لَعْلَى لَا أُحِجُّ بَعْدَ**

**حَجَّتِي هَذِهِ**<sup>(4)</sup>“

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब मता यदूफ़ज़ू मिन ज़ज्ज़ू

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाय

(3) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इल्लिकातुल हसा, सुनन इन्हे माजा, किताबुल मनासिक, बाब कद्रो हिसरम्य

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहाबु रस्मे जम्रतिल उक्ता

“हज के मसाइल सीख लो, मैं नहीं जानता शायद  
कि इसके बाद मुझे दूसरे हज की नौबत न  
आए।”

यहां से फ़ारिग़ होकर मिना के मैदान में तशरीफ लाए,  
दाहने बाएं आगे पीछे तक़रीबन एक लाख मुसलमानों का  
मज्मा था, मुहाजिरीन किला के दाहने, अंसार बाएं, और  
बीच में आम मुसलमानों की सफें थीं, आंहज़रत सल्ल०  
नाक़ा पर सवार थे, हज़रत बिलाल रज़ि० के हाथ में नाक़ा  
की महार थी, हज़रत उसामा बिन ज़ैद पीछे बैठे कपड़ा तान  
कर साया किये हुए थे, आप सल्ल० ने नज़र उठाकर उस  
अज़ीमुश्शान मज्मा की तरफ़ देखा तो फ़राइज़े नुबूव्वत के  
23/ साला नताइज निगाहों के सामने थे, ज़मीन से क़बूल व  
एतिराफ़े हक का नूर जू फ़शँ था, दीवाने क़ज़ा में अंबिया  
साबिकीन के फ़राइज़े तबलीग के कारनामों पर ख़त्मे  
रिसालत की मुहर सब्ज हो रही थी और दुन्या अपनी  
तख़्लीक के लाखों बरस के बाद दीने फ़ित्त की तक्मील  
का मुज़दा काइनात के ज़रा ज़रा की ज़बान से सुन रही थी,  
ऐन उसी आलम में ज़बाने हक मुहम्मद सल्ल० के काम व  
देहन में ज़मज़मा पर्दज़ हुई।<sup>(1)</sup> अब एक नई शरीअत, एक  
नए निज़ाम और एक आलम का आग़ाज़ था, इस बिना पर<sup>(2)</sup>  
इशाद फ़रमाया:

”إِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَلَارَ كَهْيَةٌ يَوْمَ خَلَقَ اللَّهُ السُّمُوتَ وَالْأَرْضَ،“

(1) सीरतुन्नबी सल्ल० 2-161 (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल बदाऊ, सहीह मुस्लिम, किताबुल कसामा, बाब तग़लीजुद्दिमाऊ वलअज़राज़

‘‘इब्तिदा में खुदा ने जब ज़मीन व आसमान को पैदा किया था, ज़माना फिर फिरा के आज उसी नुक़ता पर आ गया।’’ (बरिवायत अबू बकरह)

इब्राहीम ख़लील अलै० के तरीके इबादत हज का मौसम अपनी जगह से हट गया था, इसका सबब यह है कि उस ज़माना में किसी किस्म की खून रेज़ी जाइज़ न थी, इसलिये अरबों के खून आशाम ज़्यात हीलए जंग के लिये इसको कभी घटा कभी बढ़ा देते थे, आज वह दिन आया कि इस इजित्माए अज़ीम के लिये अशहुरे हुरुम तअ़्यीन कर दिये जाएं, आप सल्ल० ने फ़रमाया:

السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا أَرْبَعَةُ حُرُمٌ، ثَلَاثَةُ مَتْوَالِيَاتٍ  
ذُو القَعْدَةِ وَذُو الْحِجَةِ وَمَحْرُومٌ وَرَجَبٌ شَهْرٌ مُضَرٌ الَّذِي  
بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ.<sup>(1)</sup>

“साल में बारह महीने जिनमें चार महीने काबिले एहतिराम हैं, तीन तो मुतवातिर महीने हैं, जुलक़अदा, जुल हिज्जा, और मुहर्रहम, और चौथा रजब मुज़र का महीना, जो जुमादियुस्सानी और शअ़बान के बीच में है।”

दुन्या में अद्ल व इंसाफ़ और जौर व सितम का मेहवर सिफ़र तीन चीज़ें हैं, जान, माल, और आबरू, आंहज़रत सल्ल० कल के खुत्बा में गो उनके मुतअल्लिक इशाद फ़रमाचुके थे, लेकिन अरब के सदियों के ज़ंग दूर करने के लिये

(1) सहीदुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअू

मुकर्रर ताकीद की ज़खरत थी, आज आप सल्ल0 ने इसके लिये अजीब बलीग्रं अंदाज़ इख्तियार फ़रमाया, लोगों से मुख़ातब होकर पूछा-

“कुछ मअ़्लूम है, आज कौनसा दिन है? लोगों ने अर्ज किया कि खुदा और उसके रसूल को ज्यादा इल्म है, आप सल्ल0 देर तक चुप रहे, लोग समझे कि शायद आप सल्ल0 इंस दिन का कोई और नाम रखेंगे, देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया ‘क्या आज कुर्बानी का दिन नहीं है? लोगों ने कहा हाँ बेशक है, फिर इशाद हुआ, यह कौनसा महीना है? लोगों ने फिर उसी तरीके से जवाब दिया, आप सल्ल0 ने फिर देर तक सुकूत किया, और फ़रमाया कि यह जुल हिज्जा नहीं है? ‘लोगों ने कहा हाँ बेशक है, फिर पूछा ‘यह कौनसा शहर है’? लोगों ने बदस्तूर जवाब दिया, आप सल्ल0 ने उसी तरह देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया ‘क्या यह बलदतुल हराम नहीं है’? लोगों ने कहा हाँ बेशक है, जब सामईन के दिल में यह ख्याल पूरी तरह जागुज़ी हो चुका कि आज का दिन भी, महीना भी और खुद शहर भी मोहतरम है, यअ़नी इस दिन इस मकाम में जंग और खूरेज़ी जाइज़ नहीं, तब फ़रमाया:

فَإِنْ دِمَائُكُمْ وَأَمْوَالُكُمْ وَأَغْرَاضُكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كُحْرُمَةٌ  
بَرْمِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرٍ كُمْ هَذَا، فِي بَلَدٍ كُمْ هَذَا.<sup>(1)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअू, किताबुल हज, बाबुल खुत्बा अस्मामन्नास

‘‘तो तुम्हारा खून, तुम्हारा माल और तुम्हारी आबरू  
(ता क्यामत) उसी तरह मोहतरम है जिस तरह यह  
दिन, इस महीना में और इस शहर में मोहतरम  
है।’’

कौमों की बर्बादी हमेशा आपस के जंग व जिदाल और  
बाहमी ख़ुरेज़ियों का नतीजा रही है, वह पैग़म्बर जो एक  
लाज़्वाल कौमियत का बानी बन कर आया था, उसने अपने  
पैरुओं से बाआवाज़े बुलंद कहा:

أَلَا! لَا تُرْجِعُوا بَعْدِي ضُلْلًا يَضُربُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ  
وَسَتَلْقُونَ رَبِّكُمْ فَيَسْتَلْكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ۔<sup>(1)</sup>

“हां! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि खुद एक  
दूसरे की गर्दन मारने लगो, तुम को खुदा के सामने  
हाज़िर होना पड़ेगा और वह तुमसे तुम्हारे अअ़माल  
की बाज़ पुर्स करेगा।”

जुल्म व सितम का एक आलमगीर पहलू यह था कि  
अगर ख़ानदान में किसी एक शख्स से कोई गुनाह सरज़द  
हो जाता तो उस ख़ानदान का हर शख्स उस जुर्म का  
कानूनी मुजिम समझा जाता था, और अक्सर मुजिम के  
रूपोश या फिरार हो जाने की सूरत में बादशाह का उस  
ख़ानदान में से जिस पर काबू चलता था, उसको सज़ा देता  
था, बाप के जुर्म में बेटे को सूली दी जाती थी, और बेटे के  
जुर्म का ख़मियाज़ा बाप को उठाना पड़ता था, यह सख्त

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाऊ, किताबुल हज, बाबुल  
खुत्बा अय्यामे मिना

જાલિમાના કાનૂન થા, જો મુદ્દત સે દુન્યા મેં હુકમરાં થા  
અગર્ચે કુર્બાની મજીદ ને “لَا تَرُوْلَزِرَهُ وَزِرَّاخْرَىٰ” કે વસીઓ  
કાનૂન કી રૂ સે ઇસ જુલ્મ કી હમેશા કે લિયે બેખ્ફ કર્ની  
કર દી થી, લેકિન ઉસ વક્ત જબ દુન્યા કા આખિરી પૈગમ્બર  
એક નિજામે સિયાસત તરતીબ દે રહા થા, ઇસ ઉસૂલ કો  
ફરમાશ નહીં કર સકતા થા, આપ સલ્લો ને ફરમાયા:

“أَلَا يَجْنِي جَانٌ إِلَّا عَلَىٰ نَفْسِهِ أَلَا يَجْنِي جَانٌ عَلَىٰ

(1) وَلَدِهِ وَلَامَوْلُودَ عَلَىٰ وَالِدِهِ.”

“હાં! મુજિરમ અપને જુર્મ કા આપ જિમ્માદાર હૈ,  
હાં! બાપ કે જુર્મ કા જિમ્માદાર બેટા નહીં ઔર બેટે  
કે જુર્મ કા જવાબ દેહ બાપ નહીં।”

અરબ કી બદ અમ્ની ઔર નિજામે મુલ્ક કી બેતરતીબી  
કા એક સબબ યહ થા કિ હર શાખસ અપની ખુદાવંદી કા  
આપ મુદ્દી થા, ઔર દૂસરે કી માતહતી ઔર ફરમાંબરદારી  
કો અપને લિયે નંગ ઔર ઝાર જાનતા થા, ઇશાદ હુ�आ:

“إِنْ أَمْرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدِّعٌ أَسْوَدٌ يَقُوذُ كُمْ بِكِتَابِ اللَّهِ

(2) فَاسْمَعُوا لَهُ وَأَطِيعُوا،”

“અગર કોઈ હબ્શી, કાન કટા ગુલામ ભી તુમ્હારા  
અમીર હો, ઔર વહ તુમકો ખુદા કી કિતાબ કે  
મુતાબિક લે ચલે તો ઉસકી ઇતાઅત ઔર  
ફરમાંબરદારી કરના।”

(1) સુનન તિમિજી, કિતાબુલ ફિતન, બાબ મા જાઝ દિમાઉકુમ વ અમવાલુકુમ  
અલૈકુમ હરામુન, સુનન ઇબ્ને માજા, કિતાબુલ મનાસિક, બાબુલ ખુત્બા યૌમુનહર

(2) સહીહ મુસ્લિમ, કિતાબુલ હજ, બાબ ઇસ્તિવાબુ રમ્યે જમરતિલ ઉક્બા

रेगिस्ताने अरब का ज़रा ज़रा उस वक्त इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो चुका था और खानए कअबा हमेशा के लिये मिलते इब्राहीम अलै० का मर्कज़ बन चुका था, और फ़िला पर्दाज़ाना कूप्पतें पामाल हो चुकी थीं, इस बिना पर आप सल्ल० ने इश्वाद फ़रमाया:

”اَلَا! اِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيْسَ اَنْ يُعْبَدَ فِي بَلَدِكُمْ هَذَا اَبْدًا“

ولِكِنْ سَتَكُونُ لَهُ طَاعَةٌ فِيمَا تَحْتَقِرُونَ مِنْ اَعْمَالِكُمْ

(1) ”فَيَرْضِي بِهِ“

“हाँ! शैतान इस बात से मायूस हो चुका कि अब तुम्हारे इस शहर में उसकी परस्तिश क्यामत तक न की जाएगी, लेकिन छोटी छोटी बातों में उसकी पैरवी करोगे और वह उस पर खुश होगा”

सबसे आखिर में आप सल्ल० ने इस्लाम के फ़र्जें अव्वलीन याद दिलाएः

”أَعْبُدُ رَبِّكُمْ وَصَلُّوا خَمْسَكُمْ وَصُرُومُوا شَهْرَكُمْ“

(2) ”وَأَطِيعُوا ذَا اِمْرِ رَبِّكُمْ تَدْخُلُوا جَنَّةَ رَبِّكُمْ“

“अपने परवरदिगार को पूजो, पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ो, महीना का रोज़ा रखा करो, और मेरे अहकाम की इताअ़त करो, खुदा की जन्नत में दाखिल हो जाओगे ।”

यह फ़रमा कर आप सल्ल० ने मज्मा की तरफ इशारा किया और फ़रमाया:

(1) तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब फ़ी फ़ज़िलस्सलात, मुस्नद अहमद 5-251

‘اللَّهُمَّ اشْهُدْ،’ ‘ऐ खुदा तू गवाह रहना।’

फिर लोगों की तरफ मुख़ातब होकर फ़रमाया:

**فَلْيَبْلُغَ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ،<sup>(1)</sup>**

‘जो लोग इस वक्त मौजूद हैं वह उनको सुना दें  
जो मौजूद नहीं हैं।’

खुत्बा के इंडितताम पर आप सल्ल० ने तमाम  
मुसलमानों को अलवदाज् कहा।

इसके बाद आप सल्ल० कुर्बान गाह की तरफ तशरीफ  
ले गए और फ़रमाया कि ‘कुर्बानी के लिये मिना की कुछ  
तख्सीस नहीं, बल्कि मिना और मक्का की एक एक गली में  
कुर्बानी हो सकती है’ आप सल्ल० के साथ कुर्बानी के सौ  
ऊंट थे, कुछ तो आप सल्ल० ने खुद अपने हाथ से ज़िल्ह  
किये और बाकी हज़रत अली रज़ि० के सिपुर्द कर दिये कि  
वह ज़िल्ह करें<sup>(2)</sup> और हुक्म दिया, कि गोश्त पोस्त जो कुछ  
हो सब खैरात कर दिया जाए, यहां तक कि कस्साब की  
मज़दूरी भी उससे अदा न की जाए, अलग से दी जाए<sup>(3)</sup>।

कुर्बानी से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० ने मुअम्मर बिन  
अब्दुललाह को बुलवाया और सर के बाल मुंडवाए<sup>(4)</sup>, और  
फ़र्ते मुहब्बत से कुछ बाल खुद अपने दस्ते मुबारक से अबू  
तल्हा अंसारी और उनकी बीवी उम्मे सुलैम और बअूज़ उन

(1) सहीहुल खुबारी, किताबुल हज, बाबुल खुत्बा अव्यामे मिना

(2) ज़ादुल मज़ाद 2-59

(3) सहीहुल खुबारी, किताबुल हज, बाब युतसद्क बिजुलूदिल हदी

(4) मुस्लिम अहमद 6-100

लोगों को जो पास में बैठे, इनायत फ़रमाए, और बाकी अबू तलहा रज़ि० ने अपने हाथ से तमाम मुसलमानों में एक एक दो दो करके तक़सीम कर दिये<sup>(1)</sup> इसके बाद आप सल्ल० मक्का मुअ़ज्ज़मा तशरीफ़ लाए, ख़ानए कअब्बा का तवाफ़ किया, इससे फ़ारिग़ होकर चाहे ज़मज़म के पास आए।

चाहे ज़मज़म से हाजियो को पानी पिलाने की ख़िदमत ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब से मुतअल्लिक थी, चुनांचे उस वक्त इसी ख़ानदान के लोग पानी निकाल निकाल कर लोगों को पिला रहे थे, आप सल्ल० ने फ़रमाया, या बनी अब्दुल मुत्तलिब अगर मुझे यह खौफ़ न होता कि मुझको ऐसा करते देख कर और लोग भी तुम्हारे हाथ से डोल छीन कर अपने हाथ से पानी निकाल कर पियेंगे, तो मैं अपने हाथ से पानी निकाल कर पीता,<sup>(2)</sup> हज़रत अब्बास रज़ि० ने डोल में पानी निकाल कर पेश किया, आप सल्ल० ने किल्ला रुख़ होकर खड़े खड़े पानी पिया<sup>(3)</sup> फिर यहां से मिना वापस तशरीफ़ ले गए और वहीं नमाज़े जुहर अदा की<sup>(4)</sup> बक़िया अव्यामे तशरीक यज़्नी 12/ज़िल हिज्जा तक आप सल्ल० ने मुस्तकिल इकामत मिना ही में फ़रमाई, हर रोज़ ज़वाल के बाद रम्ये जिमार की ग़र्ज़ से तशरीफ़ ले जाते और फिर वापस आ जाते,<sup>(5)</sup> 13/ज़िल हिज्जा को सेह शंबा के दिन

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल वुजू बाब अल माउलज़ी युग़सल बिही शअरुल इंसान, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब बयानुस्सन्नति यौमुन्हर ऐ परमी सुभ्य यन्हर, (2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०, सहीहुल बुखारी, बाबुस्तकाया, (3) सहीहुल बुखारी, किताबुशशुर्ब, बाबुशशुर्ब काइमन (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहबाब अबवाबुल इफाज़ा यौमुन्हर (5) ज़ादुल मज़ाद १-२९०, सहीहुल बुखारी, बाब रम्य जम्रतुल उक्बा

ज़्यात के बाद आप सल्ल0 ने यहां से निकल कर वादिये मुहस्सब में क़्याम किया, और शब को उसी मकाम पर आराम फ़रमाया।<sup>(1)</sup> पिछले पहर उठकर मक्का मुअ़ज्ज़मा तशरीफ ले गए और ख़ानए कअबा का आखिरी तवाफ़ करके वहीं सुब्ह की नमाज़ अदा की,<sup>(2)</sup> इसके बाद क़ाफिला उसी वक्त अपने अपने मकाम को रवाना हो गया, और आप सल्ल0 ने मुहाजिरीन व अंसार के साथ मदीना की तरफ मुराजअत फ़रमाई, मदीना के करीब पहुंच कर जुल हुलैफ़ा में शब बसर की, सुब्ह के वक्त एक तरफ़ से आफ़ताब निकला और दूसरी तरफ़ कौकबए नबवी मदीना मुनव्वरा में दाखिल हुआ, और मदीना पर नज़र पड़ी तो यह अलफ़ाज़ फ़रमाएः<sup>(3)</sup>

”اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَةٌ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، ائْبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَخْرَابَ وَحْدَهُ“<sup>(4)</sup>

“खुदा बुजुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई खुदा नहीं, कोई उसका शरीक नहीं, बस उसी की सलतनत है, उसी के लिये हम्द व सताइश है, वह

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाब तवाफुल बदाऊ, व बाब मन सल्लल अस्यैमन्नहर बिल अक्लह

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाबुल हज

(3) तलखीस अज़ सीरतुन्नबी सल्ल0 2-159 ता 169

(4) सहीहुल बुखारी, किताबुल हज, बाबुन्जूल बिज़ी तुवा, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब मा यकूल इज़ा कफ़ला मिन सफ़रिल हज्जि व बाबुलअरीस बिज़िल हुलैफा

ہر بات پر کا دیر ہے، لौटے آ رہے ہیں، توبہ کرتے  
ہوئے، فرمائیں باردارانہ، جمین پر پے شانی رخ کر،  
اپنے پرورہ دیگار کی ہمد و سたایش میں مسٹر ف  
ہو کر، خودا نے اپنا وادا سچ کیا، اپنے بندے  
کی نوسrat کی اور تمام مुکابیل کو تناہ  
شیکھت دی ।”

### وفات

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ (جُمُور)

روح کو درستی کو ایال میں جیسماں میں یہی وقت تک  
راہنے کی جو رہتی ہے کہ تکمیل شریعت اور تجویز  
نفعوں کا انجیمع شان کام درجہ کمال تک پہنچ جائے،  
حجۃ العلیم و دارالعرف میں یہ فرج اہم ادا ہے چوکا، توبہ دے  
کامیل اور مکاری میں اخلاق کے عصول اعمال کا ایام  
کر کے امرفات کے مضمون آم میں اعلان کر دیا گیا  
کی:

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَأَتَمَّتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ،

“آج کے دن میں تو ہمارے دین کو کامیل کر  
دیا اور اپنی نعمت پوری کر دی ।”

سورہ نسوان کا نبیوں کا خاص خاص سہبہ کو آہنگ رہت  
سلسلہ نے کوئی وفات کی ایتیلاع دے چوکا ہے، اور آپ  
سلسلہ نے رحمہ کے لئے ”فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ۔“  
(نسوان) کے موتا بیک جیداً اولیاً تسبیح و تہلیل میں

(1) سہیوں کی بخششی، کیتا بول مگازی، باب حجۃ العلیم و دارالعرف، سیرت نبی سلسلہ

बसर फ़रमाते थे।<sup>(1)</sup> आप सल्ल० उमूमन हर साल रमज़ान मुबारक में दस दिन एतिकाफ़ में बैठते थे, लेकिन रमज़ान 10 हि० में बीस दिन एतिकाफ़ में बैठे, साल में एक दफ़ा माहे रमज़ान में आप सल्ल० पूरा कुर्�आन नामूसे अक्बर की ज़बानी सुनते थे, लेकिन वफ़ात के साल दो दफ़ा यह शर्फ़ हासिल हुआ<sup>(2)</sup> हज्जतुल वदाअ० के मौक़ा पर मनासिके हज की तअ़्लीम के साथ साथ आप सल्ल० ने यह एलान भी फ़रमाया कि मुझे उम्मीद नहीं कि आइंदा साल तुमसे मिल सकूं बअज़ रिवायतों में यह अलफ़ाज़ इस तरह वारिद हुए हैं: शायद इसके बाद हज न कर सकूं<sup>(3)</sup> हज्जतुल वदाअ० के मौक़ा पर तभाम मुसलमान को अपने फैज़े दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, और उनको हसरत के साथ वदाअ० किया, शुहदाए उहुद जो “بَلْ هُمْ أَحْيَاءٌ” के मुज़दए जांफ़ज़ा से फैज़याब थे, आठ बरस के बाद आखिरी दफ़ा आप सल्ल० ने उनको भी अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ करना ज़रूरी समझा, चुनांचे उसी ज़माना में उनकी कब्र पर तशरीफ़ ले गए और उनके लिये दुआए खैर फ़रमाई और इस रिकृत अंगेज़ तरीक़ा से उनको विदाअ० किया कि जिस तरह एक मरने वाला अपने अइज़ज़ाअ० को वदाअ० करता है, इसके बाद एक खुत्बा दिया, जिसमें फ़रमाया:

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल्फसीर, बाब तफ़सीर “इज़ा जाअ० नस्तुल्लाहि”

(2) सहीहुल बुखारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुर्�आन, बाब काना जिब्रईलु यअरुजुल कुर्�आन अलन्नबी सल्ल०

(3) सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब इस्तिहबाबु रम्ये जमतिल उक्खा

“मैं तुमसे पहले हौज़ पर जा रहा हूं, उसकी वुस्अत इतनी है जितनी अब्ला से जुहफ़ा तक, मुझको तमाम दुन्या के ख़ज़ानों की कुंजी दी गई है, मुझे खौफ़ नहीं कि मेरे बाद तुम शिर्क करोगे, लेकिन इससे डरता हूं कि दुन्या में न मुब्लाह हो जाओ। और इसके लिये आपस में कुश्त व खून न करो तो फिर उसी तरह हलाक हो जाओ, जिस तरह तुमसे पहली कौमें हलाक हुई।”

रावी का बयान है कि यह आखिरी दफ़ा मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को खुत्बा देते हुए सुना।

18/या 19/सफ़र 11 हि० में आधी रात को आप सल्ल० जन्नतुल बक़ीअू में जो आम मुसलमानों का क़ब्रस्तान था तशरीफ़ लाए, तो मिज़ाज नासाज़ हुआ,<sup>(1)</sup> यह हज़रत मैमूना रज़ि० की बारी का दिन था, पांच दिन तक आप सल्ल० इस हालत में अज़राहे अदल व करम बारी बारी एक एक बीवी के हुज्जा में तशरीफ़ ले जाते रहे, दो शंबा के दिन मर्ज़ में शिद्दत हुई तो अज़्वाजे मुतह्हरात से इजाज़त ली कि हज़रत आइशा रज़ि० के घर क्याम फ़रमाएं, खुल्के अ़मीम की बिना पर इजाज़त भी साफ़ और एलानिया नहीं तलब की बल्कि पूछा कि कल मैं किस के घर रहूंगा, दूसरा दिन (दो शंबा) हज़रत आइशा रज़ि० के यहां क्याम फ़रमाने का था, अज़्वाजे मुतह्हरात ने मर्जिये अक्दस समझ कर अ़र्ज की कि आप सल्ल० जहां चाहें क्याम फ़रमाएं,

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-57

जुअफ़ इस क़दर हो गया कि चला नहीं जाता था, हज़रत  
अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० दोनों बाजू थाम कर  
बमुश्किल हज़रत आइशा रज़ि० के हुज्रे में लाए।<sup>(1)</sup>

आमद व रफ़्त की कूच्चत जब तक रही आप सल्ल०  
मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की अर्ज़ से तशरीफ लाते रहे, सबसे  
आखिरी नमाज़ जो आप सल्ल० ने पढ़ाई वह मग़रिब की  
नमाज़ थी, सर में दर्द था, इसलिये सर में रुमाल बांध कर  
आप सल्ल० तशरीफ लाए और नमाज़ अदा की, जिसमें  
सूरए “وَالمرسلاتْ عُرْفًا” किराअत फ़रमाई।<sup>(2)</sup> इश का  
वक्त आया तो दरयाप़त फ़रमाया कि नमाज़ हो चुकी?  
लोगों ने अर्ज़ की कि सबको हुजूर सल्ल० का इंतिज़ार है,  
लगन में पानी भरवा कर गुस्त फ़रमाया, फिर उठना चाहा  
कि ग़श आ गया, इफ़ाक़ा के बाद फिर फ़रमाया कि नमाज़  
हो चुकी? लोगों ने फिर वही पहला जवाब दिया, आप  
सल्ल० ने फिर गुस्त फ़रमाया, और फिर जब उठना चाहा  
तो ग़श आ गया, इफ़ाक़ा हुआ तो फिर दरयाप़त फ़रमाया,  
और लोगों ने वही जवाब दिया, तीसरी मर्तबा जिस्म मुबारक  
पर पानी डाला, फिर जब उठने का इरादा किया तो फिर  
ग़शी तारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुआ तो इशाद फ़रमाया कि  
अबू बक्र नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत आइशा रज़ि० ने मअूज़रत  
की कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! अबू बक्र रज़ि० निहायत  
रकीकुल क़ल्ब हैं, आप की जगह उनसे खड़ा न हुआ जाएगा, आप  
सल्ल० ने फिर यही हुक्म दिया कि अबू बक्र रज़ि० नमाज़

(1) व (2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

पढ़ाएं, चुनांचे कई दिन तक हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई।

वफ़ात से चार दिन पहले जुहर की नमाज़ के वक्त आप सल्ल० की तबीअत कुछ सुकून पज़ीर हुई, आप सल्ल० ने हुक्म दिया कि पानी की सात मशकें आप पर डाली जाएं, गुस्स फ़रमा चुके तो अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० थाम कर मस्जिद में लाए, जमाअत खड़ी हो चुकी थी और हज़रत अबू बक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० पीछे हटे आप सल्ल० ने इशारा से रोका और उनके पहलू में बैठ कर नमाज़ पढ़ाई, आप सल्ल० को देख कर हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० को देखकर और लोग अरकान अदा करते जाते थे।<sup>(१)</sup>

नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल० ने एक खुत्बा दिया, जो आप सल्ल० की ज़िंदगी का सबसे आखिरी खुत्बा था, आप सल्ल० ने फ़रमाया:

“खुदा ने अपने एक बंदा को इख़ितयार अता फ़रमाया है कि ख्वाह दुन्या की नेतृत्वों को कबूल कर ले या खुदा के पास (आखिरत) में जो कुछ है उसको कबूल कर ले, लेकिन उसने खुदा ही के पास की चीज़ें कबूल कीं” यह सुन कर अबू बक्र रज़ि० रो पड़े, लोगों ने उनकी तरफ़ तज़्जुब से देखा कि आप सल्ल० तो एक शख्स का वाकिआ

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तख्लाफ़ुल इमाम, सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुनबी सल्ल० व वफ़ातुहू

बयान करते हैं, यह रोने की कौनसी बात है, लेकिन राज़दारे नुबूव्वत समझ चुका था कि वह बंदा खुद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० हैं, आप सल्ल० ने अपनी तक़रीर का सिलसिला आगे बढ़ाया और फ़रमाया: “सबसे ज्यसादा मैं जिसकी दौलते सोहबत का ममून हूं अबू बक्र रज़ि० हैं, अगर मैं दुन्या में किसी को अपनी उम्मत में से अपना दोस्त बना सकता तो अबू बक्र रज़ि० को बनाता, लेकिन इस्लाम का रिशता दोस्ती के लिये काफ़ी है, मस्जिद के रुख़ कोई दरीचा अबू बक्र रज़ि० के दरीचा के सिवा बाकी न रखा जाए,<sup>(1)</sup> हां तुम से पहले कौमों ने अपने पैग़म्बरों और बुजुर्गों की कब्र को इबादत गाह बना लिया है, देखो! तुम ऐसा न करना।”,<sup>(2)</sup>

ज़मानए अलालत में अंसार आप सल्ल० की इनायात और मेहरबानियों को याद करके रोते थे, एक दफ़ा इसी हालत में हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० का गुज़र हुआ, उन्होंने अंसार को रोते देखा तो वजह दरयापृत की उन्होंने बयान किया कि हुजूर की सोहबतें याद आती हैं, उनमें से एक साहब ने जाकर आंहज़रत सल्ल० से वाकिआ बयान किया, आज उसकी तलाफ़ी का मौक़ा था, इसलिये

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब कौलुन्नबी सल्ल०, सुहुल अबदाब इल्ला बाब अबी बक्र रज़ि०

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मणाजी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल०, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्हये अन बिनाइल मसाजिद अलल कुबूर

इसके बाद आप सल्ल० ने अंसार की निस्बत लोगों की तरफ ख़िताब करके फ़रमाया:

“يَا أَيُّهَا النَّاسُ” (ऐ लोगो!) “मैं अंसार के मुआमला में वसीयत करता हूं, आम मुसलमान बढ़ते जाएंगे, लेकिन अंसार इस तरह कम होकर रह जाएंगे, जैसे खाने में नमक, वह अपनी तरफ से अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके, अब तुम्हें उनका फ़र्ज़ अदा करना है, वह मेरे जिस्म में बमज़िला मेअूदा के हैं, जो तुम्हारे नफ़ा व नुक़सान का मुतवल्ली हो (यअ़नी जो ख़लीफ़ा हो) उसको चाहिये कि इनमें जो नेकूकार हों उनको क़बूल करे और जिनसे ख़ता हुई हो उनको मुआफ़ करे।”<sup>(1)</sup>

ऊपर गुज़र चुका है कि रुमियों की तरफ जिस फौज का भेजना आंहज़रत सल्ल० ने तज्जीज़ किया था, उसकी सरदारी उसामा रज़ि० बिन ज़ैद को तफ़वीज़ फ़रमाई थी, इस पर लोगों ने (इब्ने सअूद ने तस्रीह की है कि वह मुनाफ़िकीन थे) शिकायत की कि बड़े बूढ़ों के होते हुए जवानों को यह मंसब क्यों अता हुआ, आंहज़रत सल्ल० ने इस मस्अला की निस्बत इशाद फ़रमाया:

“अगर उसामा की सरदारी पर तुमको एतिराज़ है तो उसके बाप ज़ैद की सरदारी पर भी तुम मोअूतरिज़ थे, खुदा की क़सम वह इस मंसब का मुस्तहिक था और वह मुझे सबसे ज़्यादा महबूब था

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबुल अंसार

बुला भेजा, तशरीफ़ लाई तो उनसे कान में कुछ बातें कीं, वह रोने लगीं, फिर बुला कर कान में कुछ कहा तो हंस पड़ीं, हज़रत आइशा रज़ि० ने दरयापूर्त किया तो कहा पहली दफ़ा आप सल्ल० ने फ़रमाया कि इसी मर्ज़ में इंतिकाल करूँगा, जब मैं रोने लगी तो फ़रमाया कि मेरे खानदान में सबसे पहले तुम्हीं मुझसे आकर मिलोगी तो हंसने लगीं।<sup>(1)</sup>

यहूद व नसारा ने अंबिया के मज़ारात और यादगारों की तअूज़ीम में जो इफ़्रात की थी, वह बुत परस्ती की हद तक पहुंच गई थी, इस्लाम का फ़र्ज़े अव्वलीन बुत परस्ती की रग व रेशा का इस्तीसाल करना था, इसलिये हालते मर्ज़ में जो चीज़ सबसे ज़्यादा पेशे नज़र थी यही थी, इत्तिफ़ाक से बअूज़ अज़्ज्वाजे मुतह्हरात ने जो हब्शा हो आई थीं, उसी हालत में वहां के ईसाई मअ़बूदों का और उनके मुजस्समों और तस्वीरों का तज़्किरा किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया इन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता है तो उसके मक़बरा को इबादत गाह बना लेते हैं और उसका बुत बनाकर उसमें खड़ा करते हैं, क़्यामत के रोज़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की निगाह में यह लोग बदतरीन मख्लूक होंगे।<sup>(2)</sup> ऐन कर्ब की शिद्दत में जबकि चादर कभी मुँह पर डाल लेते थे और कभी गर्मी से घबरा कर उलट देते थे। हज़रत आइशा रज़ि० ने ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ सुने:

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफातुहू

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्हये अन बिनाइल मसाजिद अलल कुबूर

”لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَىٰ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ“

(۱) مَسَاجِدٍ۔“

“यहूद व नसारा पर खुदा की लअनत हो, उन्होंने अपने पैग़म्बरों की कब्रों को इबादतगाह बना लिया।”

इसी कर्ब व बेचैनी में याद आया कि हज़रत आइशा रज़ि० के पास कुछ अशरफ़ियां रखवाई थीं, दरयापृत फ़रमाया कि वह अशरफ़ियां कहाँ हैं? मुहम्मद (सल्ल०) खुदा से बद गुमान होकर मिलेगा? जाओ उनको खुदा की राह में खैरात कर दो।<sup>(۲)</sup>

मर्ज़ में इश्तिदाद और तख़्फ़ीफ़ होती रहती थी, जिस दिन वफ़ात हुई (यअ़नी दो शंबा के रोज़) बज़ाहिर तबीअ़त को सुकून था, हुज्जए मुबारक मस्जिद से मिला हुआ था, आप सल्ल० ने (सुब्ल के वक्त) पर्दा उठाकर देखा तो लोग (फ़ज़ की) नमाज़ में मशगूल थे, देखकर मुसर्रत से हँस पड़े, लोगों ने आहट पाकर ख्याल किया कि आप सल्ल० बाहर आना चाहते हैं, फ़र्ते मुसर्रत से तमाम लोग बेकाबू हो गए और क़रीब था कि नमाज़ टूट जाए, हज़रत अबू बक्र रज़ि० जो इमाम थे चाहा कि पीछे हट जाएं, आप सल्ल० ने इशारा से रोका और हुज्जए शरीफ़ में दाखिल होकर पर्दे डाल दिये।<sup>(۳)</sup>

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

(2) مسلمان احمد 6-49

(3) سہیہ بخاری، کتبۃ البول ماجی، باب مرجعنیبی ساللہ علیہ السلام و فاتحہ

यह सबसे आखिरी मौका था कि सहाबा रज़ि० ने जमाले अकृदस की ज़ियारत की, हज़रत अनस रज़ि० बिन मालिक कहते हैं कि आप सल्ल० का चेहरा यह मअ़लूम होता था कि मुस्हफ़ का कोई वरक़ है।<sup>(1)</sup> यअ़नी सफेद हो गया था।

दिन जैसे जैसे चढ़ता जाता था, आप सल्ल० पर ग़शी तारी होती थी और फिर इफ़ाक़ा हो जाता था, हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० यह देखकर बोलीं “वा कर्बा अबाह” (हाए मेरे बाप की बेचैनी,) आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारा बाप आज के बाद बेचैन न होगा।<sup>(2)</sup> हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० जब तंदुरुस्त थे तो फ़रमाया करते थे कि पैग़म्बर को इख्लायार दिया जाता है कि वह ख़्वाह मौत को कबूल करें या हयाते दुन्या को तर्जीह दें, उस हालत में अक्सर आप सल्ल० की ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ अदा होते थे:

“مَعَ الْذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ” “उन लोगों के साथ जिन पर खुदा ने इन्ज़ाम किया”

और कभी फ़रमाते:

“اللَّهُمْ فِي الرَّفِيقِ الْأَعْلَى” “खुदावंद बड़े रफीक हैं।”

वह समझ गई कि अब सिर्फ़ रिफ़ाकते इलाही मतलूब है।<sup>(3)</sup>

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिख्लाफुल इमाम

(2) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफातुहू

(3) ऐज़न

वफ़ात से ज़रा पहले हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ख़िदमते अक्दस में आए, आप सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० के सीना पर सरटेक कर लेटे थे, हज़रत अब्दुर्रहमान के हाथ में मिस्वाक थी, मिस्वाक की तरफ नज़र जमा कर देखा, हज़रत आइशा रज़ि० समझीं कि आप सल्ल० करना चाहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान से मिस्वाक लेकर दांतों से नर्म की, और ख़िदमते अक्दस में पेश की, आप सल्ल० ने बिल्कुल तंदुरुस्तों की तरह मिस्वाक की,<sup>(1)</sup> आप सल्ल० की वफ़ात का वक्त क़रीब आ रहा था, सेहपहर थी,<sup>(2)</sup> सीना में सांस की घर घराहट महसूस होती थी, इतने में लब मुबारक हिले तो यह अलफ़ाज़ सुने।<sup>(3)</sup>

”الصُّلُوةَ وَمَا ملِكُتْ أَيْمَانُكُمْ“ “नमाज़ और गुलाम”  
पास पानी की लगन थी, उसमें बार बार हाथ डालते और चेहरा पर मलते, चादर कभी मुँह पर डाल लेते और कभी हटा देते थे, इतने में हाथ उठाकर फरमाया: اللَّهُمَّ الرَّفِيقُ الْأَعْلَى “और अब वह बड़ा रफीक दरकार है।”

यही कहते कहते रुहे पाक आलमे कुद्रस में पहुंच गई।<sup>(4)</sup>

(1) ऐज़न (2) इन्हे इस्लाक ने सीरत में लिखा है कि वफ़ात दोपहर को हुई, लेकिन हज़रत अनस बिन मालिक से बुखारी व मुस्लिम में रियायत है कि अगलाम यअनी दो शंबा के आखिर वक्त वफ़ात फरमाई, हाफिज़ इन्हे हजर ने दो रियायतों में इस तरह तत्वीक दी है कि दोपहर ढल चुकी थी। (3) मुस्तदरक हाकिम ३-५९ (4) सहीबुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्लबी सल्ल० व वफ़ातुह

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلَىٰ أَهْلِهِ وَاصْحَّابِهِ صَلُوةً كَثِيرًا كَثِيرًا.

## तज्हीज़ व तकफीन

अक़ीदतमंदों को यक़ीन नहीं आता था कि हुजूर सल्ल० ने इस दुन्या को अलवदाअू कहा, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने तलवार खींच ली कि जो कहेगा कि आंहज़रत सल्ल० ने वफ़ात पाई उसका सर उड़ा दूंगा।<sup>(1)</sup>

लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ि० आए और उन्होंने तमाम सहाबा रज़ि० के सामने खुत्बा दिया कि हुजूर सल्ल० का इस जहां से तशरीफ ले जाना यक़ीनी था, और कुर्�आन मजीद की आयतें पढ़ कर सुनाई, तो लोगों की आंखें खुलीं और इस नागुज़ीर वाकि़ा का यक़ीन आया<sup>(2)</sup> तज्हीज़ व तकफीन का काम सेहशंबा को शुरू हुआ, यह खिदमते खास अइज़ज़ाअू व अकारिब ने अंजाम दी, हज़रत फ़ूज़ल बिन अब्बास रज़ि०, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ने पर्दा किया, और हज़रत अली रज़ि० ने गुस्ल दिया, हज़रत अब्बास रज़ि० भी मौक़ा पर मौजूद थे।<sup>(3)</sup>

गुस्ल व कफ़न के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि आप सल्ल० को दफ़ن कहां किया जाए? हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने कहा, नबी जिस मक़ाम पर वफ़ात पाता है, वहीं दफ़न भी होता है, चुनांचे नअूश मुबारक उठाकर और बिस्तर उलट कर हुजरए आइशा रज़ि० में उसी मक़ाम पर कब्र खोदना तज्जीज़ हुआ।<sup>(4)</sup>

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-655 (2) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (3) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (4) सुनन इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब वफ़ातुन्बी सल्ल०

ہجّرہت آیشہ رجیو کہتی ہے کہ آپ سلسلہ کو کیسی میدان میں اسالیے دفن نہیں کیا گیا کی آنحضری لامہوں میں آپ سلسلہ کو یہ خیال تھا کہ لوگ فتنے اکیدات سے میری کبر کو بھی ایجاد نہ بنانا لے، میدان میں اسکی دار و گیر مुशکل تھی۔<sup>(1)</sup>

ہجّرہت ابू تلہ رجیو نے مدینا کے ریواج کے معتابیک کبر خودی، جو لہدی باغلی تھی۔<sup>(2)</sup>

جنائزہ تیار ہو گیا تو لوگ نماز کے لیے ٹوٹے، جنائزہ ہужے کے اندر تھا، باری باری سے لوگ ٹوڈے ٹوڈے کر کے جاتے تھے، پہلے مردوں نے فیر اورتوں نے فیر بچوں نے نماز پढی، لیکن کوئی امام نہ تھا۔<sup>(3)</sup>

jismm mubarak کو ہجّرہت الی رجیو، ہجّرہت فضلہ بین ابساں رجیو، ہجّرہت عسما بین جعید رجیو اور ہجّرہت ابدر حمّان بین اوسف رجیو نے کبر میں اتارا۔<sup>(4)</sup>

صلی اللہ تعالیٰ علیہ صَلَوة وَسَلَامٌ دَائِمٍ مُتَلَازِمٍ إلَی

يَوْمِ الدِّينِ وَعَلَیٰ أَلِهٖ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ.



(1) سہیہل بخاری، کیتابعل جزا اور، باب وفاتونبی سلسلہ

(2) سیرت ابنہ حیثام 2-663

(3) سیرت ابنہ حیثام 2-664

(4) ابوبکر جعید، کیتابعل جناہ

और अब उसके बाद यह सबसे ज़्यादा महबूब है।”<sup>(1)</sup>

इस्लाम और दीगर मज़ाहिब में एक दक्षीक फ़र्क यह है कि इस्लाम शरीअत के तमाम अहकाम का वाज़ेअू और हाकिम बराहे रास्त खुदाए पाक को क़रार देता है, पैग़म्बर का सिफ़ इसी क़दर फ़र्ज़ है कि अहकामे इलाही को अपने कौल व अमल के ज़रीआ से बंदों तक पहुंचा दे, चूंकि दूसरे मज़ाहिब में यह ग़लत फ़हमी शिर्क व कुफ़ तक हो चुकी थी, और उसके नताइज पेशे नज़र थे, इसलिये इशाद फ़रमाया:

“हलाल व हराम की निस्बत मेरी तरफ न की जाए, मैंने वही चीज़ हलाल की है जो खुदा ने अपनी किताब में हलाल की है और वही चीज़ हराम की है जो खुदा ने हराम की है।”

इंसान की जज़ा व सज़ा की बुन्याद खुद उसके ज़ाती अमल पर है, आप सल्ल० ने फ़रमाया:

“ऐ पैग़म्बरे खुदा की बेटी फ़ातिमा! और ऐ पैग़म्बरे खुदा की फूफ़ी सफ़ीया! खुदा के यहाँ के लिये कुछ कर लो मैं तुम्हें खुदा से नहीं बचा सकता।”

खुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० हुजरए आइशा रज़ि० में तशरीफ़ लाए, आप सल्ल० को हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० से बेहद मुहब्बत थी (अस्नाए अलालत) उनको

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअूसु उसामा रज़ि०

जब लोगों ने छोड़ दिया तो हमने पनाह दी, आप (सल्ल0) मुफ़िलस आए थे हमने हर तरह की मदद की।”

यह कहकर आप सल्ल0 ने फ़रमाया “तुम यह जवाब देते जाओ और मैं यह कहता जाऊंगा कि तुम सच कहते हो, लेकिन ऐ अंसार! क्या तुमको यह पसंद नहीं कि और लोग ऊंट और बकरियां ले जाएं और तुम मुहम्मद (सल्ल0) को अपने घर ले आओ।”

अंसार बेइख्तियार चीख़ उठे कि “हमको सिफ़ मुहम्मद सल्ल0 दरकार हैं” अक्सरों का यह हाल हुआ कि रोते रोते दाढ़ियां तर हो गई, आप सल्ल0 ने अंसार को समझाया कि मक्का के लोग जदीदुल इस्लाम हैं, मैंने इनको जो कुछ दिया हक़ की बिना पर नहीं, बल्कि तालीफ़े क़ल्ब के लिये दिया।<sup>(1)</sup>

हुनैन के असीराने जंग अब तक जिझराना में महफूज़ थे, एक मुअज्ज़ज़ सफ़ारत आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई कि असीराने जंग रिहा कर दिये जाएं, यह कबीला वह था कि आप सल्ल0 की रज़ाई वालिदा हज़रत हलीमा उसी कबीला की थीं, रईसे कबीला ने तक़रीर की और आप सल्ल0 की तरफ़ मुख़ातब होकर कहा “जो औरतें छप्परों में महबूस हैं उन्हीं में आप सल्ल0 की फूफियां और आप सल्ल0 की ख़ालाएं हैं, खुदा की क़सम सलातीने अरब में से किसी ने हमारे ख़ानदान का दूध पिया होता तो उनसे बहुत कुछ उम्मीदें होतीं और आप से तो और भी ज़्यादा

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुलवाइफ़ व किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबुल अंसार